ॐ श्री सहजात्म स्वरुपने नमस्कार

ग्रन्थांक ३७

पं. श्रीकेसरविमलजी, श्रीसोमप्रभाचार्यजी

श्रीचारित्रसुंदरगणिजी, श्रीचिदानंदजी अने

श्रीजयशेखरसूरिविरचित-अनुक्रमे

श्री सूक्त मुक्तावळी

सिंदुर प्रकर, आचारोपदेश, प्रश्नोत्तरमाला

अने आत्मावबोधकुलक ए पांच ग्रन्थो

मूळ, विवेचन अने अवतरण साथे

विवेचक तथा अनुवादक

शान्तमूर्ति श्रीमान् कर्पूरविजयजी महाराज

छपावी प्रसिद्धकर्ता

श्री जैनश्रेयस्करमंडळ-महेसाणा.

महावीर सं. २४४७ सन १९२१

अमदावाद-टंकशाळमां 'धी युनियन प्रिंटींग प्रेस क° लीमीटेड' मां शा. मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं

किंमत रु. ०-१०-०.

मुनीराज स्तवना—(स. एकत्रीसा.)

ज्ञानके उजागर सहज सुखसागर,
सुगुण रत्नागर वैराग रस भर्यो है;
सरनकी रीत हरे मरनको भे न करे,
करनसों पीठदे चरण अनुसर्यो है;
धरमको मंडन भरमको विहंडन ज्युं,
परम नरम व्हे के करमसों लर्यो है;
एसो मुनिराज भूय लोकमें बिराजमान,
निरखी बनारसी नमस्कार कर्यो है;

समकितिनी स्तुति—(स. त्रवीसा.)

भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, शित्तल चित्त भयो जिम चंदन;
केलि करे शिवमारगमें जगमांहि, जिनेश्वरके लघुनंदन.
सत्य स्वरुप सदा जिन्हके, प्रगट्यो अवदात मिथ्यात निकंदन;
सांतदशा तिन्हके पहिचान, करे कर जोरि बनारसी वंदन.

(स. एकत्रीसा.)

स्वारथके साचे परमारथके साचे चित्त,
साचे साचे वेन कहे साचे जैन मती है;
काहूके विरोध नांहि पर जाय बुद्धि नांहि,
आतम गवेखी न गृहस्थ है न जती है.
सिद्धि रिद्धि वृद्धि दीसे घटमें प्रगट सदा,
अंतरकी लक्षसों अजाची लक्षपति है;
दास भगवंत के उदास रहे जगत सों,
सुखीया सदीव एसे जीव समकिति है.

शान्तमूर्ति मर्हूम महात्मा श्री बुद्धिविजयजी
(बूटेरायजी) महाराज.

सद्गुणानुरागी मुनिराज श्रीमान्
कर्पूरविजयजी महाराज
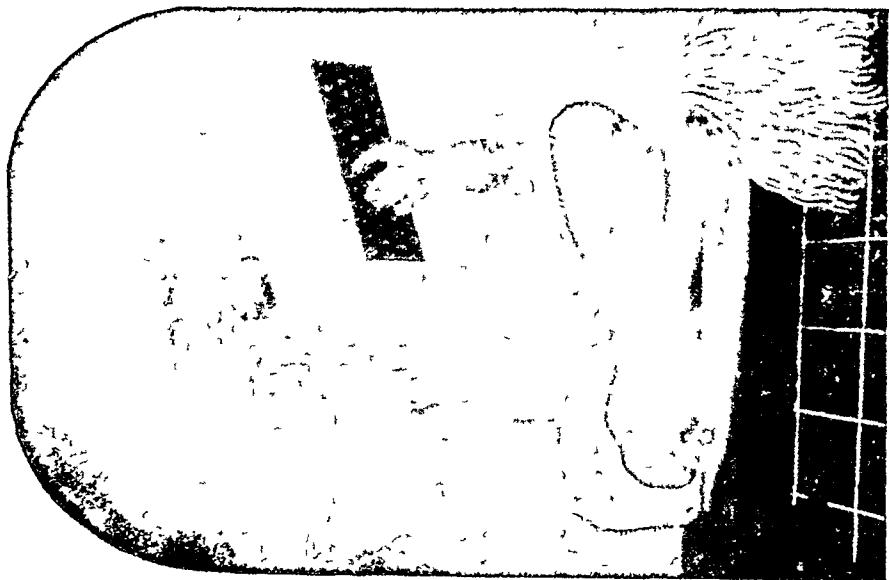
प्रस्तावना

प्रिय वाचनार !

समस्त जन समाजना कल्याण अर्थे रचायला रस, भाव, अने सदुपदेश पूर्ण आ त्रण ग्रन्थो एकज पुस्तकमा एकी साथे, शान्तात्मा मुनिराजे करेला विवेचन साथे समाज सन्मुख सहर्ष रजु करवानी सुंदर तक आजे अमोने मळी छे तेथी अमे अमोने भाग्यशाळी समजीये छीये

आमानो 'सूक्त मुक्तावली' नामनो अति उपयोगी ग्रन्थ विक्रमनी सत्तरमी शताब्दीमा थयेला पंडित प्रवर श्रीमान् केसर विमळजीये मधुर गुर्जर भाषामा, पद्यबद्ध, अति सरळ सुबोध अने संख्याबंध असरकारक विषयोथी भरपूर रचावेलो छे आमा, धर्म, नीति, सदाचार आदि सेंकडो विषयो टुंकाणमा सुंदर मुद्दाओ रुप क्रमपूर्वक गुंथ्या छे —दरेक विषयना चार काव्यो पण घणे भाग मालिनी छंदमा रचेला छे काव्ये काव्ये विशिष्टता अने ते ते विषयनी पुष्टि माटे एक के अनेक शास्त्रीय ऐतिहासिक दृष्टान्तो तेमज असरकारक दलीलोनी भरती करवामा आवी छे. कर्त्ताये 'सूक्त मुक्तावळी' नाम आपी खरेखर तेमा शास्त्र अने अनुभव समुद्रमा उत्पन्न थयेली छीपमा बनेला पाणीदार मोतिओ लइ तेने क्रमबद्ध गोठवी तेनी माळा बनावी छे आ किमती मोतिनी माळा समस्त जगतना मनुष्य मात्रने—आबाल वृद्ध सर्वने कंठे धारण करवा योग्य छे तेमज दरेकने वाचवा, विचारवा, मनन करवा अने तेनो अभ्यास करवा योग्य छे.—

आ मोतिनी माळाना दरेक दरेक मणकामां (मोतिमां) पुज्यपाद शान्तात्मा सद्गुण सुवास पूर्ण मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी महाराजे कर्पूरथी पण अधिक सुवास भरी देवा यत्न कर्यु छे. अंतर अने सुवास अत्र एकत्र थयां छे. एक तो ग्रन्थ स्वतःज उत्तम अने तेनापर महात्माश्रीए सुंदर विवेचन करी, ग्रन्थनी गौरवतामां ओर वधारो कर्यो छे.

लाखो मानवहृदयोमां सुसंस्काररूप संभार भरवामां, अनीतिनी अनेक रंगी वदीथी वचावी लेवामां, व्रत, नियम, संयम. धर्म अने सदाचारना मार्गे प्रवर्तावधामां अने जन्म, जरा, मरणरुप अनादिना दुःसाध्य दर्दोनो नाश करवामां आ ग्रन्थना दरेक दरेक उपाय अमोघ छे. जेटले अंशे तेनी अनुभवरूप अजमायेश थाय तेटले अंशे तेनी अमोघपणानी प्रतीति थवी संभवे छे. एमांना उपदेश सूत्रोने जीवनमां उतारवा ए एनी अजमायेश छे अने ए अजमायेश माटेज पुनः पुनः जुदे जुदे रूपे आवा ग्रन्थो व्हार पाडता रहेवानुं अमने उचित जणायुं छे.

बीजो ग्रन्थ श्रीमान् सोमप्रभाचार्यजीविरचित श्री 'सिंदुर प्रकर' अपर नाम 'सूक्त मुक्तावली' नामनो सरळ सुमधुर सुसंस्कृत भाषामां विविध छंदोबद्ध अर्थ अने भावपूर्ण उपदेश रहस्यथी भरपूर रचेलो छे; के जे जैन वर्गमां अति सुपरीचित छे तेना मूळ १०० श्लोको आ ग्रंथमां पृष्ठ २७८ थी ३०३ सुधीमां आपेल छे.

आ ग्रन्थनु गुजराती भाषामा अवतरण पुज्यपाद महात्मा श्रीमान कर्पूर विजयजीये करेलु छे. आमा एक एकथी चढता पचीस विषयो अनुभवमा आवे एवा दृष्टान्तो साथे बहु सुंदर रुपमा असरकारक रीते वर्णव्या छे. श्रीमान् तीर्थंकरदेव, सद्गुरु, जिनप्रवचन, अने श्री संघनी सद्भाव पूर्ण भक्ति, हिंसा, असत्य, अदत्त, अब्रह्म, ममतात्याग, अंतर शत्रुओनो जय, सज्जनतानो आदर, सत्संगति, इन्द्रियदमन, दान, तप, भाव, वैराग्यादि विषयोनु मर्मस्पर्शी कथन शाव्ये काव्ये वृत्त भिन्नता, अने सौने सहेलथी समजी शकाय तेवी भाषा आ सर्व अभ्यासीने रोज साथे आनंद आपे तेम छे

बीजो "आचारोपदेश" नामनो यथार्थ नामवाळो ग्रन्थ स्वदनरगच्छीय श्रीमान चारित्र सुंदर गणि विरचित मूळ संस्कृत भाषामा बनावेलो छे तेनु पण गुजराती भाषामा महात्माजीने शोभे तेवु सुन्दर अवतरण श्रीमान कर्पूरविजयजी महाराजजीए करेलु छे आ ग्रन्थमा श्रावकने अवश्य करवा योग्य करणीना छ वर्ग पाडी असरकारक शैलीमा वर्णवेला छे

आ बन्ने ग्रन्थोनो एकत्र समागम ए गंगा, सिंधु, अने सरस्वती ए त्रिवेणीना संगम रुप तीर्थनी गरज सारनार होवाथी अमो आ ग्रन्थोनी उपयोगिता अने महत्ता सबंधे वधु कइ न उचरता, तेना अधिकारी अभ्यासको अने मनन पूर्वक वाचनाराओ माटेज रहेवा दइये छीये

श्रीमद् चिदानंदजी माहाराजकृत प्रश्नोत्तरमाळा दोहा चोपाइ रूप पद्यबंध छे ते पण दाखल करेल छे.

श्री जयशेखर सूरीकृत. श्री आत्मावबोध कुलकनी व्याख्या पण छेवटना भागमां दाखल करेल छे.

सदरहु पुस्तक छपातां दृष्टी दोपथी कोई कोई भुलो रही तेमज प्रेस दोपथी कोइ कोइ अक्षरोनी काना मात्रा विगेरे उडी गयेली छे. तेमां खास मोटी भुलोनु शुद्धिपत्रक आ साथे छपावेल छे ते प्रमाणे सुधारी वांचवा सुज्ञजनोने विनंती करवामां आवे छे. ए शिवाय वळी कोइ भुलो सुज्ञजनोने माळम पडे तो ते भुलो अमने लखी जणाववाथी तेनो बीजी आवृत्तिना वखते उपयोग करवामां आवशे.

आ ग्रन्थोनु विवेचन करी आपनार महात्माश्रीजीनो तथा ग्रन्थ प्रसिद्धिमां द्रव्य सहाय करनारा उदारचित्त मददगारोनो अं-तःकरण पूर्वक उपकार मानी वीरमीए छीए भुलचूक मिच्छामि दुक्कडम.

संवत १९७७ श्रावण शुदी १० गुरुवार. वीर संवत २४४७. } ली. प्रसिद्ध कर्त्ता.

प्रथम श्री सूक्त मुक्तावली ग्रथनी अनुक्रमणिका
प्रथम धर्म वर्ग पृष्ट १ थी ११०

द्वितीय अर्थ वर्ग पृष्ट ११० थी १५०

तृतीय काम वर्ग पृष्ट १५० थी १६८

चतुर्थ मोक्ष वर्ग पृष्ट १६८ थी २०४

श्री सूक्त मुक्तावली ग्रंथनी अनुक्रमणिका संपुर्ण.

द्वितीय ग्रंथ सिंदुर प्रकर अपरनाम सूक्त मुक्तावली सुगम भाषा अनुवाद पृष्ट २०८ थी २३५ तृतीय ग्रंथ श्रावक धर्मोचित आचारोपदेश भाषान्तर पृष्ट २३५ थी २७५ सूक्त मुक्तावलीना मुळ श्लोक १०० पृष्ट २७६ थी ३०३ चिदानंदजी कृत प्रश्नोत्तर माळा पृष्ट ३०३ थी ३१० आत्माववोध कुलक व्याख्या पृष्ट ३११ थी ३२०

सवैया त्रवीसा.

आप विसारके जो दुःख पावत, सो दुःख जानत सुख उचारी;
ताते सुज्ञान धरो अपने चित्त, ज्ञान अग्नी ग्रही मोह विडारी;
ध्यान धरो नित शुद्ध स्वरूपको, जाय मिटी भव वास वसेरो;
त्यागी विभाव शुद्धात्तम लेखत, पाय अनुभव आनम केरो. १

चाहकी दाहमें काहे जरे अब, भुली निजातम रिद्धि स्वतंती;
इंद्रीय भोग विकार विषयरस्स, त्यागत जागत ज्योति अनंति;
शुद्ध स्वभाव रमे न गंभ, विषयारम्भ भोगविलास विपत्ति;
याते सु सम्यक् प्राक्रम फोरन, मृगमद तोरन सर्व विपत्ति. २

कस्तुरांबाइ.

शुद्धिपत्रक

	लीटी.	अशुद्ध	शुद्ध.
९	१	तेटलो	तेटली
०	१०	नम्रताथो	नम्रताथी
१८	२१	मेळवो	मेळवी
५८	२१	परमाणन	परमाणन्
६०	२	कुळज ६	कुळज ३
६८	६	माइ	भाइ
७०	१	मक्ति	भक्ति
७१	१५	नीरवामा	नासवामा
७२	१२	आश्रय	आश्रय
७४	४	मृदुना	मृदुता
७७	३	जरिण	जीरण
७९	११	कोधाग्नि	क्रोधाग्नि
८६	५	चहु	चिहु
८७	३	रमणीकेळी	रमण केळी
९९	१	स॰	सर्प
९५	१२	दु'खनी	दु खनी
९६	१	भमताने	ममताने
९७	१	लाभवश	लोभवश

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०३	१३	इन्द्रियो	इन्द्रियोथी
१०५	८	साधा	साधवा
१००	१७	श्रावक	श्रावक कहेवाय छे. श्रावक
१११	९	एवा	एवो
११२	१७	नेटला	तेटला
११५	१०	सहचार्य	साहचर्य
१२७	३	आंवो	आंवो
१२८	४	लींवडानी	लींवडानी
१३२	१	शक्यं	शाठ्यं
१३७	८	लेखव	लेखवे
१४२	१९	न्माय	न्याय
१४६	२	शास्त्रमा	शास्त्रमां
१४६	१७	वीनो	वीजी
१४८	१७	मातानी	माता
१५२	१२	पंकित	पंक्ति
१६९	१९	P	R
१७०	२०	देव	देवे
१७१	७	खाटा	खोटा
१७८	५	तो	नो
१७८	११	कुतांते	कृतांते

पृष्ट	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
१८९	१	मायापा	मायाथी
१०३	३	अरारे	आराने
१०३	२०	अभ्यामरडे	अभ्यास रडे रत्नचित्
१०३	२१	रत्नचित्	
१०४	१०	मुख	सुख
१०६	०	पने	पत्रा
२०२	१४	पीते	पोते
२०५	१८	दाजा	दाजी
२११	१२	पळ	पणे
२१६	११	समुद्र	समुद्र
२२२	१०	रत्वाना	रहवानी
२२४	२०	होय	होय
२२७	१२	रागमा	राखमाची
२३०	११	मेटे	मेटे
२३१	१	उगाडरवानो	उगाडवानो
२३२	१०	चारेली	चारेली
२३३	१०	उ	उ याना
२३२	१०	अमे	अनुक्रमे
२३३	१८	गनुभाने	गहुभोने
२५०	१	पन	पान
२५०	१२	उटप	उट्चे

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२५६	५	सामानु	सामानुं मन
२५६	१६	आवेलो	आवेला छे.
२५०	१	चर्चा	चर्या
२५९	१७	शुद्धि	शुद्ध
२६१	१०	लेनां	लेतां
२६२	३	बोल्युं	बोल्युं
२६२	६	पीतानी	पोतानी
२६२	१४	लेय.	ले.
२६२	१०	वर्ज.	वर्जवां.
२६३	२	विहारनुं	विहारनु
२६३	८	(शके)	
२ ३	९	पातोज	पीतोज
२६४	१	धंम	धर्मोचित
२६४	१०	भेदनो	भोगनो
२६६	१५	दापा	दोपो
२६९	१९	पूर्वाध	पूर्वार्ध
२७२	१	श्रर	श्वर

——:०:——

ॐ

अथ श्री सूक्त मुक्तावळी

ग्रंथ प्रारम्भ

देवाधिदेव अरिहंत भगवान् केवा छे ?

(तेनां लक्षण तथा हेतु दृष्टांतनी समज साथे).

देवतत्त्व

(मालिनी वृत्त.)

सकळ करम वारी, मोक्षमार्गाधिकारी,
त्रिभुवन उपगारी, केवळ ज्ञान धारी;
भविजन नित सेवो, देव ए भक्तिभावे,
इहज जिन भजंता, सर्व संपत्ति आवे. १

जिनवर पद सेवा, सर्व संपत्तिदाइ,
निशदिन सुखदाइ, कल्पवल्ली सहाइ,
नमि विनमि लहीजे, सर्व विद्या वडाइ,
ऋषभ जिनंद सेवा, साधता तेह पाइ. २

जे सघळा कर्म निवारीने तीर्थंकर पदवी पमाय छे ते आवी रीते—

" ज्ञानावरणी क्षय करी, दर्शनावरणी कर्म;
वेदनी कर्म दूरे करी, टाळ्युं मोहनी कर्म.
नाम कर्म ने आयु कर्म, गोत्र अने अंतराय;
अष्ट कर्म ते एणी पेरे, दूर कर्यां महाराय. "

राग द्वेषादिक सघळा दोषो सर्वथा दूर करी नांखवाथी जेमने अनंता गुणो प्रगट थया छे अने त्रिभुवन एटले स्वर्ग मृत्यु, अने पातालवासी प्राणीओ उपर जे सदाय उपकार करी रह्या छे, वळी जगत् मात्रनी सर्व वात संपूर्ण रीते जाणी शकाय एवुं निर्मळ केवळज्ञान जेने प्राप्त थयेलुं छे, एवा देवाधिदेव श्री अरिहंत भगवान् होय छे. तेमनी हे भविजनो ! तमे पूर्ण प्रेमथी निरंतर सेवा–भक्ति करो. पूर्ण प्रेमथी एवा प्रभुनी सेवा–भक्ति करवाथी तमे सघळी सुख–संपदा सहेजे पामी शकशो. १ सकळ दोषरहित श्री जिनेश्वर भगवाननी सेवा–भक्ति सर्व संपत्तिने आपवावाळी छे अने सदाय सुख समाधिने करनारी छे तेथी ते (प्रभुनी भक्ति) कल्पवेली जेवी भविजीवोने सहायकारी कही छे. जूओ के **ऋषभदेव भगवाननी खरा भावथी सेवा–भक्ति करवावडे नमि** अने विनमि सर्व विद्यासहीत नीचे मुजब विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या. २

प्रथम भगवाने गृहस्थ अवस्थामां नमि अने विनमिने पुत्र तरीके पाळ्या हता. ज्यारे भगवाने दीक्षा लीधी त्यारे ते बंने परदेश गयेला हता. परदेशथी ज्यारे पाछा आव्या त्यारे तेमने लायक राज्यभाग भरतजीए आपवा मांड्यो, परंतु ते भरतजीए आपवा मांडेलो राज्यभाग तेमणे लीधो नहिं पण तेओ बंने ऋषभदेव भग-

वान् पासेथीज ते लेवा माटे निश्चय करीने प्रभु पासे आवी उचित सेवा भक्ति करीने राज्यभाग मागवा लाग्या प्रभु तो काउस्सग्ग (कार्योत्सर्ग) याने मौनपणेज रहता हता. तोपण बने भाइओनो प्रभु प्रत्ये गाढ भक्तिभाव जोइने प्रसन्न थयेला इन्द्रे तेमने अनेक पाठसिद्ध विद्याओ सहित वैताढ्य पर्वत उपर विद्याधर योग्य मोटी राज्यऋद्धि आपी. आवी रीते जिनेश्वर भगवान्नी साचा भावथी भक्ति करवावडे अनेक जीवो सुखी थया छे एम समजी आपणे पण प्रभु सेवामां रसिक थवु अने आपणां कुटुंबी-सबंधीओने पण प्रभुभक्तिमां रसिक करवा. सारा धोयेला वस्त्र (स्वच्छ कपडा) पहेरीने प्रभुना दर्शन करवा प्रभाते, बपोर अने साजे एम त्रण वखत नियमसर जवु. निस्सिही कही देरासरना द्वारमा पेसीने घर संबंधी वातचित के कोइ जातनो क्लेश कंकास कोइ साथे करवो नहि प्रभु सन्मुख साथीयो करवा माटे सारा अणीशुद्ध चोख्खा तेमज बदाम, सोपारी, श्रीफळ विगेरे सरस फळ अने शुद्ध स्वदेशी साकर प्रमुखथी बनावेला पक्वान्नरूप नैवेद्य प्रभु पासे ढोईने प्रार्थना करवी के " हे देवाधिदेव प्रभु ! आप मारा जन्म, जरा अने मरणना दुःख निवारो ! मने निर्मळ ज्ञान, निर्मळ श्रद्धा अने सद्वर्तन प्राप्त थाय एवी सुबुद्धि आपो ! माराथी कदि पण लोकविरुद्ध कार्य न थाओ ! हु सदाय न्याय मार्गज चालतो रहु, मारा वडीलोनी सत्याय चाकरी वल्लास प्रेमथी करु, परोपकारना कार्य करु, अने सद्गुरुनो जोग पामी जीवता सुधी तेमनी आज्ञानु अखड पालन करुं, अने मने आपनी कृपाथी इष्ट फळनी प्राप्ति थाय एम

ઇચ્છું છું. વળી હે પ્રભુ! ભવોભવ મુજને આપના ચરણ કમળની સેવના પ્રાપ્ત થાઓ! તેમજ સમાધિયુક્ત મારું આયુષ્ય પસાર થાઓ! અને ભવાંતર (બીજા ભવ)માં પણ મને આપના પવિત્ર ધર્મનુંજ શરણ હો! પરમ પવિત્ર દેવ, ગુરુ અને ધર્મમાંજ મારી બુદ્ધિ સદાય સ્થપાયેલી બની રહો!"

ગુરુતત્ત્વ.

સ્વપર સમય જાણે, ધર્મ વાણી વખાણે,
પરમ ગુરુ કહ્યાથી, તત્ત્વ નિઃશંક માણે;
ભવિક કજ વિકાસે, ભાનુ જ્યું તેજ ભાસે,
ઇહજ ગુરુ ભજો જે, શુદ્ધ માર્ગ પ્રકાસે. ૩

સુગુરુ વચન સંગે, નિસ્તરે જીવ રંગે,
નિરમળ નીર થાયે, જેમ ગંગા પ્રસંગે;
સુણિય સુગુરુ કેશી, વાણિ રાય પ્રદેશી,
લહી સુરભવ વાસો, જે થશે મોક્ષવાસી. ૪

જે સ્વસંપ્રદાયનાં શાસ્ત્ર-સિદ્ધાંતમાં તેમજ પર સંપ્રદાયના શાસ્ત્ર-સિદ્ધાંતમાંનિપુણ હોય-તેમાં રહેલું રહસ્ય સારી રીતે જાણતા હોય અને નિષ્પક્ષપાતપણે (મધ્યસ્થપણે) ભવિજનોને ધર્મ માર્ગમાં જોડવા માટે શાસ્ત્રવાણી સંભળાવતા હોય; જેમને રાજા અને રંક ઉપર સમાન ભાવ હોય એટલે સહુ સહુની યોગ્યતા પ્રમાણે જે નિઃસ્પૃહપણે

(परोपकार बुद्धिथी) धर्म मार्ग बतावता होय, परम गुरु–वीतराग परमात्माना पवित्र वचनानुसारे वस्तु तत्त्वनो निर्णय करीने जे प्रवर्तता होय, जेमणे पर उपाधिनो विवेकथी त्याग करी सकळ उपाधिरहित मोक्षमार्गज आदर्यो होय, एटले जे आतम–साधन करी लेवामां सदाय उजमाळ रहेता होय अने जेम सूर्य पोताना किरणोवडे कमळोने विकस्वर करे छे तेम जे शास्त्रवाणीना प्रकाशवडे भविजनोने प्रतिबोध करे छे, एवी रीते जे शुद्ध–निर्दोष–मोक्षमार्गनुज सतत आलंबन लेवा उपदिशे छे एवा त्यागी वैरागी महात्माओने हे भव्यजनो! तमे सुगुरु तरीके आदरो !! जेम गंगा नदीना समागमथी गमे तेवुं अने गमे त्याथी आवी मळेलुं जळ निर्मळ अने महिमावाळुं बने छे, पारसमणिना संगथी जेम लोढुं होय ते सुवर्णरूप बनी जाय छे, अने मलयाचळना पवननो स्पर्श थवाथी अन्य रुखडां पण चंदनरूप थइ जाय छे, तेम सुगुरुनां अमृत वचननी ऊंडी असरथी जीवनी पण दशा सुधरी जाय छे जीवना अनादि दोषो, जेवाके मिथ्यात्व, अज्ञान, अविरति प्रमुख सुगुरुना उपदेशवडे ओळखीने दूर करी शकाय छे अने आपणा आत्मामांज गुप्तपणे ढंकाइ रहेला रत्नना निधान जेवा निर्मळ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र प्रमुख उत्तम गुणो समजीने आदरी शकाय छे, ए बधो प्रभाव सुगुरुनोज समजवो. जूओ के प्रथम भारे नास्तिक मतिवाळो एवो प्रदेशीराजा पण केशीगणधर महाराजनी अमृत समान अत्यंत हितकारी वाणी सांभळी हालाहल विष समान मिथ्यात्वनो त्याग करीने शुद्ध तत्त्वश्रद्धारूप समकितसहित गृहस्थ योग्य श्रावकोना

वारस्त पाम्यो अने तेने अत्यंत आदरसहित आराधीने पोते प्रथम देवलोकमां उत्पन्न थयो अने त्यां पण समकितनी उत्तम करणी करीने हवे पछी उत्तम मानवदेह पामी मोक्षपद पामशे. तेनी विस्तारथी हकीकत 'रायपसेणी सूत्र' प्रमुखमां जणावेली छे. एणे करीने जीव सुगुरुनी उत्तम सहायवडेज निस्तार पामे छे. माटे सुगुरुनुं आलंबन (आश्रय) लेवानी प्रथम जरुर छे. विनयगुण ए एक अजब वशीकरण मंत्ररुप छे. तेथी बीजा तो शुं ? पण परम त्यागी–निःस्पृही महात्मा पुरुषो पण वश थइ जाय छे. परंतु ते सुगुरु प्रत्ये आचरवानो विनय साचा दीलनो–निष्कपट भावनोज होवो जोइए. सुविनीत शिष्योए सुगुरुने सर्वज्ञ भगवान् समानज लेखी तेमनो सर्व प्रकारे विनय साचववानो छे. खरेखरा विनययोगे आत्मा सकळ कर्ममळथी मुक्त थइ शके छे. उत्तम प्रकारे गुरु–विनय साचववा उपर उपदेशमाळा प्रमुखमां श्री गौतमगणधर, मृगावती, सुनक्षत्र अने सर्वानुभूति तेमज पांथक प्रमुख मुनि जनोनां दृष्टांत सुप्रसिद्ध छे. सुविनीत थवा माटे हरेक आत्मार्थी जने उक्त दृष्टांतो आदर्शरुप करी राखवां जोइए. विनयना पांच प्रकार पण खास लक्षमां राखवा लायक छे. १ भक्ति–बाह्यसेवा, २ हृदयप्रेम–बहुमान, ३ गुणस्तुति, ४ अवगुण–आच्छादन, अने ५ आशातना त्याग. वळी विनयगुणथी सद्विद्या प्राप्त थतां अनुक्रमे समकित (निर्मळ श्रद्धा) अने चारित्र (निर्दोष वर्तन) वडे अविचळ मोक्षपदवीनी पण प्राप्ति थइ शके छे.

धर्मतत्त्व

जळनिधि जळवेळा, चन्द्रथी जेम वाधे,
सकळ विभव लीला, धर्मथी तेम साधे,
मनुअ जनम केरो, सार ते धर्म जाणी,
भज भज भवि भावे, धर्म ते सौख्य खाणी ५
इह धरम पसाये, विक्रमे सत्य साध्यो,
इह धरम पसाये, शालिनो शाक वाध्यो,
जस नर गज वाजी, मृत्तिकाना जिकेइ,
रण समय थया, ते जीव साचा तिकेइ ६

दुर्गति पडता प्राणीने उगारी जे सद्गति पमाडे ते धर्म कह-
वाय छे. ते दान, शील, तप अने भावरूप चार प्रकारनो अथवा
गृहस्थधर्म अने साधुधर्मरूप व्यवहारथी बे प्रकारनो पण कह्यो
छे. साधुधर्म सर्वथा अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अने अ-
किंचनतारूप–पांच महाव्रतरूप (रात्री भोजनना सर्वथा त्याग
सहित) कहलो छे अने गृहस्थ (श्रावक) धर्म स्थूल अहिंसादिक
पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत रूप बार प्रका-
रनो कह्यो छे. अभयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, कीर्तिदान
अने उचितदान एवी रीते दान पांच प्रकारनु छे तेमां अभयदान
अने सुपात्रदान श्रेष्ठ फलदायी छे. दीन अनाथने दुःखी देखी तेनु

दुःख ओछुं करवा जे कंइ आपवुं ते अनुकंपादान कहेवाय छे. भाट चारणादिकने देवुं ते कीर्त्तिदान अने स्वजन कुटुंबी प्रमुखने अव-सरे आपवुं ते उचित दान छे. शील नाम सदाचारनुं छे. सदा-चारने सारी रीते सदा सेवनार सुशील कहेवाय छे. पोतानीज स्त्रीमां संतोष राखी पराइ स्त्री वेश्या प्रमुख साथे खोटो व्यवहार न जोडवो ते पण शीलज कहेवाय छे. समज पामीने अधिक संतोषवडे पोतानी के पराइ कोइ पण स्त्री साथे विषय क्रीडा नज करवी ते शील अति उत्तम छे. शीलव्रतने शुद्ध मन, वचन अने कायाथी पाळनार घणी रीते सुखी थाय छे. शीलव्रत सारी रीते पाळनारनी काया पवित्र अने निरोगी रहे छे. पवित्र शीलवंत स्त्री पुरूषोने क्वचित् कष्ट वखते देव पण सहायभूत थाय छे. उत्तम प्रकारनुं शील पाळवुं ए स्त्री पुरूषोनो श्रेष्ठ शणगार (शोभारूप) छे. सुशील स्त्री पुरूषो ज्यां त्यां यश कीर्त्ति पामे छे. शीलवगरनां स्त्री पुरूषो आवळनां फुल जेवां फुटडां होय तो पण ते नकामां ज्यां त्यां तिरस्कार पामे छे. एम समजी सहु कोइए शील शण-गार सजवानी भारे जरूर छे.

जेम अग्निवडे सुवर्ण शुद्ध थइ शके छे—तेने लागेलो बधो मेल बळी जाय छे तेम तपवडे आत्मा साथे अनादि काळथी लागी रहेलो कर्म—मळ बळी जवाथी आत्मा शुद्ध—निर्मळ थइ शके छे. ते तप बहु प्रकारनो कहेलो छे. १ उपवास, छठ्ठ, अठ्ठम, प्रमुख करवा, २ जरूर करतां ओछुं—अल्प भोजन करवुं, ३ जे ते चीजो मरजी मुजब नहि खातां थोडी जरूर जेटली चीजथीज चलावी लेवुं, ४

रसलोलुपी थइ गमे ते रस कसवाळी वस्तु गमे तेटली नहिं खाता प्रमाणमाज तेनु सेवन करवु, ५ शरीरने सारी रीते कसता रहेवु, विना कारण तेनु हद बहार लालन पालन नहिं करवुं, अने ६ नकामी दोडधाम तजी स्थिर आसन सेववु, एवी रीते बाह्य तप छ प्रकारनो कह्यो छे. बीजो अभ्यंतर तप पण छ प्रकारनो छे. १ जाणता के अजाणता करेली भूल गुरु महाराज पासे कपटरहित जाहेर करी ते बदल गुरुजीए आपेली व्याजबी शिक्षा मान्य राखीने पोतानी भूल सुधारी लेवी, तेमज तेवी भूल वारवार नहिं करवा पूरतु लक्ष राखता रहेवु, २ आपणा वडील-माता, पिता, विद्यागुरु तेमज धर्मगुरु साथे अति नम्रताथी आदर-मर्यादा राखी वर्तवुं, ३ बाळ, ग्लान (रोगी), वृद्ध अने तपस्वी साधु, आचार्य, उपाध्याय तथा सव-साधर्मी भाइ व्हेनोनी यथोचित सेवा भक्ति बजाववी, ४ आत्म कल्याणार्थ धर्म-शास्त्रनु पठन पाठन करवु, ५ स्थिर चित्तथी अरिहंतादि नव पदना उत्तम गुणो विचारवा अने तेवा श्रेष्ठ गुणो आपणामां केम प्रगटे? एवी धारणा-भावना करवी, अने ६ आपणा देह उपरनी ममता तजीने परमात्माना स्वरूपमां तल्लीन थवु. आवी रीते वर्णवेला अभ्यतर तपने पुष्टि मळे तेवी रीतेज प्रथम वर्णवेलो बाह्य तप भाइ व्हेनोए अति आदरसहित सेववो हितकारी छे बाह्य तपथी अनेक फायदा थाय छे. प्रथम तो शरीर-शुद्धि थाय छे-अजीर्णादिक रोग दूर थइ जाय छे, एटले शरीर समधात बन्यु रहे छे-निरोगी रहे छे. तेथी मन उपर बहु सारी असर थाय छे. मनमा खोटा विचारो-कुविकल्पो पेसता नथी, अने

सारा विचारो सहेजे आवे छे. आम थवाथी अभ्यंतर तपने पण सारी पुष्टि मळी शके छे, तेमज शुभ भावना पण सहेजे प्रगट थाय छे. १ शास्त्रमां १ मैत्री, २ मुदिता (प्रमोद), ३ करुणा अने ४ मध्यस्थतारूप चार भावनाओ आवी रीते वतावेली छे.

सहु कोइ जीव सदाय सुखी थाओ! कोइ कदापि दुःखी न थाओ! सहु कोइ सन्मार्ग (सुखदायी—साचा मार्ग) चालो! कोइ कुमार्ग न चालो! एवा प्रकारनी अंतःकरणनी भावनाने **मैत्रीभावना** कहे छे. कोइ पण सद्गुणी जनने देखीने के तेना उत्तम गुणो जाणीने दीलमां राजी थवुं. जेम मेघनो गर्जारव सांभळीने मोर खुशी थइ केकारव करे छे तेम गुणी जनोनुं गुणगान सांभळी मनमां आनंद उभराइ जाय अने आपणने पण तेवा गुण पामवा प्रेम वछूटे—अंतःकरणमां उंडी लागणी पेदा थाय ते **प्रमोदभावना** छे. दीन अनाथने दुःखी देखी तेनुं दुःख ओछुं करवा जे लागणी पेदा थाय ते तेमज आपणाथी ओछा गुणवाळा जीव आपणी बरोबर थाय तो सारुं एम विचारी तेमना तरफ तिरस्कार बुद्धि नहि लावतां अनुकंपा या दयाभरेली लागणी प्रगटे तेने ज्ञानी पुरुषो **करुणाभावना** कहे छे. गमे तेवा पापी निर्दय अने निंदक नादान जीव उपर पण द्वेषभाव नहि राखतां तेनाथी अलग रहेवुं, तेनी साथे राग पण बांधवो नहि तेने ज्ञानी पुरुषो **माध्यस्थ्यभावना** कहे छे. द्वेष करवाथी तेवा अघोर कर्म करनारा सुधरता नथी एटलुंज नहि पण कलेश करवाथी आपणुं तो अवश्य बगडे छे. अने राग बंध करवाथी तेमना कुकर्मने पुष्टि मळे छे. वळी तेना पापकर्मने अ-

नुमोदन आपवा (मळवा)थी आपणे पण पापना भागी थइए छीए माटे तेमनाथी अलग रहवामाज एकांत हित छे.

उपर वर्णवेला दान, शील, तप, अने भावरूप चार प्रकारना धर्ममा भाव मुख्य छे. भावबडेज दीधेलुं दान, पाळेलुं शील अने करेलो तप लेखे थाय छे. भाववगरना दान, शील अने तप लेखे थता नथी. अलुणा धान (भोजन)नी जेम भाववगरनी करणी फीकी फक लागे छे अने भावसहित करवामां आवती सघळी शुभ करणी बहु लहेजत आपे छे. ते माटे शास्त्रमा भावने सहु करतां वधार वखाण्यो छे तेथी आपणे पण भावसहितज शुभ करणी करवी. दानथी दारिद्र दूर थाय छे. शीलथी सौभाग्य वधे छे, तपथी कर्मनो क्षय थाय छे अने भावथी भवनो अंत थइ जाय छे. भावसहित-उल्लासथी सुपात्र-साधुने दोष रहित अन्नादिकनुं दान देवावडे शालिभद्रनी पेरे अन्य भवमा अनर्गल ऋधि मळे छे, अने अनुक्रमे मोक्षपदनी प्राप्ति थइ शके छे. कमके तेवा सुपात्र दानथी साधुना ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने पुष्टि मळे छे अने तेनुं अनुमोदन करवाथी आपणामा पण तेवा उत्तम गुणोनी योग्यता आवे छे. विवेकथी दान देवुं, दान देता खचावुं नहि तेमज उदारताथी दान दीधा बाद मनमा लगार पश्चात्ताप करवो नहि. परतु एम विचारवु के मने आवुं सुपात्र मळ्युं तेथी मारु अहोभाग्य मानुं छुं. फरी एवो सुपात्रनो योग क्यार मळशे ?

शुद्ध-निर्मळ शील पाळवुं एज खरं भूषण छे अने शीलवगरनुं जीवित पशुनी जेवुं नकामुं छे. शुद्ध शीलवडे पोताना शुभ आचार

विचार दीपे छे. शुद्ध शीलनो प्रभाव अचिंत्य चिंतामणि (रत्न) समान छे एम समजी उत्तम स्त्री पुरुषो शील-रत्नने पोताना प्राणथी अधिक साचवे छे. गफलतथी शीलरत्नने गुमावी देता नथी. कोइ पण लुच्चा-लफंगा (हीणां काम करनारा)नी संगतथी दूरज रहे छे. कष्ट वखते पोताना शीलरत्ननुं रक्षण करवा वधारे काळजी राखे छे. खरी कसोटी तेमनी त्यांज थाय छे. भरहेसरनी सझायमां वर्णवेला अनेक सतो अने सतीओ पोताना पवित्र शीलरत्नथी पोतानां नाम अमर करी गया छे. तेमनो उत्तम यश अद्यापि पर्यंत गवाय छे. आपणे पण पवित्र शीलनो अद्भुत प्रभाव समजीने निर्मळ शील पाळवा सदाय सावधान रहेवुं जोइए.

जे ते ठेकाणे भटकता मनने समजावी कबजे राखवाथी अने देहनुं दमन करवाथी तपनो लाभ मळी शके छे. जे भविजनो पोतानी छती शक्तिने गोपव्या वगर तेनो सारो उपयोग करी ले छे तेमने परभवमां पराधीनपणानां दुःख भोगववां पडतां नथी. परंतु जे पोतानी छती शक्तिनो सदुपयोग करता नथी, केवळ प्रमादमांज पोतानो अमूल्य वखत वीतावे छे ते वापडाने परभवमां पराधीनपणे बहु बहु दुःख सहेवुं पडे छे. निर्मळ ज्ञान अने वैराग्यवडे जेमने देह उपरनी ममता उठी गइ छे ते आदीश्वर भगवान् के वीर परमात्मानी पेरे दुष्कर तप करी शके छे. क्षमा-समता सहित करवामां आवतो तप कठण कर्मनो पण क्षणवारमां क्षय करी नाखे छे. अने क्रोधथी करेलो गमे तेटलो दुष्कर तप पण लेखे थइ शकतो

नथी—निष्फळ थई जाय छे. माटे क्षमा राखवा अने क्रोध तजवा तपस्वी जनोए खास काळजी राखवानी छे. दृढप्रहारी जेवा अघोर पापी प्राणीओ पण दुष्कर तपनें प्रभावथी सकळ कर्मनो क्षय करीने मोक्षपद पामी गया छे. एम समजी आपणे पण यथाशक्ति पूर्वे वर्णवेला बने प्रकारना तपमा समतासहित सदाय उद्यम करवो उचित छे. यथाविध तप करवाथी आत्मा सहेजे निर्मळ थाय छे.

उपर जणावेली मैत्री, मुदिता, करुणा अने माध्यस्थ्य भावना भविजनोए स्वपर उपगारी जाणी सदाय सेववी उचित छे. ते उपरात **शान्त सुधारस** प्रमुख ग्रंथोमा वर्णवेली अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व अने अन्यत्व प्रमुख द्वादश (वार) भावनाओ पण आत्माने अत्यत उपकारी—वैराग्य रंगने वधारनारी समजीने सदाय आदरवा योग्य छे. तेनु विशेष वर्णन **प्रशमरति, शात सुधारस** अने **अध्यात्म कल्पद्रुम** प्रमुख ग्रंथोमाथी तेमज तेनी सज्झायोमाथी ग्रहण करी लेवु. 'जेवी भावना तेवी सिद्धि' ए न्याये अंत.करण शुभ भावनामय करी देवु उचित छे. जड वस्तु पण शुभ भावना योगे सुधरे छे तो चैतन्य युक्त आत्मानु तो कहेवुज शुं ? सुगंधी फूलनी भावना देवाथी तेल सुवासित थइ फूलेल कहेवाय छे. तेवीज रीते अन्य पदार्थ आश्री समजवु. विषयरसनी भावनाथी जीव विषयी बनी जाय छे अने शान्तरस (वैराग्य)नी भावनाथी शान्त—वैराग्यमय बनी जाय छे तेथीज कह्युं छे के "**नारी चित्त देखना विकार वेदना, जिनंद चंद देखना शाति पावना**" ए वाक्य बहु मनन करवा

योग्य छे अने तेनुं मनन करीने विषय वासना तजी वैराग्य वासना आदरवी योग्य छे. उपशम, विवेक अने संवर ए त्रण पदनी समज साथे वारंवार भावना करवाथी चिलातिपुत्र जेवो निर्दय जीव पण सद्गति पामेलो छे. एम विचारी आपणे सहुए शुभ लेश्या—परिणाम उपजावनारी भावना सेववीज उचित छे.

साधु धर्म, रात्री भोजनना सर्वथा त्यागसहित संपूर्ण अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अने अकिंचनता योगे पांच महाव्रतरूप वखाण्यो छे. कोइ पण त्रस के स्थावर (हालता, चालता के स्थिर रहेनारा) जीवने मनथी, वचनथी के कायाथी हणवो नहिं, हणाववो नहिं, तेमज हणनारने सारो जाणवो नहिं; पण सहु जीवनी आत्म समान सदा रक्षा करवी ए अहिंसा महाव्रत कहेवाय छे. क्रोध, मान, माया, लोभ, भय के हास्यथी प्रमादवश लगारे असत्य न बोलवुं, पण शास्त्र अनुसारे राग द्वेष रहित जरुर पडतुं प्रिय अने हित वचनज वदवुं तेने शास्त्रकार सत्य नामनुं महाव्रत कहे छे. देव, गुरु के शास्त्रनी आज्ञाविरुद्ध कंइ पण वस्तु तेना स्वामीनी रजा शिवाय राग द्वेषथी सर्वथा नज लेवी ते त्रीजुं अचौर्य नामनुं महाव्रत कहेवाय छे. देव, मनुष्य के तिर्यंच संबंधी विषयभोगनो (रागथी के द्वेषथी) सर्वथा त्याग करवो, दुर्धर मन अने इंद्रियोने वश थइ नहिं जतां तेमने पोताने कबजे राखवा तेने शास्त्रकार चोथुं ब्रह्मचर्य महाव्रत कहे छे. धन, धान्य प्रमुख नव प्रकारना बाह्य परिग्रहनो अने मिथ्यात्व, कषाय अने हास्य प्रमुख १४ प्रकारना अभ्यंतर परिग्रहनो राग द्वेष रहितपणे सर्वथा त्याग

करवो ते पाचमुं अकिंचनता महाव्रत कहेवाय छे.

एवी रीते वर्णवेला पाच महाव्रत रुप साधु–धर्मनु यथार्थ आराधन करवाथी आत्मा जलदी मोक्ष पदनो अधिकारी थइ शके छे. तेथी आपणे पण सारा भाग्ये साधु–धर्मने लायक थइए एम सदाय इच्छवु अने तेटला माटे प्रथम यथाशक्ति गृहस्थ धर्मनु सेवन करवुं. उपर जणावेला पाच महाव्रतो सपूर्ण रीते पाळवा असमर्थने माटे शास्त्रमां ते अहिंसादिक व्रतोने यथाशक्ति थोडा प्रमाणमा पण पाळवा कहेलु छे. एवी रीते अल्प प्रमाणमाज पाळवामा आवता ते अहिंसादिक पाच अणुव्रतो कहेवाय छे. ते उपरात अहिंसादिक व्रतोनी रक्षा अने पुष्टि निमित्ते त्रीजा त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत पण कहेला छे. एम सर्वे मळीने श्रावकना बारव्रत कहेवाय छे. जो गृहस्थ योग्य ते व्रतो अगीकार करवानी इच्छा थाय तो जरुर तेनु स्वरुप सद्गुरु समीपे जइ विनयसहित जाणी लेवु जोइए. परमार्थ समजीने आत्माना कल्याण माटे जो धर्म करणी करीए तो तेथी सरलता साथे अधिक हित थइ शके छे. उपर जणावेला द्वादश व्रतनुं विस्तारथी वर्णन 'श्रावक कल्पतरु' अथवा 'व्रत गाइड' नामना पुस्तकमा अलायदु आपवामा आव्यु छे तेनुं लक्षसहित अवलोकन करी तेमा रही जती शकानु समाधान गुरुगमथी मेळवीने सेपपूर्वक अने प्रमादरहित यथाशक्ति ते ते व्रत सद्गुरु पासे अंगीकार करी पूरती काळजीथी तेनुं पालन करवु उचित छे. एम करवाथी अनुक्रमे साधु–धर्मनी पण प्राप्ति थइ शके छे

जैन शास्त्रोमा सघळा व्रतोनुं मूळ शुद्ध श्रद्धा अथवा स-

मकितव्रत कहेलुं छुं. जेम एकडा वगरनां करेलां मिंडां मिथ्या छे अने एकडा सहित करेलां सघळां मिंडां सार्थक थाय छे तेम समकितवगरनी करणी मिथ्या छे अने समकित सहित करेली सघळी करणी सार्थक थाय छे. समकित--रुचिवंत जीवो आवी रीते प्रतिज्ञा अंगीकार करीने तेने प्रेमपूर्वक पाळे छे—"राग द्वेषादिक दोषमात्रथी सर्वथा मुक्त थयेला अने अनंत ज्ञानादिक गुणोथी अलंकृत थयेला अरिहंत भगवान् मारा देव छे. उपर वर्णवेलां पांच महाव्रतोने सद्गुरु समीपे अंगीकार करी, क्षमादिक दश प्रकारनी उत्तम शिक्षाने सदाय सेवनारा भव्य जनोने तेमनी योग्यता अनुसारे अमृत उपदेश आपनारा सुसाधुओ मारा गुरु छे. अने जिनेश्वर भगवाने भाखेलां जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध ने मोक्ष ए नव तत्त्व मारे प्रमाण छे. आवी रीते शास्त्रोक्त समकित जीवतां सुधी पाळवा हुं बंधाउं छुं." समकितवडे थोडा वखतमां भव भ्रमण मटी जाय छे तेथी तेनो प्रभाव अचिंत्य छे. समकितवंतनु मूळ लक्ष आत्म कल्याण साधवामां होय छे. परंतु तेने कुटुंब प्रतिपालन करवा व्यावहारिक काम करवां पडे ते जेम बने तेम अंतरथी न्यारो रहीनेज करे छे. ए प्रभाव समकित रत्नमोज समजवो. समकित संबंधी ६७ बोलनु सविस्तर वर्णन 'श्रद्धा शुद्धि उपाय' ग्रंथमां अलायदुं आपेलुं छे. समकित (तत्त्वश्रद्धा), श्रावकनां व्रत के साधुनां महाव्रत योग्यता वगर प्राप्त थइ शकतां नथी. जेमने समकितप्रमुख प्राप्त करवानी प्रबळ इच्छा होय तेमने तेवी योग्यता मेळववानी पूरी जरुर छे. सामान्य रीते धर्मरत्ननी

योग्यता मेळववा इच्छता भाइ–व्हेनोए नीचे जणावेला २१ गुणोनो अभ्यास पाडवानी वहु जरुर छे तेनी यादी आ प्रमाणे छे.

१ गंभीरता या उदार दील
२ सुंदर निरोगी शरीर.
३ शान्त प्रकृति–स्वभाव
४ लोकप्रियता (थाय तेवु सद्वर्तन).
५ हृदयनी कोमळता–आर्द्रता.
६ पापनो, परभवनो तथा वडीलनो डर.
७ निष्कपटपणे सरल वर्तन.
८ व्याजवी दाक्षिण्यता राखवी (कोइए करेलां उचित वचननो अथवा करेली उचित मागणीनो आदर).
९ लज्जा–मर्यादा–अदब राखवी.
१० दया–सहुने आत्म समान लेखवा.
११ रागद्वेष रहित निष्पक्षपाती वर्तन
१२ सद्गुण–गुणी प्रत्ये पवित्र प्रेम–राग.
१३ हित–प्रिय–सत्य वचन कथन (विकथा वर्जन अने सत् शास्त्र वचन सेवन).
१४ स्वजन–मित्र कुटुंबीने धर्मरसिक करवा प्रयत्न.
१५ शुभाशुभ परिणाम आश्री सारो विचार पर्यालोचन कोइपण गवय अने हित कार्यनो आरंभ करवानी टेव.
१६ कोइपण वस्तुना गुण दोष सारी रीते जाणवानी पद्धति.

१७ आचार विचारमां कुशळ–शिष्ट पुरुषोने अनुसरी चालवुं. उत्तम पुरुषो पासे तालीम लेवी.

१८ वडीलोनो तथा गुणीजनोनो उचित आदर करवो.

१९ उपगारी लोको माता–पिता–स्वामी विगेरे तथा हितोपदेश देवावाळा गुरु महाराजनो उपगार सदाय स्मरणमां राखवो.

२० त्रिभुवन हितकारी तीर्थंकर महाराज जेवा महापुरुषोनां पवित्र दृष्टांत दीलमां धारी आपणे पण आपणुं कर्तव्य समजीने परोपकार रसिक थवुं.

२१ कोइ पण कार्यमां कुशळता, अल्प प्रयासे कार्य साधी लेवानी चंचळता.

संक्षेप मात्रथी उपर जणावेला २१ गुणो ज्यांसुधी आपणामां पूर्ण रीते खीली नीकळे त्यांसुधी वारंवार काळजीथी ते गुणोनुं सेवन कर्या करवुं जोइए. जेम दुनीयामां जीवे मानी लीधेली अनेक व्हाली वस्तुओ माटे अहोनिश (रात्री दिवस) उद्यम करवामां आवे छे तो ते वस्तु वहेली मोडी पण मळज छे तेवी रीते कमर कसीने जो उपर जणावेला धर्म माटे खास जरूरना गुणो मेळववा प्रयास लेवामां आवे तो ते उपयोगी गुणोनी प्राप्ति थतां आत्मा जलदी धर्मरत्नने योग्य थाय छे. करेलो प्रयास सर्वथा नकामो जतोज नथी. जेम जेम प्रेमसहित जणावेला गुणो खातर अधिक प्रयत्न करवामां आवे छे तेम तेम आपणे ते गुणोनो लाभ वधारे जलदी मेळवी शकीए छीए. सघळा एकवीश नहिं तो ओछामां ओछा अर्धाथी अधिक गुणो तो अवश्य मेळववाज जोइए. तोज

आपणे कइ पण अशे धर्मरत्नने योग्य वनीए छीए, जो वस्त्रने धोई सारी रीते साफ करलु होय तोज तेने रंग यथार्थ रीते चडी शके छे अने भित विगेरने पण घठारी मठारीने सारी रीते आरिसा जेवी साफ करी होय तोज तेनी उपर सारं चित्रामण उठी शके छे, तेवीज रीते उपर जणावेला उत्तम २१ गुणोवडे चित्तरूपी वस्त्रने प्रथम साफ–निर्मळ करवु जोइए, अथवा हृदय–भूमिने यथार्थ शुद्ध करी लेवी जोइए, तोज तेमा धर्म रंग (राग) सारो जामे छे अथवा उत्तम व्रतरूपी चित्रामण तेमा सारी रीते खीली नीकळे छे अने लांवो वखत सुधी टकी पण शके छे. एम समजी आपणे सहुए आ अति अगत्यनी वात उपर पूरतु लक्ष राखी जेम ते २१ गुणोनी प्राप्ति, रक्षा अने वृद्धि वने तेम अधिकाधिक प्रयत्न प्रेमसहित करवो उचित छे. तेनी प्राप्तिवीज आपणे समकित प्रमुख उत्तम धर्मने लायक बनी, सद्गुरुनी कृपाथी आत्माने अत्यंत उपगारी धर्म अल्प प्रयासे पामी शकशुं

जे भाइ ब्हेनो मार्गानुसारीपणाना गुणोनु सारी रीते पालन करे छे, ते जल्दी पवित्र धर्मने पामी शके छे ते गुणोमा प्रथम न्याय नीतिथी प्रमाणिकपणे वर्तीने द्रव्य उपार्जन करवानु कहेलु छे. ते शिवाय विशेषे करीने सुघडता राखवी, सत्संग करवो, परनिंदाथी निवर्तवु, सारा धर्मिष्ट पाडोशमा रहेवु, निर्भय स्थानमा वास करवो, मातापितादिक वडील जनोनी आज्ञामा रहेवु, आवकना प्रमाण-माज खर्च राखवो, बुद्धिना आठ गुण धारवा (शास्त्र साभळवानी इच्छा, शास्त्र साभळवु, तेनो अर्थ समजवो, समजेलो अर्थ याद

राखवो, तर्क–वितर्कवडे गुरु पासे शंकानुं समाधान करी लेवुं, एम करीने तत्त्वज्ञान एटले सत्य वास्तविक परमार्थ युक्त ज्ञान मेळववुं), अजीर्ण छतां–प्रथम खाधेलुं पच्युं न होय त्यां सुधी भोजन नहि करवुं, अकाळे खावुं पीवुं नहीं, धर्म, अर्थ अने कामने पूर्वापर बाधा रहितपणे–विरोधरहित सेववा, गृहस्थ योग्य आगता स्वागता साचववी, हठ कदाग्रहरहित वर्तवुं, लोकविरुद्ध तथा राज्यविरुद्ध तजवुं, ग्रहण करेलां व्रत– नियम दृढ टेकथी पाळवा, काम, क्रोध, लोभ, मद, मान अने हर्षरूप अंतरंग छ वैरीने जीतवा, तेमज इंद्रियोना विषयसुखमां नहि मुंझातां इंद्रियोने वश करवी–तेनी शास्त्रकारे खास भलामण करेली छे. आमांना घणा गुणोनो मोटे भागे प्रथम जणावेला २१ गुणोमां समावेश थइ जाय छे. अहीं टुंकामां बतावेला मार्गानुसारीपणाना ३५ गुणोनुं कंइक विस्तारथी वर्णन हितोपदेश–प्रथम भागमां अने २१ गुणोनुं वर्णन हितोपदेश–बीजा भागमां आपेलुं छे त्यांथी ते काळजी राखी जोइ लेवुं अने तेनो परमार्थ समजी बनतां सुधी पोतानुं वर्तन सुधारी लेवा सुज्ञ भाइ बहेनोए प्रयत्न करवो. आपणा पोताना हित माटे ज्ञानी पुरुषोए आपेली अमूल्य शिखामणोनो आपणाथी बनी शके त्यांसुधी आदर करवाथीज आपणुं श्रेय सारी रीते सधाय छे ए भूली जवुं नहीं. उपर जणाव्या मुजब मार्गानुसारीपणाना ३५ गुणो अथवा धर्मरत्ननी योग्यता माटे कहेला २१ गुणोनो सारी रीते अभ्यास–महावरो राखवाथी अनुक्रमे समकितप्रमुख धर्मरत्ननी प्राप्ति थइ शके छे. तेनो प्रभाव अति अद्भूत छे.

जेम चंद्रमानी ज्यन्नी कज्जाना योग समुद्रनी वेळा वृद्धि पामे छे तेम अधिक धर्म आचरणना योगे सर्व सुख सपदा सहेजे सपजे छे. पवित्र धर्म आचरण प्रमादरहित करी लेवु एज आ मनुष्य जन्म पाम्यानु मुख्य कर्तव्य समजीने हे भविजनो ! सकळ सुखना भंडार समान सर्वज्ञ भाषित धर्मनु तमे अति आदरथी सेवन करो !

ज्या सुधी जरा (वृद्ध) अवस्था आवी पहोची नथी, विविध व्याधिओ प्रगट थइ नथी अने इद्रियबळ घट्यु नथी त्यासुधी धर्म साधन जल्दी करी लेवु ! नहि ता पछी पस्ताशो अने करी शकशो नहि. आ शरीरनो कइ भरुसो नथी जोतजोतामा पाणीना परपोटानी जेम ते नष्ट नष्ट थइ जाय छे माटे चेतवु होय तो जल्दी चेती लेवु नत्त्वातत्त्व, हिताहित, कृत्याकृत्य अने लाभालाभनो विवेकथी विचार करी लेवो एज बुद्धि पाम्यानु फळ छे, यथाशक्ति शुभ व्रत नियम अगीकार करी टेकथी पाळवा एज देह पाम्यानु फळ छे विवेकथी पात्र–सुपात्रनु पोषण करवु एज लक्ष्मी पाम्यानु फळ छे अने सामाने रुचे एवु प्रिय हितकारी वचन कहेवु एज वाणीनु उत्तम फळ छे एम दीलमा खूब समजी रावी समय ओळखी स्वकार्य सुधारी लेवु अने बनी शके तो बीजाने पण उचित सहाय आपता रहेवु

ए पवित्र धर्मनी सहायथीज विक्रमादित्य अने शालिवाहन सुप्रसिद्ध थया धर्मनी कृपाथीज वश बनावटी मनुष्य, हाथी अने घोडा सग्राम समये माना—सचेतन थइ कामे आव्या

जेथी पोतानी आण दाण सर्वत्र पसरी. ए पूर्व करेलां धर्म–पुन्य-नोज प्रभाव समजवो.

सम्यग् ज्ञान अभ्यासयोगेज साची समज आवे छे.

तन धन ठकुराइ, सर्व ए जीवने छे,
पण इकज दुहोलुं, ज्ञान संसारमां छे,
भव जळ निधि तारे, सर्व जे दुःख वारे,
निज पर हित हेते, ज्ञान ते कां न धारे? ७
जव ऋषि इक गाथा, बोधथी भय निवार्यो,
इक पदथी चिलाती–पुत्र संसार वार्यो;
श्रुत भणत सुज्ञानी, मास तुसादि थावे,
श्रुतथी अभय हाथे, रोहिणी चोर नावे. ८

"ज्ञान ए अपूर्व रसायण, अमृत अने ऐश्वर्य छे एम समर्थ शास्त्रकारो कहे छे."

जीवने पूर्व पुन्य जोगे सुंदर–मनोहर–मजबुत–नीरोगी देह मळी शके छे, जेने देखी अन्य जनो चकित थइ जाय छे तेमज तेमां मोहित बनी जाय छे; वळी पुन्य जोगे विशाळ लक्ष्मीनो संजोग थइ शके छे, जेने देखी लोको तेने कुबेर भंडारी प्रमुखनां उपनाम

भाय छे, तेमज पुन्य जोगे जीवने मनमानती म्होटी ठकुराइ, म्होटा मानवंता होद्दा, खीताब विगेर वनायत थाय छे, जे देखी लोको तेनी मुक्त कंठथी प्रशंसा करे छे आ वधु पूर्व पुन्य जोगे जीवने प्राप्त थवुं सुलभ छे दुर्लभ केवळ जीवने साचुं-सम्यग् ज्ञान प्राप्त थवु एज छे भव भवनी भावट भागनार साचुं-सम्यग् ज्ञानज छे. विनय-बहुमान सहित सद्गुरुनी सेवा-भक्ति करता भव्य जीवने वधु साचु तत्त्वज्ञान प्राप्त थइ शके छे तेना फळ अलौकिक कह्यां छे अने एथीज एवा अमूल्य ज्ञान माटे यत्न करवो जरूरनो छे. सद्गुरुनी साचा दीलथी विनय-बहुमान सहित सेवा भक्ति करता तेमनी कृपाथी सहजे सत्य ज्ञान प्राप्त थाय छे, एटले जीवना उपर आवी रहेला कर्मना आवरण ओछा थता जाय छे अने एथी अतरमा ज्ञान उजास-प्रकाश थतो जाय छे, जेथी जीवने सत्यासत्य, हिताहित, कृत्याकृत्य, लाभालाभ, भक्ष्याभक्ष्य, हेयादेय अने गुण दोषनुं सम भान थइ शके छे आनुं उत्कट परिणाम ए आवे छे के जीवने सत्य-हित मार्ग तरफ रुचि-प्रीति वधती जाय छे अने असत्य-अहित मार्ग तरफनी रुचि घटती जाय छे आ रीते अनुक्रमे वधता जता विचार-अभ्यास वडे जीवने चिन्तामणि रत्न सरखा अमूल्य समकितरत्ननी प्राप्ति थइ शके छे. जेम एकडा उपर करेला सरवा मींडा सार्थक थाय छे तेम समकित सहित करवामा आवती सघली करणी लेखे थाय छे, प्रमाद दोष ओछो थतो जाय छे अने क्षमा, मृदुता (नम्रता), सरलता अने सतोषादिक सद्गुणो प्रगट-पणे करवा आत्मा जाग्रत् थतो जाय छे एटले वीर्योल्लास वधतो

जाय छे अने शुद्ध आचार–विचारनो अभ्यास करवा आत्मा समर्थ थइ शके छे. ए रीते विनयपूर्वक करेल सम्यग् ज्ञाननुं आवुं रूडुं परिणाम आवे छे. सम्यग् ज्ञान कहो के आत्म ज्ञान साथे आत्मानुं खरुं हित–कल्याण साधी शके एवी साची करणी भळे छे–एक रस थाय छे त्यारे ते जलदी जीवने जन्म मरणनां दुःखमांथी मुक्त करावी शके छे. जेम जळमां जळनो रस साथेज मळी रहे छे तेम सम्यग् ज्ञानमां साची करणी पण साथेज मळी रहे छे, ते एक बीजाथी विखूटां रहेनांज नथी. पछी ते करणी बाह्य रूपे होय के अभ्यंतर रूपे होय. शुद्ध उपयोग सहित करानी साची करणी सघळां दुःखनो अंत करे छे अने विशेषमां तेथी अन्य अनेक भव्य जीवोनुं पण हित सधाय छे. मतलब के आवा सरल स्वभावी जीवनुं पोतानुं कल्याण तो निःसंशय थाय छे पण एनुं अनुमोदन करनारनुं तेमज यथाशक्ति तद्वत् वर्तन करनारनुं पण सहेजे श्रेय थइ शके छे. आ प्रमाणे अनेक रीते स्वपरने उपकार करनारुं सम्यग् ज्ञान छे एम जो समजवामां आवे तो पछी एवुं अखूट ज्ञान–धन पेदा करवा हे सुखना अर्थी भाइ व्हेनो ! तमे केम उद्यम करता नथी ?

पूर्वे जव नामना ऋषि–मुनिए एक गाथाना बोध मात्रथी मरणनो भय निवार्यो (ए वात शास्त्र प्रसिद्ध छे) अने चिलातिपुत्रे उपशम, विवेक अने संवर रुप पदना परिचय मात्रथी भवभ्रमण निवार्युं. ज्यारे तेणे महात्मा मुनि पासेथी ए पदनुं श्रवण कर्युं त्यारे ते पदनो रहस्यार्थ जाणवानी इच्छा थइ. तत्संबंधी मनमां उंडो आलोच करतां तेने तेनो यथार्थ भाव सूज्यो; एटले तेणे क्रो-

थादिक कषायने शमावी दीधा अने हिताहित, कृत्याकृत्य, यावत् त्याज्यात्याज्यनो निर्णय करी पोताना एक हाथमा रहेलु खड्ग अने बीजा हाथमा रहेलुं सुसीमा कन्यानु मस्तक तजी दीधु. पछी पोते एक महात्मा मुनिनो पेरे कायोत्सर्ग ध्यानमा निश्चळपणे उभा रह्या. त्या रक्त जेवा तीक्ष्ण मुखथी डख मारती अनेक कीडीओ तेने वळगी, जेथी तेनी काया चारणी जेवी थइ गइ तोपण पोते निश्चळ ध्यानथी डग्या नहि अने अढी दिवसमा आ क्षणभगुर देहनो त्याग करी पोते सद्गतिना भागी थया ए सम्यग् ज्ञाननो प्रभाव समजवो सम्यग् ज्ञानना प्रभावथी जीवनु केटलु बधु श्रेय थाय छे? श्रुत ज्ञानना 'मा रुष मा तुष' एवा पदाद अतिरागी पदना प्रभावथी मापतुषादिक कंइक जीवो सुज्ञानी थइ परम कल्याण साधी शक्या छे अने एज श्रुत ज्ञानना जे थोडाक बोल रोहिणिया चोरना कानमा पडी गया हता तेना प्रभावथी ते अभयकुमार जेवा बुद्धिवंतना हाथमा आवी शक्यो नहोतो. अर्थात् प्रभुना मुखथी निकळेला थोडाक वचन तेना कानमा वगर इच्छाए पड्या हता तोपण तेथी ते बची जवा पाम्या हतो ता पछी जे भव्यात्माओ भाव सहित सर्वज्ञ भाषित वचनोनो आदर करे तेमनु तो कहेवुंज शु? तेओ तो अवश्य स्वश्रेय साधी शकेज एम समजी सत्य ज्ञान अभ्यास करवा सहु कोइए चीवट राखवी युक्त छे ए ज्ञान-गुणवडेज अनुक्रमे आत्मा अक्षय सुख पामी शके छे

मनुष्य जन्मनी दुर्लभता अने तेनी अनन्य उपयोगिता.

भवजळधि भमंता, कोइ वेळा विशेखे,
मनुष्य जन्म लाध्यो, उत्तमो रत्न लेखे;
सफळ करु सुधर्मे, जन्म ते धर्म योगे,
परभव सुख जेथी, मोक्ष लक्ष्मी प्रयोगे. ९

मनुष जनम पामी, आळसे जे गमे छे,
शशि नृपति परे ते, शोचनाथी भमे छे;
दुलह दश कथा ज्युं, मानुषो जन्म ए छे,
जिन धरम विशेषे, जोडतां सार्थ ते छे. १०

आ चार गतिरुप संसार सायरमां कर्मवश अरहा परहा अथडातां पछडातां तथा प्रकारनी अकाम निर्जरादिक योगे अनुकूळ समयने पामी जीव चिन्तामणि रत्नसमान अमूल्य मानव भव मेळवी शके छे. एवो अमूल्य–दुर्लभ मानव भव पामीने सर्वज्ञ भगवाने बतावेला दान, शील, तप अने भावरुप धर्मनुं सेवन करी तेने लेखे करी लेवो युक्त छे. अहिंसा, संयम अने तप लक्षण धर्म महा मंगलकारी कह्यो छे. ए धर्ममां जेनुं मन सदाय वर्त्या करे छे तेने म्होटा देव दानवो पण नमस्कार करे छे. ए धर्मनुं यथाविध अखंड

आराधन करनार मुनीश्वरो मोक्षना अक्षय सुख मेळवी शके छे अने मुनि योग्य महाव्रतोने पाळवाने अशक्त एवा जे भव्य जीवो तेनुं देशथी (अंशथी पण) आराधन करे छे ते पण स्वर्गादिक सद्गतिनां चढीयाता सुख संपादन करी अंते अक्षय सुख मेळवी शके छे एम समजी साचा सुखना अर्थी भाइ व्हेनोए प्रमादाचरणथी आ अमूल्य मानव भव वृथा जवा देवो नहि. स्वस्व स्थिति-मर्यादादिक अनुसार सहु कोइए यथाशक्ति व्रत नियमनुं पालन करी आ नरभवने सार्थक करवो जोइए. बुद्धिवळने पामी आपणे आपणुं हिताहित समजी हितमार्गेज आदरवा उजमाळ थवुं जोइए. पुन्य जोगे लक्ष्मी पामीने विवेकसर तेनो जरुर जेवा स्थळमां सदुपयोग करी लेवो जोइए अने वाक्पटुता (वचन वदवामां कुशळता) पामीने प्राणीओने प्रीति उपजे एवां नरमाश भरेलां, मीठाशवाळां अने हितरुप थाय एवाज वचन वदवां जोइए. आ विगेरे दुर्लभ सामग्री पूर्व पुन्यजोगे पामी जे भव्यात्माओ स्वहित करी लेवा सावधान रहे छे तेज पुन्यात्माओ अनुकूळ प्रसंगने पामी पर जीवोनुं पण हित हेडे धरी करी शके छे, अने ए रीते स्वमानवभवने सफळ करे छे. आ मानवभवने चिंतामणि रत्न समान एटला माटे गणेल छे के एना वगर कोइ जीव क्दापि पण अक्षय अनंत मोक्ष सुख मेळवी शकतो नथी. आवा उदार आशयथी उत्तराध्ययन सूत्रमां आ मानवभव दश दृष्टान्ते दुर्लभ वखाण्यो छे. ते साथे आर्यक्षेत्र, उत्तम कुळ, इन्द्रिय पटुता, शरीर सुख, धर्मश्रद्धा–रुचि. सद्गुरुयोग अने व्रत–नियमरुप विरतिना परिणाम ए सर्व उत्तरो-

त्तर पुन्यवडेज प्राप्त थइ शके छे. तेवी दुर्लभ शुभ सामग्री महा पुन्य जोगे पाम्या पछी सुज्ञजनोए स्वपर हित साधी लेवा लगारे आ-ळस करवुं न जोइए. एम छतां आळस–प्रमादथी जे जनो आ शुभ सामग्रीनो जोइतो लाभ लेता नथी, वायदामां ने वायदामांज पो-तानो वखत वीतावी दे छे ते वापडाने पाछळथी शशि रा-जानी पेरे बहुज शोचवुं–पस्तावुं पडे छे. शशि राजाने तेमना वडील बंधुए बहु समजाव्या छतां तेणे विषय तृष्णादिकना परवशपणाथी तेनुं कहेवुं मान्युं न हतुं, जेथी ते माठा परिणामे मरीने नरकमां गयो हतो. त्यां (नरकमां) महा कदर्थना सहन करवी पडी तेथी तेने पोताना स्वच्छंद आचरण माटे बहुज खेद उपजवा लाग्यो पण एथी वळे शुं? झुरी झुरीने पण नरकनी शिक्षा भोगववी तो पडेज, एमां कशुं चालेज नहि. आ वात सहु कोइने एक सरखी रीते लागु पडे एवी छे. तेथी पाणी पहेलांज पाळ बांधवा जेवी अ-गमचेती वापरी स्वपर हित साधनवडे शास्त्रोक्त दश दृष्टांते दुर्लभ मानवभव सफळ करी लेवा चूकवुं नहि, जेथी पाछळथी पस्तावो करवो पडे नहि.

राग द्वेष अने मोहादिक सर्व विकारोथी सर्वथा रहित वीत-राग परमात्मा होय छे. तेमनां परम हितकर वचन एज आगम वचन छे. ए आगम आपणने सत्य मार्ग बतावे छे. ए मुजब चालवाथी आपणो मानव भव सफळज थाय छे.

सज्जनोनी बलिहारी

(सज्जनोना लक्षण अने तेथी थतो स्वपर उपकार.)

सदय मन सदाइ, दुखिया जे सहाइ,
परहित मति दाइ, जास वाणी मिठाइ,
गुणकरी गहराइ, मेरु ज्यु धीरताइ,
सुजन जन सदाइ, तेह आनन्द दाइ ११
जइ दुरजन लोके, दुःख्या दोष देइ,
मन मलिन न थाये, सज्जना तेह तेइ,
द्रुपद जनक पुत्री, अंजना कष्ट योगे,
कनक जिम कसोटी, ते तिसी शीळ अंगे १२

"जेओ सदा मन, वचन अने कायामां पुण्य अमृतथी भरेला होय छे, उपकारनी अनेक कोटियोवडे जेओ त्रिभुवनने सदा संतोष उपजावे छे अने परना परमाणु जेटला (अल्प) गुणने पण पर्वत जेवा समान लेखी पोताना मनमां प्रमोद धारे छे तेवा विरला सज्जनो जगतने पावन करी रह्या छे."

"जेमनुं सद्वर्तन जगतने हितरूप होवाथी अनुसरण करवा योग्य होय छे, जे सदाय गुणग्राही होय छे, परना गुण मात्रने ग्रहण करनारा होय छे वळी जे परना दोष तरफ दृष्टि देता नथी, पोतानामां गमे तेवा सद्गुणो होय छतां जेनो उन्माद गर्व करता

नथी पण सदाय स्वधुना धारण करता रहे छे, तेवा सज्जनो खरे-खर जगत् मात्रने आशिर्वादरूपज गणाय छे. "

सज्जनोनुं दील सदाय दयार्द्र-पारकां दुःख देखी पीगळी जाय एवुं होय छे, दुःखी जनोनां दुःख निवारवा सज्जनो सदाय तननी सहाय आपवा तत्पर रहे छे. जेम तेमनां दुःखनो अंत आवे तेम जोवा अने ते माटे बनतुं करवा तेओ उत्कंठित होय छे. तेमनी वाणीमां एवी मिठाश अने हितबुद्धि होय छे के एथी अन्य जीवोनुं अचूक हित थाय छे तेमज तेओ फिदा फिदा थइ जाय छे. तेओ समुद्रनी जेवा गंभीर आशयवाळा होय छे, जेथी तेओ अनेक गुण-रत्नोने अंतरमां धारण करतां छतां छलकाइ जता नथी. तेओ एवी उत्तम मर्यादा जाळवे छे के जेथी बीजा चकित थइ जाय छे, अने तेमना जेवी उत्तम मर्यादा (आचार-विचार) पाळवा सहेजे ललचाय छे. वळी सज्जन पुरुषो सदाय मेरु पर्वत जेवुं निश्चळ धैर्य धारण करी रहे छे एटले तेओ गमे तेवा अनुकूळ-प्रतिकूळ संयोगोमां समभाव धारी शके छे (सम-विषम समये हर्ष-खेद नहिं करतां तेमां समचित्ते रहे छे) विपत्ति समये तेओ दीनता दाखवता नथी, तेमज सुख-संपत्ति समये गर्व-उत्कर्ष करता नथी. सज्जन पुरुषोनी वृत्ति सदाय सिंहनी जेवी पराक्रमवाळी होय छे. तेओ हरेक प्रसंग डहापणथी काम ले छे. सज्जनतानी वातो घणां करे छे, तेमां केटलाकने तेमां प्रीति पण होय छे परंतु सज्जन पुरु-षोना पवित्र मार्गे चालवानुं बहुज थोडानां भाग्यमां होय छे सज्जनता-थी विरुद्ध वर्तन तेज दुर्जनता छे. तेवी दुर्जनता दाखवनारा दुर्जनो

तेमना जातिस्वभावने लई सज्जन पुरुषोने सताप पण छे. सज्जन पुरुषोमा जे उत्तम अनुकरणीय गुणो होय छे ते तेमने रुचता नथी, तेथी काइक जातना दोष दइ दुर्जनो सज्जनोने वारवार दुहव्या करे छे. पण एवी सज्जनो तेमना उपर द्वेष धारता नथी. सज्जनो तो समभाव पोताना हितना मार्गज चालया करे छे. कह्युं पण छे के—

“जेम जेम काचनने अग्निवडे तपाववामा आवे छे तेम तेम तेनो वान वधतो जाय छे, शेरडीने जेम जेम छेदवामा आवे छे तेम तेम ते मधुर रस समर्पे छे, अने चदनने जेम जेम घसवामा (घसारा देवामा के छेदवामा) आवे छे तेम तेम ते सुगधज आपे छे ए रीते उत्तम सज्जनोने प्राणान्त कष्ट आवी पडे तोपण तेओ पोतानी रुडी प्रकृतिने बगडवा देता नथी ’

तेओ आपत्ति समय घणीज धीरज अने अभ्युदय वखते घणीज क्षमा राखे छे तेओ पोताना कार्य सहुज प्रमाणिकपणे करे छे, छता स्वोत्कर्ष एटले आपवडाइ या आत्मश्लाघा करता नथी तेओ पारका छता के अछता दूषण (अपवाद) बोलताज नथी. पण पोतानाथी बनी शके तेटलो परोपकार करे पण स्पृहा राख्या वगर सहाय करता रहे छे तेओ पोताना मनने निर्विकारी राखे छे जुओ । द्रुपद राजानी पुत्री द्रौपदी (सती) जनक राजानी पुत्री सीता (सती) अने अजना (सती) । एओए आपत्ति समय केवी उत्तम धीरज राखी पोतानु पवित्र शील साचव्युं छे ? सज्जनोनी खरी कसोटी-परीक्षा कटाकटीना वखतेज थाय छे. गमे तेटलु कष्ट आवी पडे तोपण तेवा सज्जनो पोतानो सन्मार्ग लोपता नथी. वळी कह्यु छे के—

" सज्जनोने क्रोध (कषाय) होय नहि, कदाच बीजाना भला-माटे तेवो देखाव करवो पडे तो ते लांबो वखत रहे नहि अने कदि लांबो वखत राखवानी जरुर पडे तो तेनुं माठुं फळ तेसवा पामे नहीं एटलो जागृति एमनामां अवश्य होय छे. "

आ वात बहु अजब अने वखाणवा लायकज छे. सज्जनोनां वचन अमृत जेवां मीठां अने हितकारी होय छे, तेथी ते सहुने प्रिय—आदेय थइ पडे छे. आपणे पण आपणा पोताना, आपणा बाळबच्चांना, कुटुंबना, जातिना, देशना तेमज समाजना भलाने माटे अनिष्ट दुर्जनता दूर करी श्रेष्ट सज्जनता आदरवा सदाय उद्यमी थवुं जोइए.

गुणरागी अने गुणग्राही थवानो जरुर अने एथी उपजता अनिवार्य फायदा.

" आपगुणीने वळी गुणरागी, जगमां तेहनी कीरति
गाजी, लालन, की०" (श्री यशोविजयजी.)

गुण ग्रहो गुण जेमां, ते बहु मान पावे,
नर सुरन्नि गुणे ज्युं, फूल शिशे चढावे;
गुण करी बहु माने, लोक ज्युं चंद्रमाने,
अति कृश जिम माने, पूर्णने त्युं न माने. १२
मलयगिरि कने जे, जंबु लिंबादि सोहे,

मलयज तरु संगे, चंदना तेह होहे,
इमलहिय वमाश्यु, कीजिये संग रंगे,
गज शिर चरनी वेठी, ज्यु अजा सिंह संगे. १४

जेओनामा गुणरागीपणानो अने गुणग्राहीपणानो महान् सद्गुणवर्त छे, तेओनो यशकीर्ति प्रतिष्ठादिकमां घणो वधारो थाय छे. ए महान् सद्गुण तेमनामाज आवी शके छे के जेओ मद–मत्सर–द्वेष–ईर्षा–अदेखाइ नामना महा विकारथी वेगळा होय छे. जेमनुं अतर द्वेषरूप अग्निथी सदाय प्रज्वलितज रहे छे तेमनामा उपरना सद्गुणनी योग्यताज होती नथी. क्रोध अने अभिमान ए द्वेषनाज अंगभूत परिणाम छे. ते ज्यासुधी चेतनजीमा वास करे छे, त्यासुधी चेतनजीथी सामामा गमे एवा उत्तम सद्गुणो होय तोपण ते ग्रहण करीने आदरी शकाता नथी, एटलुज नहिं पण त्यासुधी चेतनजीने ए सद्गुणसबंधी वात पण रुचती नथी. ए तो ज्यारे क्षमा समतादिक प्रधान सत्सगयोगे द्वेषाग्नि अथवा एना अंगभूत क्रोधादिक परिणाम शमी जाय छे अने चेतनजीमा शान्तिनु साम्राज्य स्थपाई जाय छे त्यारे अने त्यारेज सद्गुणोनी वात रुचे छे. सद्गुण प्रत्ये रागबुद्धि प्रगटे छे अने सद्गुणोने ग्रहण करी चेतनजी पोते पण सद्गुणी बने छे हवे ज्यारे चेतनजी पोते सद्गुणी, सद्गुणरागी अने सद्गुणग्राही बने छे त्यारे तो ते देवनी पेरे पूजाय छे, मनाय छे, अने तेना वचन पण बहु मान्य थवा लागे छे. जुओ ! सुगधीपणाना गुणने लीधे म्हाटा भूपतिओ पण पुष्पोने पोताना मस्तक

उपर चढावे छे, ज्यां ते ताज (मुगट)नी पेरे बहु मान पामे छे. कयुं छे के-"गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः" एटले गुणो ज-सद्गुणोज पूजापात्र छे. गुणीजनो जे पूजायमनाय छे ते तेमना सद्गुणोने लइनेज. सद्गुणो वगरनुं केवळ लिंग (वेश) के वय कंइ कामनां नथी. सद्गुणो होय तोज ते बधां लिंग अने वय प्रमुख लेखे थाय छे. ज्यां त्यां सद्गुणोनीज बलिहारी छे. लघुता-धारी (उगता बीजना) चंद्रने लोको जेम बहु माने छे तेम पूर्ण गारवता गौरव-पामेला (पूर्णिमाना) चंद्रने लोको बहु मानता नथी. श्रीमान् चिदानंदजी महाराजे एक ललित पदमां लघुता (नम्रता)ना भारे वखाण कर्यां छे. अने आठ प्रकारना मदनी भारे निर्भंछना पण करी छे, ते वात यथार्थज छे. (लघुता मेरे मन मानी, इत्यादि पदमां). जे कोइ भव्यात्मा गुणी जनोनुं बहुमान (विनय-सत्कार-सन्मान) करे छे तेथी सद्गुणोनुंज बहु मान कर्युं लेखाय छे, अने एवा सद्गुणोने लक्षीनेज ज्यां ज्यां उचित प्रवृत्ति करवामां आवे छे त्यां त्यां तेवा सद्गुणोनी प्राप्ति अथवा योग्यता सहज थाय छे. चेतनजी (भव्यात्मा) ए प्रासुक द्रव्य होवाथी उत्तम संगयोगे तेनामां उत्तमता सहेजे आवे छे. जे दुर्भव्य के अभव्य होय छे तेनेज तेवो उत्तम संग उपकारक थइ शकतो नथी. विषहर-झेरने टाळनार मणि विषधरना मस्तक उपरज छतां तेने तेनो कशी शुभ असर थती नथी, त्यारे तेज मणिथी बीजा कइक मनुष्यादिकनो उपगार थइ शके छे, ए सहज समजाय तेवुं छे. सहृदय मनुष्योनुं तो कहे-

તુંજ શું પણ અદૃશ્ય દેખાતા જબુ લિંબાદિક વૃક્ષો જે મલયગિરિની નજિકમાં આવી રહ્યાં છે તે પણ શુદ્ધ ચંદન વૃક્ષના સગથી ચંદનરૂપ થઇ જાય છે. એમ સમજી મુગ્ધ ભાઇ વ્હેનોએ હર્ષ સહિત સદ્ગુણી એવા વડીલોનો સદાય સમાગમ સેવવો જોઇએ. વળી નીતિશાસ્ત્રકાર કહે છે કે "બાલાદપિ હિતં ગ્રાહ્યં" એટલે લઘુવયવાળા બાળક પાસેથી પણ હિત વચન ગ્રહણ કરી લેવું જોઇએ વયથી બાળક છતાં જો બુદ્ધિ વિશાળ હોય તો તેનું સમયોચિત વચન વયોવૃદ્ધને પણ ઉપયોગી થાય છતાં જો તેને બાળક સમજી તેના વચનની અવગણના કરવામાં આવે છે તો તે પ્રાસંગિક લાભથી વંચિતજ રહાય છે જે સાગરની જેવા ગંભીર હૃદયવાળા હોય છે તેઓ પાસે અનેક ગુણ રત્નોના નિધાન હોવા છતાં ગુણાનુરાગીપણાથી અન્ય અનેક પદાર્થમાંથી ગુણ ગ્રહણ કરી શકે છે. એમ છતાં તેઓ પોતાની લાયકાતનો કે માલિકીનો લગાર ગર્વ કરતા નથી. એવો પ્રભાવ સત્સંગથી પ્રગટેલાગુણાનુરાગનો અને ગુણ ગ્રહણ કરવાની કળાનો સમજવો. વળી જુઓ ! કમળના પત્ર ઉપર જળબિંદુ તે મોતીની આભાને ધારણ કરે છે અને મેરુ પર્વત ઉપર રહેલું તૃણખડું પણ સુવર્ણની આભાને ધારણ કરે છે એ આદિ કુદરતી બનાવો આપણને શુભ આશયથી (ચોખ્ખા દીલથી) સત્સંગ કરવા પ્રેરે છે અને સદ્ગુણના રાગી થવા તેમજ સદ્ગુણ ગ્રહણ કરવા શિખવે છે એક બકરી જેવું ગરીબ જાનવર સિંહના સંગ રાચે ત્યારે માનવના માથે નડી શકે છે તેમાં શું આશ્ચર્ય ?

मार्गानुसारीना ३५ गुणो पैकी प्रथम गुण.

(न्यायाचरण आदरवानी आवश्यकता.)

जग सुजस सुवासे, न्याय लक्ष्मी उपासे,
व्यसन दुरित नासे, न्यायथी लोक वासे;
इम हृदय विमासी, न्याय अंगीकरीजे,
अनय परिहरीजे, विश्वने वश्य कीजे. १५

पशु पण तस सेवे, न्यायथी जे न चूके,
अनय पथ चले जे, भाइ ते तास मूके;
कपि कुळ मिळि सेव्या, रामने शीश नामी,
अनय करी तज्यो ज्युं, भाइए लंकस्वामी. १६

हय गय न सहाइ, युद्ध किर्त्ति सदाइ,
रिपु विजय विधाइ, न्याय ते धर्मदाइ;
धरम नयधरा जे, ते सुखे वैरी जीपे,
धरम नयविहूणा, तेहने वैरी ढोपे. १७

धरम नय पसाये, पांडवा पंच तेइ,
करी युद्ध जय पाम्या, राज्यलीला लहेइ;

धरम नय विहुणा, कौरवा गर्व माता
रण समय विगूता, पाण्डवा तेह जीता १८

न्याय–नीति–प्रमाणिकता ए सर्व एकार्थवाचक पर्याय वचनो गणाय छे अने न्याय–नीतिनुं अवलंबन करीने जे व्यवसाय करवो ते न्यायाचरण कहवाय छे. न्यायी दीलवाळो बुद्धिशाळी होय ते न्यायाचरण करी शके छे. कठोर दीलवाळायी बीजाने यथार्थ इनसाफ आपी शकातो नथी तेथी ठीकज कर्युं छे के न्यायसारे दयानु मिश्रण थवुंज जोइए समर्थ शास्त्रकारो पण कहे छे के— "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् " अर्थात् जे कइ आचरण आपणने पोताने पण विवेक–बुद्धिथी विचारता प्रतिकूल–विरुद्ध जणातु–समजातु होय तेवु आचरण (वर्तन) आपणे बीजा प्रत्ये आचरवु नहि केमके सुख दु खनी, मान अपमाननी, यावत् जीवित मरणनी लागणी सहुने समान होय छे. ज्यारे आम छे त्यारे जे आपणने पोतानेज न गमे–प्रतिकूळ लागे ते बीजाने पण केमज गमे के अनुकूळ पडे ? तेनो विचार प्रथम करवो जोइए. एथीज बीजा पण न्यायी लोको आ वातनु समर्थन करता कहे छे के 'Do unto others as you would be done by' एनी मतलब एवी छे के बीजा पासेथी जेवा अदल न्यायनी तमे इच्छा राखता हो तेवोज अदल न्याय तमे अन्यने आपो. आपता रहो तमने कोइ अधिकारी अन्याय आपे ते तमने रुचे खरो ? नहिज रुचे. तो पछी तमे अन्यने गेरइन्साफ आपो ते तेने पण केमज रुचे? नज रुचे. बीजाना

अन्याय आचरणथी जेम तमारी लागणी दुभाय तेम तमारां अन्यायाचरणथी सामानी लागणी पण दुभाया वगर केमज रहे ? आ वातनो ख्याल दयाळु जनो दीलमां लावी परने प्रतिकूळ थइ पडे एवां अन्यायाचरण करतां सहेजे अटकी शके, अने सहुने आत्मसमान लेखी तेमना प्रत्ये बहुज भल्मनसाइ राखी प्रमाणिकपणे-न्यायाचरणथीज वर्ती शके. एवाज उदार आशयथी कहेवामां आव्युं छे के, "जे परस्त्रीने मातातुल्य लेखे छे, परद्रव्यने पथ्थर तुल्य लेखे छे, अने सर्व प्राणीवर्गने आत्मतुल्य लेखे छे, एज खरा ज्ञानी-पंडित छे." आ रीते न्याय-नीति-प्रमाणिकताना मार्गे चालनारा भव्य जनोज मार्गानुसारी गणाय छे. गमे तेवाना संबंधमां कशा संकोच वगर निर्भयपणे न्याय-नीतिना विहित मार्गे चालवुं ए मार्गानुसारीपणानुं प्रथम अंग छे. न्यायाचरणथी जगत्मां आपणो सुजश विस्तरे छे, लक्ष्मीलीला वाधे छे अने स्थिर थइ रहे छे. पाप-ताप अने आपदा दूर टळे छे. तेमज वळी सहेजे लोको वशवर्ती थाय छे. एम समजी-हृदयमां विमासण करीने न्याय नीतिनो मार्ग मक्कमपणे आदरी अनीतिनो मार्ग सर्वथा तजवो घटे छे. जगत्ने वश करवानो-आपणा तरफ आकर्षवानो ए अद्भूत उपाय छे. जे गमे तेवा संयोगमां पण न्यायाचरण तजतो नथी अर्थात् अनीतिना मार्गने तिलांजलि दइ दृढपणे न्यायनोज मार्ग आदरे छे तेने सत्य न्यायना प्रभावथी पशुओ (निर्दय जानवरो) पण आवीने पगमां पडे छे, अने जे जाणी जोइने अनीतिनो मार्ग आदरे छे तेनो सगो भाइ पण पक्ष (सहाय) करतो नथी. न्यायवंतमां रामचंद्र अने युधिष्ठिरादिक महा-

पुरुषोना तेमज सीता सुभद्रादिक महासतीओना चरित्रो सुप्रसिद्ध छे जूओ। न्यायमूर्ति एवा रामचद्रजीनी सेवामा कपिकुल-गण अति नम्रता सहित हाजर थइ रह्या अने अन्यायकारी रावणने तेनो सगो सहोदर (लघु बिभीषण) तजीने चाल्यो गयो. अने तेणे जइने न्यायवत रामचद्रजीनोज आश्रय लीधो. आथी स्पष्ट थाय छे के सत्य-न्यायमार्गने प्रमाणे सेवनारनो शत्रु पण मित्र थइ जाय छे. त्यारे जाणी जोइने अन्याय आचरनारने तेना बधु-मित्र पण छोडीने चाल्या जाय छे आ तो प्रगट न्याय-अन्यायनु ऐहिक-आ लोक सबधी किंचित् मात्र फळ कह्यु. परलोकमा तो एथी अत्यत गणु फळ स्वर्ग-नरकादिकमां भोगववु पडे छे. आटला उपरथी शाने पण अन्यायाचरण तजीने न्यायाचरण आदरवा सुज्ञ जनो गाढ तो प्रम करवाय. न्यायमार्गने एक निष्ठाथी सेवनार बधी रीते सुखी थाय छे तेने रिद्धिसिद्धि मळे छे. जयकीर्ति वाधे छे अने जयकमळा वरे छे. त्यारे तेथी विरुद्ध वर्तन सेवनार सर्वे प्रकारे हानि पामे छे, पराभव पामे छे अने दु खीदुःखी थइ जाय छे. वळी जुओ। न्यायनीति अने सत्य धर्मना प्रभावे पाचे पाडवो युद्धमा जय पाम्या, राज्यलीला पाम्या अने छेवटे सकळ धर्मनो अत करी तेओ अक्षय अव्याबाध एवु मोक्षनु सुख पाम्या त्यारे अन्याय-अनीति अने अधर्मना मार्गेज चालनारा दुर्योधन प्रमुख कौरवो रणसंग्राममां पराभव पामीने भूडा हाले मुआ अने मरीने महा माठी गति पाम्या. एम समजी सहु सुज्ञ भाइ बहेनोए आज क्षणथी अन्यायाचरण तजी दइने शिष्ट पुरुषोए सेवित न्यायाचरणनुज दृढ आलबन लेवा प्र-

तिज्ञा करवी उचित छे. स्वकर्त्तव्यकर्म ने प्रमाद रहित निष्कामपणे करनार न्यायीनी पंक्तिमां आवे छे.

प्रतिज्ञापालन.

कुशळ प्रतिज्ञा करीने कुशळताथी पाळवा हितवचन.

शुभ अशुभ जि कांइ, आदर्युं ते निवाहे,
रवि पण तस जोवा, व्योम जाणे वगाहे;
करि गहित निवाहे, तासने सत्त आपे,
मलिन तनु पखाले, सिंधुमां सुर आपे. १९

पुरुष रयण मोटा, ते गणिजे धराए.
जिण जिम पडिवज्युं, ते न छंडे पराये;
गिरीश विष धर्यो जे, ते न अद्यापि नाख्यो,
दुरगति नर लेइ, विक्रमादित्य राख्यो. २०

" शुभ के अशुभ जे कांइ आदर्युं—कबुल कर्युं तेने जे निर्वहे छे तेने जोवा माटे जाणे सूर्य आकाशमां अवगाहन करे छे (फरे छे). वळी तेज सूर्य गृहित करीने जे निर्वहे छे तेने सत्त्व (बळ) आपे छे. अने मलिन शरीरने पखाळे छे (स्वच्छ करे छे) तेमज सिंधुमां सुर आपे छे अर्थात् शूरवीर माणसने प्रतिज्ञा पाळवा प्रेरणा करे छे. १९ आ धरा जे पृथ्वी तेमां मोटा पुरुषरत्न तो तेनेज गणवा के जे जेवी रीते अंगीकार कर्युं होय तेने प्राये छांडे नहीं (निर्वहे).

जुओ ! गिरीश जे शिव तेणे विषने अंगीकार कर्युं तो त हजु मूकी नाखी दीधु (तजी दीधुं) नथी अने दुर्गत कं० दुर्भागी नर जे पुरुष तेने लइने विक्रमादित्ये पण राख्यो छे (तजी दीधो नथी) आ बने दृष्टांतो लौकिकना छे." २०

सुबुद्धिजननु ए कर्तव्य छे के प्रथम तो जे कइ प्रतिज्ञा करवी ते दक्षताथी–डहापणथी–दुरदेशी राखीने तेनु परिणाम अने पोतानु सामर्थ्य–शक्ति विचारीनेज करवी जे करवाने पोते शक्त होय, जे करवु हितरूप होय अने जेनु परिणाम सुंदर आववा संभव होय एवुज कार्य करवा डहापणथी निश्चय करवो अने पछीथी तेवा करला निश्चयथी गमे तेवा भोगे पण डगवुं नहि, दुनियामा त्रण प्रकारना प्राणीओ मळी आवे छे–अधम, मध्यम अने उत्तम. तेमा जे अधम कोटिना जीवो छे तेओ तो अज्ञान अने मोहनी प्रबळताथी केवळ कायरता धारीने गमे तेवा शक्य कार्य–अनुष्ठानने आदरताज नथी बीजा जे मध्यम कोटिना जीवो छे ते जो के कोइ ज्ञानी पुरुषोना मुखथी कंइ कार्य–अनुष्ठाननो प्रभाव–महिमा सांभळीने तेनो आदर करे छे खरा, पण ते करता कइ विघ्न आवी पडता आदरेला कार्यनो अनादर करी तेने तजी दे छे, अने जे उत्तम कोटिना जीवो होय छे तेओ तो पूर्व महापुरुषोनी पेठे दीर्घदृष्टिथी हितकारी कार्यने ज निज शक्ति–सामर्थ्यनो पूरतो ख्याल राखीने आदरे छे अने आदरला कार्यनो प्राणात कष्ट आव्ये छते पण पूर्णोत्साहथी निर्वाह करे छे. तेओ आदरेला कार्यने गमे तेवा प्रतिकूळ संयोगोमां अधवच लटकतुं मूकता नथी आवा उत्तम पुरुषोनी दृढ टेक निरखवाने

माटेज होय तेम सूर्य अने चंद्रादिक आकाशमां फरता रहे छे. शास्त्रकार कहे छे के सात्विक प्रकृतिना जीवो जेनो स्वीकार करे छे—जे कार्य करवानो निश्चय करे छे ते कार्यने पूर्ण करता सुधी तेने निर्वहे छे. तेमनुं संकल्प बळज एवुं सुदृढ होय छे के गमे तेवां विघ्न—अंतराय मार्गमां आव्या छतां लगारे डग्या वगर तेओ पोते आदरेलुं कार्य पूरुं करी शके छे. तेमनी आवी दृढ धारणा अथवा टेकथी तेमनुं सत्व वधारे ने वधारे प्रमाणमां खीलतुं जाय छे. तेथी तेओ गमे तेवां दुष्कर—कठण काम करवा हाम भीडी शके छे अने ते पार पाडे पण छे. साहसिकपणाथी तेओ घणां अगत्यनां काम आदरीने पार उतारी शके छे, अने बीजा अनेक जीवोने तेमना जीवता दाखलाथी बोध आपता रहे छे. जे जीवो पोतानी छती शक्ति छुपावीने कायरपणुं धारी बेसी रहे छे तेओ कशुं स्वपर हितरूप कार्य करी शकता नथी पण जेओ निज शक्तिने फोरवी तेनो जेम जेम सदुपयोग करता रहे छे तेम तेम तेमने कार्यनी सफळताथी प्रतीति आवती जाय छे के पोते पोताना वीर्य—पुरुषार्थवडे जे कंइ कार्य करवा इच्छशे ते कार्य सुखेथी करी शकशे. शास्त्रकार आगळ वधीने कहे छे के तेओज दुनिआमां म्होटा पुरुषरत्नो गणाय छे के जेओ पोते समजपूर्वक आदरेलुं अंगीकार करेलुं गमे ते कार्य अधवच तजी देतां नथी पण तेने पार पहोंचाडवा संपूर्ण श्रम उठावे छे. फक्त ज्यारे लाभने बदले गेरलाभ अथवा हितने बदले अणहित थतुं जणाय त्यारेज पोताना कार्यआग्रहने शिथिल करी नांखे छे. ते वगर तेओ सक्रमपणे स्वकर्तव्य कर्मने बजाव्याज करे छे. ते उपर शास्त्रकारो अनेक दृष्टांत

बतावी आपी आपणने शक्यारंभमां उत्साहित थवा, हितरूप कार्य आदरवा अने ते करता नडता विघ्नोथी डर्या वगर इच्छित कार्यने पार पाडवा उत्तम प्रकारनो बोध आपे छे. देव गुरुनी साक्षीए व्रत नियमादिक समजपूर्वक आदरी लेवा माटेनो शास्त्र उपदेश हितबुद्धिथीज योजायेलो छे केवळ आपणी मेळे आदरेला व्रतनियम पाळवामां शिथिलता थवा पामे अने तेने तजी पण देवामां आवे छता आदरेला व्रत नियम पाळवामा-सेववामां आवता प्रमाद दूर करवा भाग्येज कोइ प्रेरक मळे. पण पच साक्षीए आदरेला व्रतनियमो पाळवामां ज्यारे शिथिल परिणाम थयेला जोवामां आवे त्यारे तेमां थती शिथिलता दूर करवा प्रेरणा करनारा गुरु प्रमुख मळी आवे अने फरी सावधान थइ आदरेला व्रतनियमो प्रमादरहित पाळवा शक्तिवान् थवाय आवो लाभ पच साक्षीए व्रतनियम आदरवामां रहेलो छे. ज्यारे तीर्थंकर देव जेवा समर्थ पुरुषो सिद्ध भगवाननी साक्षीए महाव्रत उच्चरे छे त्यारे शु आपणु ए कर्तव्य नथी के शुद्ध देवगुरुनी साक्षीए आपणे पण आदरवा योग्य व्रतनियम आदरीने ते बधा प्रमाद रहित थइ पाळवा. कटलाएक सत्पुरुषो सिंहनी पेरे शुरवीरपणे व्रत नियमो अंगीकार करीने सिंहनी परेज शूरवीरपणे ते बधाय निर्दोष रीते पाळे छे. केटलाएक शीयाळनी पेरे शिथिल परिणामथी व्रतनियमने आदर्या छता पाछळथी सद्गुरुना अनुग्रहथी निर्मळ ज्ञान अने श्रद्धानु बळ मेळवी आदरेला व्रत नियमोने सिंहनी पेरे शूरवीरपणे पाळे छे केटलाएक वळी शरुआतमा शुभ वैराग्यादिकना बळथी सिंहनी पेरे व्रतनियम आदरे छे पण

पाछळथी विषय सुखनी लालचमां लपटाइने अथवा क्रोधादिक कषायने वश थइने आदरेलां व्रतनियम पाळवामां शियाळनी पेरे केवळ शिथिल परिणामी बनी जाय छे. त्यारे केटलाएक मंद परिणामी जीवो प्रथमथीज शियाळनी पेरे व्रतनियम आदरीने छेवट सुधी तेवीज मंदता अथवा शिथिलता धारे छे. छेल्लो प्रकार बील्कुल आदरवा योग्य नथी. पहेलो अने बीजो प्रकार आदरवा लायक छे, अने त्रीजो प्रकार पण जेओ मंद परिणामथी व्रत आदरताज नथी ते करतां घणोज चढीआतो छे. केमके शरुआतमां शुभ वैराग्ययोगे व्रतनियम शूरवीरपणे आदरतां ते घणां एक कर्मनो क्षय करी शके छे; आ बधी वात लक्षमां लइ सर्व साधु तेमज श्रावकजनोए निज निज अधिकार उचित व्रतनियम सिंहनी पेरे आदरी तेनो सिंहनी पेरे शूरवीरपणे निर्वाह करवा लक्ष राखवुं.

प्रतिज्ञा घणा प्रकारनी होय छे, तेम घणी रीते ते प्रतिज्ञा करवामां आवे छे. कोइ पण कार्य मनथी, वचनथी के कायाथी करवानी कबुलात आपवी, संकल्प करवो, निश्चय बांधवो ए ते कार्य संबंधी प्रतिज्ञा करी कहेवाय छे. प्रतिज्ञा करी एटले ते कार्य करवुंज. पछी जे शरतथी जेटला समये (काळ मर्यादाथी) जेवी रीते करवा कबुल्युं होय तेम ते कार्य करवुंज जोइए; अने एथीज कोइ पण कार्य करवानी कबुलात आप्या पहेलां आ कार्य केवुं छे ? करवुं शक्य छे के अशक्य छे ? वळी आसपासना स्थिति संयोगो केवा छे ? अनुकूळ के प्रतिकूळ ? ए बधी वात लक्षमां राखवी जोइए. दीर्घदर्शी, विचारशील अने शक्य आरंभने करनार पोतानी आदरेली प्रतिज्ञा

पूरी करी शके छे, अने पछी पण आगळ वधी शके छे. तीर्थंकर जेवा समर्थ ज्ञानी पुरुषोना चरित्रोमां मस्तार करवामां आव्युं छे के तेओ 'दव्वे दव्वा पडन्ने' एटले डाह्या अने डहापण भरेली प्रतिज्ञाने करनारा हता. तेओ जेम तेम जेवी तेवी (पाछळथी पोताने घणी कफोडी स्थितिमां नाखी मूके एवी गाढी) प्रतिज्ञा करता नहि. अने ग्रहण करेली (निपुणताथी नीर्वाहपणे शक्य जाणीने आदरेली) प्रतिज्ञाने गमे तेटलो आत्मभोग आपीने पण पूर्ण करता उत्तम प्रतिज्ञा एवी होवी जोइए ज्हाय तो महा भगीरथ प्रतिज्ञा होय के अल्प प्रतिज्ञा होय. गमे तेवी शुभ प्रतिज्ञाथी लगारे डग्या वगर आदरेली प्रतिज्ञाने पूर्ण करवा पूरतो प्रयत्न प्राणांत सुधी कर्या करवो ए उत्तम कोटिवाळानुं लक्षण छे. मध्यम कोटिवाळा वड पण कार्य विशेष लाभवाळुं जाणी करवा प्रतिज्ञा ले छे पण उक्त कार्य करता भारी पडेला विघ्नोथी डरी जइ ते कार्य पडतुं मूकी दे छे. त्यारे जे निकृष्ट कोटिना कायर जनो होय छे ते तो गमे तेवा लाभकारक कार्य भणी प्रतिज्ञा करता पण लाज मरी उठे छे आवा कायर-निर्बळ मनना माणसो कइ महत्वनी प्रतिज्ञा करवाने लायक नथी. अन्यना आग्रहथी के दाक्षिण्यतादिकथी कदाच ते कंइ शुभ कार्य करवा प्रतिज्ञा करे छे तो ते बहुधा पूरी करी शकता नथी जो के गमे ते शुभ कार्य करवा प्रतिज्ञा करीने ते पोतानेज पाळवानी छे, परंतु ग्रहण करेली प्रतिज्ञानुं विस्मरण न थाय. कदाच दैवयोगे विस्मरण थयुं तो तेनुं संस्मरण करावी शकाय ए आदि अनेक शुभ हेतुथी पण सात्त्विक प्रतिज्ञा करवा-कराववानो

व्यवहार प्रचलित छे. लौकिक पण महत्वना काम पंच साक्षिक करवां पडे छे तो पछी लोकोत्तर शुभ कार्यनुं कहेवुंज शुं? तेमां तो '[1]अरिहंत, [2]सिद्ध, [3]साधु, [4]शासनदेवता अने [5]प्रतिज्ञा करावनार आत्मा' ए पंच साक्षिक प्रतिज्ञा करवामां आवे छे. अने प्रतिज्ञा करनार गुरुने साथे गणतां षट् (छ) साक्षिक प्रतिज्ञा थाय छे. शास्त्र वचनने मान आपी उक्त साक्षि पूर्वक जे शुभ प्रतिज्ञा करवामां आवे छे ते पाळवामां घणी सरलता थइ जाय छे अने जे कोइ आप इच्छाथी केवळ आत्मसाक्षिकज प्रतिज्ञा करे छे तेने ज्यारे कर्मयोगे प्रतिज्ञाथी चूकी जवानो प्रसंग आवे छे त्यारे तेने उद्धरनार एटले योग्य टेको आपी पाछो प्रतिज्ञामां जोडनार के स्थिर करनार भाग्येज मळे छे. तेथी कइक जीवो नीचे लवडी पडे छे, ए दोष व्यवहार मार्गनो अनादर (उपेक्षा) करवाथी प्राप्त थाय छे. तेथी सुज्ञ जनो व्यवहार मार्गनो अनादर करता—करावता के अनुमोदता नथी केमके एम करतां तो व्यवहारनो लोपज थइ जाय अने एथी सर्वज्ञ—आज्ञानी पण विराधना करी कहेवाय. एम होवाथीज जो के सहु आत्माओ सत्ताए समान छे तो पण गुरु शिष्यादिकनो तेमज व्रत पच्चखाणादिक लेवा देवानो पण व्यवहार प्रवर्ते छे, अने ए रीते व्यवहार धर्मनुं सरलपणे सेवन करतांज आत्मा अनुक्रमे अनादि विषय वासनाने तेमज मिथ्यात्व कषायादिक दोषजाळने छेदी शुद्ध स्फटिक समान निज शुद्ध स्वभावने प्रगट करी शके छे. माटे ठीकज कह्युं छे के—

" मारग अनुसारी क्रिया, छेदे सो मतिहीन,
कपट क्रिया बळ जग ठगे, सोभि भवजल मीन "
(समाधि तंत्र)

तेमज—

" निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी, पाळे जे व्यवहार,
पुन्यवंत ते पामशेजी, भव समुद्रनो पार
मनमोहन जिनजी ! "

ए आप्तिक प्रमाणो निर्दंभपणे शास्त्र वचनानुसार शुद्ध लक्ष पूर्वक शिष्ट जनोए कहो के श्री तीर्थंकर गणधर प्रमुखे आचरेलो अने प्ररुपेलो व्यवहार मार्ग स्वहित रुप समजी निष्काम बुद्धिथी सेववा योग्य छे एम पूरवार करे छे आटलुं प्रसंगोपात उपयोग जाणीने हवे करी मूळ मुद्दा उपर आवशुं प्रतिज्ञा ग्रहण करवाना संबंधमा नीतिशास्त्रमा कहेवामा आव्युं छे के " जे कार्य करवु शक्य न होय अथवा तो ते करवा पूरतुं आपणु वीर्य उत्थान कहो के सामर्थ्य पण न होय तो तेनो आरंभज न करवो ए बुद्धिनुं प्रथम लक्षण छे अने आरंभेला कार्यनो यथार्थ निर्वाह करवो ए बुद्धिनु बीजुं लक्षण छे." मतलब के महद यथाशक्ति—स्वशक्ति गोपव्या वगर स्वस्व उचित शुभ कार्य करवाज जोइए. कोइपण कार्य गजा उपरांत करवाथी मूळमां क्षति न आवे पहला माटे उपकारी एवा ज्ञानी पुरुषो आपणने सावचेतपणे हितकार्य करवा शिखामण आपे छे के—जे कार्य परमार्थ समजीने यथार्थ विधिथी करवामा आवे छे ते आपणने परिणामे सुखकारी अने लाभदायी नीवडे छे. जे सज्जनो

स्वप्रतिज्ञामां सुदृढ रहे छे तेओ महापुरुषनी पंक्तिमां लेखाय छे. तेमनी प्रसंगे कसोटी पण थाय छे. तेवे प्रसंगेज पोतानी अटल टेकनी खात्री थइ शके छे. उत्तम कोटिना जनो तो पोतानी प्रतिज्ञामां बहुज अडग रहे छे. खरेखर एओ प्रशंसवा योग्यज छे.

आ प्रसंगे कहेवुं उचित छे के नीतिशास्त्रमां तेमज धर्मशास्त्रमां कुशळ होय छे तो स्वोचित प्रतिज्ञा ग्रहण करवामां तथा तेनुं काळजीथी पालन करवामां कुशळता दाखवी शके छे, अन्यथा ग्रहण करेली प्रतिज्ञामां स्खलना थइ जवानो भय कायम रहे छे. प्रतिज्ञा करवामां जेटला पुरुषार्थनी जरुर छे तेथी अधिक पुरुषार्थनी जरुर प्रतिज्ञाने कुशळताथी पाळवामां रहे छे. तेथी जे भव्यात्माओ पोताना पुरुषार्थनो उपयोग उपकारी–ज्ञानी गुर्वादिकनी हितशिक्षा अनुसारे करवा तत्पर रहे छे ते स्व उचित प्रतिज्ञाने आदरी सुखे पाळी शके छे. अने एम करीने अन्य अनेक आत्मार्थी सज्जनोने उत्तम दृष्टांतरूप पण थइ शके छे. आपण सहुकोइने एवी सद्बुद्धि अने एवुं आत्मबळ प्राप्त थाओ ! छेवटे सत्य (कुशळ) प्रतिज्ञा करीने तेने कुशळताथी पाळनारा पुरुषार्थी [1]सज्जनोने आपणो पुनः पुनः नमस्कार ! ! !

उपशमगुण आदरवा आश्री उपदेश.

उपशम हितकारी, सर्वदा लोकमांही,
उपशम धर प्राणी, ए समो सौख्य नांही;

[1] संयम धुरनार अने निर्वहनार महा सत्त्वशाळी साध्वादिक.

तप जप सुरसेवा, सर्व जे आदरे छे,
उपशम विण ते ते, वारि मंथ्या करे छे. २१
उपशम रस लीनो, जास चित्ते विराजी,
किम नरभव केरी, ऋद्धिमां तेह राजी,
गज मुनिवर जेहा, धन्य ते ज्ञान गेहा,
तप करी कृश देहा, शांति पियुख मेहा २२

" उपशम आ लोकमां सर्वदा हितकारी छे तेथी हे प्राणी ! तुं उपशमने धारण कर. ए समान बीजुं कोइ सुख नथी. उपशम विना तप, जप, सुरसेवा एटले देवभक्ति–ए सर्व जे आदरे छे ते फोगट पाणी वलोवे छे २१ उपशम रसनी लहेजत जेना चित्तमां विराजमान थइ होय छे ते प्राणी नरभवनी ऋद्धिमां केम राजी थाय ? जुओ ! गजसुकुमाळ मुनि ! धन्य छे ज्ञानना घर एवा ते मुनिने ! के जेमणे तपे करीने देहने कृश (दुर्बळ) करी नाखी अने शांतिरुप पियुप जे अमृत तेनो मेघ (वरसाद) पोताना आत्मामां वरसाव्यो २२ "

क्रोधादिक कषायना कटुक विपाक विचारीने ते ते क्रोध, मान, माया अने लोभ थवा पामे तेवा नवला कारणोथी समजीने दूर रहवु,तेवां खोटां कारणोज न सेववा अने तेम छतां कइ निमित्त पामीने ते क्रोधादि कषाय उदयमा आवे तो तेमने तरत दबावी देवा, जेथी तेना माठा फळ बेसवा पामे नहिं. श्रीमान् उपाध्यायजी क्रोध संबंधी पापस्थानकनी सझायमां कहे छे केः–

'न होय होय तो चिर नहि, चिर रहे तो फळ छेहोरे;
सज्जन क्रोध ते एहवो, जेहवो दुर्जन नेहोरे.'

इत्यादि सूक्त वचनोमां बहु उत्तम रहस्य रहेलुं छे. तेओथी स्पष्ट जणावे छे के सज्जन पुरुषोने क्रोध (उपलक्षणथी मान, माया अने लोभ) होय नहि; कदाच कंइ प्रशस्त कारणसर तेवो क्रोधादिकनो देखाव थवा पामे तोपण ते वधारे वखत टके नहि, तेम छतां तेवाज कारण विशेषथी कंइ वधारे वखत सुधी टकवा पामे तो तेनाथी कशुं माठुं फळ तो बेसवा नज पामे, केमके ते कंइ प्रशस्त कारणसर बहारना देखाव रुपेज–अंतरमां सावधानपणुं साचवीने सेवेलो होवाथी तेनुं अनिष्ट परिणाम आववा पामे नहि. फळ–परिणाम आश्री दुर्जनना स्नेहनी तेने उपमा आपवामां आवी छे ते खरेखरी वास्तविक छे. केमके दुर्जनने खरो स्नेह–राग–प्रेम प्रगटेज नहि–तेनो स्नेह स्वार्थ पूरतोज होय; कदि तेवो स्नेह थाय तो ते अल्प कालज टके, तेम छतां खास तथा प्रकारना स्वार्थने लइने लांबो वखत देखावरुपे तेनो स्नेह जणाय तोपण तेनुं फळ कंइ शुभ परिणामरुपे थवा पामेज नहि. तेवीज रीते सज्जनोने कूडा क्रोधादि कषाय थायज नहि अने कदाच कंइ प्रशस्त कारणसर थवा पामे तो ते कारण पूरतो वखत रही कंइ पण अनिष्ट फळ–परिणाम उपजाव्या वगर जेमना तेम पाछा शमाइ जाय. कषाय वगरनी शान्त वृत्ति सदा सर्वदा हितकारीज छे, एवी शान्त वृत्तिनुं सेवन करवा समान बीजुं सुख नथी. एम समजी हे सुज्ञ जनो! तमे जरुर शान्त वृत्ति सेवो. एवी शान्त–उपशान्त–प्रशान्त वृत्ति वगर जे कंइ तप

जप प्रभुपूजादिक करणी करवामा आवे छे ते बराबर लेखे थती नथी, परतु जो ते सघळी करणी समता राखीने स्थिरवृत्तिथी करवामा आवे छे तो सफळ थइ शके छे स्थिर-शान्त चित्तथी करवामा आवती करणीमा कोइ अपूर्व रस, लहजत या मीठाश होय छे समता रसमा लीन चित्तवाळाने कशु दु ख स्पर्शी शकतु नथी समता रसमा निमग्न चित्तवतने सर्वत्र गाम अने अरण्य तेमज दिवस अने रात समान लागे छे.

ज्यार नाना प्रकारना राग, द्वेष अने मोहवश उपजता विकल्पो शमी जाय छे, अने सघळो विभाव या परभाव तजीने सहज स्वरुपने अवलंबी रहेवाय छे-एवु परिपक्व ज्ञान प्राप्त थाय छे त्यारज चेतन खरो समवत या समतावत थयेलो लेखाय छे कर्मनी विचित्रताथी थती अवस्थानी विचित्रता तरफ दुर्लक्ष करी शुद्ध स्वरुपना लक्षथी सहु प्राणीवर्गने समान लेखनार समतावतनुज खरेखर श्रेय थाय छे. उपशमजनित आवी आत्मलीला या सहज सुख समृद्धि जे महानुभाव मुनिजनोने प्राप्त थइ छे तेमनी पासे सुरपति असुरपति के नरपतिनु पौद्गलिक सुख शा हिसाबमा छे? ते सघळा सुख करता निरागी अने नि स्पृही एवा शम साम्राज्यवत महामुनिओनु सुख खरेखर अलौकिकज छे. केमके ए सघळा उपर जणावेला इन्द्रादिकना सुख सयोगिक होवाथी अवश्य वियोगशील होय छे त्यारे मुनिजनोने प्राप्त थयेल शम-उपशम-प्रशम जनित सहज स्वाभाविक सुखशान्ति अलौकिक अने चिरस्थायी होय छे तेथीज श्रीमान उपाध्यायजीए ठीकज कह्यु छे के -

'क्षमा सार चंदन रसे, सिंचो चित्त पवित्त;
दया वेल मंडप तले, रहो लहो सुख मित्त.'
'देत खेद वर्जित क्षमा, खेद रहित सुखराज;
तामें नहि अचरिज कछु, कारण सरिखो काज.'

मुज्ञ जनोए जे जे कारणोथी क्रोधादि कषायनो उदय थाय ते ते कारणोथी अलगा रहेवुं अने जे जे कारणोथी कषाय उपशान्त थाय तेवां कारणोनुं सेवन करवुं जरूरनुं छे. (गजसुकुमाळादिक महामुनिओनी पेरे.) ज्यां क्रोध प्रगटे छे त्यां तेनो सहचारी मान पण प्रगटे छे अने ज्यां ए क्रोध मान रूप द्वंद्व प्रगट थाय छे त्यां माया अने लोभ ए द्वंद्व पण साथे प्रगटे छे. उक्त चारे कषायना तापथी परितप्त जीवने क्यांय लगारे सुख—शान्तिनी प्राप्ति थइ शकती नथी. एटलुंज नहि पण अनेक प्रकारना कुविकल्पोथी तेने भारे अशान्ति रह्या करे छे अने तेने वश थइने ते एवां पाप कर्म आचरे छे के जेथी जीवने वारंवार जन्म मरणनां दुःख सहेवां पडे छे. आवा अनंत असह्य दुःख उक्त कषायने शान्त—उपशान्त—प्रशान्त करवाथी उपशमे छे. तेथी दुःख मात्रनो अंत करवा अने सुख मात्रने स्वाधीन करवा इच्छनारे अवश्य उक्त कषाय मात्रने उपसमावी देवा जोइए. कषाय मात्र शान्त थइ जवाथी विकल्प मात्रनो अंत आवशे, अने सहज निर्वीकल्प समाधिने पामी परम समतारसमां निमग्न थइ शकाशे, एवो महापुरुषोनो अनुभव छे. तेवा सत्य स्वाभाविक सुखना अर्थी जनोए पूर्व महापुरुषोना विहित मार्गे

अवश्य प्रयाण करवु जोइए के जेथी निर्विकल्प समाधिजनित परम समतारसनी प्राप्ति थाय.

उपशम-सरळतागुणज सर्वगुणमां सारभूत छे.

"उवसम सार खु सामन्न"-उपशम प्रधानज चारित्र वखाण्यु छे. अथवा "उपशम सार छे प्रवचने" जैनशासनमां उपशम-निष्कषायतानेज प्रधान गुण तरीके वखाणेल छे तेथी ए उत्तम गुणनी प्राप्ति करवी, तेनु यत्नथी रक्षण करवु, तेमज तेनी पुष्टि करवी अगत्यनी छे. श्रीमान् उपाध्यायजी समता शतकमां कहे छे केः-

> क्षमा सार चंदन रसे, सिंचो चित्त पवित्त,
> दया वेल मंडप तळे, रहो लहो सुख मित्त.
> देत खेद वर्जित क्षमा, खेद रहित सुख राज,
> यामे नहि अचरज कछु, कारण सरिखो काज.

भावार्थ-हे भव्य जनो! क्षमा (Tolerance) रूप श्रेष्ठ चंदन रस तमारा पवित्र चित्तने सिंचो, तेमज दयारूप मनोहर लतामंडप तळेज रहो अने हे मित्रो! स्वभाविक शान्तिने अनुभवो. जे भव्यात्मा कंइ पण कचवाट विना स्वकर्तव्य समजी सहनशीलता राखे छे ते अखंड सुखशान्तिनो अद्भुत लाभ मेळवी शके छे. तेमां कइ आश्चर्य नथी. केमके जो उत्तम कारणनु यथाविध सेवन करवामां आवे छे तो तेथी उत्तम कार्यज निपजे छे

कदाच कोइ अज्ञान प्राणी आपणने गाळो आपे के प्रतीज

बीजी उन्मत्त प्राय चेष्टा करे तो तेथी लगारे चित्तने खिन्न थवा देवुं जोइए नहि. एम करवाथी पेलो अज्ञान प्राणी छेवटे थाकीने विरमी जशे. जो एवा प्रसंगे क्षमा–शान्ति राखवाने बदले आकळाश अधीरज व्याकुळता के क्रोधादिक कषाय रूप अशान्ति आदरवामां आवे तो एथी प्रथम आपणुंज बगडशे अने सामाने पण कशो फायदो थवा पामशे नहि. ज्ञानी पुरुषो तो त्यां सुधी कहे छे के "गाळ दे तेने आशिष दइए." एक अग्निरूप थाय त्यारे बीजाए जळरूप थवुं जोइए. समता रूप जळना प्रवाहथी क्रोधाग्नि तरत शान्त थइ जशे. पण जो प्रज्वलित थयेला क्रोधाग्निमां अधिक इंधन होमवामां आवशे तो तेथी जोतजोतामां म्होटो भडको थशे अने ते कोइ रीते शान्त थवाने बदले अनेक जीवोने अपार हानि करे एवुं म्होटुं रूप पकडशे. तेथीज शास्त्रकार ए क्रोधाग्निने उपशमावी देवानो उपाय बतावे छे के—

> "क्षमाखड्गः करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति;
> अतृणे पतितो वह्निः, स्वयमेवोपशाम्यति."

भावार्थ—क्षमारूप साचुं अने बलवान् साधन आत्म रक्षार्थे जेनी पासे छे तेने क्रोधी दुर्जन शुं करी शके? कशुं करी शके नहि. तृणादिक रहित खाली भूमि उपर पडेलो अग्नि आपोआपज बुझाइ जाय छे, तेने बुझववा माटे बीजी कशीज महेनत करवी पडती नथी. तेने कशी पुष्टी नहि मळवाथी ते सहेजेज शान्त थइ जाय छे. अने प्रसंगे अद्भुत शान्ति–समता राखवाथी सामा क्रोधी प्राणीने पण क्वचित् भारे पश्चात्ताप प्रगटे छे, अने पोते करेली म्होटी कसूरनो

ख्याल करी वखते शुभ मार्गे चढी पण जाय छे. आ रीते सामा क्रोधी जीवने पण जे क्वचित् लाभ थइ शके छे ते तेने प्रसगे धीरज–शान्ति–सहनशीलता राखवामा आवे छे तेनु रुडु परिणाम जाणवुं आपणा एकान्त हितने माटे ज्ञानी पुरुषो पोकारीने कहे छे केः–“ खमिए ने खमाविए, साहेलडी रे! ए जिनशासन रीत तो ” एनी मतलब एवी छे के आपण छद्मस्थ जीवोथी कइ ने कइ कसूर थइ जाय अने तेथी सामा कोइ जीवनी गमे ते कारणे लागणी दुःखाय तो आपणी फरज छे के ते वातनो ख्याल करी पोताथी थयली कसूर कबुल करी लइ, नम्रता दाखवी, मीठा वचनथी पोते करेली भूल माटे माफी मागी लेवी अने फरी एवी भूल जाणीजोइने नहि करु एम कही सामानुं मन शान्त करवु ए आपणे सामाने खामणा कर्या कहेवाय–तेवीज रीते सामा कोइए एवीज कोइ कसूर करी आपणी लागणी दूभावी होय, पछी तेने करेली कसूरनो ख्याल आववाथी ते आपणी पासे उपर जणाव्या मुजब माफी मागे त्यारे बदलामा आपणे पण तेनी माफी आपवी ए आपणी फरज छे एम करवाथी आपणे पण खम्या कहेवाइए ए रीते क्वचित् कर्मयोगे थयेली कसूर माटे अरसपरस खामणा करवा ए जग जयवता जिनशासननी खास रीत–मर्यादा ज छे

ए उत्तम खामणा सफळ त्यारज लेखाय छे के ज्यारे निखालस दिलथी नम्रपणे पोते करेली कसूरनी पश्चात्ताप पूर्वक माफी मागी लइ फरी तेवी कसूर नहि करवा पूरतु लक्ष राखवामा आवे छे. एम करवाथी स्वपर उभयने लाभ थाय छे. अरसपरस खामणा

करतां शास्त्रमर्याद लक्षमां राखी लघु वयवाळाए म्होटी वयवाळा-वडीलने प्रथम खमाववुं जोइए. लघु वयवाळानुं मन एम करवा संकोचातुं होय तो वडीले लघु वयवाळाने प्रथम खमाववा लक्ष राखवुं. एथी लघु वयवाळो शरमाइने जलदी खामी देशे. जे सरल-पणे खपे छे अने खमावे छे ते उभय (खमनार अने खमावनार) आराधक कह्या छे. जे जाणी जोइने खमता के खमावता नथी तेने आराधक कह्या नथी. सामो माणस क्षमा करे के न करे पण आरा-धक थवा इच्छनारे पोते तो जरुर मान मूकीने निखालसपणे सामा जीवने खमाववुंज जोइए. जे आ रीते खमावतां खमे छे (माफी आपे छे—पोतानो रोष तजी दे छे) ते आराधक थइ शके छे अने जे खमतो नथी—रोष राखी रहे छे ते आराधक थतो नथी. एथीज सूक्तिकारे ठीक कह्युं छे के उपशम गुण सेवनारनुं सर्वत्र हितज थाय छे. ए समुं बीजुं श्रेष्ठ सुख नथी. ए उपशम गुण वगर जे कंइ तप जप प्रमुख कठण करणी करवामां आवे छे ते सर्व निष्फळ प्राप्त थाय छे, अने उपशम भावपूर्वक जे कंइ धर्म करणी करवामां आवे छे ते सघळी परम हितकारी थाय छे. जेणे उपशम रस चाख्यो छे तेने बीजां राजऋद्धि प्रमुखनां सुख निरस लागे छे, अने तेथीज म्होटा चक्रवर्ती प्रमुख विशाळ ऋद्धिवाळा पण पोताने प्राप्त थयेलां राज्यादिक सुखने तृणवत् तजी दइ शम साम्राज्यने आपनारुं चारित्र अंगीकार करी तेने सेवे छे. जेमने परम उपशम भाव प्रगटे छे ते गजसुकुमाल, मेतार्यमुनि अने खंधकमुनिनी पेरे प्राणान्त कष्ट आव्ये छते पण परम शान्तिमां झीली रहे छे. तेओ

बेहनी कशी दरकार नहि करता एक उत्कृष्ट समतानेज सार लेखे छे. परम क्षमावंत श्री अरिहंतादिकना पवित्र चरित्रने अनुसरी उत्तम जनोए निर्मळ ज्ञानदृष्टिथी क्रोधादिक दोषोने दूर करी उपशम प्रमुख उत्तम गुणनो आदर करवा सदाय उजमाळ रहेवु उचित छे.

त्रिकरण शुद्धि साचववा हितोपदेश.

जगजन सुखदाई, चित्त एवु सदाई,
मुख अति मधुराई, साच वाचा सुहाई,
वपु परहित हेत, त्रण्य ए शुद्ध जेने,
तप जप व्रत सेवा, तीर्थ ते सर्व तेने २३
मन वच तनु त्रण्ये, गग ज्यु शुद्ध जेने,
निज घर निवसता, निर्जरा धर्म तेने,
जिम त्रिकरण शुद्धे, द्रौपदी अब वाळ्यो,
घर सफळ फळतो, शीळधर्म सुहाव्यो २४

आवी आत्मने सुखरूप थाय एवु उत्तम भावनामय जेनु चित्त सदाय वर्ते छे, सहुने हितरूप थाय एवी मिष्ट-मधुरी वाणी जेना मुखमाथी नीकळे छे, अने पर हितकारी कार्योमा जेनी काया सदाय प्रवर्ते छे, ए रीते जेना मन वचन अने काया ए त्रणे वार्ता शुद्ध-पवित्रपणे प्रवर्ते छे तेने सघळा तप, जप, व्रत, पूजा अने तीर्थसेवा सहेजे फळे छे अर्थात् ए बधाय सुकृतोनो लाभ तेने

सहेजे—अनायासे मळी शके छे. जेनां त्रिकरण शुद्ध वर्ते छे तेने वगर करे पुन्यना गांसडा बंधाय छे अने ते त्रण्ये वानां जेनां मेलां छे तेने उक्त सघळी धर्मकरणी कष्टरूप थाय छे—सफळ थइ शकती नथी. जेनां मन वचन अने काया त्रण्ये गंगा नीरनी जेवां शुद्ध—निर्मळ छे तेने पोताना घरे बेठा छतां पण कर्मक्षय थवा पामे छे. केमके ते जे कंइ कर्तव्य कर्म करे छे ते निष्कामपणे—निःस्वार्थपणे निर्लेप वृत्तिथी करे छे, तेथी तेने बंधावानुं रहेतुं नथी परंतु उदय अनुसारे जे कंइ करणी करवानुं प्राप्त थाय छे ते केवळ साक्षी भावे करातो होवाथी उदित कर्मनो अनायासे क्षय थवा पामे छे अने नवीन कर्म बंध थवा पामतो नथी. वळी त्रिकरण शुद्धिथी—शुद्ध संकल्प बळथी बहु भारे महत्वनां काम अल्प प्रयासे थइ शके छे. ते उपर सीता, द्रौपदी अने सुभद्रादिक अनेक उत्तम सतीओनां तेमज भरतेश्वर, बाहुबली, जंबूस्वामी, स्थुलीभद्रजी, वज्रस्वामी प्रमुख अनेक सत्त्ववंत महात्माओना अने परम क्षमावंत श्री अरिहंत देवोना, गणधर महाराजाओना तेमज गजसुकुमाळादिक पूर्व महामुनिओनां ज्वलंत दृष्टांतो सुप्रसिद्ध छे. वळी वर्तमानकाळे पण पवित्रपणे मन वचन अने कायानी शुद्धिने पाळनारा कइक सज्जनो जगतमां जयवंता वर्ते छे. कह्युं छे के—

'मनसि वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णा—
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसंतः संति संतः कियन्तः'

विचारोमा, वाणीमा अने क्रियामां पुन्य अमृतथी भरेला सना त्रण्य भुवनना प्राणीओने करोडो गमे उपगारोथी प्रसन्न करता अने सूक्ष्मदर्शक ममान पोताना सूक्ष्म दृष्टिवडे परना अल्पमात्र गुणने विशाळरूपे जोइने पोताना हृदयमा अति आनद पामता एवा कल्लाएक सज्जनो जगतीतळ उपर जयवता वर्ते छे. त्रिकरण शुद्धिथी पवित्र धर्मकरणी करता अमृत जेवी मीठाश उपजे छे, रोमाच खडा थाय छे, जेथी अनहद आनद प्राप्त थाय छे अने अ-भीष्ट लाभ तत्काल मळे छे उक्त अमृत क्रियानो खरो लाभ आप्त (सर्वज्ञ–वीतराग) पुरुषोना पवित्र वचनानुसार समज साथे शा-स्त्रोक्त क्रिया करवाना मतत् अभ्यासवडे मळी शके छे. जेवी रीते मयणासुदरीने सतत् नवपदजीनी सेवा भक्ति साथे ध्यानना अ-भ्यामवडे अमृत क्रियानो लाभ प्राप्त थयो हतो अने तेना प्रभावथी तत्काल पोताना प्राणप्रिय पतिनो मेळाप थयो हतो. एवा अनेक दृष्टान्तथी सुज्ञ जनोए पवित्र धर्म करणी समज सहित करवाना नित्य अभ्यासवडे जेम बने तेम शीघ्र मन वचन कायानी शुद्ध एका-ग्रता साधी लेवी उचित छे

उत्तमकुळनो महिमा-प्रस्ताव.

सहज गुण वसे ज्यु, शखमा श्वेतताइ,

अमृत मधुरताइ चद्रमा शीतळाइ,

[1]कुवलय सुरभाइ, [2]इक्षुमां ज्युं मीठाइ,
कुळज[3] मनुष्य केरी, त्युं सुभावे भलाइ. २५
जिण घर वर विद्या, जो हुवे तो न ऋद्धि,
जिणघर दुय[4] लाभे, तो न सौजन्य वृद्धि;
सुकुळ जनम योगे, ते त्रणे जो लहीजे,
अभयकुमर ज्युं तो, जन्म साफल्य कीजे. २६

जेम स्वाभाविक रीतेज शंखमां श्वेतता—उज्वळता होय छे, अमृतमां मिष्टता—मधुरता होय छे, चंद्रमां शीतळता होय छे, कमळमां खुशबो—सुगंध होय छे, अने शेलडीमां मीठाश होय छे तेम सुकुळमां उत्पन्न थयेला—कुलीन मनुष्योमां सहज स्वभावे ज भलाइ—हितस्विना या चित्तनी उदारता होय छे. कदाच कोइने सद्विद्या प्राप्त थइ होय छे तो तेने द्रव्यसंपत्ति (लक्ष्मी) होती नथी, अने कदाच दैवयोगे ते बंने मळ्यां होय छे तो सज्जनतानो स्वामी होय छे, एटले विनय विवेकादिक गुण होता नथी. परंतु उत्तम कुळयोगे जो ए त्रणेवानां प्राप्त थइ शके तो अभयकुमारनी पेरे मानव भवनी सफळता थइ शके छे. मतलब के सद्विद्या, संपत्ति अने सज्जनता ए सहु वानां उत्तम कुळयोगे प्रायः सहेजे लाभी शके छे. तेमां पण सज्जनता (भलाइ) वगरनी विद्या अने लक्ष्मी

१ कमळ २ शेरडीमां ३ कुळमां उत्पन्न थएल ४ बंने वाना. (विद्या ने लक्ष्मी)

लगभग नकामी छे, स्वपर हितरुप थती नथी, पण उलटी अनर्थ-दायी नीवडे छे ते भलाइ या सज्जनता मुख्यपणे उत्तम कुळमाज लाभे छे. केमके उत्तम कुळनु ए खास लक्षण लेखाय छे. सज्जनता एज खरेखर सुकुळनु भूषण गणाय छे. अने सज्जनता योगेज खरी कुलीनता लेखी शकाय छे. सज्जनता योगेज विनय विवेकादिक गुणो आवे छे अने तेनावडेज प्राप्त थयेली विद्या अने लक्ष्मीनी सार्थकता थइ शके छे, माटेज सज्जनतावाळा सुकुळ वगेरे प्रशंसनीय छे. अने एना प्रभावथी अनेक प्रकारना स्वपरहितना कार्यो करी शकाय छे.

विनय गुणनु सेवन करवा विषे हितोपदेश

निशिविण शशि सोहे, ज्यु न सोळे कळाइ,
विनयविण न सोहे, त्यु न विद्या वडाइ,
विनय वहि सदाइ, जेह विद्या सहाइ,
विनयविण न कांइ, लोकमा उच्चताइ २७
विनयगुण वहीजे, जेहथी श्री[1] वरीजे,
सुरनर पति लीला[2], जेह हेला[3] लहीजे,
परतणय[4] शरीरे, पेसवा जे सुविद्या,
विनयगुणथी लाधी, विक्रमे तेह विद्या २८

१ लक्ष्मी २ संपत्ति ३ उतावळा ४ पारका

जेम रात्री वगर चंद्र सोळे कळाए संपूर्ण होय तेम छतां शोभे नहि–शोभा पामे नहि, तेम गमे तेवी अने गमे तेटली विद्या आवडती होय पण नम्रता गुण वगर ते शोभे नहि. विनय गुणवडे मेळवेली विद्या सफळ अने सहायरुप थाय छे, अने विनय वगर आ लोकमां लाज–प्रतिष्ठा के आबरु वधनी नथी. विनय गुणवडे आ–लोक संबंधी अने परलोक संबंधी लक्ष्मी–लीला प्राप्त थइ शके छे. विनय गुणथी निःस्पृही महात्मा पुरुषो पण प्रसन्न थइ विनीत–शिष्य उपर तुष्टमान थाय छे. विक्रमादित्ये जे परशरीरप्रवेश विद्या प्राप्त करी अने नागार्जुने जे आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करी ते विनय गुणनोज प्रभाव जाणवो. विनय गुणवडे गमे तेवो कट्टो शत्रु पण वश थइ जाय छे. विनय ए एक अपूर्व वशीकरण लेखाय छे. ते माटे ठीकज कह्युं छे केः—

‘ मृदुता कोमल कमलथें, वज्रसार अहंकार,
छेदत है एक पलकमें, अचरिज एह अपार. ’

तेनो भावार्थ ए छे के मृदुता–नम्रता–लघुता–विनय गुण कमळ जेवो कोमळ छे अने अहंकार–अभिमान वज्रवत् कठण छे. तेम छतां एवा कठण अहंकारने पण एक पलकमां विनयगुण गाळी नाखे छे ए अपार आश्चर्यजनक वात छे.

सघळा गुणोनुं मूळ विनय छे. तेथी धर्म पण विनय मूळ कह्यो छे. विनय योगेज विद्या विवेक अने समकित रत्ननी प्राप्ति थाय छे अने तेना प्रभावेज चारित्रनी अने छेवट मोक्षनी पण प्राप्ति थाय छे.

मातापितादि वडील वर्गनो, विद्यागुरुनो, शुद्ध देव गुरुनो अने श्रीसंघ-स्वधर्मीबंधु प्रमुखनो यथायोग्य विनय भक्तिबहुमानादिक-वडे अवश्य साचववो जोइए.

सद्विवेक प्राप्त करवा हितोपदेश.

१४ विवेक

हृदयघर विवेके, प्राणी जो दीप वासे,
सकळ भवतणो तो, मोहअंधार नासे,
परम धरम वस्तु-तत्त्व प्रत्यक्ष भासे
करमभर पतंगा, स्वाग तेने विधंसे २९

विकळ नर कहीजे, जे विवेके विहीना,
सकळ गुणभर्या जे, ते विवेके विलीना,
जिम सुमति पुरोधा,[1] भूमिगेहे[2] वसते,
युगति जुगति कीधी, जे विवेके उगते ३०

जो हृदयरूपी घरमां विवेकरूपी रत्नदीपक जगाववामां आवे तो भवभ्रमण करावनार-संसारअटवीमां अगाधपणे अटवावनार मोहअंधकार टकी शके नहि, अने जे गूढ अगम्य अने अगोचर तत्त्व-वस्तु नरीआंखे नजर आवती नथी ते परमतत्त्व प्रत्यक्ष जोइ

---

१ पुरोहित २ भोंयरामां

अकाय, तेमज समस्त कर्मसमूह समूळगो नष्ट थइ जवा पामे. सद्-विवेक कळा वगर गमे तेवा अने गमे तेटला गुणवाळो जीव विकळ कहेवाय छे अने जेनामां सद्विवेक कळा खीली रही छे ते संपूर्ण-गुणवान् लेखाय छे. शास्त्रकार ठीकज कहे छे केः—

'रवि दूजो तीजो नयन, अंतर भावी प्रकाश;
करो धंध सब परिहरी, एक विवेक अभ्यास.'

तेनो एवो भावार्थ छे के सद्विवेक ए एक बीजो अपूर्व सूर्य अने अपूर्व लोचन छे, केमके एथी शुद्ध प्रकाश मेळवी नेवडे अंतर-घटमां जे जे दिव्य वस्तुओ (सद्गुण रत्नो) विद्यमान छे, तेनुं यथार्थ भान थाय छे. अने तेनी द्रढ प्रतीति आवे छे. पछी अज्ञान तथा मिथ्यात्व अंधकारजनित भ्रान्ति टळी जाय छे अने निर्मळ ज्ञान अने श्रद्धारूप दिव्य नयनयुगल प्रगट थाय छे. एवो अपूर्व लाभ सद्विवेक जागवाथी मळे छे. माटे शास्त्रकार कहे छे के हे भव्य जनो! तमे अन्य दिशामां तमारा पुरुषार्थनो जे गेरउपयोग करी खुवार थाओछो त्यांथी निवर्तीने सद्विवेक जागे एवा विहित-मार्गे तमे पुरुषार्थ करो. परमतत्त्व पामेला शुद्ध देवगुरुनुं शरण ग्रहो अने तेमां एकनिष्ठ रहो, तेमनीज आज्ञा अंगीकार करो.

विद्या संपादन करवा विषे हितोपदेश.

१५ विद्या.

अगम मति प्रयुंजे, विद्यये कोण गंजे,
रिपुदळ बळ भंजे, विद्यये विश्वरंजे;

धनथी अखयविद्या, शिख एणे तमासे,
गुरुमुख भणी विद्या, दीपिका जेम भासे ३१
सुरनर सुप्रशंसे, विद्यये वैरी नासे,
जग सुजस सुवासे, जेह विद्या उपासे,
जिणकरी नृप रज्यो, भोज वाणे मयूरे,
जिणकरी कुमरिदो, रीझव्यो हेमसूरे ३२

श्री विनय गुणवडे गुरुनु दील प्रसन्न करीने विद्या मेळवी होय छे तो ते मेळवली विद्या सफळ थाय छे, तेवडे मति निर्मळ थाय छे अने तेथी अगम वात पण सुखे समजी शकाय एवी सुगम थइ पडे छे. सूक्ष्मबुद्धिना प्रभावथी कोइ पराभव करी शकतु नथी. शत्रुनी सेनानु बळ तेना उपर चालतु नथी पण ते उलटु निर्बळ-नरामु थइ जाय छे. विद्याना बळथी सहुकोइ रंजित थइ फीदा थाय छे, पैसानु बळ विद्याना बळ पासे काइ विसातमा नथी. विद्यानुबळ अ-खूट छे, तेथी पैसानो लोभ तजी, मिथ्या माया ममता मूकीने अक्षय विद्या मेळववा उद्यम करो. जो विद्वान् गुरुनी पासेथी विनय सहित अमूट विद्या मळवशो तो ते तमने खरखर मार्गदर्शक थशे अने अन्य अनेक जीवोने पण आलंबनरूप थइ शकशे. विद्याना बळथी देवता-ओ तथा मनुष्यो खुब प्रशंसा करे छे. तेनाथी वैरीलोको दूर भागे छे अने आखी आलममा तेनो यश-डंको वागे छे. एवो अतुल प्र-भाव विद्याप्राप्तिनो छे. जुओ ! ए विद्याना प्रभावथीज बाण अने

मयूर कविए भोजराजाने रंजित कर्यो हतो अने श्री हेमचंद्रसूरीश्वरे कुमारपाळ भूपाळने रीझव्यो हतो अने अनेक परोपकारनां काम कर्यां-कराव्यां हतां. तेथीज शास्त्रकारे विद्यावळने घणुंज वखाण्युं छे. सर्व विद्यामां आत्म-अध्यात्मविद्या शिरोमणिभूत छे. ए विद्यानी उपासनाथी अने दुःखमात्रनो अंत करी अक्षय अव्याबाध एवुं मोक्ष-सुख मेळवी शकाय छे.

परोपकार करवा हितोपदेश.

१६ उपकार.

तन धन तरुणाइ, आयु ए चंचळा छे,
परहित करी लेजे, ताहरो ए सगो छे;
जब जनम जरा ज्यां, लागशे कंठ साही,[1]
कहेने निणसमे तो, कोण थाशे सहाइ. ३३

नहि तरु फळ खावे, ना नदी नीर पावे,
जस धन परमार्थ, सो भलो जीव जीवे;
नळ करण नरिंदा, विक्रमा राम जेवा,
परहित करवा जे, उद्यमी दक्ष तेवा. ३४

हे भव्यात्मा ! आ शरीर, लक्ष्मी, यौवन अने आयुष्य सघळां क्षणविनाशी छे, जोत जोतामां खुटी जाय छे तेथी तेमनो

१ पकडशे.

उपर मोह–ममता करी विश्वास राखी बेसी रहेवानुं नथी. आ समये सघळी अनुकूळ सामग्री पाम्यो छु तेने सफळ करी लेवानी छे, तेने एळे गुमावी देवी जोइनी नथी त्हाराथी बनी शके तेटलु परहित–परोपकार करीलेवा विघ्न करीश नहि ज्यारे जरा आवी पहोचशे अने जालम जमनु तेडु आवशे ते वखते हे भोळा ! त्हारी सहाये कोण आवशे ? वळी ते वखते तु शु करी शकीश ? अथवा दव बळे त्यारे कुवो खोदवो शा कामनो ? ते माटे शास्त्रकार ठीकज कहु छे के–' ज्यासुधीमा जरा आवीने पीडे नहि, विविध व्याधिओ वधीने घेरी ले नहि अने इन्द्रियो क्षीण शक्तिवाळी थइ जाय नहि त्या सुधीमा ओ भद्रक! त्हारु हित–श्रेय–कल्याण थाय तेवु–तेटलु करी ले–भूलीश नहि ' जो ! आम्रादि वृक्षो पोतानी शीतळ छाया अने अमृत जेवा मीठा फळ आपी केटलो–केटलो लोकोपकार करे छे ? तेमज गगा जेवी नदीओ पोताना निर्मळ नीर अढळक रीते आपी केटली परोणागत करे छे ? जेओ आ मानवदेहादिक रुडी सामग्री पामीने तन मन अने धनथी परमार्थ साधे छे–नि स्वार्थपणे परहित करे छे तेओज स्वजीवन सार्थक करे छे. पूर्वकाळमा जे जे नळ, कर्ण, विक्रम, राम अने युधिष्ठिर जेवा सात्विक पुरुषो सात्विकपणे प्राप्त सामग्रीनो सदुपयोग करे छे, तेमना पवित्र चरित्रने लक्षमा राखीने जो तुच्छ स्वार्थवृत्तिने तजी नि स्वार्थपणे तन मन अने धनथी परहित–परोपकार करवामा आवे छे तो तेथी स्व मानवजीवन सार्थक करीने अलौकिक सुखसमृद्धिने स्वाधीन करी अंते अक्षय अनंत मोक्षपद पमाय छे.

सद् उद्यम-पुरुषार्थ सेववा मांटे हितोपदेश.

१७ उद्यम.

रयणनिहि तरीने, उद्यमे लच्छी[1] आणे,
गुरुभगति भणीने, उद्यमे शास्त्र जाणे;
दुःखसमय सहाइ, उद्यमे छे भलाइ,
अति अळस तजीने, उद्यमे लाग भाइ. ३५

नृपशिर निपतंती, वीज झात्कारकारी,
उद्यम करी सुबुद्धि, मंत्रीए ते निवारी;
तिमि निजसुत केरी, आवती दुर्दशाने,
उद्यम करी निवारी, ज्ञानधर्म प्रधाने. ३६

उद्यमवंत लोको हिमतःधरी योग्य साधन मेळवी दरीओ खेडीने पुष्कळ लक्ष्मी कमाइ लावे छे. तेमज उद्यमवंता शिष्यो विनयगुणवडे गुरुने प्रसन्न करीने अखुट शास्त्र (ज्ञान) धन प्राप्त करी शके छे. आपत्तिसमये उद्यम ए एक अच्छो सहायकारी मित्र थाय छे, अने उद्यमवडे आवी पडेली आपत्तिने उल्लंघी बीजानुं पण भलुं करी शकाय छे, एम समजी आपदा आपनारुं आळस दूर करी नांखीने एक सुखदायक एवा उद्यमनोज आश्रय लेवोजोइए. ए उद्यमवडे ज आपणे उदय पामी शकीशुं. जेम सुबुद्धि मंत्रीए बुद्धिब-

---

१ लक्ष्मी.

ळथी विचारपूर्वक उद्यम करीने पोताना स्वामी–राजा उपर आवती आपदा दूर करी हती अने ज्ञानगर्भ प्रधाने पोताना पुत्रनी उपर आवती दुर्दशाने योग्य उद्यमवडे निवारी हती. एथी सद् उद्यमनी प्रधानता सिद्ध थाय छे. वळी कह्यु छे के–'उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः' उद्यम करवावडेज खरेखर कार्यसिद्ध थाय छे, केवळ मनोरथ करवा मात्रथी ते सिद्ध थता नथी. केटलाक आळसु लोको बोले छे के भाइ! नसीबमा हसे तोज अथवा भावीभाव (भवितव्यता बळवान्) हशे तोज कार्य बनशे. तेनु समाधान ए छे के उद्यम कर्या छता धारेलु इष्ट कार्य थइ न शके तो पछीज भवितव्यताने के नसीबने दोष देवो योग्य (परिपक्व) काळ, स्वभाव, नियति (भवितव्यता), पूर्वकृत कर्म अने उद्यम ए सघळा कारणो मळतां कार्यनी सिद्धि थाय छे, तोपण तेमा उद्यम करवो आपणे आधीन छे अने बीजा कारणो ज्ञानीगम्य छे. उद्यम करवाथी बीजा बधाय कारणो मळ्या छे के केम तेनी खात्री थइ शके छे तेथीज आपण छद्मस्थने उद्यम विशेषे आदरवा योग्य छे. माटे ज कहे छे के 'Try try and try' एटले उद्यम करो, उद्यम करो, उद्यम अने 'As you will sow so you will reap' एटले तमे जेवु वावशो एवुज लणशो.

१८ दानधर्मनो प्रभाव.

थीर नहीं धन राख्यो, तेम नाख्यो न जाये,
इणिपरे धन जोता, एक गत्या जणाये,

इह सुगुण सुपात्रे, जेह दे भक्ति भावे,
निधि जिम धन आगे, साथ तेहीज आवे. ३७

नळ बळि हरिचंदा, भोज जे जे गवाये,
ग्रह समय सदा ते, दान केरे पसाये;
इम हृदय विमासी, सर्वथा दान दीजे,
धन सफळ करीजे, जन्मनो लाह[१] लीजे. ३८

भावार्थः—लक्ष्मीनो एवो चपल स्वभाव छे के ते एकज स्थळे लांबो वखत टकी रहे नहि, तेम छतां लक्ष्मी उपरनो मोह पण एटलो वधो भारे जीवने लागेलो होय छे के तेने हाथे करी छोडाय पण नहि एटले के ज्यां सुधी लक्ष्मी देवी सुप्रसन्न होय त्यां सुधी समजीने तेनो मोह तजी तेने सत्पात्रे खर्ची पण शके नहि. ए वात पण एटलीज स्पष्ट छे. जो के कृपणता दोषथी लक्ष्मीनो सदुपयोग करी शकातो नथी पण तेनो संबंध तो सज्यों होय एटलोज वखत रहे छे, पछी तेनो वियोग थाय ज छे. च्हायतो कृपणदास परलोक सधावे तेथी के तेना पुन्यनो क्षय थयो होय तेथी लक्ष्मीनो संबंध तुटे छेज. आम समजीने जे सुज्ञजनो उदार दीलथी मळेली लक्ष्मीने सुपात्रे आपी तेनो ल्हावो ले छे तेमने तेथी अनेक गुणी लक्ष्मी अन्य भवमां सहेजे आवी मळे छे. तेमने कशी वातनो तोटो रहेतो नथीज. नळराजा, वलिराजा, हरिचंद्र अने भोजराजा प्रमुख

१ लाहो—लाभ.

जे जे पुन्यश्लोक (प्रशनीय) पुरुषोनु प्रभातमा नाम लेवामा आवे छे ते दानधर्मनाज प्रभावे. एम समजी विवेक आणी उदार दीलथी अनेक प्रकारे दान दइ निज द्रव्यसपत्तिने सार्थक करी आ दुर्लभ मानव भवनो लाहो लेवो जोइए. जे तेम करवामा प्रमाद करे छे तेमने पाछळथी पस्तावु पडे छे ज्ञानी पुरुषोए अनेक प्रकारना दानमा अभयदान, सुपात्रदान, अनुकपादान, उचितदान अने कीर्त्ति दान ए पाच मुख्य दान कह्या छे जेमाना प्रथमना बे मोक्षदायक छे अने पाछळना त्रण दान भोगफळने आपे छे. निस्वार्थपणे योग्य पात्रने यथाअवसर दान देवाथी अमित–अपार लाभ मळे छे. दान देता सकोच, अनादर, अनुत्सार, खेद, अविश्वास प्रमुख दोषो अवश्य वर्जवा योग्य छे अने उदारता, आदर, उत्साह, अनुमोदन, प्रमोद हर्ष अने फळश्रद्धा प्रमुख भूषणो सेववा योग्य छे.

कुपात्रने पोषवाथी लाभने वदले हानि थाय छे अने सुपात्रने पोषवाथी भारे लाभ मळे छे. ते गाय अने सर्पने दृष्टान्ते समजी शकाय एम छे. गायने केवळ घास–चारो नीरवामा आवे छे तोपण तेना वदलामा ते अमृत जेवु दूध आपे छे अने सर्पने दुध पावामा आवे छे छता ते दूध पानारना पण जीवितनो अत करे छे. काची माटीना पात्र जेवा नजीवा हल्का पात्रमा दान देवाथी दीधेली वस्तु अने पात्र वने विणसे छे, तथा दाताने पाछळथी पश्चातापज करवानो वखत आवे छे एम समजी दाताए पात्रापात्रनो विवेक कर्तव्य छे. ज्ञानदान, सम्यक्त्वदान अने चारित्रदान सर्वोत्तम छे, परतु जो ते परीक्षापूर्वक योग्य पात्रनेज देवामा आवे छे

तो अनंत लाभफळने आपे छे. अन्यथा तो ते अस्थाने अपायाथी अस्त्ररुप थवा पामे छे. जेथी जीवने वस्तुस्वरुपनुं यथार्थ भान थाय, तेनी दृढ प्रतीति थाय अने परिणामे आचार विचारनी शुद्धि थवाथी चारित्र निर्मळ थाय, जेथी जीव सकळ कर्म बंधनथी—जन्म मरणना फेरामांथी मुक्त थइ शाश्वत सुखनो भागी थइ शके तेज ज्ञान, श्रद्धा अने चारित्रथी श्रेष्ठ दान बीजुं कयुं होइ शके ? एवा उत्तम दानना दाता तीर्थंकरो, गणधरो, आचार्यवरो, उपाध्यायो अने संत सुसाधुजनो खरेखर धन्य कृतपुण्य छे. एवा उत्तम पात्रोने निर्दोष अन्न पानादिकवडे पोषनार सुश्रावक जनोने पण धन्यवाद घटे छे. केवळ मोक्ष माटेज देनार अने मोक्ष माटेज लेनार ए बंनेनी सद्गतिज थाय छे. ए उपरान्त दीन, दुःखी, अनाथ जनोने योग्य आश्रय आपनार गृहस्थजनो पण भवान्तरमां सुखी थाय छे. अरे ! सीदाता स्वजनोने योग्य सहाय आपीने उद्धरनार अने इष्ट देव गुरु प्रमुख पूज्यजनोनी स्तुति करनाराने संतोषनार पण सुखी थाय छे अने यश पामे छे.

१९ शील धर्मनो प्रभाव.

अशुभ करम गाळे, शीळ शोभा दीखाळे,
गुणगण अजुवाळे, आपदा सर्व टाळे;
तस नर बहु जीवी, रुप लावण्य देइ,
परभव शिव होइ, शीळ पाळे जी केइ. ३९

इण जग जिनदास–श्रेष्टि शीळे सुहायो,
तिम निरमळ शीळे, शीळ गगेव[1] गायो,
कळि करण नरिंदा, ए समा छे जिकेइ,
परभव शिव पामे, शीळ पाळे तिकेइ ४०

भावार्थ.—जे सुज्ञजनो शुद्ध आचार विचारनु सेवन करी स्वपर हित सारे छे, स्वस्त्रीमा सतोपवृत्ति धारी परस्त्रीने माता तुल्य अने स्वपतिमा सतोप धारी परपुरुपने पिता तुल्य लेखे छे, तेमज पर द्रव्यने पथ्थर तुल्य अने सर्व कोइ प्राणी वर्गने स्वात्म तुल्य लेखे छे ते उत्तम भाइ ब्हेनो निर्मळ शील शोभाने धारे छे, सतोपवृत्ति वडे दुष्ट विपयवासनाने मारी आत्माना स्वाभाविक गुणोने प्रगटावे छे, अने प्रारब्ध योगे आवी पडेली सकळ आपदाने निवारी शके छे. वळी तेओ निजवीर्य सरक्षण वडे दीर्घायुपी बने छे; रुप लावण्यादिक शुभ शारीरिक सपत्तिने पामे छे, अने अते सकळ कर्म उपाधिने टाळी अजरामर पदवीने पण पामे छे.

आ जगतमा निर्मळ शीलधर्मना प्रभावे जिनदास श्रेष्ठी, सुदर्शन श्रेष्ठी अने गागेय प्रमुख निर्मळ यशोवादने पाम्या छे. तेमज विजय शेठ अने विजया शेठाणी जंबूकुमार, स्थूलभद्रजी, वज्रस्वामीजी, अने ब्राम्ही, सुन्दरी प्रमुख कइक सताओ अने सतीओ शीलनी खरी कसोटीमाथी पसार थयेल छे, तेमनी पर जे निर्मळ शील पाळे छे ते सकळ आपदाने वमी अते अक्षय सुख पामे छे.

---

१ गागेय–भीष्म पितामह

संपूर्ण शीलांग रथना धोरी तो पंच महाव्रतधारी संत-सुसाधुजनो गणाय छे. आहार, भय, मैथुन अने परिग्रह रूप चार संज्ञाने जीती लइ, रसना (जीभ) आदिक पांच इन्द्रियोने बराबर नियममां राखी क्षमा, मृदुता (नम्रता), ऋजुता (सरलता), संतोषवृत्ति, इच्छानिरोध (तप), संयम, शौच (मनःशुद्धि), निःसंगता-निस्पृहता, अने ब्रह्मचर्य रूप दशविध यति-धर्मनी शिक्षाने यथार्थ धारण करी जे महाशयो मन वचन कायावडे त्रस स्थावरादि दश जीवभेदो पैकी कोइ पण प्रकारना जीवोनी हिंसा करता, करावता के अनुमोदता नथी, तेओज खरेखर संपूर्ण (४×५×१० ×१०×३×३) १८००० शीलांग रथना धोरी लेखावा योग्य छे. तेम बनी न शके तो गृहस्थाश्रममां रहीने पण जे शुभाशयो स्वपति पत्नीमां संतोष राखी, पूर्वोक्त आचारने यथाशक्ति आदरे छे अने शीलधर्मने पोताना प्राण करतां प्रिय लेखी गमे तेवा विकट संयोगो वच्चे पण पाळे छे ते भव्यात्माओ अनुक्रमे आत्म उन्नति साधी जन्म मरणनां दुःखथी मुक्त थइ शके छे.

२० तप धर्मनो प्रभाव.

तरणी[1] कीरणथी ज्युं, सर्व अंधार जाये,
तप करी तपथी त्युं, दुःख ते दूर थाये;
वळी मलिन थयुं जे, कर्मचंडाळ तीरे,
किम तनु न पखाळे, ते तप स्वर्णनीरे. ४६

१ सूर्य.

तप विण नवि थाये, नाश दु कर्म केरो,
तप विण न टळे जे, जन्म संसार फेरो,
तप वळे लही लब्धि, गोतमे नादिषेणे,
तपवळे वपु कीधु, वीष्णु[1] वैक्रिय जेणे ४२

भावार्थ —जेम सूर्यना किरण प्रकाशता सर्व अंधकार दूर थाय छे तेम तपना प्रभाव वडे सर्व दु ख दूर थाय छे. वळी कर्म रुपी चडाळना योगे जे सयमशरीर मलीन (दोपित) थयु होय तेने तपरुपी गगाजळथी शा माटे न पखाळवु ? तप रुपी निर्मळ नीरवडे सयम शरीर–शुद्ध–निर्मळ थइ शके छे.

समता सहित तप कर्या वगर पूर्व करेला दुष्ट कर्मोना नाश थतो नथी अने दुष्कर तप तप्या वगर वारंवार जन्ममरण करवा रुप भवनो फेरो टळतो नथी. जिनेश्वर देवोए आचरेला अने उप-देशेला तपना प्रभाव वडे ज श्री गौतमस्वामीजी अक्षय महानसी प्रमुख अनेक उत्तम लब्धिओ पाम्या हता, नन्दिषेण मुनिजी एज तपना प्रभाव वडे एवी लब्धि पाम्या हता के जेना वडे पोते अनेक जीवोने प्रतिबोधी सन्मार्गगामी करी शक्या हता अने विष्णुकुमार मुनि पण एज तपना प्रभाव वडे वैक्रिय लब्धि पामी एक लक्षयो-जन प्रमाण शरीर विकुर्वी, दुष्ट नमुचि प्रधानने टाळी देवा शक्ति-वान थया हता

---

१ विष्णुकुमार मुनि

तेथी शास्त्रकार ठीक ज कहे छे के 'तपना प्रभाव वडे सर्व कंइ कामना सुखे सिद्ध थाय छे. जे कंइ दूर, दुराराध्य अने देवताने पण दुर्लभ होय छे ते सघळुं तपना प्रभावे समीपगत, सुसाध्य अने पामवुं सुलभ थाय छे. दुष्कर तपनुं तेज कोइनाथी सही शकातुं नथी; जीती के पराभवी शकातुं नथी. जे तप निराशंसभावे (निष्काम वृत्तिथी–निस्पृहताथी) सशास्त्र करवामां आवे छे ते तप सकळ कर्ममळने बाळी नांखी आत्म–सुवर्णने शुद्ध निर्मळ करी शके छे. समता सहित तप निकाचित कर्मने पण बाळी नांखे छे. उपवास, छट्ठ, अट्ठमादि बाह्य तप करवानो हेतु, निज दोषनुं शोधन करी विनय, वैयावच्च, स्वाध्याय, ध्यान अने ममता त्याग करवा रुप अभ्यंतर तपनो लाभ मेळववानो छे. कारण वडेज कार्य नीपजे छे. इन्द्रियादिकनुं दमन करवा वडेज बाह्य तपनो अने बाह्य तप वडे ज अभ्यंतर तपनो लाभ मळी शके छे ते वडेज कर्मनी निर्जरा–कर्मक्षय थाय छे अने ते वडेज जन्म मरण रहित मोक्ष पद प्राप्त थाय छे. एम समजी सुज्ञ भाइ व्हेनोए उक्त प्रभावशाळी तप सेववा अधिक आदर करवो युक्त छे.

२१ भाव धर्मनो प्रभाव.

मनविण मळवो ज्युं, चाववो दंत हीणो,
गुरुविण भणवो ज्युं, जीमवो ज्युं अलुणो[1];

१ लूण विना.

जसविण बहु जीवी, जीव ते ज्यु न सोहे,
तिम धरम न सोहे, भावना जो न होहे ४३

भरतनृप इलाची, जरिण श्रेष्टि भावे,
वळी वलकलचीरी, केवळज्ञान पावे,
हळधर[1] हरिणो जे, पाचमे स्वर्गे जाये,
स्हज गुण पसाये, तास निस्तार थाये

भावार्थ —जेम मन वगर मळवु, दात वगर चाववु, गुरुगम वगर भणवु, अलूणु धान जमवु, अने जश वगर घणु जीववु ए शोभतु नथी तेम हृदयना भाव वगर धर्म पण शोभतो नथी. हृदयनी साची भावनाथीज भरतमहाराजा आरीसाभुवनमा निज स्वरुप अवलोकन करता करता निर्मळ केवळज्ञान पाम्या हता.

इलाचीकुमार वशाग्रे चढी राजाने रीझववा नाटक करता करता समीपस्थ घरमा गोचरी वहोरवा पधारेला स्वस्पस्थ मुनिना अपूर्व दर्शन वडेज स्वदोष देखी—समजी अपूर्व वीर्योल्लासथी त्याज रह्या सता केवळज्ञान पाम्या हता.

जीरण शेठ वीर प्रभुने चार मास पर्यंत प्रासुक आहार पाणीनो लाभ देवा माटे प्रतिदिन विनति करता अने पारणाने दिवसे श्री वीर प्रभु जरुर लाभ आपशे एम समजी प्रभुनी राह जोता हता.

---

१ बळभद्र बळदेव

तेवामां प्रभुए अन्यत्र पारणुं कर्युं अने जीरण शेठ भावनारूढ थइ बारमा देवलोकना अधिकारी थया. जो के पतितपावन एवा प्रभुए तो पूरण शेठना घरे पारणुं कीधुं पण जीरण शेठनेज भावनावडे खरो लाभ थयो, वल्कलचीरी नामनो बाल तपस्वी जेनुं चरित्र कंइक विस्तारथी परिशिष्ट पर्वमां कहेलुं छे ते घणे काळे विरही तपस्वी पिता पासे ज्यारे आव्या त्यारे स्वपात्रादिकने अवलोकतां विशुद्ध भावना योगे केवळज्ञान पाम्या हता.

तेमज वळी गिरिनिवासी श्री बलिभद्र मुनिवरनी पासे सेवकरूप बनेलो मृगलो ते तपस्वीमुनिनी परिचर्या करतो. एक वखते पारणाना दिवसे गुरुमहाराज माटे निर्दोष आहार पाणीनी चिंता करतो फरतो हतो. तेवामां एक रथकार जंगलमां लाकडां लेवा आवेल अने एक वृक्षनी शाखा अर्धी कापी भोजनवेळा थइ जवाथी भोजन निमित्ते नीचे उतरेल अने रसोइ तैयार थये जमवा बेसवा पहेलां कोइ अतिथिनी राह जोतो बेठेल तेने जोइ गुरुमहाराज पासे आवी मृग इसारो करवा लाग्यो. एटले मृगलाए बतावेला मार्गे गुरु महाराज ज्यां रथकार राह जोइ रह्यो हतो त्यां पधार्या. गुरु तपस्वीने जोइ रथकार बहु राजी थयो अने ते आहार वहोराववा जायछे अने हरणीयो तेनुं अनुमोदन करे छे एवामां एकाएक अर्धी कापेली डाळ तूटी पडतां शुद्ध भावनाथी त्रणे जणा काळ करीने पांचमा देवलोके गया. त्यांथी च्यवी महा विदेहमां मोक्षे जशे.

२२ क्रोध कषायनो त्याग

तृण दहन[1] दहतो, वस्तु ज्यु सर्व बाळे,
गुणरयण भरी त्यु, क्रोध काया प्रजाळे,
प्रथम जळद धारा[2], वन्हि ते क्रोध वारो,
तप जप व्रत सेवा, प्रीतिवल्ली वधारो ४५
धरणि परसुरामे, क्रोधे नि क्षत्री कीधी,
धरणि सुभूमराये, क्रोधे नि ब्रह्मी कीधी,
नरक गति सहाई, क्रोध ए दु खदाइ,
वरज वरज भाइ ! प्रीति देजे वहाइ ४६

भावार्थ —जेम तृणाग्नि उठयो सतो सर्व वस्तुने बाळी नाखे छे तेम क्रोधाग्नि प्रजळ्यो सतो अनेक गुण–रत्नथी भरेली कायाने बाळी ख्याख करी नाखे छे जो तेने शान्त करवा चाहता ज हो तो तेना उपर समता रसनी धारा तत्काळ वरसावो, जेथी कषायरूप अग्नि ठरी जशे अने तप जप व्रत आदरवा प्रत्ये प्रीति रूपी वेल विस्तरशे. ?

क्रोध–कषायनु परिणाम जोयुं ना ते बहुज कटु छे. परशुरामे क्रोधवडे पृथ्वीने नक्षत्री करी अने सुभूम चक्रवर्तीए पृथ्वीने नब्राह्मणी कीधी आवा अति अनर्थकारी कार्य करवाथी जीवनी नरकगति

---

१ अग्नि, २ वरसाद, ३ पृथ्वी

थाय छे. क्रोधने एवो दुःखदायी जाणी हे भाइ ! तुं तेनो त्याग कर अने सहुने आत्मसमान गणी मैत्रीभाव धारी तेमना प्रत्ये प्रीति राखी रहे. २

क्रोधरूप विषवृक्षनां फूल, फळ अने छांया विगेरे बधां विषमयज छे. कोइनुं भुंडुं—अनिष्ट चिन्तववुं ए क्रोध—कषायनां पुष्प समजवां अने तेमनुं तक साधी अनिष्ट करवुं ए तेनां कडवां फळ समजवां. नरकनां महा कडवां दुःख वेठवां ए तेनो रस समजवो. क्रोधयुक्त वातावरणमां आववाथी आवनारने क्रोधनुं विष व्यापी जाय छे माटे जेम बने तेम क्रोधना प्रत्येक अंगथी त्याग ज करवा प्रयत्न करवो युक्त छे. क्षमा—समता—सहनशीलता गुणवडे ते विषनुं निवारण थइ शके छे. उपशम जळनी धारावडे ए क्रोध—अग्नि सहेजे ओलवी शकाय छे. क्रोधी माणसने बोध लागतो नथी अने ते अंध बनी अकार्यो आचरी नीची गतिमां जाय छे. गमे तेटलो तप जप संयम सेवनार पण क्रोधवश बनी तेनुं फळ क्षणवारमां हारी जायछे. उत्तम पुरुषने (सज्जनने) क्रोध थतो नथी अने कोइ तेवांज निमित्त योगे थाय तो ते लांबो वखत टकतो नथी अने खास निमित कारणे लांबो वखत टके तो तेनुं माठुं फळ तेमवा पामतुं नथी; अर्थात् सावधानपणुं राखवाथी कोइनुं अनिष्ट थतुं अटके छे. तेवा सज्जनो सावचेतपणुं साचवे छेज. बाकी दुर्जनो तो क्रोधवश बनी गमे तेवां कटुक वचन वदी सज्जनोने पण संतापे छे. तेमनाथी तो सदंतर दूर रहेवुं दुरस्त छे. कूरगडु मुनिनी पेठे गमे तेवा प्रसंगे जे समतारसमां ज झीले छे तेनेज मोक्ष थाय छे.

२३ मान कषायनो त्याग.

विनय वनतणी जे मूळ शाखा विमोडे,
सुगुण कनक केरी, शृखलाबध तोडे,
उनमद करी दोडे, मान ते मत्त हाथी,
निजवश करी लेजे, अन्यथा दूर एथी ४७

विपद विप समो ए, मान ते सर्प जाणो,
मनुष्य विकळ होवे, एण डके जडाणो,
इह न परिहर्यो जो, मान दुर्योधने तो,
निजकुळ विणसाड्यो, मानने जे वहतो. ४८

भावार्थ —विनयरुपी वड्वृक्षनो मूळ सुधी नमेली नम्रता रुपी शाखाओ जे मरडी नाखे छे अने सद्गुण रुपी सोनानी साकळना बध तोडी नाखे छे ते उन्मादथी दोडता मानरुपी मदोन्मत्त हाथीने अकुशवडे दमीने वश करी लेवो जोइए. सर्वथा वश करी न शकाय तो तेनाथी दूर तो रहेवु ज. पण तेने वश तो थइ न जवु. मानने वश थनारना भुडा हाल थाय छे, लोकमा अपवाद थाय छे अने गति पण बगडी जायछे. १

मानने एक महान् झेरी सर्प—उग्र विषधर—अजगर समजो, जेना एक डक मात्रथी मनुष्य मूर्छित थइ जाय छे. जो ए दुष्ट माननो त्याग दुर्योधने कर्यो नहि अने पोताना पूज्य जनोना हितवचननो

अनादर करी पांडवोनो योग्य सत्कार करवाने बदले तेमनो विनाश करवा युद्ध मचाव्युं तो तेथी पोतानाज कुळनो क्षय कर्यो. २

ज्ञानी पुरुषो मानने उंचा डुंगरनी उपमा आपे छे. तेने आठ प्रकारना मदरूपी ऊंचा ऊंचा आठ शिखरो आवी रहेलां छे, जेथी जीवने सुखकारी प्रकाश मळी शकतो नथी. मानरूपी विषम गिरिराजने ओळंगवो बहु कठण छे. तेनो उपाय शास्त्रकार बतावे छे.

" मृदुता कोमल कमलथें, वज्रसार अहंकार;
छेदत है एक पलकमें, अचरिज एह अपार. "

नम्रता—नरमाश कमळ करतां पण कोमळ छे अने अहंकार वज्र करतां पण कठण छे, तेम छतां नम्रता अहंकारने एक पलकमां गाळी नांखे छे ए भारे आश्चर्यकारी छे. एथीज कह्युं छे के 'नमे ते प्रभुने गमे.' सद्गुणो सज्जनो तो सफळ आंबानी जेम नमी पडे छे. फक्त सूका साग जेवा अभिमानी लोको ज नमता नथी—अक्कडबाज रहे छे. मानवश थयेला रावण जेवा राजवीना पण माठा हाल थया तो पछी बीजा अल्प सत्ववंतनुं तो कहेवुं ज शुं? विभीषणे जो अभिमानी रावणनो त्याग करी न्यायमूर्ति श्री रामचंद्रनो आश्रय कर्यो तो सघळी वाते सुखी थयो, तेम जे दुष्ट संग तजी सत्संग करशे ते उभय लोकमां सुख समृद्धि पामशे.

२४ माया-कपटनो त्याग.

निठुरपणु निवारी, हियडे हेज[1] धारी,
परिहर छळ माया, जे असतोषकारी,
मधुर मधुर बोले, तोहि विश्वास नाणे,
अहिगलण प्रमाणे, मायीने लोक जाणे ४९
म कर म कर माया, दंभ दोषद्रुछाया,[2]
नरय तिरिय केरा, जन्म जे देह माया.
बलिनृप छळवाने, विष्णु माया वहंता,
लहुयपणु लह्यु जे, वामना रुप लेता ५०

भावार्थ —हे भाइ! निर्दयपणु तजो, निज हृदयमा सहु प्रत्ये हेत धरी अन्यने असंतोष उपजावे एवी माया-कपट करवानी टेव तु मूकी दे, मीठा बोला मायावी माणसनो विश्वास कोइ करतुं नथी जेम मीठा बोला मोरनो विश्वास सर्प करता नथी, केमके ते सर्पने जीवता ने जीवताज गळी जाय छे, एवी निर्दयता मोरमा रहेली छे, तेम मायावी माणस गमे तेवु मीठु मीठु बोले पण लोकने तेनो विश्वास आवतो नथी, केमके मायावी माणसनु हृदय घणु कठोर होय छे, ?

दंभ (मिथ्या आडंबर) रुपी दोष वृक्षनी छाया जेवी, मायाने

---

[1] हेत [2] दुमरुप वृक्षनी छाया जेवी

हे भव्यात्मन् ! तुं म कर म कर, जे कोइ देहधारी माया कपट करे छे, ते नरक के तिर्यचना भवमां जइ अवतरे छे अने पछी दरातोने-पणे भारे कष्ट सहे छे, ते करतां प्रथमथीज समजीने सरलना आद-रवी युक्त छे, बलीराजाने छळवाने माटे माया करी वामननुं रुप धारण करतां विष्णुजी लघुपणुं पाम्या. सरलपणामां जे सुख समायुं छे तेनो गंध पण मायामां नथी. २

जेवुं विचारमां तेवुंज वाणीमां अने आचारमां आवे तो ते स-रलता लेखाय छे; परंतु विचारमां जूदुं अने क्रियामां जूदुंज वर्तन होय तो ते कुलटा नारीनी जेवी कुटीलता या मायाज कहेवाय. वीणा-तंत्रीना त्रण तार एक सरखा ओर्डरमां होय छे, तो ते मजानो स्वर काढी सांभळनारने आनंद उपजावे छे, पण जो तेमांथी एकपण तार तूटेलो के अव्यवस्थित थयेलो होय तो ते तंत्री नकामी थइ जाय छे; तेम मन, वचन अने काया अथवा विचार, वाणी अने आचार जो एक तार—एकतावाळा—पूर्वापर विरोध व-गरना होय छे, तो आत्मसाधनमां सरलता योगे अपूर्व आनंद उपजे छे, ए अति अगत्यनी वात निज लक्षमां राखी सहु सुखार्थी जनोए पूर्वापरविरोधी विचार, वाणी अने क्रियारुप कुटीलतानो त्याग करी अविरुद्ध विचार, वाणी अने आचारने सेववा रुप सर-लतानो आदर करवा उजमाळ थवुं उचित छे. आवी आत्मने खानारी मायाने निवारवानो खरो उपाय सरलताज छे.

२५ लोभ कषायनो त्याग करवा हितोपदेश

सुण वयण सयाणे[1], चित्तमा लोभ नाणे,
सकळ [2]व्यसनकेरो, मार्ग ए लोभ जाणे,
इक खिण पण एने, संगरंगे म लागे,
भव भव दुःख दे ए, लोभने दूर त्यागे ५१

कनकगिरि[3] कराया, लोभथी नंदराये,
निज अरथ न आया, ते हर्या देवताए;
सवळ निधि लहीजे, स्वायते[4] विश्व कीजे
मन तनह वरीजे, लोभ तृष्णा न छीजे, ५२

भावार्थ—हे शाणा! तने हितवचन कहु ते तु सांभळ, सुज्ञ सज्जन होय ते लोभने सकळ आपदानो धोरी मार्ग जाणी तेने मनमा पेसवा देता नथी. एक क्षण मात्र एनो संग करवाथी जीवने भवोभव दुःख सहवा पडे छे एम समजी तु पण एनो संग न कर. एना संगथी कोण सुखी थयु छे? जो! नंदराजाए लोभ वश सोनाना डुंगर कराव्या पण ते तेना कइ उपयोगमा न आव्या देवताए ए सघळा हरी लीधा ज्या सुधी तनमनथी लोभ–तृष्णा तूटे–छुटे नहि त्या सुधी न्हाय तो सकळ निधान हस्तगत थाय अथवा आखु जगत स्व वश थाय तोपण ल्गार मात्र सत्य सुख

१ सज्जन २ कष्ट ३ सोनानी डुंगरीओ ४ पोताने कबजे

मळतुं नथी शास्त्रकारे ठीकज कह्युं छे के 'लोभ मूलानि दुःखानि'— 'बधाय दुःखनुं मूळ लोभज छे. लोभवश पडेला प्राणीओ सुख पामी शकता नथी.'

"आगर सबही दोषको, गुणधनको बड चोर;
व्यसनवेलीको कंद है, लोभ पास चहुं ओर."

लोभ सर्व दोषनी खाण छे, गुणधन हरी लेनार भारे चोर छे. दुःखवेलीनुं मूळ छे अने प्राणीओने फसाववा चारे बाजु रचेलो पास छे. जेम जेम इच्छित लाभ मळे छे तेम तेम लोभ वधतो जाय छे. प्राणीओनी इच्छा आकाशनी जेवी अनंती छे—अंत वगरनी छे. मनोरथ भटनी खाड पूरवा जतां ते ऊंडी जती जाय छे, ते कोइ रीते पूरी शकाती नथी—अधूरी ने अधूरीज रहे छे. वळी शास्त्रकारे लोभने सर्वभक्षी दावाग्निनी उपमा आपी छे. संतोषवृष्टिथी ज ते शान्त थइ शके छे. वळी तेने अगाध समुद्रनी उपमा आपेली छे. संतोष रूप अगस्तिज तेने अंजलीरूप करी शके छे. लोभ महा भयंकर उपाधिरूप छे. लोभरूप वादळां वर्षे छे त्यारे प्रचुर पापरूप कादव थाय छे, जेथी त्यां धर्महंसने रहेवुं गमतुं नथी अने अज्ञान अंधकार छवाइ जवाथी ज्ञान—प्रकाश पण रहेतो नथी. लोभ—तृष्णाने शान्त करवा संतोष—अमृत सेववानी बहु जरूर छे. जेम सारा मजबूत कांटावडे नवळो कांटो काढी शकाय छे तेम प्रशस्त धर्मलोभवडे अप्रशस्त—खोटो लोभ दूर करी शकाय छे. ए वात सर्वत्र लागु पडे छे.

२६ दयाधर्मनु सेवन करवा सदुपदेश.

सुकृत कलपवेली, लच्छी विद्या सहेली,
विरति रमणी केळी, शांति राजा महेली;
सकळ गुण भरेली, जे दया जीव केरी,
निज हृदय धरी ते, साधिये मुक्ति शेरी ५३
निज शरण पारेवो, श्येनथी जेण राख्यो,
षट दशम जिने¹ ते, ए दयाधर्म दाख्यो.
तिण हृदय धरीने, जो दयाधर्म कीजे,
भवजळधि तरीजे, दुःख दूरे करीजे ५४

भावार्थ—पुन्य फळने पेदा करवा कल्पवली तुल्य, लक्ष्मी अने विद्यानी साहेली (व्हेनपणी) चारित्रमा रमण करवाना साधनरूप, अने शान्त रसराजने रहेवा उत्तम स्थानरूप सकळ गुणभरी जीवदया जो निज दिलमा धारीए तो तेथी आगळ जता मोक्षपदने पामी शकीए. १

जेवी रीते सोळमा जिनेश्वर श्री शान्तिनाथजीए सींचाणाथी पराभव पामता पारेवाने निजशरणे राखी दयाधर्मने दाखव्यो, तेम

---

१ सोळमा प्रभु शांतिनाथे

स्वहृदयमां करुणाभाव राखीने जो दयाधर्मनुं सेवन करवामां आवे तो भवसमुद्रने तरी निश्चे सर्व दुःखने दूर करी शकाय. २

जे विषय कषायादि प्रमादवश थइ स्वपर प्राणनी हानिरुप हिंसा करे छे तेने अंत वगरना—अनंत जन्म मरणनां असह्य दुःख सहेवां पडे छे. स्वार्थवश जो परने परिताप उपजाववामां आवे तो तेथी अनंत गुणो परिताप पामवानो प्रसंग पोताने ज आवी पडे छे; आ लोकमां ज एथी वधबंधन छेदन भेदन प्रमुख अने परभवमां नरकादिनां दुःख सहेवां पडे छे. परंतु जो कोइ ज्ञानी गुरुनी कृपाथी विवेक द्रष्टि खुल्ले अने क्षमागुण प्रगटे तो दुष्ट हिंसादोषथी बची अमृत जेवी अहिंसा या दयानो लाभ मेळवी शकाय. सर्व प्राणीवर्गने स्वात्मतुल्य लेखी सुखशाता उपजाववामां आवे छे तो परिणामनी विशुद्धिथी पोताने ज आ लोकमां तेमज परलोकमां अनेक गुणी सुखशाता उपजे छे. जेवां बीज वावे छे तेवांज फळ मळे छे एम समजी सुज्ञजनोए हिंसारुप विषबीज नहि वावतां अहिंसारुप अमृतबीज ज वाववां जोइए. संक्षेपमां 'परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्—परोपकार पुन्य फळने माटे अने परपीडन पापफळने माटे थाय छे. सत्य, प्रमाणिकता, शील अने संतोषादि व्रत नियमो आदरी पाळवानो अंतरंग हेतु दयाधर्मनी रक्षा अने पुष्टि अर्थे ज छे. ए मुद्दानी वात निज लक्षमां राखी शास्त्रवचनने अनुसरवा प्रमादरहित प्रयत्न करवो उचित छे.

२७ सत्य वाणी वदवानो प्रभाव समजी प्रिय अने हितवचनज उच्चारवा हितोपदेश

गरल[1] अमृत वाणी, साचथी अग्नि पाणी,
स्रज सम[2] अहिराणी, साच विश्वास खाणी,
सुप्रसन सुर कीजे, साचथी ते तरीजे,
तिण अलिक[3] तजीजे, साच वाणी वदीजे ५५

जग अपजश वाधे, कूड वाणी वदता,
वसुनृपति कुगत्ये, साख कूडी भरंता,
अमत वचन वारी, साचने चित्त धारी,
इम वचन विचारी ज सदा सौख्यकारी ५६

भावार्थ —प्रिय पथ्य अने तथ्य (मिष्ट-मधुर लागे अने हितरूप थाय एवुं) यथार्थ वचन वदवु—बोलवा सदा सर्वदा निज वश राखनार आ लोकमां अने परलोकमां बहु सुखी थाय छे. आ वचन विश्वासपात्र बनी भारे प्रतिष्ठा पामे छे अने परभवमां स्वर्गादिना सुख पामे छे तेथी सत्य वचन ज बोलवा दृढ प्रतिज्ञा करवी घटे छे सत्य वचनना दृढ अभ्यासथी वचनसिद्धि थवा पामे छे तेना प्रभावथी झेर अमृतरूपे परिणाम पामे छे, अग्नि जलरूप थई जाय छे.

---

१ झेर अमृत थाय २ सापनी पुष्पमाळा थाय ३ असत्य

काळी नागण पुष्पनी माळारुप थाय छे, लोकमां भारे विश्वास बेसे छे, देवताओ बहु प्रसन्न थइ शके छे अने अंते भवसमुद्रनो पार पमाय छे. एम समजी असत्य वाणीनो त्याग करी अन्य जनोने प्रिय अने हितरुप थाय एवी ज सत्य वाणी वदवी घटे छे. १

असत्य वाणी वदतां दुनियामां अपजश वाधे छे. कूडी-खोटी साक्षी भरतां वसुराजानी पेरे लोकमां भारे अपवाद अने दुर्गति थाय छे. आ अति अगत्यनी वात निज लक्षमां सदाय धारी राखी कूडा बोल, कूडी साक्षी, कूडां आळ अने परतांत-परनिंदा करवानी कूडी टेव सदंतर दूर करी सत्य प्रतिज्ञा दृढपणे धारी तेनो एवो सारी रीते निर्वाह करवो के जेथी आ लोकमां तेमज परलोकमां सदाय आत्म उन्नति ज थवा पामे. २. सत्यव्रतधारी जनोए शास्त्र अविरुद्ध बोलवा सदाय लक्ष राखवुं जोइए. उत्सूत्र भाषण समान कोइ भारे पाप नथी अने सशास्त्र भाषण तुल्य कोइ भारे पुन्य या धर्म नथी. ए अपेक्षाए सत्य व्रत पाळवामां घणी सावचेतो राखवानी जरुर छे. श्री कालिकाचार्य महाराजे प्राणान्त कष्ट वखते पण जो शास्त्रविरुद्ध वचन कह्युं नहि तो तेमनो सर्वत्र यशोवाद थयो अने ते सद्गति पाम्या; तेम गमे तेवा विषम संजोगो वच्चे पण जेओ सक्रमपणे उक्त व्रतनुं सेवन-आराधन करे छे ते उभय लोकमां सुखसंपदा पामे छे अने अन्य अनेक भव्य जनोने पण मार्गदर्शक बने छे. सत्यना प्रभाव उपर अजवाळुं पाडे एवा अनेक उत्तम द्रष्टांतो मळी आवे छे ते निज लक्षमां राखी आत्मउन्नति अर्थे सुज्ञजनोए सत्य व्रतनुं पालन करवुं ज जोइए.

२८ चोरी करवानी कुटेवथीयती खुवारीसमजी नीति आदरवा हितोपदेश.

परधन अपहारे, स्वार्थने चोर हारे,
कुळ अजस वधारे, वधघातादि धारे,
परधन निण हेते, सर्प ज्यु दूर वारी,
जग जन हितकारी, होय संतोष धारी ५७

निशदिन नर पामे, जेहथी दु:ख कोडी,
तज तज धन चोरी, कष्टनी जेह ओरी,
परविभव हरतो, रोहिणी चोर रंगे,
इह अभयकुमारे, ते ग्रह्यो बुद्धि संगे ५८

भावार्थ —द्रव्यना लोभथी कुव्यसन कुबुद्धि थईने चोर लोको पारका धनने गमे ते छळ-कपट करीने अपहरी ले छे, तेथी तेमनो स्वार्थ उलटो बगडे छे. तेओ पोतानो वखत भयाकुळ स्थितिमां ज पसार करे छे. क्याय जपीने बेसी के शयन करी शकता नथी, सुखे खाइ पी शकता नथी, पण रातदिन पकडावा के दंडावाना ज भयमां रखडता रहे छे तेमना मनने क्याय चेन पडतुं नथी. तेनी साथे तेमना कुटुंब कबीलाना पण भोग मळे छे कुळनी कीर्तिनो लोप थइ जाय छे, अने वध बंधनादिक कष्ट सहवा पडे छे.

चोरीना अपलक्षणथी सर्पनी जेम कोइ तेमनो विश्वास करता नथी. आ भारे दोष निवारवानो खरो उपाय संतोष ज छे. १.

जेथी जीवने रात दिवस अनेक दुःखनो कडवो अनुभव करवो पडे छे ते कष्टनी खाण जेवो चोरी करवानो दोष जरुर तजवा जेवो ज छे. रोहिणी चोर पारका द्रव्यने खुब दमथी अपहरी लेतो हतो, तेने अभयकुमारे बुद्धिबळथी पकडी लीधो हतो. श्री वीरप्रभुनां वचनथी ज ते बचवा पाम्यो हतो. पछी छेवटे तेणे वीरप्रभुनुं ज शरण स्वीकार्युं हतुं. २.

पराइ नजीवी वस्तु उचकवानी के छीनवी लेवानी टेव आ-गळ उपर भारे भयंकर रुप पकडे छे अने जीवलेण व्याधिनी पेरे तेना प्राण पण हरी ले छे. जो शरुआतथी ज बाळको उपर नीति-ना अने धर्मना शुभ संस्कारो पाडवामां आव्या होय तो प्रायः आवी भयंकर भूलो पाछळनी वयमां भाग्ये ज थवा पामे छे. संत-तिनुं भलुं इच्छनार मावापोए तेवी दरकार राखवी जोइए अने पोतानां बाळकोने सारा नीतिवंत अने धर्मशील शिक्षक पासे के-ळववां जोइए. बाळको जेवुं देखे तेवुं सहेजे शीखे छे तेथी तेमनी समीपे—दृष्टिए एक पण अनीतिभर्युं आचरण न आवे एवी संभाळ राखवी जोइए, क्वचित् दैवयोगे बाळक एवी कंइ भूल करे तो ते मावापोए के तेना शिक्षके तेने समजावी सुधरावी लेवी जो-इए. केटलाक सुधरेला देशोमां केदी—चोरोने पण सदुपदेशवडे सु-धारी शकाय छे तो पछी बीजाओनुं तो कहेवुंज शुं? उत्तम अने

राचीश नहि. स्वस्त्रीमां ज संतोष धरनार सुखी थाय छे, ते एक पत्नीव्रतवान् लेखाय छे, स्वस्त्रीनो अनादर करी परस्त्रीमां लुब्ध बननारने महा हानि थवा पामे छे. १

परस्त्रीना विषयरागमां रंगायाथी रावण जेवो राजवी विनाश पाम्यो अने उक्त विषयथी विरक्त थयेलो गांगेय सर्वत्र यशवाद पाम्यो. बाळवयथी ज शील व्रतधारी जीवित पर्यंत अखंड शीलनुं पालन करवाथी अंते ते सद्गति पाम्यो. वळी आखी दुनियामां विख्यात थयेली द्रौपदी तथा सीता नामनी सतीने तेनी सुशीलता (स्वपति संतोष) ने लीधे अनेक देवताओ अने मनुष्योए सेवी हती. २

जे शुभाशयवंत स्त्रीपुरुषो पोताना मनने इन्द्रियोने काबुमां राखीने तेमने उन्मार्गे जवा देता नथी तेओ गमे तेवी तेनी कसोटी थवते प्राणप्रिय शीलव्रतनुं संरक्षण करी उत्तम सतासतीओनी पंक्तिमां लेखावा योग्य बने छे. आर्य सती सतानां एवां अनेक उदार दृष्टांतो सुप्रसिद्ध छे. आवां सुशील स्त्रीपुरुषरत्नोने कष्ट वखते देवताओ पण सहाय करे छे. तेमनो निर्मळ यश जगतमां सर्वत्र प्रसरी रहे छे अने गमे तेवुं दुष्कर कार्य तेओ सुखे साधी शके छे. निर्मळ शीलना प्रभावे ज सुदर्शन शेठनी शूळी छुटी ने सिंहासन थइ गयुं हतुं. शीलना ज प्रभावे सती सुभद्राए कूवामांथी काचे तांतणे बांधेली चाळणीवडे जळ काढीने चंपानगरीनां द्वार उघाड्यां हता अने शीयळनाज प्रभावे सती सीताजीने अग्नि शीतळ थइ गयो हतो. संक्षेपमां शीयळनां प्रभावे वाघ

चकरी जेवो, सर्प फुलनी माळा जेवो अने समुद्र स्थळ जेवो थइ जाय छे एम समजी मुज्ञ जनोए निज मन अने इन्द्रियोने मर्यादामां राखी सदाय सुशीलताज सेववी जोइए. कुशीलताथी रावण प्रमुखना थयेला भुंडा हाल जाणी कदापि तेनो संग करवो नज जोइए. कुशीलताथी जगतमां अनेक माठा उपनामो मळे छे अने सुशीलताथी सर्वत्र यशवाद उपरात सद्गति थाय छे

३०परिग्रह अथवा द्रव्य ममता तजवा हितोपदेश.

शशि उदय वधे ज्यु, सिंधु वेळा[१] भलेरी,
धन करी मन साथे, तेम वाधे घणेरी,
दुरित नगग सेरी, तु करे ते परे[२]री,
मम कर अधिकेरी, प्रीति ए अर्थ केरी ६१
मनुष्य जनम हारे द्रव्यनी कोडी धारे,
परिग्रह ममताए, स्वर्गना सौख्य वारे,
अधिक धरणी[३] लेवा धातकी खंड केरी,
सुभूम कुगति पामी, चक्रीगयं घणेरी ६२

भावार्थ —जेम चंद्रमाना उदय साथे समुद्रनी भरती वधती जाय छे तेम द्रव्यनी वृद्धि थवानी साथे ममतानी पण वृद्धि थती जाय छे एम समजी पापने पेदा करनारी अने वृद्धि करनारी द्रव्य

१ समुद्रनी भरती २ दुश्मन. ३ पृथ्वी

ममताने तुं दूर कर. अनित्य अने असार द्रव्यनी अधिक प्रीति तुं न कर. न कर. १.

द्रव्य ममतावडे दुर्लभ मानव भव एळे हारी जवाय छे, क्रोडो गमे दुःख आवी पडे छे, अने स्वर्गनां सुखथी वेनशीब ज रहेवाय छे. मात्र छ खंड राज्यथी असंतुष्ट रहेला सुभूम चक्रवर्तीए, धातकी खंडनी पृथ्वी स्ववश करवा जतां, पापी ममता योगे तेना सेवक यक्षोए एकी साथे उपेक्षा करवाथी, छती ऋद्धि हारी, सर्व साथे समुद्र तळे जइ, नीच नरक गतिज साधी-प्राप्त करी. २

जेम अत्यंत भारथी भरेलुं नाव डुवी दरीया तळे जाय छे तेम अति लोभ वश परिग्रह-ममताथी जीव भवसमुद्रमां डुवी जाय छे.

आ दुर्लभ मनुष्य भवादि शुभ सामग्री गमावी देनार फरी ते सामग्री पामी शकता नथी. फरी फरी एवी सामग्री पामवी अति दुर्लभ छे, एम समजी सुज्ञजनोए परिणामे दुःखदायी द्रव्य ममतानो त्याग करी-द्रव्य लोभ तजी, सुखकारी धर्मनो ज लोभ करवो युक्त छे. अनेक प्रकारनी द्रव्य-संपत्ति लोभवश एकठी करी सती छेवटे ते छेह दइ जती रहे छे अथवा तेने तजी पोताने जतुं रहेवुं-जमशरण थवुं पडे छे एम विचारी जे धर्मसंपत्ति (गुण संपदा) सदाय साथे रहे छे तेनो संचय करवा शामाटे प्रयत्न न करवो? मम्मण शेठनी पेरे अनमेळ लक्ष्मी एकठी कर्या छतां कृपणता दोषथी ते लक्ष्मी सुखने माटे नहि पण मिथ्या ममतावडे दुःखने माटेज थाय छे. जेम जेम लक्ष्मीनो लाभ थतो जाय छे तेम तेम लोभ पण वधतो जाय

छे. लोभवश जीव अधिक लक्ष्मी मेळववा जीवनां जोखम लेडे छे, महा आरंभ समारंभ वाळा पापव्यापार करे छे अने हायवोय करता मरीने छेवटे नरकादि दुर्गतिने पामे छे. लोभांध जीव नीति-धर्मनो अनादर करीने अनीति-अधर्मने मार्गे चाले छे अने अनेक अधम कार्य करी आ लोकमां अपवाद अने परलोकमां परमाधामीना मार खाय छे. एम समजी सुज्ञ जनोए एवी अधम लोभवृत्ति तजी, संतोषवृत्ति धारी रने जन्म सुधारी लेवा योग्य छे.

३१ संतोष गुण धारवा-आदरवा हितोपदेश.

सकळ गुण भराये, विश्वता[1] वश्य थाये,
भवजळधि तराये, दुःख दूरे पळाये,
निज जनम सुधारे, आपदा दूर वारे,
नित धरम वधारे, जेह संतोष धारे ६३
सकळ सुख तणो ते, सार संतोष जाणे,
कनक रमणि केरी, जेह इच्छा न आणे,
रजनि कपिल बांध्यो, स्वर्णनी लोलताए,
भ्रमर कमळ बाध्यो, ते असंतोषताए ६४

भावार्थ—जे सुज्ञ जनो संतोष गुणने धारे छे ते सकळ गुण-गौरवने पामे छे, सकळ विश्ववर्ती जनोने वश करे छे, भवसमुद्रने

१ आखुं विश्व

करी शके छे, दुःख मात्रने दूर करी शके छे, निज जन्मने सुधारी शके छे, आपदा मात्रने निवारी शके छे अने नित्य नित्य धर्मनी वृद्धि करी शके छे, संतोष गुणनो महा प्रभाव छे. १

कनक अने कामिनीना संगनी इच्छा जे करता नथी तेज खरेखर संतोषने सकळ सुखनुं धाम समजे छे. संतोष गुण वगर कनक कामिनीनी इच्छा तजाती नथी. सुवर्णनी लोलुपताए कपिल ब्राह्मण राजानी पासे मध्य रात्रीए जतां मार्गमां कोटवाळना हाथमां पकडाइ गयो, पछी प्रभाते तेने राजा पासे रजु करतां सत्य हकीकत कहेवाथी राजाए तेने छोडी दीधो अने जोइए तेटलुं सुवर्ण मागी लेवा जणाव्युं. ते विचार करीने मागवा उपर राखी ज्यारे घरे विचार करवा बेठो त्यारे तेनी इच्छा आकाश जेवी अनंती वधी गइ—इच्छानो अंतज न आव्यो, तेथी छेवटे ते प्रतिबोध पाम्यो, एम समजीने के सुख आखर संतोषमां ज छे. वळी भमरा जे कुसुममां बंधाइ रहे छे ते पण असंतोषवडे ज एम समजी सुज्ञजनोए परस्पृहा—विषयतृष्णा तजी संतोषगुण सेववा आदर करवो युक्त छे. २

शास्त्रकारे ठीक ज कह्युं छे के ' परस्पृहा महा दुःखरूप छे अने निःस्पृहता महा सुखरूप छे.' ए वचननुं उंडुं रहस्य विचारी निःस्पृहता आदरवी युक्त छे. लोभवश नंदराजाए सोनानी डुंगरीओ करावी पण ते तेना कशा काममां न आवी, देवताए ते अपहरी लीधी अने पोते नाहक ममता बांधीने दुःखी थयो. लोभ सर्वभक्षक

अग्नि समान छे, ते सर्व सुखनो नाश करी प्राणीने दुःख मात्र आप छे. जेम इन्धणथी आग तृप्त थती नथी तेम जीवने गमे तेटली द्रव्यसंपत्तिथी संतोष वळतो नथी जीव उन्मत्तनी परे गमे तेम बकता फरे छे अने गमे तेवी पापचेष्टा—क्रिया करे छे, आवा जीवनी अंते बूरी गति थवा पामे छे. जेम जळवडे अग्नि शान्त थाय छे तेम ज्ञान वैराग्यवडे तृष्णा—दाह उपशमे छे अने शान्ति—संतोष प्रगटे छे. भूमि उपर शय्या, भिक्षावृत्तिथी आहार, जीर्णप्राय वस्त्र अने एकांत वनवास छता निःस्पृही साधु—महात्माने चक्रवर्ती करता पण संतोषगुणवडे अधिक सुख होय छे तेओ शम—साम्राज्यवडे ज खरे-खर सुखी छे, त्यारे परिग्रह—ममताथी भरेला इन्द्र के नरेन्द्र असंतु-ष्टपणावडे उलटा दीन—दुःखी ज देखाय छे धन धान्य पुत्र परि-वार उपर के शरीरादिक संयोगिक वस्तुओ उपर नाहक ममता राखी जीव दुःखी ज थाय छे एम समजी शाणा जनोए संतोषवृत्ति ज सेववी युक्त छे

३२ विषय तृष्णा तजवा हितोपदेश.

शिवपद यदि वाछे, जेह आनंददाइ,
विषसम विषया तो, छांडि दे दुःखदाइ,
मधुर अमृतधारा, दूधनी जो लहीजे,
अति विरस सदा तो, कांजिका शुं ग्रहीजे ६५

विषय विकळ ताणी, कीचके भीमभार्या,[1]
दशमुख[2] अपहारी, जानकी[3] रामभार्या;
रति धरी रहनेमि, क्रीडवा नेमिभार्या,[4]
जिण विषय न वर्ज्या, तेह जाणो अनार्या. ६६

भावार्थः—हे भव्यात्मन ! जो तुं परम आनंददायक मोक्ष-सुखने चाहतो ज होय तो परिणामे परम दुःखदायक विष जेवा विषयभोगने तुं तजी दे; अने निर्वांछकता अथवा निःस्पृहता आदरी, ज्ञान वैराग्यने जगावी, समता चारित्रनुं शुद्ध—निर्मळ भावे सेवन करी लेवा रुप अमृतनी धारा पी ले. ए तो देखीतुं सत्य छे के जो दूधनी मधुर-अमृतधारा मळती होय तो पछी अति विरस-खाटी कांजीका—छाशनो शा माटे आदर करवो जोइए ? न ज करवो जोइए. संतोष ए खरुं अमृत छे अने असंतोष अथवा विषयतृष्णा ए खरेखर प्राणहारक उग्र विष समान होवाथी तजवा योग्य ज छे. १

विषयतृष्णाथी विकळ बनेला कीचके सती द्रौपदीनां चीर-वस्त्र ताण्यां हतां अने दशमुख—रावणे सती सीताजीनुं अपहरण कर्युं हतुं, तेमज वळी रहनेमीए राजीमती संगाते रति—क्रीडा करवा मन कर्युं हतुं अने ते माटे भोगप्रार्थना पण करी हती. परंतु शील संतोषना प्रभावथी सती द्रौपदीनां चीर पूरायां—(नवनवां वस्त्र

१ द्रौपदी. २ रावण ३ सीता. ४ राजिमती.

तेणीना देह उपर थया पाम्या), एकान्त स्थळ छता रावण, सती सीताना शीलनो ताप सहन करी नहि शकवाथी ठेटो ज रह्यो, अने सती राजीमतीना सदुबोध भर्या वचनथी रहनेमी शीघ्र ठेकाणे आवी स्वदोषनी आलोचना निंदा करी अविचळ पद पाम्या

जे मोहाध बनी, इन्द्रियवश थई विषयविकळताथी अधर्मने मार्गे चाले तेमने तेमना तेवा अधर्म-कार्यने लइने अनार्थ प्राय ज समजवा २

इन्द्रियोना विषयोमा लुब्ध बनी क्षणिक अने कल्पित सुखनी खातर जीव नित्य-स्वाभाविक सुखने गुमावी दे छे विषयसुखमा स्व-शक्तिनो क्षय करी नाखनार सहज स्वाभाविक सुख मेळववा स्ववी-र्यनो क्याथी खर्च करी शके ? इन्द्रियोने वश नहि थता तेमने ज स्ववश करवा प्रयत्न करी लेवाय तो स्वल्प काळमा महान् लाभ मेळवी शकाय फक्त दिशा बदलवानी ज प्रथम जरर छे स्वेच्छा मुजब गमे तेवा दुःखदायक विषयोमा दोडती जती इन्द्रियोने दमी तेमने सुखदायक साचा मार्ग वाळवी जोइए चक्षुवडे वीतराग दे-वनो अने सज्जनोनो शात मुद्रा नीरखवी निज आत्मविचारणा करवी, श्रोत्रवडे सदुपदेश अमृतनु पान करवु, जीभवडे शुद्ध देव गुरु अने धर्मनी स्तुति करवी, सुगधी पदार्थ देवगुरुनी भक्तिमा नि स्वार्थपणे वापरवा अने निज देह वडे बने तेटली सेवा-भक्ति उत्तम जनोनी करवी अने परमार्थ परायण थावु

३३ इंद्रिय पराजय आश्री हितोपदेश.

गज मगर[1] पतंगा, जेह भृंगा[2] कुरंगा,[3]
इक इक विषयार्थे, ते लहे दुःख संगा;
जस परवश पांचे, तेहनुं शुं कहीजे,
इम हृदय विमासी, इंद्री पांचे दमी जे. ६७

विषय वन चरंतां, इंद्री जे उंटडा ए,
निज वश नवि राखे, तेह दे दुःखडा ए;
अवश करण मृत्यु, ज्युं अगुसेंद्री पामे,
स्ववश सुख लह्यो ज्युं, कूर्म[4] गुसेंद्री नामे. ६८

भावार्थः—हाथी, मच्छ—मगर, पतंग, भ्रमर अने हरीण ए वधां प्राणीओ एक एक इन्द्रियना विषयमां आशक्त बनवाथी प्राणान्त दुःखने पामे छे, तोपछी जे पांचे इन्द्रियोना विषयोमां आसक्त बनी रहे तेमनुं तो कहेवुं ज शुं? एम हृदयमां विचारी सुज्ञजनोए पांचे इन्द्रियोनुं दमन करवुं युक्त छे, अन्यथा द्रव्य अने भाव उभय प्राणनी हानि थवा पामे छे. १

विषयरुपी वनमां स्वेच्छाए चरता इन्द्रियोरुपी उंटडाओने जो स्ववश करी लेवामां न आवे तो ते दुःखदायक नीवडे छे. जे अज्ञजनो इन्द्रियोने स्ववश नहि करतां तेमनेज वश थइ पडे छे, तेओ

---

१ मत्स्यो. २ भमराओ. ३ हरणो. ४ काचबा.

परवश इन्द्रियवाळा काचवानी पेरे मरणान्त कष्ट पामे छे अने जेओ इन्द्रियोने सारी रीते दमी स्ववश करी लेय छे तेओ गुप्तेंद्रिय काचवानी परे खरेखर सुखी थइ शके छे ।

शास्त्रकार स्पष्ट जणावे छे के 'इन्द्रियोने इच्छित विषयोमां मोकळी मूकी देवी ते आपदा व्होरी लेवानो राजमार्ग छे, अने एज इन्द्रियोने नियममां राखी सन्मार्गे दोरवी ए सुख संपदा पामवानो श्रेष्ठ मार्ग छे.'

हवे ए बेमांथी तमने पसंद पडे ए मार्गने तमे ग्रहण करो, सुखी थवुं के दुःखी थवु एनो आधार आपणा सारा के नरसा वर्तन उपरज रहे छे इन्द्रियोरूपी उद्धत घोडाओने दुर्गतिना मार्गमां घसडी जतां अटकाववाज होय तो तेमने जिनेश्वर प्रभुना वचनरूपी लगामवडे अंकुशमां राखो विवेकरूपी हाथीने हणवाने केसरीसिंह जेवी अने समाधिरूपी धनने लुंटी लेवामां चोर जेवी इन्द्रियोने जे अजित रहे तेज धीर-वीरमां धुरंधर छे एम जाणवुं. तृष्णारूपी जळथी भरेला इन्द्रियोरूपी क्यारावडे वृद्धि पामेला विषयरूपी विषवृक्षो प्रमादशील प्राणीओने आकरी मूर्छा उपजावी विटंबना करे छे. विषयसुख भोगवतां तो प्रथम मीठा-मधुर लागे छे, पण परिणामे ते विषयभोग किंपाकना फळनी पेरे अनर्थकारी नीवडे छे, जेम जेम प्राणी विषयनुं अधिक अधिक सेवन करे छे तेम तेम तृष्णाने वधारी संताप उपजावे छे. जेम इंधनथी अग्नि तृप्त थतो नथी, तेम गमे तेटला विषयभोगथी जीवने तृप्ति थती नथी, अने ते (संतोष) वगर सुख पण प्राप्त थतुं नथी तेथी मोक्षना अर्थी

सुज्ञजनोए संतोष गुण धारवा निज मन अने इन्द्रियोने नियममां राखी सन्मार्गे वाळवा प्रयत्न करवो जोइए.

३४ प्रमाद परिहरवा हितोपदेश.

सहु मन सुख वांछे, दुःखने को न वांछे,
नहि धरम विना ते, सौख्य ए संपजे छे;
इह सुधरम पामी, कां प्रमादे गमीजे,
अति अळस तजीने, उद्यमे धर्म कीजे. ६९

इह दिवस गया जे, तेह पाछा न आवे,
धरम समय आळे, कां प्रमादे गमावे;
धरम नवी करे जे, आयु आळे वहावे,
शशि नृपतिपरे त्युं, सोचना अंत पावे. ७०

भावार्थः—जगतना सहु जनो सुखनीज वांछना करतां जणाय छे, दुःखनी वांछना करतां कोण नजरे पडे छे? कोइज नहि. तेम छतां दुःखनो अने सुखनो खरो मार्ग जाणे छे कोण? अथवा जाणवानी दरकार करे छे कोण? धर्म—दान, शील, तप, भावमां आदर करवाथी सुख अने तेमां अनादर—प्रमाद करवाथीज दुःख प्राप्त थाय छे. प्रमाद रहित साधुधर्म के गृहस्थधर्मनुं सेवन कर्या वगर सुख संभवतुंज नथी. उक्त सद्धर्मने सारी रीते सेवन करवा योग्य रूडी सामग्री मळ्यां छतां तेनो लाभ लइ लेवामां आ भाटे उपेक्षा

करवो जोइए? अगथी आळसने आळगु करी नांखी सुखना अर्थी भाइबेनोए पवित्र धर्मनु सेवन करी लेवा खमुस उद्यम करवोज जोइए. उद्यम जेवो कोइ बधु नथी अने प्रमाद जेवो कोइ शत्रु नथी जे जे क्षणो, जे जे दिवस, मास, वर्षादिक आपणा आयुष्यमाथी ओछा थाय छे-चाल्या जाय छे ते फंइ पाछा आवता नथी. आदरथी धर्मसेवन करनारना ते सघळां लेखे थाय छे अने आळसथी धर्मनो अनादर करनारना ते वृथाय अलेखे जाय छे. एम समजीने हे भोळा जनो! धर्म साधा! जे अमूल्य समय हाथ लाग्यो छे तेने प्रमाद वश थइ जइ केम व्यर्थ गुमावो छो? धर्मनु सेवन करवामा आळस-उपेक्षा करनारनु आयुष्य नकामु चाल्यु जाय छे अने छेवटे तेने शशीराजानी पेरे शोच करवो पडे छे ते शशीराजाने तेना बंधुए प्रथम बहु परे बोध आपी धर्म सेवन करवा प्रेरणा करी हती, पण ते वखते तेने ए ज्ञान गळे उतरी नहोती अने उलटो आडु अवळु समजावी पोताना बंधुने पण मोह जाळमा फसाववा चाहतो हतो, तेम छता तेना बधु धर्मनु रहस्य सारी रीते समजता होवाथी लगारे डग्या नहि अने चारित्र-धर्मने आदरी देवगतिने पाम्या. पछी ज्ञानवडे पोताना भाइ शशीराजानी शी स्थिति थइ छे? ते तपासता ते देवने समजायु के भाइ तो विषयादिक प्रमादमा लपटाइ नरकगतिमा उत्पन्न थया छे एटले तेने प्रबोधवा पोते तेना स्थानके जइ अने तेने पूर्व भवनु स्मरण कराव्यु एटले ते कहेवा लाग्यो के 'हे बंधो! तमे मृत्युलोकमा जइ म्हारा पूर्व शरीरने खूब कदर्थना उपजावो, जेथी हुं आ दुःखमाथी मुक्त थइ शकु' देव उत्तर आप्यो

के 'भाइ! तेम करवाथी हवे कांइ वळे नही. समजीने स्वाधीन पणे प्रमाद तजी जे धर्म साधन करे छे तेज सुखी थइ शके छे, अन्यथा नहि.'

३५ साधु धर्मना स्वरुपनुं संक्षेप कथन.

(शार्दुलविक्रिडित).

जे पंचव्रत मेरुभार निवहे निःसंग रंगे रहे,
पंचाचार धरे प्रमाद न करे जे दुःपरिसा[१] सहे;
पांचे इंद्री तुरंगमा वश करे जे मोक्षार्थने संग्रहे,
एवो दुष्कर साधु धर्म धन[२] ते जे ज्युं ग्रहे त्युं वहे.७१

(मालिनी).

मयणरस[३] विमोडी, कामिनी संग छोडी,
तजिय कनककोडी, मुक्तिशुं प्रीति जोडी;
भव भव भय वामी, शुद्ध चारित्र पामी,
इह जग शिवगामी, ते नमो जंबुस्वामी. ७२

भावार्थः—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रहरुप पांच महाव्रतो रात्रिभोजननो सर्वथा निषेध सह पालन करवा रुप मेरुपर्वतनो भार जेओ निर्वहे छे, द्रढ वैराग्यना रंगथी जेमनुं हृदय रंगाइ गयेलुं होवाथी निःस्पृहभावे जे आनंदमां गरकाव रहे छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्यने अनुकूळ आचार–विचारने

१ आकरा परिसहो २ धन्य. ३ कामदेव संबंधी रस.

जे धारण करी रह छे, मद्य, विषय, कषाय, आळस अने विकथा-रूपी पाच पापी प्रमादनो जे चीवटथी त्याग करे छे, क्षुधा तृषा शीत उष्णना प्रमुख बावीश परिसहो पैकी जे जे परिसहो आवी पडे छे ते ते अदीनपणे समभावे जे सहन करे छे, अने चक्षु श्रोत्रादिक पाचे इन्द्रियोरूपी अवळा घोडाओने ज्ञान लगामवडे निज वशमां राखी जे महानुभाव मुनिजनो संयममार्गने सावधानपणे सेवे छे ते अनुक्रमे सकल कर्म-मळनो क्षय करी मोक्ष-पदने मेळवी शके छे आवो दुष्कर साधुधर्म दृढ वैराग्यथी आदरी जे तेने सिंहनी पेरे शूरवीरपणे पाळे छे ते भाग्यशाळी भाइ ब्हेनो खरेखर धन्य-कृतपुन्य छे.[१]

शृंगार रसनो अनादर करी, आठ पत्नीनो संग छोडी, ९९ क्रोड सुवर्णनो त्याग करी, केवळ मुक्ति साथेज लय लगाडी अने शुद्ध चारित्र-धर्मने सद्गुरु पासेथी प्राप्त करी, जन्म मरणनो भय दूर करी एज भवमा जे परमानंदपद-मोक्षने प्राप्त थया एवा श्री जंबूस्वामी महामुनिने अमारो वारंवार नमस्कार हो!! ए महामुनि साधुधर्मना एक उत्तम आदर्श (Ideal) रूप होवाथी एमनु उत्तम चारित्र मुमुक्षुजनोए वारंवार मनन करी परिशीलन करवा योग्य छे. धन्य छे ए महामुनिने के जेमणे पोताना पवित्र चारित्रना प्रबळ प्रभावथी प्रभवादि पाचसो चोरोने पण प्रतिबोधी परमार्थ मार्गमा प्रयोजी दीधा. जो आवा पुरुषार्थी महामुनिओना पवित्र चारित्र तरफ मुमुक्षुजनो सदाय दृष्टि राखे तो आजकाल दृष्टिगत थती सा-

१ वे टंक प्रतिक्रमण

धुधर्ममां शिथिलता शीघ्र दूर थवा पामे अने पुनः प्रबळ ज्ञान वैराग्य जागृत थतां साधुधर्म दीप्तिमान थवा पामे. २

३६ श्रावक धर्मना स्वरुपनुं संक्षेप कथन.

(शार्दुलविक्रिडित).

जे सम्यक्त्व लही सदा व्रत धरे सर्वज्ञ सेवा करे,
संध्यावश्यक[1] आदरे गुरु भजे दानादि धर्माचरे;
नित्ये सद्गुरु सेवनाविधि धरे एवो जिनाधीश्वरे,
भाख्यो श्रावकधर्म दोय दशधा[2] जे आदरे ते तरे. ७३

(मालिनी.)

निशदिन जिनकेरी, जे करे शुद्ध सेवा,
अणुव्रत धरी जे ते, काम आनंद देवा;
चरम जिनवरिंदे, जे सुधर्मे सुवासा,
समकित सतवंता, श्रावका ते प्रशंस्या. ७४
इम अरथ रसाळा, जे रची सूक्तमाळा,
धरमनृपति वाळा, मालिनी छंद शाळा;
धरममति धरंता, जे इहां पुण्य वाध्यो,
प्रथम धरमकेरो, सार ए वर्ग साध्यो. ७५

१ बार प्रकारनो. २ आनंद ने कामदेव श्रावक.

शुद्ध देव गुरु अने सर्वज्ञ वीतराग कथित धर्म उपर द्रढ श्रद्धा-रूप समकित ग्रहण करी जे व्रत नियमोने आदरे, सर्वज्ञ देवनी सेवा भक्ति करे, ष आवश्यक (प्रतिक्रमण सामायिक प्रमुख) आदरे, पूज्य-वडील जनोनी भक्ति करे, दानादि धर्मनु सेवन करे, अने सदाय सद्गुरुनी विधिवत् सेवना करे, ए रीते श्री जिनेश्वर भाषित द्वादश व्रतरूप धर्म जे महानुभाव श्रावको आदरे ते स्वर्गादिकना सुख अनुभवी अनुक्रमे मोक्षसुख पामे. १

जे सदाय शुद्ध भावथी जिनेश्वर देवनी सेवा भक्ति करे अने प्रभुना पवित्र उपदेश अनुसार गृहस्थ योग्य अणुव्रत, गुणव्रत अने शिक्षाव्रतने धारे, ते चरम तीर्थंकर श्री महावीर देवे प्रशसेला, अने सद्धर्म वासित थयेला आनद कामदेव प्रमुख उत्तम समकितवत अने सत्त्ववत श्रावकोनी पेरे प्रशसापात्र थाय छे २

जे सद्गुरुनो समागम करी विनय-बहुमान पूर्वक तत्त्व श्रवण करे छे अने निज हित कर्तव्यनो निश्चय करी सन्मार्गनु सेवन करे छे ते श्रावक कहवाय छे. अथवा शुद्ध श्रद्धा, सद्विवेक अने सत् क्रियानु जे यथाविधि सेवन करे छे ते शुभाशयो श्रावकनी खरी पक्तिमा लेखाय छे. तथाप्रकारना सद्गुण वगर त मात्र द्रव्य श्रावक योग्य उत्तम गुणोथी अलंकृत होय ते भाव श्रावक गणाय छे जे गृहस्थाश्रममा रह्या छता स्वस्व अधिकार अनुसार वीतराग शासननी उन्नति-प्रभावना करवा तन मनथी प्रवर्ते छे ते परम श्रावकनी पक्तिमा लेखावा योग्य छे सामान्य श्रावकोए पण व्यवहार शुद्धि राखवा, मिथ्यात्व वृद्धिकारक क्रिया तजवा अने गुणमा आगळ

अथवा अवश्य लक्ष राखवुं जोइए. दश द्रष्टान्ते दुर्लभ मनुष्य जन्मादि उत्तम सामग्री पामी प्रमादवश पडी तेने निरर्थक करी नहि देतां जेम तेम विषय कषायादि प्रमादाचरण तजीने सुश्रावकने छाजे एवा आचार विचार सेववा उजमाळ थवुं घटे छे. पूर्वे पुन्य योगे पवित्र धर्मना शुभ मनोरथ थाय तो तेने सफळ करी लेवा जरूर काळजी राखवी घटे छे, जेथी अत्यारे करेली हित करणी आगळ उपर घणी ज उपयोगी थइ शके.

अर्थ वर्ग.

उपेंद्रवज्रा.

अथार्थवर्गे हितचिंतनश्री-र्मितंपचार्थ्यस्व महोगसेवा।
खलादिमैत्री व्यसनादिचैव-मिहावधार्याः कतिचित्प्रसंगाः१

३७ अर्थ विषे.

(न्याय नीति अने प्रमाणिकपणाथीज द्रव्य उपार्जन करवा हितोपदेश.)

मालिनी वृत्त.

अरथ अरज जेणे, स्वायते विश्व होवे,
जिणविण गुण विद्या, रुपने कोण जोवे;
अभिनव सुखकेरो, सार ए अर्थ जाणी,
सकळ धरम जेथी, साधिये चित्त आणी. १

अरथ विण केवन्नो,[1] जेह वेश्याए नाख्यो,
अरथ विण वाशिष्ठे, राम जातो उवेख्यो,
सुकृत सुजसकारी, अर्थ ते ए उपार्जो,
कुवणज उपजतो, अर्थ ते दर वर्जो ॥ २

भावार्थ.—गृहस्थ वेषे संसार व्यवहारमा रहता पगले पगले द्रव्यनी जरूर पडे छे द्रव्य वगर पोतानामा गमे तेवा गुण विद्या के रुप होय तेने कोण जोवे छे—तेनी कदर के परवा कोण करे छे कोइ नहि. तेथी स्वबाहुबळथी न्याय, नीति अने प्रमाणिकपणु राखी—साचवीने तमे एवा अर्थ उपार्जन करो के जेवडे सहु कोइ तमने अनुसरीने चाले. जो एम करशो तो तमे स्वस्थ चित्तथी दानादि सकळ धर्म साधी शकशो अने एथी अपूर्व सुख समृद्धिने सहेजे प्राप्त करी शकशो. १

जुओ के अर्थ वगर कयवन्ना शेठनो वेश्याए अनादर कर्यो. अर्थ वगर वशिष्ठे रामने जातो उवख्यो. एम समजी हे सुज्ञजनो! सुकृत अने सुयशने पेदा करनार अने वृद्धि पमाडनार अर्थने खरी नीतीथी निर्दोष मार्गे उपार्जन करी अने कुवणजथी (नीच एवा पापव्यापारथी) प्राप्त थता गमे तेटला द्रव्यनी पण उपेक्षा करो दरकार न करो २

मार्गानुसारीपणाना ३५ हित बोलोमा प्रथमज आ वात कहेवामा आवी छे के हे भव्यजनो! जो तमे श्री वीतराग धर्म पामवानी

[1] कयवन्ना शेठ

चाहना राखताज हो तो अनीति अन्याय अने अप्रमाणिकपणाना द्रव्यनी उपेक्षा करीने शुद्ध नीति—न्यायथीज जेम बने तेम निर्दोष व्यापारवडेज द्रव्य उपार्जन करवानुं राखो. एथी तमने सुबुद्धि सूझशे. जेवो आहार एवो ओडकार आवे ए न्याये जो नीतीनुं द्रव्य पेटमां जाय तो बुद्धि सारी—निर्मळ थशे अने अनादिक धर्ममां प्रवृत्ति करवा अने ए अस्थिर द्रव्यथी स्वपर हित करी लेवानुं सूझशे. पूर्वे अनेक साहसिक पुरुषो पुरुषार्थवडे अनर्गल लक्ष्मी कमाइ लावीने उंची स्थिति उपर आवी पोताना अनेक सीदाता—दुःखी थता मानवबंधुओनो उद्धार करी, पवित्र धर्मने दीपावी स्वजन्म सफळ करता हता. पूर्वे थयेला महा समृद्धिवंत आनंद कामदेवादि श्रावकोनी वातो तो शास्त्रप्रसिद्ध छे, पण आ कलिकालमां पण एवा कइक निःस्वार्थ दानेश्वरी थया छे के तेमनां पवित्र चरित्र वांचतां चित्तमां चमत्कार पेदा थाय छे.

२८ हितचिंतन विषे.

परहित करवा जे, चित्त उच्छाह धारे,
परकृत हित हैये, जे न कांइ विसारे;
प्रतिहित परथी जे, ते न वांछे कदाइ,
पुरुषरयण सोइ, वंदिये सो सदाइ. १

निज दुःख न गणे जे, पारकुं दुःख वारे,
तिहतणी बलिहारी, जाइये कोडी वारे;

जिम विषभर जेणे, डक पीडा सहीने,
विषधर जिनवीरे, बुझव्यो ते वहीने ८

भावार्थ —परहित करवा जे सदाय चित्तमा उत्साह धर छे, एवाज सद्विचार जेना मनमा सदाय जागृत रह छे, एवीज मिष्ट-मधुरी हितवाणी रूप अमृतरस जेनी मुख-गगामाथी वह छे, अने एवीज निस्वरणी करवा सदाय चीवट राखी प्रवर्ते छे, बीजा परोपकारनीर पुन्याए करता हित-कार्यो (परोपकारना काम) जे कदापि विसरी जता नथी, अने करता उपकारना बदला मेळववा जेमने इच्छा थतीज नथी तेवा पुरुषरत्नो सदा सर्वदा सत्कार-सन्मान करवा लायकज छे. ४

जे पोतानु दुःख गणकारना नथी अने पारकु दुःख दूर करवा कायम प्रयत्न कर छे तेवा पुन्यार्थी पुरुषरत्नोनी बलीहारी छे जुओ चरम तीर्थंकर श्री महावीरदेव चडकोशीया नागनी डकपीडा सहीने पण केवळ परमार्थ दृष्टिए तेने प्रतिबोध कर्यो ए वात मशहूर छे. आवा आदर्श पुरुषोना पवित्र वर्तननु बनी शके तेटलु अनुकरण करवु जाइए, क जेथी आपणु पण जीवन सार्थक थइ शके ~

पवित्र आदर्श पुरुषोना हृदयनी एवीज भावना होय छे के सहु कोइ सुखी थाओ! सहु कोइ रोग-पीडा रहित थाओ! सहु कोइ कल्याणने पामो अने पापाचरणथी दूर रहो. एवा महान् पुरुषोना मनमा 'आ म्हारु अने आ पराय्ं' एवो भेदभाव होतो नथी.

तेमना उदार दीलमां तो आखी दुनीया कुटुंब रुप मनाय छे. तेओ सदाय इच्छे छे के आखी आलमनुं भलुं थाओ–आखी दुनीयामां सुख–शान्ति प्रसरो! सहु कोइ जनो परनुं हित (परोपकार) करवा तत्पर बनो! अहितकारक पाप–दोष मात्र दूर थाओ! अने सर्वत्र सहु कोइ सुखी थाओ! सहु साथे आवी उदार मैत्रीभाव उपरांत सद्गुणीना गुण नीहाळी तेमने अनुमोदन अने पुष्टि आपवारुप प्रमोदभाव अने अल्पगुणीने के दुःखीने देखी तेमने योग्य सहाय करवारुप करुणाभाव तथा तदन कठोर अने सुधारी न शकाय एवा निर्गुणी के दुष्ट जीवो तरफ पण रागद्वेष वगरनी तटस्थता राखवा तेओ उपदिशे छे.

३९ लक्ष्मी विषे.

(लक्ष्मी प्रभाव वर्णन).

हरिसूत रति रंगे, जे रमे रात सारी,
शिवतनय कुमारो, ब्रह्मपुत्री कुमारी;
हित करी दृग लीला, जेहने लच्छी जोवे,
सकळ सुख लहे सो, सोइ विख्यात होवे. ५

लखमिबळे यशोदा–नंदने विश्व मोहे,
लखमि विण विरुपी, शंभु भिक्षु न सोहे;

लखमि लहिय राके, जे शिलादित्य भञ्यो,
लखमि लहिय शाके, विक्रमे विश्व रञ्यो ६

भावार्थः—हरि जे इन्द्र तेनो सुत-पुत्र नामे जयत अथवा हरि जे कृष्ण वासुदेव तेनो सुत-प्रद्युम्न (अपर नाम कामदेव) ते रति (अप्सरा जेवी रुपवती स्त्री) संगाते नवी रात रमण-क्रीडा (संभोग) करे छे. तेमज शिव जे महादेव तेनो तनय-पुत्र नामे कार्त्तिकेय अथवा गणपति ते ब्रह्मानी पुत्री साथे सयोग पाम्यो ते लक्ष्मीना प्रभावथी, दुकाणमां जेना तरफ लक्ष्मी कृपाकटाक्षथी (प्रसन्न थइ) जोवे ते सकळ सुख-सपत्ति पामे. ? लक्ष्मी-देवीना वर-सहचार्य-सदा सहवासथी यशोदानो नदन-पुत्र जे कृष्ण वासुदेव तेना उपर सहु कोइ मोही पड्या अने ए लक्ष्मी वगरना शंभु-शंकर महादेव जे विरुप-रौद्र-बिभत्स रुपने धारता हता, ते भिक्षु-भीखारीनी जेम कशी शोभा पाम्या नहि. वळी लक्ष्मीना प्रभावथी एक राक नामना शेठे शिलादित्य जेवा नरपति-राजानो पण पराभव कर्यो, तेमज विक्रमादित्य राजाए प लक्ष्मीनीज प्रसन्नताथी दुनियाना लोकोने अनृण (रणमुक्त) करी, सहुने राजी करी पोताना नामनो सवत्सर चलाव्यो. (आमाना प्रथम छन्दमा कह्या दाखला लौकिक शास्त्रमा प्रसिद्ध जाणीने कहेल्या जणाय छे बोध लेवा माटेज ते उपयोगी लेखवाना छे.) ६

परमार्थ—गृहस्थाश्रम चारी रीते चलावता इच्छनारा गृह-

स्थाने लक्ष्मी (धन)नी ढगले अने पगले जरूर पडे छे. कहो के ते-
नाज आधारे तेनो सघळो संसार व्यवहार चाली शके छे. पुरुषार्थ
फोरवी, न्याय-नीति-प्रमाणिकता साचवी, यथायोग्य व्यवसाय
करनारनी उपर लक्ष्मीदेवी प्रसन्न थाय छे-तेने लक्ष्मी स्वयमेव वरे छे.
कहो के तेनी डोकमां पोतेज वरमाळा नांखे छे. समर्थ शास्त्रकारोए ल-
क्ष्मीने पेदा करवा तेमज तेने स्थिर करी(टकावी)राखवानो अकसीर उ-
पाय, न्याय नीति के प्रमाणिकताथी मात्रधपणे व्यवसाय करवा रूपज
वखाणेलो छे. तेम छतां कइक अज्ञानी अने लोभी जनो ते लक्ष्मीने
अनीति-अन्यायथी ज पेदा करी लेवा मथे छे, पण पुन्य वगर ते
प्राप्त थती ज नथी अने कदाच प्राप्त थइ होय तो ते अनीति-अ-
न्यायनुं उपासन करनार पासे वधारे वखत टकती नथी. वळी जे
सारं सुकृत्य करे छे तेमने लक्ष्मीनी इच्छा न होय तो पण ते गमे
त्यांथी सहेजे आवी मळे छे. अत्यारे जेमने लक्ष्मी प्राप्त थइ होय ते
पूर्वे करेलां सुकृत्यना प्रभावथी ज थइ होय छे परंतु लक्ष्मीने पाम्या
छतां जे मदमत्त बनी सुकृत्य करतां नथी तेमने प्रथम करेलुं पुन्य
खलास थतां दुर्दशाज भोगववी पडे छे: तेथी सुज्ञ जनोए न्याय.
नीतिथी बने तेटली लक्ष्मीनुं उपार्जन करी, तेनो सदुपयोग ज
करवो घटे छे.

कहेवाय छे के ' त्यागे तेनी आगे ' अने ' मागे तेथी
नासे ' ते हकीकत बहुज अर्थसूचक छे. जे कोइ महानुभाव ल-
क्ष्मीने अस्थिर-(चपळ स्वभावी) अने असार समजी, तेनी उपरनी
ममता-मूर्छा तजी, परमार्थ दावे तेने सारा क्षेत्रोमां विधिपूर्वक वावे

छे तेने तेथी अनंत गुणी द्रव्य अने भाव लक्ष्मी अनायास मळी आवे छे ए वात खरी छे. तेमज जे कोइ योग्यता वगर ते लक्ष्मीनी याचना करे छे, विविध प्रकारना व्यवसाय करे छे, काळा धोळा करे छे अने तेने माटे मरी फीटे छे तेमने ते मळतीज नथी, एटले तेमनाथी ते दूरने दूर भागती फरे छे दान, भोग अने नाश ए लक्ष्मीनी त्रण गति कही छे. जे मुग्ध जनो कृपणताथी छती लक्ष्मीए दान देता नथी तथा तेनो जीवनभर उपभोग पण करता नथी तेमनी ते लक्ष्मी उलटी नाशज पामे छे अथवा तो ते कृपण गवा मम्मण शेठनी जेम लक्ष्मीने अहींज अनामत मूकी मरी जाय छे

दान दानमां पण फेर छे. जे दान विधिपूर्वक बहु मानथी सुपात्रने देवामां आवे छे तेनाथी पुन्यानुबंधी पुन्य उपार्जन थाय छे. तेवुं दान दइने प्रमुदित थवाने बदले पाछळथी खेद करनारने फळनी हानि थवा पामे छे, तथा अज्ञानपणे कुपात्रनुं पोषण करवाथी अने कुव्यसनादिनुं सेवन करवामां उडावी देवाथी तेनो नाश पण थाय छे अज्ञान भर्या तपजप कायक्लेशादिक करवाथी पापानुबंधी पुन्य उपार्जन करनारने जोके लक्ष्मी मळे छे, परंतु तेनो ते दुरुपयोग करीने दुर्गति पामे छे

जे सद्भागी द्रव्य-लक्ष्मीनो मोह तजी तेनो विवेकथी सदुपयोगज करे छे ते आंतर (भाव) लक्ष्मीने प्राप्त करी अंते परमपदने पामे छे

४० कृपणता दोष तजवा अने उदार दिल करवा हितोपदेश.

कणकण जीम संचे, कीटिका धान्य केरो,
मधुकर मधु संचे, भोगवे को अनेरो;
तिम धन कृपि केरो, नोपकारे दवाये,
इमहि विलय जाये, अन्यथा अन्य खाये. ७

कृपणपणुं धरंता, जे नवे नंदराया,
कनकगिरि[१] कराया. ते तिहां अर्थ नाया;
इम समत करंता, दुःख वासो वसीजे,
कृपणपणुं तजीने, सेवज्यु दान दीजे. ८

भावार्थः—जेम कीडी कण कण संचीने अनाजने एकठुं करे छे अने मधमाख पुष्पना पराग एकठा करी करीने मध बनावे छे. पछी 'कीडीनुं संच्युं तेतर खाय अने पापीनुं धन एळे जाय' ए न्याये कृपीनुं धन कोइ मारां काममां वपरातुं के देवातुं नथी. 'तेना हाथ उपर जमडा वेठ्या होय छे.' जेथी 'चमडी तूटे पण दमडी तूटनी (छूटनी) नथी.' आम होवाथी कृपणनुं धन कांतो जमीनमां दाट्युंज रहे छे अथवा कोइ नशीबदार तेनो भोगवटो

१ सोनानी डुंगरीओ.

करे छे, अथवा तो एना पुन्यनो क्षय थये ते धन पण करी नाशी जाय छे. पछी कहेवाय छे के, आव्यो हतो गाथी मुठे अने जाय छे खाली हाथे. श्रीमान छता कृपण लोको लक्ष्मीनी चपळतानो कइक विचार करी तेनो सठेकाणे उपयोग करी लेवा धारे तो तेथी तेओ अपार लाभ मेळवी शके. कोइ सद्गुर नि.स्पृही महात्माना अनुग्रहथी कदाच एवी सद्बुद्धि जागे पछी केटलु वधु स्वपरहित थइ शके? करकसरना नियमोने द्रढपणे पाळनार उपर कोइ कोइ वखते कृपणतानो आरोप लोको ठोकी बेसाडे छे पण ते व्याजबी नथी खरी रीते तो आवाज माणसो वधारे डाह्या अने दीर्घदर्शी होवाथी ते पोताना उपार्जित द्रव्यनो खरी तके सदुपयोग करवा चूकता नथी कृपण अने करकसरथी काम करनारमा आवो महान अतर छे कृपण द्रव्य उपर खोटी ममता राखी तेनो सयम करवामाज सार समजे छे, ज्यारे करकसरना नियमोने समजनार सुन जनो सचित धननो सारामा सारो उपयोग करवामा सार समजे छे ॰

कृपणपणाथी नव नद राजाओए सोनाना डुगर कराव्या हता, ते पर तेमना काममा आव्या न हता देवताए ते अपहरी लीधा हता, अने उलटा ममतावडे ते घणा दु ख पाम्या हता. एम समजीने कृपणता दोषने तजी उदार दीलथी मेघनी परे दान दइ लोकनु दारीद्र दूर करी प्राप्तलक्ष्मीनो अने स्वजन्मनो लाहो लइ लेवो युक्त छे.

४१ पारकी आशा–स्पृहा या याचना नही करवा हितोपदेश.

निरमळ गुण राजी,[1] त्यां लगे लोक राजी,
तव लग कहे जीजी, त्यां लगे प्रीति झाझी;
सुजन जन सनेही, त्यां लगे मित्र तेही,
मुखथकी न कहिजे, ज्यां लगे देहि देहि. ९

जइ वडपण वांछे, मागजे तो न कांइ,
लहुपण[2] जिण होवे, केम कीजे तिकांइ;
जिम लघु थइ शोभे, वीरथी दान लीधुं,
हरि बळिनृप आगे, वामनारूप कीधुं. १०

भावार्थः—ज्यां सुधी जीव लोभ–लालचने वश थइ निज मान (Self-Respect) मूकी मने आपो आपो एवां दीन वचन मुखथी उच्चारतो नथी त्यां सुधीज तेनामां रहेला कंइक निर्मळ गुणोनो प्रभाव सामा उपर पडे छे, त्यां सुधीज तेना उपर लोको राजी राजी रहे छे–फीदा थइ जाय छे, त्यां सुधीज सहु तेने जी जी एवां आदरकार भरेलां वचनथी बोलावे छे, त्यां सुधीज लोको तेना उपर वधारे प्रीति राखे छे, अने त्यां सुधीज स्वजन स्नेही अने मित्र मानसन्मान करवा सन्मुख थाय छे. ९.

१ गुणनी श्रेणि. २ हलकापणुं.

शास्त्रकार कहे छे के जो तु वडाई-महोटाई-गुरुता-प्रभुता चाहतो होय ना कदापि कोइनी पासे दीनता दाखवी कई द्रव्य याचना करीश नहि. जेनाथी उलटी लघुता-हलकाइ थाय तेवी दीनता-याचना शा माटे करवी जोइए? याचना करनारने तो तृणथी पण हलका लखी कहा छे तेथी गमे त रीते निज जीवन निर्वाह करी लेवा, पण नजीवी बाबत पारकी याचना करी हलका पडवु उचित नथी. २

आपणा जीवनव्यवहारमा आवा अनेक प्रसंगो आवी पडे छे पण जे आत्मबल-जात महनत (Self-Help) उपरज दृढ आधार राखी, बीजा उपर आधार नहि राखता स्वजीवन निर्वाह करी ले छे त पोतानी आवरु (Self-Respect) साचवी सारु नाम काढे छे.

आ वात पर पौद्गलिक वस्तुनी चाहनाना अंगे कहवामा आवी छे तेवी तुच्छ आशा तृष्णानो अनादर करी जो आमाना स्वभाविक गुणनीज चाहना थाय, ज्ञान दर्शन अने चारित्रादिक निज गुण प्राप्तिनी ज प्रबल इच्छा थाय ना तेवा आत्मगुणो माटे ज संत महाशयानी पासे दीनता (नम्रता) पूर्वक ते ते गुणोनी ओळखाण करवाय-समज मेळवाय-तेनीज दृढ प्रतीति-श्रद्धा करवाय अने अन्य मोहजाळ मूकी तेमाज एकनिष्ठ थवाय ए ना अत्यन्त हितकारक छे, केमके एथी अनुक्रमे स्वाभाविक पूर्ण प्रभुता पामी **सिद्ध बुद्ध अने मुक्त थवाय छे.**

३२ सदुपायवडे निर्धनता दूर करी सद्द्रव्य प्राप्त करी लेवा हितोपदेश.

धनविण निज बंधु, तेहने दूर छंडे,
धनविण गृहभार्या, भार्तृसेवा न मंडे;
निरजळ सर जेवो, देह निर्जीव जेवो.
निरधन तृण जेवो, लोकमां ते गणेवो. १९

सरवर जिम सोहे, नीरपूरे भरायो,
धन करी नर सोहे, तेम नीते[1] उपायो;
धन करिय सुहंतो, साव[2] जे जाण हुंतो,
धन विण पग भूंजी, तेह दीठो भमंतो. २०

भावार्थः—द्रव्यप्राप्ति वगर निर्धन माणसने कोइ आवकार आपतुं नथी. बंधु–सहोदर पण तेनो संग–प्रसंग राखता नथी–तेनाथी अळगा थइ रहे छे. अने घरनी भार्या (गृहिणी) पण भावथी तेनी सेवा चाकरी करती नथी, तो पछी पुत्र परिवारनुं तो कहेवुं ज शुं? धन–संपत्ति वगरनो निर्धन माणस जळ वगरना सूका तट–सरोवर जेवो, जीव वगरनी निर्माल्य काया जेवो अने अहीं तहीं अथडाता असार तृणखला जेवो जगतमां हलको देखाय छे–गणाय छे. १.

---

१ नीतिए उपार्जन करेल. २ मात्र पंडित दाता हतो.

जेम निर्मळ जळसमूहथी सरोवर शोभे छे तेम मनुष्य पण न्याय नीति अने प्रमाणिकपणाथी उपार्जित करेली लक्ष्मीवडे शोभा पामे छे. जेम सुन्दर शाखा, पत्र, पुष्प अने फळवडे वृक्ष शोभे छे तेम सुंदर नीतिथी उपार्जन करेला द्रव्यवडे मनुष्य घणी शोभा पामे छे, पण जेम जळ वगरनु सरोवर पत्र पुष्पादिक वगरनु वृक्ष, तीलक वगरनु कपाळ, न्याय वगरनु राज्य, अने शील वगरनी युवती–स्त्री शोभता नथी तेम द्रव्य वगर गृहस्थ पण शोभा पामतो नथी माट जेवा म्हाटा पंडित कविओ पण द्रव्य वगर छेवटे टळवळता मरे छे, तेथी सद्‌गृहस्थे भविष्यनो विचार करी सारा माग द्रव्य उपार्जन करी राखवु उचित छे. पोतानी आबरु छेवट सुधी साचवी राखी मसाणमा सुखी थवानो एज सारो रस्तो छे ?

सदुपाय सेवन करता छता पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदयथी द्रव्य–प्राप्ति न थाय अथवा अल्प थाय तो ते शोचवा योग्य नथी भाग्यमा होय तेटलुज द्रव्य उद्यम करता सांपडे छे, तो पछी नीतिना मार्ग तजी शा माटे अनीतिनो मार्ग लेवो जोइए ? अनीतिनु द्रव्य लांबु टकतु पण नथी अने सुखे खवातु के सन्मार्गे वव-रातु पण नथी, उल्टी बुद्धि बगाडी ते उन्मार्गे दोरी दइ जीवने दुःखी करी मूके छे कोइ प्रकारना कुव्यसन (परस्त्री–वेश्यागमनादि) सेववा ए पण द्रव्यहानिवडे शीघ्र निर्धनता पेदा करवाना ज उपाय छे एम समजी जल्दी एथी अलगा थइ जवु

४३ राजसेवा वर्णन–अधिकार.

सज्जनशुं हित कीजे, दुर्जना शीख दीजे,
जग जन वश कीजे, चित्त वांछा वरीजे;
निज गुण प्रगटीजे, विश्वना कार्य कीजे,
प्रभु सम विचरीजे, जो प्रभु सेव कीजे. १४

भगति करी वडानी, सेव कीजे जिकांई,
अधिक फळ न आपे, कर्मथी ते तिकांइ;
जळधि तरीय लंका, सीत संदेश लावे,
हनुमंत करमे ते, राम कच्छोट पावे. १५

भावार्थः—जो तथा प्रकारनी योग्यता प्राप्त करीने कोइ समर्थ राजा–महाराजा के स्वामीनी सेवा करी तेनी प्रसन्नता मेळवी शकाय तो पोतानी बुद्धि–शक्तिथी पोते पण पोताना स्वामीनी जेम स्वतंत्रपणे धार्यां काम करी शके. ते धारे तो अनेक सज्जनोनुं हित करी शके छे, दुर्जनोने दंड–शिक्षा आपी शके छे, सहुने निज वश वर्तावी शके छे अने मनोवांछना पूरी शके छे. पोतानी शक्ति खोलवी शके छे तथा कइक परोपकारनां काम करी शके छे. गमे तेटला आदरथी गमे एवा समर्थनी सेवा करवामां आवे तो पण पोताना नशीबमां होय एथी अधिक कशुं ते आपी शके नहि अने

ए आपणे ज करेली भूलनी शिक्षा रूप छे अने ते आपणने जाग्रत् करवा—सचेत बनाववा माटे जरूरनुं पण छे. दुःखमां घणे भागे आपणुं भान ठेकाणे आवे छे; परंतु सुखमां अने दुःखमां जेमने सरखी जागृति रही शके छे तेमनी तो बलिहारी ज छे. तेमनो वैराग्य उत्कृष्ट छे. जो सेवाज करो तो एवा गाणा अने उदार स्वामीनी करो के जे तमारी खरी सेवानी यथार्थ कदर करी तमने निवाजी शके. बेकदर स्वामीनी सेवा करवाथी हित थवुं मुश्केल ज छे. जेना प्रसादथी राजा, महाराजादिक उंची पदवी प्राप्त करी शकाय छे ते धर्म—महाराजानी ज सेवा जो शुद्ध निष्ठाथी करी शकाय तो पछी बीजा कोइनी सेवा करवानी क्यारेय जरुर रहे नहि. एक धर्मकला ज प्राप्त करी शकाय तो बीजी बधी कळा सेहजे प्राप्त थइ शके.

४४ खलता—दुर्जनता वर्णन.

रस विरस भजे ज्युं, अंब निंब प्रसंगे,
खळ मिलण हुवे त्युं, अंतरंग प्रभंगे;
सुण सुण ससनेही, जाणी ले रीति जेही,
खळ जन निसनेही, तेह शुं प्रीति केही. १६

मगर जळ वसंतो, ते कपीराय दीठो;
मधुर फळ चखावी, ते कर्यो मित्र मीठो;

कपि कलिज भखेवा, मत्स्य खेलि खळाइ,
जळ महीं कपि बुद्धि, छांडी दे ते भलाइ १७

भावार्थ—जेम कडवा लींबडाना प्रसंगथी आंबो पोतानो स्वाभाविक रस तजी, विरसता–कटुकताने पामे छे तेम सारो माणस खळ–दुर्जनना प्रसंगथी बगडी खळता–दुर्जनताने धारण करी ले छे. अहो अहो प्रेमी सज्जनो ! ए वात दीलमां चोक्कस करी राखो के खळ लोको केवळ स्वार्थ अंध अने प्रेमशून्य होय छे तेमनी संगाते प्रीति करवी नकामी छे, एटलुंज नहि पण वखत ते भारे अनर्थकारक पण थाय छे ए वातनुं समर्थन करवा अत्र एक कथानक कहे छे. जळमां वसनारा एक मगरमच्छने एक वानरे दीठो अने तेने मीठां स्वादिष्ट फळ चखाडीने पोतानो मनमान्यो मित्र बनाव्यो. परिणाम ए आव्युं के ते वानरभुज काळजुं खावा मगर राजी रची तेने फसाव्या, परंतु पछीथी खरी हकीकत जणाता वानर तेमांथी बची गयो पेलो मगर कोइ वखत थोडा मधुरा फळ पोतानी स्त्री (मगरी) पासे लइ गयो अने तेने बधी हकीकत कही दीधी, एटले मगरीए कह्यं के हमेशा आवा मीठा फळ खानारा वानरनुं काळजुं केवुं मीठुं हशे ? मारे तो ए वानरनुं काळजुंज खावा जोइए, गमे तेवी चतुराइ करीने मने तेनुं काळजुं खावा आपो मगर तेने बहु बहु समजावी पण ते नीजी कोइ रीते समजी नहि, त्यारे मगर वानर पासे वखतसर आवी प्रपंच रची तेने आडुं अवळुं समजावी पोतानी स्त्री मगरीनुं मन मनाववा वानरने पोतानी पीठ उपर बेसा-

डीने ते जळमां तरतो चाल्यो. मार्गमां खरी हकीकत मगरे जणावी दीधी, तेथी बुद्धिबळ वापरी वानर बची गयो.

परमार्थः—आंबाना अने लींबडानां मूळ साथे मळ्यां होय तो ते नींबना प्रसंगथी आंबो विणसी जाय छे; एटले लींबडानी जेवो कडवो बने छे. अर्थात आंबामां कडवाश आवी जाय छे एटले तेनो स्वाभाविक मीठो रस नष्ट थइ जाय छे—तेमांथी मीठाश जती रहे छे. जड जेव लेखाता आ वृक्षोमां पण नवळी सोबतथी आवुं विपरीत परिणाम प्रगटपणे आवतुं जणाय छे, तो पछी जेनामां अनेक दुर्गुणो प्रगटपणे देखाता होय एवा नवळां (दुर्जनो) नो वारंवार संगप्रसंग करवाथी सारां (सज्जनो) ने पण अनिष्ट परिणाम आवे एमां आश्चर्य शुं? हीणानी सोबतथी हीणुंज परिणाम आवे. जेवी सोबत एवी असर ए कहेवत अत्रे लागु पडे छे. जे स्नावुक द्रव्य होय तेने गुण दोषनी असर अवश्य थाय छे. आपणे जो दोषथी बचवुं ज होय तो तेवी नवळी सोबतथी सदंतर दूरज रहेवुं. तेमज आपणा गुणनी रक्षा तथा पुष्टि करवा माटे आपणे आपणा निष्कारण बंधु समान उपगारी संत—सुसाधुजनोनी सेवा—उपासना जरूर करवी. दुर्जन—खल लोको कोइना मित्र न होय अने जो होय तो ते स्वार्थ पुरताज होय, तेथी तेमनी मित्रताथी कदापि हित संभवे नहिज. सज्जनोनी मित्रताज खरी के जे केवळ हितरूपज होय छे. गमे तेटली कसोटी करी जुओ पण सज्जन पोतानी सज्जनताज दाखवे छे त्यारे दुर्जन पोतानी दुर्जनताज दाखवे छे. जेम फणी धरना माथा उपर रहेल्या मणिमां फणीधरनुं विषसंक्रमी शकतुं नथी, ते तो

उन्दु विषविकारने टाळी शके छे तेम परिपक्व ज्ञान (अनुभव) स्भावाळाने तेवा दुर्जननो पाश न लागे, केमके ते तो उलटा रागद्वषादिक विकारने दूरज कर छे, परतु काचापोचाओए तो नबळी सोबतथी सदाय चेतता रहवानी जरर छे, केमके तेमने तेनो चेप जल्दी लागी शके छे अने परंपराए ते वधतो जाय छे एम समजी आपणे तो अधिक चेतता रहवु

४५ अविश्वास विषे.

इन्द्रवज्रा.

विश्वासी साथे न छळे रमीजे
न वैरी विश्वास कदापि कीजे,
जो चित्त ए धीरगुणे धरीजे,
तो लच्छी लीला जगमां वरीजे १८

धाणायकें ज्यु निज कार्य सार्यो,
जे राजभागी नृप तेह मार्यो,
जो घुअडे काग विश्वास कीधो
तो वायस त्यने दाह दीधो १९

भावार्थ अने परमार्थ —सहज स्वभावथी पे धर्मबुद्धिथी आपणा उपर श्रद्धा-विश्वास राखी रह्या होय, आपणे तेनु छ-

दापि अहित करीए के तेने अहित मार्गे दोरीए एवुं जे स्वप्नमां पण समजता न होय अर्थात जेने आपणा संबंधी कशो गेरविश्वास नज होय तेवा भोळा भद्रिक श्रद्धावंत विश्वासुने कदापि छेतरवानो —दगो देवानो स्वप्नमां पण विचार करवो नहि; केमके विश्वास-घात करवा जेवुं एके उग्र पाप नथी. जे बीजा कोइनो विश्वास करता न होय ते पण धर्म के धर्मीजनोनो तो विश्वास करे छेज. तेवा श्रद्धाळु जनोने छेतरवा, भ्रष्ट करवा, तेमने उंधे रस्ते दोर-ववा अने तेमनुं अहित करवुं ए धर्मना व्हाने चोखी ठगाइ के वि-श्वासघात ज कहेवाय. तेवुं पापी अने हीचकारुं कार्य कदापि करवुं नहीं. तेमज जे सदाय छळ ताकीनेज रहेता होय अने तेवी तक म-ळतांज छेतरपिंडी करवा चूकता न होय एवा बंने प्रकारना (बाह्य अने अभ्यंतर) शत्रुओनो शाणा माणसोए कदापि विश्वास करवो नहि. मन, वचन के कायाथी अहितज करनार, करावनार तथा अनुमोदनार बाह्य शत्रु लेखाय छे, ज्यारे काम, क्रोध, मोह, मद, लोभ अने हर्षादिक आंतर शत्रु कहेवाय छे. तेमनो विश्वास क-दापि करवो नहि. अर्थात् तेमनाथी सदाय चेतता—जागता—साव-धान ज रहेवुं. तेमां कदापि गफलत करवी नहि वळी 'बृहस्पति-रविश्वासः'—बृहस्पति कहे छे के कोइनो विश्वास राखवो नहि, तेनो आशय एवो लागे छे के कोइना विश्वास उपर थोभी न रहेवुं. स्वाश्रयी बनवुं. परनी आशा राखी बेसवुं नहीं. बने तेटलुं बधुं काम जाति महेनतथी ज करवुं, दरेक कार्यमां बने तेटली जाति देखरेख राखवी. जेथी काम बगडे नहि पण धार्या प्रमाणे बने अने

बीजा उपर विश्वास राखी रहेवाथी कोइ वखत पस्तावानो वखत आवे छे ते आवे नहि. वळी सतत् अभ्यासथी कार्य दक्षता आवे छे, आत्मश्रद्धा द्रढ थाय छे अने वीर्योल्लास वधतो जाय छे. मोजशोखमा पडी जो जोखमदार काम बीजाने सुप्रत करी देवामा आवे छे तो वखत जता बहु नुकशानीमा उतरी जवु पडे छे अने घणी वखत सोसवु पडे छे 'सगा बापनो पण विश्वास करवो नहि' ए आवा आशयथी कहेवायु लागे छे, बाकी तो मातपितादिक वडील जनोनो, विद्यागुरुनो तथा धर्मगुरु विगेरे उपकारी अने गुणी जनोनो यथायोग्य विश्वास करवो पडे छे, अने करवो जोइए ज जो स्थिर चित्तथी धीरज राखी ए नैतिक गुणनु पालन करवामा आवे, नैतिक हिंमत हारवामा न आवे, सर्व वाते सावधानपणु साचववामा आवे, उक्त नीतिवचनोनो प्रमादथी भंग करवामा न आवे तो जगतमा मनमानी लक्ष्मी सुखे पामी शकाय छे. जेम महेल उपर चढनारने कंइ पण द्रढ आलंबन ग्रहण करी राखवानी जरुर पडे छे, सावधानपणे ज उचे चढनार महीसलामत चढी शके छे, तेमा जो ते गफलत करे छे तो नीचे पटकाइ पडे छे, पछी तेने उचे चढवु कठण थइ पडे छे तेम अत्रापि यथायोग्य समजी लेवु. एटले के पोतानी उन्नति इच्छनारे सर्व वाते सावधान रहेवु जोइए सर्वमान्य नीतिना मार्गनु अतिक्रमण (उल्लंघन) न ज करवु जोइए तोज तेनी उन्नति सधाइ शके छे. अन्यथा उन्नतिने स्थले अवनति ज थवा पामे छे. आ वात धर्म-कर्म बनेमा लागु पडे छे. सरल व्यवहारी बनवु, सरलनी सगाते सरलताथी ज वर्तवु. तेनी साथे शठता भूलेचूके पण करवी नहि.

डा, 'शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्'—शठ (मायावी) शत्रु प्रत्ये प्र-
संग पडतां शठता—माया करवी पडे तो जूदी वात. तेनो हेतु पण
एवो होय के ते आपणी आंखमां धुळ नांखी चाल्यो न जाय
तेटला पूरती सावधानता राखवी. गमे ते रीते सुधारी
शकाय एम होय तो तेने सुधारवा दया—अनुकंपा पण
करवी. तेने कदाच शिक्षा ज करवी पडे तोपण तेने सुधारवानो
अवकाश रहे तेवीज दया दीलथी करवी, कशो उपाय न ज चाले
त्यारे ज तेनी उपेक्षा करवी. गमे तेवा अपराधीनुं पण अंतरथी
अहित करवानी बुद्धि तो दयाळु दीलने नहि ज जोइए. जे जे
दुर्गुणने लइने गमे ते जीव अपराधी ठरे छे ते दुर्गुणोने ज दूर क-
रवा द्रढ प्रयत्न करवो एज उत्तम नीतिवंतनुं खास कर्त्तव्य छे, अने
एवां सदाचरणथी ज मोक्ष पर्यंतनी अक्षय लक्ष्मी लीला अनायासे
प्राप्त थइ शके छे. आ वात जेने विवेकद्रष्टि जागी होय तेज सम-
जीने आदरी शके छे; बाकी तो लोभांधपणे चाणाक्ये खरा रा-
ज्यना हकदार राजा पर्वतने मारी पोतानो स्वार्थ साध्यो तेम बने
छे. तुच्छ स्वार्थ साधवा आवी हत्या करवी ए बहादुरीनुं काम न
कहेवाय. खरुं छे के लोभांधनो विश्वास करवो ते हितकर नज
थाय. एक घुवडे प्रपंची कागडाओनो भोळपणथी विश्वास कर्यो
हतो, जेथी बधा कपटी कागडाओए मळीने युक्तिथी तेनो अने
बीजा कइक घुअडोनो घाण काढ्यो हतो. तेम न थाय एवी साव-
धानता तो अवश्य राखवी ज जोइए उक्त भोळा घुअडनी पेरे जे

समयोचित सावधानता राखता नथी, स्वकर्त्तव्य कर्ममां प्रमाद के शिथिलता करे छे तेमना पण तेवा हाल थाय तो तेमां कइ नवाइ जेवुं नथी. ज्यारे स्वहित साचववामां असावधान या बेफीकरा रहेवाथी अन्य कोइने हानि थवा पामे छे त्यारे तेनो टीका करता आवडे छे ने " परोपदेशे पांडित्यं "–बीजाने डहापण देवा शूरापूरा थइ जाय छे पण ज्यारे एज डहापण पोतानी जातने आपवानी जरुर पडे छे त्यारे ते केवळ आळसु–प्रमादी बने छे एज खेदनी वात छे. एक समर्थ विद्वान् ग्रंथकार पवित्र बोधवाक्य रुपे जणावे छे के 'अन्यने शिखामण देवामां ज विचक्षणता–डहापण बतावनारा लोकोने मनुष्यनी पंक्तिमां कोण लेखे छे? जेओ पोतानी जातने ज खरी शिखामण दइ जाणे छे तेमने ज अमे मनुष्यनी गणत्रीमां गणीए छीए. अर्थात् तेमने ज खरेखरा मनुष्यनी पंक्तिमां लेखवा योग्य छे के जेओ पोतानी जातने ज खरी हितशिक्षाथी जाग्रत राखता रहे छे. दोषग्राही नहि थता गुणग्राही थवुंज हितकारी छे. तेम छता अनादि मिथ्यात्व योगे जीव दोष तरफज वधारे ढळी जाय छे अने गुण–गुणीनी बहुधा ते उपेक्षा ज करतो रहे छे, जेथी बापडा जीवनुं हित थइ शकतुं नथी भाग्ययोगे गुरुकृपाथी शास्त्रमां स्वहित रहेलुं छे ते यथार्थ समजी के समजवानो खप करी, तेमां बराबर श्रद्धा–प्रतीति राखी, ते प्रमाणे आचरण करवा जीव सावधान बने तो उभय लोकनी लक्ष्मीलीला तेने सहजे आवी मळे अने ते अनेक जीवोनुं हित पण करी शके.

४६ मैत्री (मित्रता) वर्णन अधिकार.

करी कनक सरीसी, साधु मैत्री सदाइ,
घसि कसि तप वेधे, जास वाणी सवाइ;
अहव करह मैत्री, चंद्रमा सिंधु जेही,
घट घट वध वाधे, सारिखा थें सनेही. २०

इह सहज सनेहे, जे वधे मित्रताइ,
रविपरि न चळे ते, कंज ज्युं बंधुताइ;
हरि हळधर मैत्री, कृष्णने जे छ मासे,
हळधर निज खंधे, लै फर्यो जीव आशे. २१

भावार्थ—अहो भव्यात्माओ! मित्रताइ करवी तो शुद्ध सुवर्ण जेवा निर्दोष साधु-सज्जन संगाते ज करवी, केमके जेम सोनाने कसोटीए चढाववामां आवे छते तेनी खरी किंमत थाय छे अने तेने सख्त अग्निनो ताप आपवाथी मळनी शुद्धि थतां तेनो सवायो वान वधे छे, एटले तेनी किंमत पण वधे छे, तेम खरा मित्रनी परीक्षा कहो के किंमत पण कष्ट के आपदा पडतां ज थइ शके छे. तेवा प्रसंगे खरो मित्र जूदाइ बतावतो नथी, एटलुं नहि पण प्रसन्न चित्तथी—उदार दीलथी बनती बधी सहाय करवा तत्पर रहे छे अने पोतानी फरज बराबर बजावे छे. खरो मित्र सुखमां अने दुःखमां समभागी बने छे. अथवा चंद्रमा अने सागर जेवी गाढ

प्रेमभरी मैत्री करवी जेम पूर्ण चंद्रकळाना योगे समुद्रनी-वेल वधे-छे अने तेनी शोभापा पण वधारो थाय छे तेम सत सुसाधुजन-संगाते मैत्री करवाथी सुयोग्य जीवमा गुणनो पुष्कळ वधारो थवा-पामे छे एटलु ज नहि पण तेथी तेनी प्रतिष्ठा पण बहु सारी वधवा पामे छे. १

जे शुद्ध निखाथी (साफ अंत'करणथी) मित्रता बांधे छे ते चळती के विछडती नथी, अर्थात् ते कायम नभे छे. जेवी प्रीति पकज अने सूर्य वचे छे-सूर्यनो उदय थता पकज-कमळ-विकसे छे-खीले छे अने सूर्यास्त थता पाछु कमळ सकोचाइ जाय छे, तेवी प्रीति सज्जनो वचे होय छे. ते एक बीजानो उदय-उन्नति थता विकसित-प्रमुदित थाय छे अने एक बीजाने आपदा पडता खिन्न थाय छे-सकोच पामे छे. बळदेव अने वासुदेवनी एवीज गाढ प्रीति होय छे. ज्यारे कृष्णवासुदेव काळवश थया त्यारे बळदेवजी केवळ गाढ स्नेह-मोहवश तेने जीवता जाणी छ मास सुधी तेना देहने पोताना खभा उपर लईने फर्या हता. कटलीक वखत एकबीजानो वियोग थता दारुण दु ख थवाथी प्राण त्याग पण थइ जाय छे, जेथी दूध-जळ जेवी मैत्री वखाणी छे. २

परमार्थ—मित्रनी खरी परीक्षा कष्ट आवी पडता थाय छे. सुवर्ण अग्निनो ताप लागता मोनु चोख्खु थाय छे त्यारे पितळ श्याम थाय छे-झाखु पडे छे. खरे सज्जन मित्र जेम सुखमा भाग ले छे तेम दु खमा पण पूरती मदद करे छे खरा नि स्वार्थी मित्रना लक्षण आ प्रमाणे वर्णव्या छे —ते आपणने पापथी (पाप-कर्मथी)

निवारे छे–बचावे छे अने सत्कर्ममां जोडे छे, आपणी एब ढांके छे अने सद्गुण वखाणे छे–विस्तारे छे, ते कष्टमांसने तजी देतो नथी पण तेने अवसरोचित मदद, टेको के आलंबन आपीने तेनो उद्धार करवा मथे छे. अभयकुमार जेवा बुद्धिशाली अने धर्मचुस्त सज्जन मित्रो जगत्मां विरलाज होय छे. पूर्वोक्त लक्षणोथी तेमनी सज्जनता स्पष्ट थइ शके छे. गृहस्थ–मित्रो करवा तो एवानेज करवा, के जेओ बने तेटलो स्वार्थ त्याग करीने परहित करवामां ज तत्पर रहे. सोनाने गमे तेटलुं तपावे तोपण तेनो वान वधतोज जवानो, शेलडीना शत खंड करे तोपण ते तो सरस रसज आपे; अने चंदनने गमे तेटलुं घसे, छेदे, कापे, पीले के बाळे तो पण ते खुशबोदार सुगंधीज आपे; केमके तेज तेनो मूळ जातिस्वभाव छे. तेवीज रीते उत्तम सज्जनोने पण प्राणान्त कष्ट आवी पडे तो पण ते पोतानी सज्जनता तजे नहींज. सन्त महात्माओ एवा ज उत्तम होय छे. तेओ चंद्रमानी जेवा शीतळ, सागरनी जेवा गंभीर अने भारंड पंखी जेवा प्रमादरहित होय छे. तेओ हिंसादिक पापमात्रना त्यागी अने अहिंसा, सत्यादिक महाव्रतना धारक होय छे. राजा अने रंक, तृण अने मणि, कनक अने पथ्थर एमने समान भासे छे. ममतारहित थवाथी तेमने सहुना उपर समान भाव होय छे. वळी मान–अपमान, निंदा–स्तुति तरफ निज लक्ष देता नथी, तेथी ते हर्ष–शोकने प्राप्त थता नथी, दुनियामां सघळी शुभ उपमा एमने छाजे छे. एवा निःस्पृही, सत्यनिष्ठ साधु–महात्मानुं एकनिष्ठाथी शरण लेनार सुभागी जनोनुं श्रेय थायज.

४७ जुगार प्रमुख कुर्व्यसनो टाळी सुमार्गे चालवा हितोपदेश

मलिन मलिन शोभा, साजथी जेम थाये,
इह कुविसनथी त्यु, संपदा कीर्त्ति जाये,
कुविसन तिणि हेते, सर्वथा दूर कीजे,
जनम सफळ कीजे, मुक्तिकाता वरीजे २७

द्रुतविलंबित

सुगुरु देव जिहा नवी लेखव,
धन विणा सहुए जिण खेलवे,
भवभवे भमवु जिण उवटे,
कहोने कोण रमे तिण जूवटे २३ (द्युत)

उपजाति

जे मांसलुब्धा नर ते न हाहे,
ते राक्षसा मानुष रूप सोहे, (मांसभक्षण)
जे लोकमा नर्क निवास आरी
निवारिये ते परद्रव्य चोरी २४ (चोरी)

भुजंगप्रयात.

सुरापानथी चित्त संभ्रांत थाये,
गळे लाज गंभीरता शील जाये;
जिहां ज्ञानविज्ञान मुंझे न सुझे,
इशुं मद्य जाणी न पीजे न दीजे. २५ (मद्यपान)
कहो कोण वेश्यातणो अंग सेवे,
जिणे अर्थनी लाजनी हाणि होवे;
जिणे कोश सिंहगुफाए निवासी,
छळ्यो साधु नेपाळ गयो कंबळाशी. २६
वेश्यागमन.

रथोद्धता वृत्त.

मृगयाने तज जीवघात जे,
सघळा जीवदया सदा भजे;
मृगयाथी दुःख जे लह्यां नवां,
हरि रामादि नरेंद्र जेहवां. २७ (शिकार.)

चोपाइ.

स्वर्ग सौख्य भणि जो मन आशा,
छांडे तो परनारी विलासा;

जेणे एण निज जन्म दु ख ए,

सर्वथा न परलोक सुख ए २८ (परनारी गमन)

भावार्थ --जेम जेम सांझ पडती जाय तेम तेम वस्तुनी शोभा मलिन थती जाय--झाखी पडती जाय तेम दुर्व्यसनोथी सपत्ति अने कीर्ति बने नाश पामे. ते माटे कुव्यसनो सर्वथा तजवा अने सदाचरणवडे जन्म सफळ करवो के जेथी परिणामे मुक्तिवधुने वरी शकाय.

आ कुव्यसनो मुख्य सात प्रकारना छे. ते सातेने माटे पृथक् पृथक् हानि बतावे छे. १ प्रथम दुर्व्यसन जुगटु रमवु ते छे जे रमवामां धन विना बीजा कोइनी गणना नथी, देवगुरु पण ज्यां स्मिरणमा नथी अने जे व्यसनथी भवमांमा उवट--उन्मार्ग दुर्गतिमां भमवु पडे छे तेवु जुगटु कोण सज्जन रमे ? २ बीजु दुर्व्यसन मांसभक्षण करवु ते छे, जे मनुष्य मांसभक्षण करे छे ते मनुष्य नथी पण मनुष्यरूपे राक्षसज छे ३ त्रीजु दुर्व्यसन चोरी करवी ते छे, चोरी आ लोकमां ज नर्कनिवास जेवी छे, एवी चोरी उत्तम पुरुष कदी करे नहीं ४ चोथुं दुर्व्यसन मद्यपान करवु ते छे. मदिरा पीवाथी चित्त भ्रांतिवाळु--भ्रमित थाय छे, राज नाश पामे छे, गभिरता अने सदाचार पण नष्ट थाय छे ज्ञानविज्ञान तो मेळवेलु होय ते पण मुझाइ जाय छे--सूझतु नथी, एम जाणीने पोते मद्य पीवु नहीं अने बीजाने पीवा देवु नहीं--पावु नहीं ५ पाचमु दुर्व्यसन वेश्यागमन करवुं ते छे उत्तम पुरुषो कदी पण वेश्यागमन करता नथी वेश्यागमनथी राजनी अने द्रव्यनी बंनेनी हानि थाय छे.

जुओ सिंहगुफावासी मुनि जे महा तपस्वी हता अने जेना प्रभावथी विकराळ सिंह पण तेने कांइ उपद्रव करी शकतो नहोतो—शांत थइ जतो हतो, तेज मुनि स्थूलिभद्रनी इर्ष्याथी कोश्यावेश्याने त्यां चातुर्मास करवा आव्या. कोश्याना एक कटाक्ष मात्रथीज घायल थइ गया अने कामसेवानी प्रार्थना करी. कोश्याए द्रव्यनी आवश्यकता पहेली बतावी, तेथी लक्षमूल्यनुं रत्नकंबळ लेवा मुनिपणाने वाजुपर मूकीने चोमासामां नेपाळ देशे गया. वेश्यागमन आटलुं बधुं हानिकारक छे; तेथी ते अवश्य तजवा लायक छे. ६ छट्ठुं दुर्व्यसन शिकार करवो ते छे. शास्त्रकार कहे छे के हे उत्तम प्राणी ! तुं मृगया—शिकार के जे जीवघात रुप छे तेने तजी दे अने सर्व जीवपरनी दयाने सदा—निरंतर भज—अंगीकार कर. जुओ मृगयाथी कृष्ण रामचंद्रादि जेवा महान् राजा पण अनेक प्रकारनां दुःख पाम्यां छे. सातमुं दुर्व्यसन परस्त्रीगमन करवुं ते छे. उत्तम पुरुषो निरंतर स्वदारासंतोषीज होय छे. शास्त्रकार कहे छे के—जो तने स्वर्गनां सुख मेळववानी इच्छा के आशा होय तो तुं परनारीना विलासने—तेना संसर्गने सर्वथा तजी दे. परदारागमनथी आ जन्ममां पण दुःख छे अने परलोकमां पण सर्वथा सुखनी प्राप्ति थती नथी. दुःखज प्राप्त थाय छे.

शार्दुलविक्रिडीत वृत्तम्.

जूवा खेलण पांडवा वन भम्या,
मद्ये वळी द्वारिका,
मांसे श्रेणिक नारकी दुःख लह्यां,

वांध्या न के चौरिका,
आखेटे दशरथ पुत्र विरही,
केवन्नो वेश्या घरे,
लकास्वामी परत्रिया रस रमे,
जे ए तजे ते तरे २९

जुगार, मास, दारु, वेश्या, आहडो (शिकार), चोरी अने परस्त्री सेवा ए सात कुव्यसनो सेव्या छता जीवने अति घोर नरक गतिमा लइ जाय छे अने अहीं पण प्रगटपणे लक्ष्मीनी अने कीर्तिनी भारे हानि करे छे एम समजी शाणा जनोए उक्त सात कुव्यसनोने सर्वथा तजवा जोइए. ए कुव्यसनो तजवाथीज पवित्र धर्मकरणी करवानी सुबुद्धि सूझे छे अने स्वजन्म सफल करी परिणामे मोक्षलक्ष्मी सहजे प्राप्त थाय छे. तपास करो ! जुगारथी पाडवोने १२ वर्ष सुधी आमतेम राजपाट तजी भटकवु पडयुं, सुरापानथी यादवोनी द्वारिकानो अग्नियोगे विनाश थयो, मासभक्षणवडे श्रेणिकराजाने नरकना दुःख भोगववा पडया, चोरीवडे अनेक चोरो प्रगट वध बधनादिक पामे छे, आहडा कर्मवडे रामचंद्रजीने सती सीतानो वियोग थयो, वेश्यागमन वडे कैवन्नो शेठ धन रहित थइ अपमान पाम्यो, अने रावण परस्त्रीना विषयरस वडे लंका नगरीनु राज्य हारी, मरण शरण थइ नरकगतिमा गयो, जेथी दुनियामा तेनी भारे अपकीर्ति थइ. एम समजी जे सुज्ञ जनो ए कुव्यसनो

सर्वथा तजे छे तेओ सर्व रीते सुखी थाय छे. आ सात कुव्यसनो उपरांत शरीरनी पायमाली करनारा अने लक्ष्मी प्रमुखनी हानि करनारा अफीण, गांजो अने तमाकु विगेरे जे जे कुव्यसनो—अप-लक्षणो होय तेने स्वपर हित इच्छनाराओए जल्दी तिलांजलि देवी जोइए. स्वपर हितमां हानि थाय एवुं एक पण कुव्यसन राखवुं न जोइए. स्वसंतति अने देशनी आबादी इच्छनारे पण एम ज करवुं जोइए.

४७ निर्मळ यश–कीर्त्ति प्राप्त करवा हितोपदेश.

मालिनीवृत्त.

दिशि दिशि पसरंती, चंद्रमा ज्योति जेसी,
श्रवण सुणत लागे, जाण मीठी सुधासी;
निशिदिन जन गाये, राम राजिंद जेवी,
इण कलि बहु पुण्ये, पामिये कीर्त्ति एवी. ३०

भावार्थः—पूर्णिमाना चंद्रनी शीतळ चांदनी जेवी निर्मळ यश–कीर्त्ति दश दिशामां प्रसरेली श्रवणे सांभळतां अमृत जेवी मीठी लागे छे. जेवी राजा रामचंद्रनी यशकीर्त्तिने लोको रातदिवस गाया करे छे तेवी. निर्मळ-यशकीर्त्ति आ कलिकाळमां बहु पुन्ययोगे कोइक विरलाज प्राप्त करी शके छे. राजा रामचंद्रनी पेरे कलंक रहित न्याय, नीति अने प्रमाणिकपणुं आदरी स्वकर्त्तव्यनिष्ठ रहे-

नारा राजाओ, प्रधानो, शेठ साहुकारो, संत साधुजनो तेमज अन्य अधिकारी लोको खरखर निर्मळ यश-कीर्तिने सपान्न करी शके छे, एटलुज नहि पण स्वार्थत्यागी परमार्थदृष्टि जनो आगळ उपर पण स्वर्ग अने मोक्षना सुख मेळवी शके छे. एवा अनेक द्रष्टान्तो शास्त्रोमा मोजुद छे.

केवळ यशकीर्तिने माटेज लोकरंजन करवानी बुद्धिवडे भला धर्मना काम करवामा मजा नथी एवी बाह्यद्रष्टिवडे करातो धर्मकरणीनुं फळ अल्प मात्र छे. खरी परमार्थ द्रष्टियोगे जे करणी कराय छे तेनु फळ घणुं महत्वभयु होय छे. खेडुलोको धान्य पेदा करवा माटे काळजीथी अवसर खेड करी खातर नाखी जमीनने सरखी करी तेमा सार बीज वावे छे, तो तेथी पुष्कळ धान्यनी पेदाश थवा उपरात पलाल (घास) पण तनी साथेज पाके छे परतु फक्त पलालनी खातरज खेड करवानी जरूर होती नथी, तेम जे महाशयो स्वपरनु कल्याण करवाना पवित्र आशयथी उत्तम करणी स्वकर्तव्य समजीने करे छे तेथी स्वपर आत्मानु कल्याण थवा उपरात निर्मळ यशकीर्ति पण सहजे—अनायासे प्राप्त थइ शके छे. ते माटे जुदो प्रयास करवानी कशी जरूर रहतीज नथी कह्युं छे के 'जन मन रंजन धर्मनु, मूल्य न एक बदाम'—जे केवळ बाह्यद्रष्टिथी लोकदेखावो करवा माटेज शुभ करणी करे छे तेमा कशु महत्व नथी. खरु महत्व **परमार्थद्रष्टिमांज छे**

४८ प्रधान (मुख्य राज्याधिकारी) वर्णन.

सकळ व्यसन वारे, स्वामीशुं भक्ति धारे,
स्वपरहित वधारे, राज्यनां काज सारे;
अनय नय[1] विचारे क्षुद्रता दूर वारे,
चणिसुत[2] जिम धारे, राज्यलक्ष्मी वधारे. ३१

भावार्थ अने परमार्थ—अभयकुमार जेवो उत्तम अधिकारी (प्रधान) होय ते पोते बधा व्यसनोथी वेगळो रहे, जेथी राजाप्रजा उपर सारी छाप पडे अने तेमने पण व्यसनथी दूर रहेवा बुद्धि थवा पामे, अने अनुक्रमे आखा राज्यमांथी कुव्यसन मात्र दूर थवा पामे. आथी समजी शकाय छे के अधिकारी-प्रधान पुरुषे खास पोतानुं वर्तन उंचा प्रकारनुं राखवुंज जोइए. वळी ते पोताना स्वामी (राजा—महाराजादिक) उपर आदर—बहुमान राखे, जेथी बीजी बधी प्रजा पण तेमना तरफ तेवा आदर—बहुमाननीज नजरथी जोवे. वळी उत्तम प्रधान स्वपरहितमां वधारो थाय एवुं लक्ष राख्या करे तेमज राज्यना काममां पण खलेल आववा दे नहि—राज्यकाम पण बराबर व्यवस्थासर कर्या करे. न्याय—अन्यायनो बराबर निजबुद्धिथी तोल करी अदल इन्साफ करे—उतावळा थइ कोइने गेरइन्साफ थाय तेम न करे. वळी इन्साफ आपतां दयानुं तत्त्व जरूर पूरतुं आमेज करे (उमेरे,) क्षुद्रता निर्दयता—कठोरता—तुच्छता वापरे नहि, पण

१ अन्याय ने न्याय. २ चाणाक्य.

गभीरता अने सहृदयतानो साथे साथे उपयोग करी राज्यलक्ष्मीनो वशगे कर, तथा प्रजानी आबादी सचवाय अने वृद्धि पामे तेवी पण पुरनी काळजी अभयकुमार मंत्रीनी पेर राखे. ते राजा अने प्रजा उभयनुं हित वखतोवखत साचवी छेवटे पोतानु आत्महित करी लेवा भाग्यशाळी बन्यो तेम अन्य अधिकारी जनोए पण ची वट राखी स्वपर हित कार्यमा सावधानता राखवी. बुद्धिबळथीज मंत्रीपणु शोभे छे अने तत्त्वातत्त्वनो विचार करवो तथा सारतत्त्व आदरी स्वमानवभवनी सफळता करवी एज सद्बुद्धि पाम्यानु शुभ फळ छे.

५० कळावर्णनाधिकार.

चतुर करी कळाने, सग्रहो सौख्यकारी,
इण गुण जिण लाधी, द्रोण सपत्ति सारी,
त्रिपुर विजय कर्त्ता,[1] जे कळाने प्रसगे,
हिमकर[2] मनरगे, ले धर्यो उत्तमागे[3] ३२

भावार्थ—अहो चतुरजनो! सुखकारी एवी कळाओनो संग्रह करो–(अभ्यास–परिचय सारी रीते राखो) जेमके ए कळा-संग्रहना प्रभावथी द्रोणाचार्य सारी रीते संपत्ति प्राप्त करी हती. वळी त्रिपुरविजय–कर्त्ता जे महादेव तणे ते कळाना प्रभावथीज हिमकर एटले चद्र तेने पोताना उत्तमाग–मस्तक उपर आनंदथी धारण करी राख्यो हशे. तेथीज ते चन्द्रशेखर अने त्रिलोचन

1 शिव 2 चन्द्र 3 मस्तक

एवा प्रसिद्ध नामने प्राप्त थयो. (आ वात लौकिक मतानुसार लौकिकशास्त्रमां प्रसिद्ध थयेली जाणवी.

परमार्थ—सकळ कळामां निपुणता कोइकज मेळवी शके छे. पूर्वे स्त्रीपुरुषो तेनो अभ्यास विशेष करता. पुरुषनी ७२ कळा अने स्त्रीनी ६४ कळाओ शास्त्रप्रसिद्ध छे. चंद्रनी १६ कळा कहेवाय छे. पूर्ण कळावाळा स्त्रीपुरुषोने संपूर्ण १६ कळावाळा चंद्रनी उपमा आपवी ए होंश उपमा कहेवाय छे. मतलब के चंद्र करतां तेमनामां अधिकता ठरे छे. कळा मात्र उपयोगी छे ते बधी नहि तो बने तेटली स्त्रीपुरुष उभयने उपयोगी कळानो अभ्यास–परिचय अवश्य कर्तव्य छे. गमेतेवो व्यवसाय कळाथी खीली शके छे, कळाथी बने तेवुं बळथी बनतुं नथी. एक शिक्षणकळाथी लाखो बाळको केळवाइ हीरा जेवा किंमती बनी शके छे. युद्धकळा, रंधनकळा, नृत्यकळा, संगीतकळा, धर्मकळा, अर्थकळा अने कामकळादिक अनेक कळाओ छे परंतु ते सर्वमां शिरोमणि कळा एक फक्त धर्मकळाज छे. एक सत्यधर्मकळा बीजी बधी कळाने जीती ले छे. एक धर्मकळावडेज बीजी बधी कळा कामनी छे, ते वगर बीजी बधी कळा नकामी जेवी कही छे कमके धर्मकळाथी ज मोक्ष छे.

५१ मुर्खता वर्णनाधिकार.

वचनरस न भेदे, मूर्ख वार्त्ता न वेदे[१],

---

१ जाणे.

तिम कुवचन खेदे, तेहने शीख जे दे,
नृपशिर रज नाखी, जेण मूर्खे वहीने,
हित कहत हणी ज्यु, वानरे सुग्रहीने ३३

भावार्थ—शास्त्रवचन के ज्ञानीनां वचनो अमृत जेवा मीठां छता मूर्ख अज्ञान जीवने भेदता—असर करता नथी—तेना हृदयने पीगळावी शकता नथी, केमके मूर्ख—अज्ञान जीव तेनु रहस्य समजतो नथी. तेम तेनो गुप्तभेद मेळववा ते प्रयत्न पण करतो नथी. वळी तेवा अज्ञान जीवने जो कोइ शिखामण देवा जाय तो तेना उपर ते खीजवाय छे अने तेने गाळो भांडे छे. मूर्ख माणस वचनना परमार्थने समजतो नथी, तेथी ते ओढनु चोढ वेतरी नाखे छे वस्तु होय छे काइ अने समजे छे काइ तेथी काइने काइ करी नाखे छे. वखते गिराहनी वरसी पण करी नाखे छे एवा एक अज्ञान वणिकपुत्रने तेनी अज्ञानताथी (अणसमजथी) बहु बहु कष्ट पडयु छे. तेने घणु घणुं वखतोवखत सहन करवु पडयु छे. तेने घणा-एक कडवा अनुभव थया छे तोपण ते कइ समज्यो नहि. प्रसंगोपात एक राजानी राणीए तेने दयाथी पोतानी पासे नोकर राख्यो. एक वखत राजमहेलमा आग लागी हती ते हकीकत राजाने जल्दी कहेवानी हती ते तेणे धीमे रहीने राजाना कानमा कही. राजाए तेने शिखामण साथे ठपको आप्यो अने कह्युं के एवे वखते धुमाडो देखताज तेनापर धूळ विगेरे नाखवु. एकदा राणी स्नान करीने माथानी वेणीने धूपती हती, तेनो धुमाडो जोइ ते मूर्ख

धूळनी पोट भरी राणीना मस्तक उपर नाखी. आवी मूर्खाइ जोइने राजाए तेने काढी मूक्यो. आवुं अज्ञानपणुं दूर करवा दरेके प्रयत्न करवो, केमके तेथी स्वपरने बहु हानि थाय छे. एकदा एक सुघरीए टाढथी कंपता एक वानरने जोइ तेवी टाढनुं निवारण करवा माटे एक घर बांधी तेमां रहेवा तेने शिखामण दीधी, तेथी रीस करी कुदको मारी तेणे ते बापडी सुघरीनो माळो चुंथी नांख्यो. 'मूर्खने शिखामण देवा जतां उलटुं पोतानुं पण जाय छे.' एम समजी समयोचित वर्तवुं.

५२ लज्जावर्णन अधिकार.

निज वचन निवाहे, लाज ज्युं राज वाळे,
व्रत नय कुळ रीते, मातज्युं लाज पाळे;
सकळ गुण सुहाये, लाजथी भावदेवे,
व्रत नियम लह्यो जे, भाइ लज्जा प्रभावे. ३४

भावार्थ—लज्जावंत (लाज-शरमवाळो-मर्यादाशील) होय ते पोतानुं प्रतिज्ञा-वचन संभारी राखीने साचवे छे. जातिवंत घोडानी जेम सुमार्गे चाले छे-उन्मार्गे चालतो नथी, तेथी प्रथम गयेलुं-खोवायेलुं राज्य पण पाछुं वाळी शके छे. वळी मातानी जेम कुळमर्यादा मुजब लाज साचवे छे तेम लज्जाळु माणस यथायोग्य व्रतनियम लहीने साचवे छे, ते व्रतनियमने खंडित करतो नथी;

पण बराबर लक्ष राखीने तेने साचवे छे—नभावे छे. जेम पोताना भाइ भवदेवनी लाज—शरम के दाक्षिण्यताथी भावदेवे पण गुरुसमीपे दीक्षा ग्रहण करी, (प्रथम द्रव्यथी अने पछी भावथी) सारु योग्य व्रतनियम पाळ्या हता शोभाव्या हता तेम उत्तम लज्जा—मर्यादा अने दाक्षिण्यतावाळा सज्जनो निज कर्तव्यपरायण रही अंते सफळ गुणथी अलंकृत बने छे.

परमार्थ—सर्वज्ञ वीतरागोक्त सत्यधर्मनी प्राप्ति माटे जे उत्तम एकवीश गुणनो अभ्यास (आसेवन) करवानी जरुर जणावी छे तेमां रुडी लज्जागुणनो पण समावेश थाय छे आ गुण बीजा अनेक गुणने खेंची लावे छे तेथीज सर्वज्ञ भगवाने तेनी आवश्यकता अने उपयोगिता माटे भार मूक्यो छे. तेम छतां धृष्टताधारी स्वच्छंदताथी कोइ तेनो अनादरज करे तो ते हतभागी सत्य धर्मरत्ननी प्राप्तिथी बेनसीब रही जवा पामे छे कदाच जडवादीओने आ गुण नजीवो लागतो हशे, परंतु ते तेवो नजीवो नथीज. ते अनेक गुणोने प्रगट के परोक्ष रीते मेळवी आपे छे, तेथीज तेनी आवश्यक्ता अने उपयोगिताने लइने तेनु महत्त्व घटे छे. आजकाल पश्चिमनो पवन लागवाथी घडक मुग्ध भाइबहेनो नवी रोशनीमां अजाइ जइ, लाज शरम के मर्यादा मूकी दइ भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, गम्यागम्य के हिताहितनो विवेक भूली जइ धर्मभ्रष्ट थइ जाय छे. तेमनो अविवेक जोइ लेखकने दया—घृणा आवे छे, ते तेओ विचारी लेशे.

(शालिनी).

एवा जे जे, रूयडा भाव राजे,
एणे विश्वे, अर्थथी तेह छाजे:
एवुं जाणी, सार ए सौख्य केरो.
ते धीरो जे, अर्थ अर्जे भलेरो. २५

इति अर्थ वर्ग समाप्त.

अथ सुक्तमुक्तावळी ग्रंथे तृतीय कामवर्ग.

---

३ कामवर्ग.

उपजाति.

ग्राह्या कियंतः किल कामवर्गे,
कामो नृनार्यो गुणदोषभाजः।
सल्लक्षणैर्योगवियोग युक्तैः
समातृपितृप्रमुखा प्रसंगाः ॥ १ ॥

'आ कामवर्गमां काम, स्त्री अने पुरुषना गुण अने दोष, सुलक्षणी स्त्रीओ, संयोग ने वियोग, माता प्रत्येनी फरज, पिता प्रत्येनी फरज अने प्रमुख शब्दे पुत्र केवा होय—आटला प्रसंगो (विषयो ग्रहण करवा) १

१ कामविषे.

कदर्प प्रचानन तेज आगे,
कुरंग जेवा जग जीव लागे,
स्त्री शस्त्र लेइ जग जे वदीता,
ते पण देवा जन वृंद जीता २

(मालिनी)

मनमथ जगमांहे, दुर्जयी जे अद्यापि,
त्रिभुवन सुरराजी, जास शस्त्रे संतापि,
विधि जळज उपासे, वार्धिजा विष्णु सेवे
हर हिमगिरिजाने, जेह अर्धांग देवे ३

(शार्दूल विक्रीडित)

भिल्ली भाव छळ्यो महेश उमया जे काम रागे करी,
पुत्री देखी चळ्यो चतुर्मुख हरि आहेरिका आदरी,
इन्द्रे गौतमनी प्रिया विलसीने संभोग ते ओळव्या,
कामे एम महत देव जग जे ते भोळव्या रोळव्या ४

(मालिनी)

नळनृप दवदंती, देखी चारित्र चाळे,
अरहन रहनेमि, ते तपस्या विटाळे: .
चरम जिनमुनि ते, चिल्लणा रुप मोहे,
मयण शर व्यथाना, एह उन्माद सोहे. ५

भावार्थः—कामदेवरुपी केशरी सिंहना तेजथी अंजाइ जइ जगतना जीवो कुरंग—हरणीया जेवा कायर बनी तेने वश थइ जाय छे अथवा तो तेनाथी डरी जाय छे. ए एकला कामदेवे जगतमां प्रसिद्ध एवुं पोतानुं स्त्री रुपी शस्त्र हाथमां लइ देवो अने मानवोना वृंदो (टोळे टोळा) ने जीती लीधा छे. हजु सुधी दुनियामां ए कामदेव दुर्जयी—भारे कष्टे जीती शकाय एवो बहु पराक्रमी जणायो छे; केमके त्रीभुवन वर्ती देवोनी पंकित तेना स्त्रीरुपी शस्त्रथी घवाइ—त्रस्त थइ—हारी तेने शरणे थइ गइ जणाय छे. जुओ! विधि—विधाता—ब्रह्मा तेनाथी हारी जइ जळज—कमळनी उपासना करे छे, तेथी ते कमलासन कहेवाय छे. विष्णु—कृष्ण लक्ष्मीदेवीनी उपासना करे छे अने हर—शंकर—महादेवे हिमगिरिजा—पार्वतीने पोतानुं अर्धांग अर्पण कर्युं छे. आ प्रमाणे लोकमां लेखाता मुख्य देवो हरि हर अने ब्रह्मा पण कामदेवने वश थइ जवाथी तेमनी विडंबना थइ छे. भीलडीनुं रुप लइने उमयाए शंकरने छळ्या हता. ए भीलडीनुं अद्भूत रुप देखीने वनमां तपस्या करवा गयेला महादेव कामवश चळायमान थइ गया हता. चतुर्मुख—ब्रह्मा पोतानी

पुत्रीनुं रुप देखी चकित थया हता. हरि-विष्णु गोपीमां लुब्ध थया हता. इन्द्रे गोतमनी स्त्री संगाते भोगविलास कर्यो हतो एवी रीते कामदेवे आ जगतमां मोटा महत लेखाता एवा देवोने पण भोळवी नांख्या अने तेमने कायर जनोनी जेम रोळवी दीधा, एटले तेमनी आबरुना कांकरा करी नांख्या आ बधी वात लौकिक शास्त्रोना आधारे सिद्ध थइ शके छे मतलब एवी छे के ज्यारे दुनीयामां नामीचा लेखाता मोटा महंत देवो पण कामना सपाटामां आवी गया अने जोतजोतामां स्त्रीवश थइ गया, तो पछी बीजा सामान्य जनोनुं तो कहेवुंज शुं? कामदेवनुं एवुं भारे पराक्रम समजवा जेवुं छे वळी लोकोत्तर शास्त्रना आधारथी पण जणाय छे के नळराजा दीक्षा लीधा पछी दमयंती साध्वीनुं रुप देखी चारित्रथी चळायमान थया. श्री नेमिनाथ प्रभुना भाइ रहनेमी गिरनार उपर गुफामां ध्यानस्थ रह्या हता छतां वर्षादथी भींजायेला राजीमती साध्वीजीने एज गुफामां (अणजाण्या) पेसी पोताना भीना भीना वस्त्र सूकवतां नवस्त्रा देखीने ध्यानथी चूक्या हता, तमज राजा श्रेणिकनी राणी चेलणानुं अद्भुत रुप जोइने महावीर प्रभुना मुनिओ व्यामोह पाम्या हता. ए बधो कामबाणनी व्यथाथी थतो उन्मादज जाणवो-कामवश थयेली विह्वळतानुं परिणाम समजवुं. भवितव्यता यां भावीभावनी वात जुदी छे, परतु तेवुं मानी लइने शास्त्रोक्त पुरुषार्थ तजी देवानो नथी एटलुंज नहि पण तेने द्रढपणे सेववो-आदरवो जरुरनो छे. कामदेवने जीतवा अथवा तेनाथी पोताना ब्रह्मव्रतनुं रक्षण करवा-पोतानो बचाव करवा माटे ज्ञानी

पुरुषोए नव प्रकारनी ब्रह्म गुप्ति (नव वाडो) कही छे तेनुं यत्नथी पालन करवुं.

५ पुरुष स्त्री गुण दोषोद्भावन अधिकार.

(रथोद्धतावृत्त.)

उत्तमा पण नरा न संभवे, मध्यमा तिम न योषिता हुवे;
एह उत्तमिक मध्यमीपणो, बेहुमांही गुण दोषनो गिणो. ६

"पुरुष एटले उत्तमज होय एम न समजवुं अने स्त्री होवाथी तेने मध्यम न समजवी. स्त्री पुरुष होवा मात्रथी उत्तम मध्यमपणुं आवतुं नथी, पण पुरुषमां के स्त्रीमां उत्तम ने मध्यमीपणुं गुण ने दोषथीज आवे छे." तेथी ते बंने जातिना गुण दोष प्रगट करता सता कर्त्ता कहे छेः—

पुरुष गुण वर्णन—१.

जे नित्ये गुणवृंद ले परतणा, दोषो न जे दाखवे,
जे विश्वे उपकारीने उपकरे, वाणी सुधा जे लवे;
पूरा पुनमचंद जेम सुगुणा, जे धीर मेरु समा,
उंडा जे गंभीर सायरजिश्या, ते मानवा उत्तमा. ७

रूप सौभाग्य संपन्ना, सत्यादि गुण शोभना;
ते लोके विरला धीरा, श्री राम सद्दशा नरा. ८

भावार्थ—जे सज्जनो सदाय परना गुणगणने ग्रहण करे छे–गुणनी प्रशंसा करे छे, तेमज बनी शके तेटलु तेनु अनुकरण पण करे छे परंतु परना दोषो उघाडा करी विगोवणा (निंदा–लघुता) क्यापि करता नथी, वळी जेओ उपकारी जनो छे तेमनो उपकार भूलता नथी, कृतघ्नपणे तेमनो प्रत्युपकार करवा तक मळे तो जे चूकता नथी, मुखथी अमृत जेवा मीठा वचन ज बोले छे, जेओ शरदऋतुना संपूर्ण चंद्र जेवी शीतळता वर्षावनारा मेरुपर्वत जेवी धीरता–निश्चळता जेने सागर जेवी गंभीरता धारनारा छे तेवा मानवोज उत्तम पंक्तिना लेखाय छे. रूप सौभाग्यथी शोभित अने सत्व–पराक्रमादि गुणोवडे अलंकृत श्री रामचंद्रजी जेवा धीर वीर गंभीर विरला मनुष्योज होय छे

अथ पुरुष दोष वर्णनम्. ९.

लंका स्वामी हरेति राम तजी ते सीतातणी ए थकी
स्त्री वेची हरिचंद पांडव नृपे कृष्णे न राखी शकी,
राने छोडी निज त्रिया नळ नृपे ए दोष मोटा भणी
जोतां उत्तममांहि दोष गणना का नात बीजातणी ९

रावण जेवा प्रतिवासुदेवे सीता जेवी सतीनुं हरण कर्युं–रामचंद्रजी जेवा न्यायनेकार नीतिवंत राजाए सीता सतीनो त्याग कर्यो हरिचंद राजाए पोतानी राणीने वेची, पांडवो पोतानी पत्नी द्रौपदीने जुगारमां हारी गया, जेने कृष्ण जेवा समर्थ राजा

पण राखी न शक्या. तेमज नळ राजाए पोतानी प्राणप्रिय राणी दमयंतीने रात्रे एकली वनमां तजी दीधी. आवा मोटा उत्तम पुरुषो पण आवी गंभीर भूल करे छे तो बीजा सामान्य मनुष्यनी तो शी वात करवी?

स्त्री गुण वर्णनम्. ३.

सुशिक्ष आले प्रियचित्त चाले,
जे शिळ पाळे गृहचिंत टाळे;
दानादि जेणे गृहधर्म होइ,
ते गेही नित्ये घरलच्छी सोइ. १०

उत्तम स्त्री पोताना पतिने दरेक उपयोगी कार्य प्रसंगे एक प्रल्हादकारक उत्तम मंत्रीनी पेरे सलाह आपे छे. पोताना पतिना आशयने अनुसरीने चाले छे. मन वचन कायाथी स्वपतिसंतोषरूप निर्मळ शीळ पाळे छे. निर्दोष वर्तनथी सावधानपणे गृहदोष अथवा घर चिन्ता दूर करे छे अने घरे आवेला अतिथि (साधु महात्मादिक) तथा अभ्यागत—मेमान परोणादिकनो यथायोग्य सत्कार करी गृहस्थधर्म दीपावे छे. तेवी सौभाग्यवंती कुलीन पतिव्रता स्त्री पोताना पवित्र गुणोवडे गृहलक्ष्मी लेखाय छे, पति अने कुटुंब परिवारमां ते सारुं मान पामे छे अने गृहव्यवस्था उत्तम रीते चलाववा साथे पोतानुं तथा पोताना कुटुंब परिवारनुं भली रीते हितरक्षण करवाथी ते गृहदेवी तरीके पूजाय—मनाय छे, सती स्त्रीओ आवीज होय छे.

स्त्री दोष वर्णनम्. ४

भर्त्ता हण्यो जे पतिमारिकाए,
नांख्यो नदीमा सुकुमाळिकाए,
सुदर्शन श्रेष्टि सुशीळ राख्यो,
ते आळ देइ अभयाए दाख्यो   ११

(वसंततिलका.)

मार्यो प्रदेशी सुरिकंत विषावळीए,
राजा यशोधर हण्यो नयनावळीए,
दु खी कर्यो स्वसुर नूपुरपडिताए,
दोषी त्रिया इम भणी इण दोषताए   १२

पतिमारिका सुकुमालिकाए पोताना पतिने मारी नदीमा नाखी दीधो हतो अने सुदर्शन शेठे निर्मळ शील (स्वस्त्रीसंतोष व्रत) पाळ्यु हतु, तेना उपर अभया राणीए खोटुं आळ--कलंक चडाव्यु हतु. वळी सूरिकांता राणीए पोताना पति प्रदेशी राजाने कामा र वनीने भोजन प्रसगे झेर दीधु हतु. तेमज नयनावळीए पोताना पति यशोधर राजाने गळे फासो दइने मार्यो हतो अने नुपूरपडिताए पोतानु खोटु चरित्र छुपाववा माटे पोताना पतिने भोळवी वृद्ध ससराने कपटरचनाथी हेरान कर्या हतो. आवा दुष्कृत्योथीज स्त्रीओने दोषित लेखवी छे कामा घणे स्त्रीओ न करवानां

काम करे छे, साहस खेडे छे, कुळलज्जा लोकलज्जादिक तजी अनाचार सेवे छे; परंतु सुकुलीन सती स्त्रीओ तो प्राणान्त कष्ट सहन करीने पण पोताना पवित्र शीलनुंज रक्षण करे छे, तेवी स्त्रीओ सद्गुणी–सुलक्षणी लेखाय छे.

५ अथ सुलक्षणी स्त्री वर्णनम्.

(शार्दुलविक्रीडित.)

रुडी रुपवती सुशील सुगुणी लावण्य अंगे लसे,
लज्जालु प्रियवादिनी प्रियतणे चित्ते सदा जे वसे;
लीला यौवन उल्लसे उरवशी जाणे नृलोके वसी,
एवी पुण्यतणे पसाय लहीए रामा रमा सारसी. १३

सीता सुभद्रा नळराय राणी,
जे द्रौपदी शीळवती वखाणी;
जे एहवी शील गुणे समाणी,
सुलक्षणी ते जगमांही जाणी. १४

रुडी रुपाळी, सुशीलवंती, सद्गुणी, लावण्यनी शोभावाळी, लज्जावंती, प्रिय–मिष्ट वचन बोलनारी, पतिना मनमां वसी रहेनारी, विनीत अने यौवन वयनी शोभाथी जाणे उर्वशी आ मृत्युलोकमां आवी वसी होय एवी, लक्ष्मीना अवतार जेवी सानुकूळ स्त्रीनो संबंध पूर्वना पुन्ययोगे प्राप्त थइ शके छे. आवी स्त्रीना योगे

गृहस्थधर्म सारी रीते पाळी शकाय छे, तेथी तेवी पवित्र गुणवती स्त्रीने धर्मपत्नी कहेवामा आवे छे

सीता, सुभद्रा, दमयंती अने द्रौपदी विगेरे अनेक सतीओ पोताना पवित्र शीलगुणवडे जगप्रसिद्ध थयेली छे. एवा पवित्र शीलगुणवडे जे कोइ स्त्री अलंकृत होय ते जगतमां सुलक्षणी गणावा योग्य छे अने समजवानी जरूर छे के केवळ विषयवासनानी क्षणिक तृप्ति करवा माटेज स्त्री संबंध (लग्न) कर्तव्य नथी. लग्ननो आशय घणो विशाळ-गंभीर छे, ते कामांध जनो समजता नथी. तेवा संबंध तो पशु पक्षीओ पण करे छे, छता तेमनामां पण प्रेम-मर्यादा जोवामां आवे छे पशु पक्षीओ करता मनुष्य स्त्री पुरुषोमा बुद्धिबळ वधारे होवु घटे छे. ते वडे सार सो तेओ लग्ननी उंची नेम समजी, विवेक-मर्यादावडे तेने सफळ करी शके छे ते तो ज्यारे कोइ सद्गुरुनी कृपाथी के पूर्वना शुभ संस्कारथी ते उभयमा दैवी प्रेम प्रगटे एटले तुच्छ विषयभोगनी वांछना तजी अथवा कमी करी अर्थात् तेने पुठ दइ, लोकोत्तर सुखनी प्राप्ति थाय एवु साधन एक रागथी करवा उजमाळ बने अने तेवा हितसाधनमां एक बीजा स्वार्थत्याग करी केवळ परमार्थ दृष्टिथी एकबीजाने मदद करता रहे त्यारेज बनी शके, अने खरी रीते ओना तेज त्याजवी छे. प्रारब्ध योगे स्त्री पुरुष योग्य जुदा जुदा देह प्राप्त थया छता सद्गुरुकृपाथी विवेकदृष्टि खुल्ता समजी शकाय छे के आत्मतत्त्व उभयमा समान छे, ने शक्तिरूपे तो परमात्मा समान छे. जे आत्म-तत्त्व पूर्ण परमात्मरूप प्रगटयुं नथी तेनेज प्रगट करवा बने तेटली

सानुकूलना मेळवी विवेकथी प्रयत्न करवा जोडावुं एज उभयने हितकारी कर्त्तव्य छे.

६ संयोग वियोग विषे.

(मालिनी.)

प्रिय सखी प्रिययोगे, उल्लसे नेत्र रंग,
हसित मुख शशी ज्युं, सर्व रोमांच अंगे;
कुच इक मुज वैरी, नमृता जे न दाखे,
प्रिय मिलण समे जे, अंतरं तेह राखे. १५
दिन वरस समाणे, रेणि कल्पांत जाणे,
हिमरज कदली जे, तेह झाळा प्रमाणे;
शिशिर सिकरसो जे, सुरशो सोइ लागे,
प्रिय विरह प्रियाने, दुःख शुं शुं न जागे. १६

भावार्थ—खरी पतिव्रता स्त्रीने पोताना प्राणप्रिय सुगुण पतिनो समागम थतां जे हर्षप्रकर्ष के प्रमोद थाय छे तेनुं वर्णन एक स्त्री पोतानी प्रिय सखी समीपे करे छे. जेवी रीते शुद्ध चेतना पोताना आत्माराम प्रभुने भेटतां (शुद्ध अनुभवद्वारा तेनी साथे भेटो थतां) पोतानी सुमति सखी पासे पोताना हृदय उद्गार काढे छे अने पोतानामां प्रगटेलो प्रेम के प्रेमनां चिन्ह जणावे छे तेम अत्र पण समजी लेवुं. हे प्रिय सखि! म्हारा प्राणप्रिय पतिना योगे

म्हारा उभय नेत्र आनद–हर्षथी उभराइ जाय छे, मुख–मुद्रा चद्रनी जेम स्मित हास्यथी शोभी–चमकी रहे छे अने आखा शरीरमा हर्ष मातो–समातो नथी, तेना मिषथी बधा रोमाच रुवाडा खडा थइ जाय छे प्राणपतिनी साथे भेटो करता (एकमेक थइ जतां) फक्त एक स्तनयुगल ज अतरायरुप थाय छे–नम्रता दाखवता नथी अने उभडक रही जाय छे, एटले वचमा आतरो राखे छे, जे मने इष्ट नथी हु तो म्हारा पतिथी लगारे अतर रहे तेवु इच्छती या पसद करती नथीज. आ लौकिक प्रेमनी वात कही तेनी अवधि (मर्यादा) बतावी. ए करता शुद्ध चेतनानो पोतानो आत्माराम प्रभु सगाते भेटो थता जे अपूर्व अलौकिक के लोकोत्तर प्रेम प्रगटे छे ते तो अवधि–मर्यादा वगरनो अनवधि–अमर्याद–अखड अने अनत होय छे. हजी सुखी तेवा अनवधि प्रेमनो तो वियोग छे ते दूर करवाना पवित्र लक्षथीज सुगुण दपतीए एकतार बनी सावधानपणे स्वधर्मसाधना करवी घटे छे आवु पवित्र लक्ष शुद्ध सम्यग् द्रष्टिवत दपतीमाज सभवे छे, जे अन्य शाणा दंपती वर्गने पण अनुकरण करवा योग्य छे.

प्राणप्रिय पतिनो विरह खरी पतिव्रता नारीने केटलो पीडे छे तेनु अत्र वर्णन करे छे के–सुगुण पतिना विरहनो एक दिवस वरस जेवडो मोटो थइ पडे छे अने एक रात्रि जाणे कल्पात जेवी मोटी भयकर लागे छे विनोदी दपतीने ठडक उपजावनारु कदली–केळनु वन पण तेणीने शान्ति उपजावी शकतु नथी अने चद्रना शीतल किरणोथी तेना आतर तापनी शान्ति थइ शकती नथी. उलटा ते बधा तेणीने तापकारी थइ पडे छे. आ वात पण फक्त

लौकिक प्रेमपात्र पतिना विरहे पतिव्रता स्त्रीने केवी व्यथा-पीडा थाय छे तेनो ज कंइ चितार आपे छे; बाकी शुद्ध चेतनाने पोताना आत्माराम पतिना विरहे केटलुं दुःख थवा पामतुं हशे तेनी कल्पना करवी पण मुश्केल छे; केमके तेणीनो प्रेम लौकिक नहि पण लोकोत्तर (अलौकिक-असाधारण) होय छे. आ वातनी कंइक झांखी श्री आनंदघनजी महाराज जेवा अद्भुत योगी-अध्यात्मी पुरुषे हृदयथी गायेलां पदो वांचवाथी के विचारवाथी तेना रसज्ञने थोडा घणा अंशे थइ शके छे. जेमां चेतना पोतानुं विरहदुःख सुमति सखी पासे अथवा अनुभव मित्र पासे निवेदन करी ते दुःख निवारवा आत्माराम प्रभुनो भेटो कराववा कहे छे.

७ स्वमाता प्रत्ये सुपुत्रनुं कर्त्तव्य.

(इंद्रवज्रा)

जे मातनो बोल कदा न लोपे,
ते विश्वमां सूरज जेम ओपे;
ज्यां धर्मचर्या बहुधा परीखी,
त्यां मात पूजा सहुमां सरीखी. १७

जे मातमोहे जिन एम कीधो,
गर्भे वसंता व्रत नेम लीधो;
जे मात भद्रा वयणे प्रबुद्धो,
शीला तपंते अरहन्न सिद्धो. १८

भावार्थ—बाळक उपर मातानो उपकार अमाप छे. तेने माटे ते केटला केटला कष्ट उठावे छे? तेनो ख्याल बारीकीथी अवलोकन करनारने ज फक्त आवे छे. पोताना बाळक सारी रीते सुखी थाय एवी काळजी करुणाळु माता अने पिता जेटली राखे छे तेटली बीजा कोण राखी शकवाना छे? ए बाल पशु जेवा विवेक वगरना कइक बाळको अने जुवानो पण विसरी जाय छे अने पोताना उपगारी मातपितानी खरी तके सेवा चाकरी करवाने बदले उलटा तेओने सतावे छे, गाळो भांडे छे, वगोवे छे अने तेमनो आ लोक तेमज परलोक उभय बगडे तेवा काम करे छे. आवा नवळा बोल बोलनारा तथा हलका–हीचकारा काम करनारा कपुतोनीज पक्तिमा लेखाय छे, परतु जेओ पोताना मातपितानो पोताना उपरनो अमाप उपगार संभारी संभारी तमने हरेक रीते संतोषवा–प्रसन्न राखवा पोतानी पवित्र फरज समजता होय अने एक पळ पण ते विसरता न होय तेज खरा सपुत होइ प्रशसापात्र लेखाय छे जे सपुतो पोताना परोपकारी मातपिताना हितकारी बोल कदापि उत्थापता नथी. तेमनी प्रत्येक हितकर आज्ञाने शेपानी जेम पोताना माथे चढावे छे अने तेनु खतथी परिपालन करे छे तेओ आ जगतमा सूर्यनी जेवा प्रतापने पामी शोभी नीकळे छे, सर्वत्र तेमनो यश गवाय छे अने ठकाणे ठेकाणे मान प्रतिष्ठा पामे छे गमे ते धर्मपंथमा मातपितानी सेवा भक्ति करवा अने तेमनी हितकारी आज्ञानु परिपालन करवा एक सरखी रीते फरमावेलुं जणाय छे तेम छता तुच्छ विषयादिक सुखने वश थयी पशु जेवा विवेक वगरना कइक

पामर जनो पोतानां मातापनी प्रगट अवगणना करता देखाय छे. ए खेदनी वात छे. तेमने कपुत कहीने बोलावनार उपर ते डोळा काढी लडवा धाय छे, तेने बदले जो तेओ पोतानां आचरण सुधारी खरी नीतिना मार्गेज चाले तो तेओ बदनाम नहि थतां जलदी सपुतोनी पंक्तिमां दाखल थइ सर्वत्र प्रशंसा पामी शके. भारतवासी आर्यजनोनुं ए प्रथम ज कर्तव्य छे. प्रथमना वखतनां आर्यसंतानोनी आदर्श भक्तिनुं यथार्थ भान करी तेनवुं जोइए. आपणे नगुणा थवुं न जोइए. माताना गर्भमां वसतां भगवान वर्धमान स्वामीए तथा प्रकारनो संयोग जोइ 'माता पिता जीवता रहे त्यां सुधी म्हारे व्रत–दीक्षा न लेवी' एवो अभिग्रह (निश्चय) कर्यो ते शुं आदर्श भक्तिनो नमुनो नथी? वळी भद्रामातानो पुत्र अरहन्न (अरणिकमुनि) कर्मवश व्रतथी चलित थयो हतो, ते वात तेनी माता (साध्वी) ने जणातां ते पुत्र–साधुने जे बोधवचन कह्यां हतां तेनो यथार्थ आदर करवा पोताथी बीजी रीते बनी शके एवुं नहि होवाथी तेणे तापथी धगधगती शिला उपर अनशन करी लीधुं अने ए रीते स्वात्मार्पण करवाथी ते पार पामी गया ए शुं ओछुं अर्थसूचक छे?

७ पितृवात्सल्य वर्णन.

जे बाळभावे सुतने रमाडे,
विद्या भणावे सरसुं जमाडे;

ते तातनो प्रत्युपकार एही,
जे तेहनी भक्ति हिये वहेही १९

(मालिनी).

निषध सगर राया, जे हरिभद्र चद्रा,
तिम दशरथ राया, जे प्रसन्ना मुनींद्रा,
मनकजनक जे ते, पुत्रने मोह भार्या,
स्वसुत हित करीने, तेहना काज सार्या २०

भावार्थ—जे पोताना बाळ–सताननें पोतेज 'भाइ बापु' कहीने रमाडे छे, उमर थतां तेमने योग्य विद्या भणावे छे अने तेमने सारु सारु मनगमतु भोजन जमाडे छे एवा उपकारी पितानो कइ पण प्रत्युपकार करी शकाय तो ते एज के पोताना उपकारी पितानी सेवा भक्ति चीवट राखीने करवी अने तेमनी आज्ञानु यथार्थ पालन करी तेमनु दील प्रसन्न राखवु वळी परलोकनु साधन करवामा जे प्रकारनी सहायनी जरुर होय ते कृतज्ञताथी विलंब कर्या वगर आपी तेमनु हित करवा क्यापि चूकवु नहि. वळी आपणे पोते एवु पवित्र आचरण सेववु के जे देखी मातपिताना दीलमा प्रमोद थाय. दुनीयामा पितानु कुळ दीपी नीकळे एवु रुडु प्रवर्तन आळस–प्रमाद तजीने सावधानपणे करवु वळी आगळ उपर थयेला निषध, सगर, हरिभद्र, चद्र, दशरथ अने प्रसन्नचंद्र मुनि तथा मनक मुनिना पिता श्रीशय्यभवसूरि जेवाओने जो के पुत्रमोह

ओछो नहोतो; परंतु जेमनी दृष्टि सम्यग् होय छे ते पिताओ जेथी स्वपरहितनी सिद्धि थवा पामे एवुं आचरण करवा चूकता नथी. खरा पुत्रवत्सल मातपिता एवुंज पवित्र लक्ष राखीने पोतानी संततिने केळवे छे के ते संतति आगळ जतां तेमनुं पोतानुं, मातपितादिक कुटुंबी जनोनुं अने अनुक्रमे ज्ञातिनुं तथा समाजनुं पण पारमार्थिक हित सधाय तेवी बुद्धि शक्तिवाळी थाय.

९ सुपुत्र वर्णन.

(स्वागता) मात तात पद पंकज सेवा,
जे करे तस सुपुत्र कहेवा;
जेह कीर्त्ति कुळलाज वधारे,
सूर्य जेम जग तेज सधारे. २१

(शालिनी) गंगापुत्रे विश्वमां कीर्त्ति रोपी,
आज्ञा जेणे तात केरी न लोपी;
ते धन्या जे अंजनापुत्र जेवा,
जेणे कीधी जानकीनाथ सेवा. २२

भावार्थ—जे सदा मातपितानां चरणनी सेवा करे अने कुळनी लाज प्रतिष्ठा तथा यश वधारे तेने सुपुत्र लेखवा. जे सुपुत्रो मातापितानी सेवाभक्तिपूर्वक तेमनी उचित आज्ञानुं सदा परिपालन करता रहे छे तथा न्याय—नीतिथी प्रमाणिकपणे चाले छे तेमनो

यश-प्रताप सूर्यनी पेर दिन प्रति तपतोज रहे छे. जेणे कदापि मातापितानी आज्ञा लोपी नथी एवा विनीत गंगापुत्र (गांगेय-भीष्मपिता) नी कीर्त्ति अद्यापि सर्वत्र गवाय छे. तेमज जेणे जानकीनाथ श्री रामचंद्रजीनी साचा दीलथी सेवा करी ते श्री अंजनापुत्र-हनुमानजी जेवा नररत्नोने पण धन्य छे. मातपितादिक उपगारी वडीलजनो प्रत्ये जे जेटलुं निरभिमानपणे स्वात्मार्पण करे छे ते तेमने पोताने तेमज अन्यने पण परपराए अतुल लाभदायक थाय छे, ए हस्तामलक जेवु सुस्पष्ट छे. आगळना वखतमां भारतसंतानो बहु पवित्र-आदर्शजीवन गुजारता. तथा राजाप्रजा, पितापुत्र सासुवहु अने स्वामीसेवक बहु प्राय' पवित्र भावनाथी पोतपोतानो कर्त्तव्य-धर्म यथार्थ समजी ऊंडी श्रद्धा राखी तेनु बराबर पालन करता हता, तेथी तेमनी कीर्ति सर्वत्र गवाती हती ते वखते भारतनो उदय सर्वोत्कृष्ट लेखातो हतो जेम जेम लोकोनी भावना-निष्ठा नरमी-निकृष्ट थती गइ अने तेमना आचरण हलका थता गया तेम तेम तेमनी साथे भारतनी पण अवनति थती चाली. जे कोइ महाशय भारतनो तेमज भारतवासी जनोनो अंत'करणथी उदय इच्छता होय ते सहुए प्रथम पोतानुज वर्तन पवित्र भावनामय करी अन्यने दृष्टान्तरूप थवु जोइये.

(तोटक.)

इम काम विलास उलासत ए,

रसरीति रचे अनुभावत ए,

जिम चंदन अंग विलेपन ए,
हिय होय सदा सुख संपत्ति ए. २३

इति काम वर्ग समाप्त.
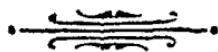
अथ सूक्त मुक्तावली ग्रंथे चतुर्थ मोक्ष वर्ग.

—*—

४ मोक्ष वर्ग.

उपजाति.
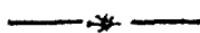
आख्याः क्रियंतोप्यथ मोक्षवर्गे, कर्म क्षमा संयम भावनाद्याः।
विवेक निर्वेद निज प्रबोध–इत्येवमेते प्रवर प्रसंगाः ॥१॥

१ मोक्षार्थविषे.

(मालिनी)

इह भव सुख हेते, के प्रवर्ते भलेरा,
परभव सुख हेते, जे प्रवर्ते अनेरा;
अवर अरथ छंडी, मुक्तिपंथा आराधे,
परम पुरुष सोइ, जेह मोक्षार्थ साधे. २

तजिय भरत केरी, जेण छ खड भूमि,
शिवपथ जिण साध्यो, सोळमा शांतिस्वामी,
गजमुनि[1] सुप्रसिद्धा, जेम प्रत्येकबुद्धा,
अवर अरथ छडी, धन्य ते मोक्ष लुद्धा. ३

परमपद-मोक्ष माटे पुरुषार्थ फोरववा हितोपदेश.

जगतना भिन्न भिन्न रुचिवाळा जीवो पैकी कोइ आ लोकना सुख माटे के कोइ परलोकना सुख माटे प्रवृत्ति-प्रयत्न करता देखाय छे, पण ए बधी आशातृष्णा तजी जे केवळ कर्ममुक्त थइ मोक्षपद प्राप्त करवा प्रयत्न करे छे, तेज खरेखर परमपुरुषनी पंक्तिमां लेखावा योग्य छे आत्मज्ञाननो उंडो प्रकाश जेने थयो छे ते भरतादिक चक्रवर्तीओ, तीर्थंकरो, नमि प्रमुख प्रत्येकबुद्धो अने गजसुकुमालादिक मुनिवरो बीजो तमाम अर्थ तजी दृढ श्रद्धा अने शुद्ध चारित्रने सेवी मोक्षनाज अधिकारी थया तेमने धन्य छे.

उत्तम क्षमादिक धर्मनु सेवन करवाथी दुरित-पाप दूर थाय छे, करेलु तप वधु लेखे थाय छे, कर्मनो अंत थाय छे, पुन्य लक्ष्मीनी वृद्धि थाय छे अने श्रुत ज्ञाननु आराधन थाय छे उत्तम क्षमा-समता योगे ज खधक सूरिना शिष्यो, दृढ प्रहारी, कुरगडु, गजसुकुमाळ अने मेतार्य प्रमुख महा मुनीश्वरो सकल कर्मनो क्षय करी मुक्तिपदने प्राप्त थया छे. आत्मसंयम (Self Restraint) वडे आ-

---

१ गज सुकुमार.

त्मामां नवां कर्म आवी दाखल थइ शकतां नथी अने समता सहित तीव्र तप करवाथी पूर्वलां कर्म वळी जळी नष्ट थाय छे. एथी स्व-आत्मसुवर्ण शीघ्र शुद्ध थवा पामे छे, एटले अत्यार सुधी कर्मवळ-वडे ढंकाइ रहेला सकळ स्वगुणो प्रकाशमान थाय छे एज खरेखरी स्वदया छे अने एवीज रीते अन्य भव्यात्माओने निज निज आ-त्मगुणो प्रकाशमान करवा सम्यग् ज्ञान, श्रद्धा अने चारित्रनो सत्य मार्ग बतावचो तेज खरी परदया छे. आ भावदयाने अडचण न आवे पण पुष्टि मळे एवा पवित्र लक्ष्यथीज द्रव्यदया (स्वपर प्राण रक्षा) करवा, वीतराग परमात्मा शास्त्रद्वारा आपणने फरमावे छे. अहिंसा, संयम अने तप लक्षण धर्मने परम मंगळ रुप शास्त्रमां व-खाण्यो छे. अनित्यादि द्वादश भावना अने मैत्री, मुदिता, करुणा अने मध्यस्थता रुप भावनारुपी रसायणनुं सेवन करनार भावित आत्मा सकळ अशुभ कर्मरोगने टाळी क्षमादिक उत्तम गुणोनुं सेवन करी स्वात्मगुणनी पुष्टि करवा समर्थ थाय छे. स्वात्म गुणोनो संपूर्ण विकास थाय एज खरो मोक्ष छे.

२ कर्म विषे.

करम नृपति कोपे, दुःख आपे घणेरा,
नरय तिरिय केरा, जन्म जन्मे अनेरा;
शुभ परिणति होवे, जीवने कर्म तवे,
सुर नरपति केरी, संपदा सोइ देवे. ४

करम शशि कलंकी, कर्म भिक्षु पिनाकी,
करम बळि नरेंद्र, प्रार्थना विष्णुराकी,
करम वश विधाता, इन्द्र सूर्यादि होइ,
सबळ करम सोइ, कर्म जेवो न कोइ ५

कर्म विपाक वर्णनाधिकार

कर्म राजानो कायदो एवो सख्त छे के जे कोइ खोटा विचार, खोटा वचन, खोटा उच्चार के खोटा आचार आचरे छे-एवा स्वच्छंदपणे चालछे तेनी ते पूरी खबर ले छे. तेने अनेक तरेहना दु:ख भवोभव नरक अने तिर्यंच गतिमा आपीने रखडावे छे आ रीते दुष्ट कर्म दुष्कृत्यो करनारा नीच जीवोने शिक्षा आप छे, तेम जे रुडा परिणामथी सारा विचार, सारी वाणी अने सारा आचरण सेवे छे तेमने इन्द्र तथा चक्रवर्ती जेवी मोटी संपदा आपीने विराजे छे सुकृत्यो करनारा अने सद्गुणी जीवो उपर पूरतो अनुग्रह करवा पण ते कर्म राजा चूकतो नथी एक प्रतापी महाराजानी पेर ते दुष्ट जीवोनो निग्रह अने शिष्ट-उत्तम जीवोनो अनुग्रह तेमना विचार वाणी अने आचारना प्रमाणमा करवा ते सदाय सावधान रहे छे. विशेषमा ए शिक्षा के अनुग्रहनु फळ संपूर्ण तेते जीवो मेळवी रहे त्यांसुधी तेनी पूरी तपास राख्या करे छे अने तेओ प्रत्येक प्रसंगे तेमनी वृत्तिनु सुक्ष्म रीते निरीक्षण करतो रहे छे, अने तेमना शुभाशुभ, वर्तन (हर्ष, खेद, उन्माद के समभाव) प्रमाणे तेमनु हिताहित निष्पक्षपणे करवा ते प्रवर्त छे. कर्म महाराजानी जेमना उपर

कृपा नजर थाय छे ते उंची पायरी उपर चढी शके छे अने तेनी अवकृपा थाय छे तेनो विनिपात (विनाश) थतां वार लागती नथी. जेवुं जेमनुं वर्तन तेवुं तेमने फळ मळी रहे छे. लौकिक शास्त्र मुजब चंद्र कलंकित थयो, शंकरमहादेवे भीख मांगी, बलीराजा पासे विष्णुए दीनपणे प्रार्थना करी ए कर्म वशवर्तीपणाथी. वळी ब्रह्मा, इन्द्र अने सूर्यादिक देवो पण कर्मयोगे उंची पदवी पाम्या अने कर्मवश पोतानुं भान भूली पाछा स्त्री–मोहनीमां मुंझाइ फसी पड्या. कर्म राजा जेवुं कोइ बळियुं जणातुं नथी. आ कर्मनुं वर्णन थोडुं घणुं लौकिक शास्त्रोमां करेलुं देखाय छे; परंतु तेनुं आबेहुब यथार्थ वर्णन तो सर्वज्ञदेशित जिन आगम–ग्रंथोमांज करेलुं छे, तेमां वस्तुतः कर्मनो कर्ता, भोक्ता, संसारमां संसर्ता अने संसारनो अंत करनार जीव पोतेज कह्यो छे. जेवां शुभाशुभ कर्म जीव करे छे तेवां तेनां फळ ते संसारमां भोगवे छे, मिथ्यात्व–बुद्धि विपर्यास, अविरति–स्वच्छंद वर्तन–हिंसा असत्यादिक पापनुं सेवन, क्रोध मान माया लोभ रूप कषाय अने मन वचन कायना योगव्यापार वडे जे कंइ करवामां आवे छे तेज कर्म. शुभाशुभ परिणामवडे शुभाशुभ कर्म कराय छे अने तेनुं तेवुं शुभाशुभ फळ जीवने भोगववुं पडे छे. शुभ कर्मनुं फळ मीठुं अने अशुभ कर्मनुं फळ कडवुं होय छे. तीव्र राग द्वेष के कषाय वडे अशुभ कर्म–फळ अने मंद राग द्वेष के कषायवडे शुभ कर्म–फळ थवा पामे छे. त्यां सुधी जीवने संसार परिभ्रमण करवुं पडे छे. वस्तुतः जीव–आत्मा स्फटिक जेवो निर्मळ छे, परंतु कर्मरूपी उपाधिने योगे ते मेलो जणाय छे. जो तथा

प्रकारनी अनुकूळता पामी, यथार्थ ज्ञान, श्रद्धा अने पुरुषार्थ जे निज आत्मामाज ढकाइ रह्या छे तेमने जाग्रत करी ए अनादि कर्म उपाधिने टाळी देवाय तो ससार परिभ्रमणनो अंत आवी जाय अने अनत–अक्षय शाश्वत सुखरुप मोक्ष पामी शकाय.

३ क्षमा विषे

दुरित भर निवारे, जे क्षमा कर्म वारे,
सफळ तप सधारे, पुण्य लक्ष्मी वधारे,
श्रुत सकळ आराधे, जे क्षमा मोक्ष साधे,
जिण निज गुण वाधे, ते क्षमा का न साधे ६
सुगति लही क्षमाए, खध सुरीश शिष्या [१]
सुगति दृढप्रहारी, कूरगडु मुनीशा,
गजमुनिय क्षमाए, मुक्ति पथा अराधे,
तिम सगति क्षमाए, साधु मेतार्य साधे ७

क्षमागुण वर्णनाधिकार

क्रोधादिक कषायनी के राग द्वेषनी शान्ति, समता, धीरज ए वधा क्षमाना रुपातर–पर्याय छे. तेनो प्रभाव खरेखर अलौकिक छे, ते अशुभ–पाप कर्मने दूर करे छे. करवामा आवता वधा बाह्य–अ-

१ स्कदक सूरिना ५०० शिष्यो

अभ्यंतर तपने सार्थक करे छे अने पुन्य लक्ष्मी कहो के शुभ कर्मने पोषे छे. क्षमा-समता योगे सकळ श्रुत-शास्त्रनुं सेवन-आराधन थइ शके छे अने सकळ कर्मबंधनथी मुक्त थइ शकाय छे. जे समताथी सदाय स्वगुणनी वृद्धि-पुष्टि थवा पामे छे तेनाथी कइ वस्तु साधी न शकाय ? अपितु सकळ इच्छित वस्तु समतावडे सहेजे मळी आवे छे; परंतु एवी अपूर्व समता-क्षमाज आववी मुश्केल छे. जे महानुभाव आत्मज्ञान, आत्मश्रद्धा अने आत्मस्थिरता अभ्यास वडे यथार्थ प्राप्त करी शके छे तेज पुरुषार्थवंत आत्मा तेवी समताने पामे छे. बीजा पण धारे तो बधारे नहि तो तेवा समर्थ समतावंत निकटभवी जनोनी प्रशंसा करी अने ते ते कारण कार्यगुणमां वने तेटलो अभ्यास करी पोताना आत्मामां तथा प्रकारनी योग्यता पेदा करी शके. ए पण ठीकज छे. उपकार-अपकार-विपाक-वचन अने असंग-एम क्षमाना पांच प्रकार छे. प्रथमनी त्रण प्रकारनी लौकिक क्षमा छे, ज्यारे बीजी बे प्रकारनी लोकोत्तर क्षमा छे. जिनेश्वर देवनां के जिन आगम-शास्त्रनां वचन-अनुसारे स्वच्छंदनो त्याग करी क्षमा आदरवी ते वचन क्षमा. तेनी सतत् सेवा (अभ्यास) वडे मोक्षदायक असंग समान लाभ मळे छे. ए अलौकिक क्षमायोगे पूर्वे खंधकसूरिना पांचसो शिष्यो, दृढप्रहारी, कूरगडु, गजसुकुमाळ अने मेतार्य मुनि प्रमुख मुनीश्वरो अनेक अघोर परिसह उपसर्गो समभावे सहन करी परमानंद पदने पाम्या तेम आपणे प्रयत्न करवो घटे छे.

पण संयमनो महिमा अद्भुत छे. एक रांक जेवो पण पवित्र संयमना प्रभावे देवेन्द्र अने चक्रवर्त्ती तेमने पण पूजा-सत्कार योग्य बने छे. पूर्वनां अने नवां आवतां कर्मनुं निवारण करी ते आ भयंकर भवसागरथी पार उतरे छे अने अनन्त शाश्वत सुख माटे कायम माटे मोक्षे जाय छे. तेवा शुद्ध संयमनुं सेवन-आराधन करवा शा माटे आपणे आळस-प्रमाद सेवी बेदरकार रहेवुं जोइए? स्वच्छंद आचरणवडे जीव स्वहितथी चूकी अहितने आदरी अंते दुःखी थाय छे. माठां आचरण करनारा ज्यारे जीव पराधीन थइ दुःखी थाय छे त्यारे तेने कोइ रक्षी शकतुं नथी. कृष्णवासुदेवनुं अवसान थया पछी तेना अति प्रियबंधु बळभद्रजीए वैराग्य जाग्रत थवाथी संयम लइने तेनुं यथार्थ सेवन-आराधन कर्युं. पोताना अद्भुत रूपथी कोइ मोहान्ध बनी अनर्थमार्गी न थाय एवी पवित्र बुद्धिथी एकान्त तुंगगिरी उपर निवास करी तप जप ज्ञान ध्याननो बळदेव मुनिए एवो अभ्यास कर्यो के तेना प्रभावथी हिंसक जानवरो पण शान्त बनी गया, अने पोते पांचमा ब्रह्मदेवलोकमां सिधाव्या.

५ द्वादश भावना विषे.

प्रथम अनित्य भावना.

(मालिनी.)

धणकण तनुजीवी, वीज झात्कार जेवी.
सुजन तरुण मैत्री, स्वप्न जेवी गणवीः

अह मम ममताए, मूढता कांइ माचे,
अथिर अरथ जाणी, एणशुं कोण राचे १०
धरणि तरु गिरींदा. देखीए भाव जेइ,
सुरधनुप परे ते, भगुरा भाव तेइ,
इम हृदय विमासी, कारमी देह छाया,
तजीय भरतराया, चित्त योगे लगाया ११

लक्ष्मी अने जीवित वीजळीना झबकारा जेवा क्षणभगुर—मोत जातामा अदृश्य थइ जनार छे, वळी स्वजन कुटुंबी सायेनो मेळो तथा जुवानीनो सग स्वप्न जेवो क्षणिक छे, तो पछी खोटी माया ममता करी तेमां शा माटे मुझाइ रहो छो ? वस्तुनी असारता अने क्षणिकता विचारी शाणा जनोए ते ते वस्तुमा राचवु जोइए नहि. पृथ्वी, तरू—वृक्षो अने पर्वतादिक पदार्थो इन्द्रधनुष्यनी जेवा सुंदर जणाता छता ते तथा विनाशशील छे. तेमनी शोभा कारमी (कायम रहेनारी नहि रहेनारी) छे. वळी जळने ठेकाणे स्थल अने स्थळने ठेकाणे जळ थइ जाय छे. सुदर घटादार वृक्षो पण एक वखते शोभा वगरना बनी रहे छे, अने डुंगर पण छेवटे रळीयामणा दीसे छे एवीज रीते आ शरीरादिकनी उपरनी शोभा पण कारमी (जोतजातामा जती रहेनारी) छे, एम समजी भरतचक्रवर्तीए वैराग्यने जाग्रत करी मोक्षमार्गनो स्वीकार कर्यो, तेम सुज्ञ जनोए पण कायानी माया तजी, हितकार्यमा मनने जोडवु जोइए जैनी साथे

आपणो घणो निकट संबंध छे, जेने माटे जीव कंइ कंइ पापारंभ करी दिन रात चिन्ता कर्या करे छे अने जोतजोतामां काळ जेनो कोळीयो करी जाय छे ते कायाज गमे तेटली ममता राख्या छतां आपणो थती नथी तो पछी पृथी जुदा (दूर-अळगा) रहेना स्वजन लक्ष्मी प्रमुख पदार्थो तो पोताना शी रीते थइ शकवाना हता? तेम छतां भ्रान्तिवश मूढ जीव ते ते पदार्थोमां ममता राखी मरे छे. अनित्य, अशुचि अने जड एवा आ देहादिक उपरनी ममता तजी वैराग्य जगावी, धन्य-कृतपुन्य जनोज ते द्वारा नित्य (शाश्वत), पवित्र अने स्वाभाविक धर्म प्राप्त करी ले छे.

२ बीजी अशरण भावना.

परम पुरुष जेवा, संहर्या जे कृतांते,
अवर शरण केनुं, लीजीए तेह अंते;
प्रिय सुहृद कुटुंबा, पास बेठा जिकोइ,
मरण समय राखे, जीवने ते न कोइ. १२
सुरगण नर कोडी, जे करे भक्त सेवा,
मरण भय न छुट्या, ते सुरेंद्रादि देवा;
जगत जन हरंतो, एम जाणी अनाथी,
व्रत ग्रहिय विछुट्या, जेह संसारमांथी. १३

घ्हाला मित्रो अने स्वजनो पासे बेठा होय तेम छतां काळ जो-

वने झडपी जाय छे ते वखते तेने कोइ रोकी शकतु नथी. परम पुरुषोने पण काळ सहरी जाय छे. तो पछी बीजा साधारण जीवोनु तो कहेवुज शु ? काळ तो अविश्रान्तपणे पोतानु काम करतो ज रहे छे आ बाळगोपाळ कोइने काळ छोडतो नथी—छोडवानो पण नथी. जेनी सेवामा करोडो देवो अने मानवो हाजर रह्या करे छे एवा इन्द्रो अने चक्रवर्ती जेवा पण काळना झपाटामांथी बची शक्या नथी. (मोतना भयथी मुक्त थइ शक्या नथी.) जेम नाहर बकरीने पकडी जाय छे, तेम काळ पण जीवने उपाडी जाय छे. ते कोइने छोडतो नथी ए रीते आखी दुनियाने काळवश जाणी मनमां वैराग्य जगाडी, अहिंसादिक उत्तम व्रत आदरी, आ दुःखदायक ससारनी उपाधिमाथी अनाथी मुनि छुटी गया. श्रेणिक राजा अने अनाथी मुनिनो सवाद प्रसिद्ध छे जन्म जरा अने मरणना दुःखथी लोको त्रासे छे—बीहे छे खरा, पण तेटला मात्रथी तथा प्रकारनो पुरुषार्थ फोरव्या वगर तेवा अनत दु खमाथी कोइ छुटी शकता नथी. जो ए दुःखथी छुटवुज होय तो जेओ परम पुरुषार्थ फोरवी ए बधा दुःखमाथी छुटी गया छे एवा अरिहत, सिद्ध अने साधु जनोनु तेमज तेओना कहेला पवित्र धर्मनुं शुद्ध मनथी शरण करो. तेमनामाज अनन्य (एकतार) श्रद्धा राखो, तेमना पवित्र गुणोनु सदाय चिन्तवन करो अने तेवा पवित्र गुणो प्राप्त करवा तमे लायक बनो—तेवुं शुभ आचरण सेवता रहो. सारु काम करी लेवा विलंब—वायदो न करो. काले करवु होय ते आज करो,

एक घडीनो पण विश्वास राखी न रहो. रखे मननी व्रधी मनमांज रही जाय, माटे चेतो—समजो.

३ त्रीजी संसार न्नावना.

(शार्दूल विक्रीडित.)

तिर्यंचादि निगोद नारकीतणी
जे नीची योनि रह्यां,
जीवे दुःख अनेक दुर्गतितणां,
कर्मप्रभावे लह्यां;
आ संयोग वियोग रोग बहुधा,
आ जन्म जन्मे दुःखी;
ते संसार असार जाणी,
इहवो जे ए तजे ते सुखी. १४

(इन्द्रवज्रा.)

जे हीन ते उत्तम जाति जाये,
जे उंच ते मध्यम जाति थाये;
ज्युं मोक्ष मेतार्य मुनींद्र जाये,
त्युं मंगुसूरि पुरयक्ष थाये. १५

कर्मवश जीव तिर्यंचादि नीची गतिना तेमज नरक अने नि-गोद मरवी स्थळमांटी उपजावे एवा अघोर दुःख वारवार सहन करतो संसारनी चारे गति सवरी ८४ लक्ष जीवायोनिमा वारवार भमतो (परिभ्रमण करतो) रहे छे एटले तेमा थवतो वगर स-योग, वियोग, आधि, व्याधि, उपाधि तथा जन्म, जरा अने मरण भवरी अनत दुःखदावानळमां ते वापडो जीव सदाय पचाया करे छे. एवा दुःखदायी संसारनी असारता कोइक विरल जीवोनेज भाग्ययोगे तथा प्रकारना ज्ञानीगुरुनी कृपाथी समजाय छे, अने जे-मने संसार–मोह ओछो थयो होय ते महानुभावोज वैराग्यथी तेनो त्याग करे छे–करी शके छे. बाकीना अज्ञान अने मोहवश पडेला जीवो तो बापडा चारे गतिमा अरहा परहा अथडायाज करे छे, तेमनो केमे पार आवी शकतो नथी. जीव जेवी सारी के नरसी करणी करे छे तेवी ते उत्तम, मध्यम के अधम गतिमा जन्म लेतो फरे छे सर्वज्ञ वीतरागनां वचनानुसारे उत्तम प्रकारनी क्षमा–समतानु ज्यारे सेवन करवामा आवे छे त्यारे हीन जातिमा जन्मेल जीव पण मे-तार्य अने हरिकेशी मुनिनी पेरे परम पदने पामी शके छे, परतु ऊची गतिमा (देव मानव भवमा) जन्म्या छता जे विषयादिकमा लुब्ध बनी, क्रोधादिक कषायने वश थइ, मन वचन कायाने मोक-ळी मूकी दइ, स्वछंदी बनी जइ, मोहावशपणे हिंसादिक पापनु से-वन करता रहे छे ते महाआचार्यनी पर दुर्गतिमा उपजे छे जो के पाछळथी ते पोतानी भूल समजाता पस्ताय छे खरो, परंतु मू-र्खपणे करेली भूलनी शिक्षा भोगव्या वगर तेनो छुटको थतो नथी

४ चोथी एकत्व भावना.

पुण्ये एकेलो जीव स्वर्ग जाये,
पापे एकेलो जीव नर्क थाये;
ए जीव जा आव करे एकेलो,
ए जाणीने ने समता महेलो. १६

ए एकेलो जीव कुटुंब योगे,
सुखी दुःखी ते तस विप्रयोगे;
स्त्री हाथ देखी वलयो अकेलो,
नमि प्रबुध्यो तिणथी वहेलो. १७

जीव जेवी सारी नरसी (भली भुंडी) करणी करे छे तेनुं तेवुं सारुं नरसुं फळ पण पोताने भोगववुं पडे छे. जो ते शुभ धर्मकरणी करे छे तो ते पुन्य-फळने भोगववा स्वर्गनां सुख पामे छे अने जो ते दुष्कृत्य करे छे तो ते पाप-फळने भोगववा नरकादिकनां दुःख पामे छे. जेवी शुभाशुभ करणी करे छे तेवुं सुख दुःख तेनेज भोगववानो प्रसंग आवे छे, ए वात सहेजे समजाय एवी छे. अहीं पण जे सारां सारां परोपकारनां काम करे छे तेनी तथा जेना विचार, वाणी अने आचार पवित्र होय छे तेनी लोकमां पुष्कळ प्रशंसा थाय छे अने जेनां आचरण अवळां होय छे तेनी पुष्कळ निंदा थाय छे. आने जो प्रगट रोकडुं फळ मानवामां आवतुं होय तो ते भविष्यमां

पनार मुख्य मोटा फळनी अपेक्षाए केवळ गौण वा अल्प समज-वानु छे जेवा फळनी तमारे चाहना होय तेवु शुभ के अशुभ आ-चरण करता तमारे एकल्याएज सभाळ राखवानी छे, केमके तेनु तेवु फळ तमारे ज भोगवयु पडे एम छे, खोटी ममता राखवाथी कशु वळे एम नथी. कोइनी सीफारस एमा काम आवे एम नथी. धन कुटुंबादिकना सयोगे के वियोगे ममताथीज जीव पोताने सुखी क दुःखी मानी (कल्पी) ले छे, परतु जो आत्मज्ञान के तत्त्वज्ञानना योगे खरा वैराग्यथी ते खोटी ममता–मारापणु मूकी दे छे तो पछी तेने सयोग वियोगमा तेवा सुख दु खनी कल्पना थती नथी. नमि राजाने सख्त माटगी थइ त्यारे कंर खडखडाट तेनाथी सहन थइ शकतो नहोतो, ते जाणी राणीओए वधाराना ककणादिक काढी नाख्या अने फक्त एकेक वलयज राख्यु, जेथी अवाज थतो बध पड्यो तेनु कारण विचारता एकाकीपणामाज हित समजी तरत सर्व ममत तजी दइने ते सुखी थया.

५ पाचमी अन्यत्व भावना

जो आपणो देहज ए न होइ,
तो अन्य को आपण मित्र कोइ,
जे सर्व ते अन्य इहां भणीजे,
केहो तिहा हर्ष विषाद कीजे, १८

देहादि जे जीवथकी अनेरां,
इयां दुःख कीजे तस नाश केरां;
ते जाणीने वाघणीने प्रबोधी,
सुकोशळे स्वांग न सार कीधी. १९

नित्यमित्र समान आ देहनी सेवा चाकरी हमेशां कंइक पापारंभ साथे करीए छीए तोपण अंते ते छेह दइ जाय छे तो पछी एथी अळगा रहेनारा पर्व मित्र समान स्वजन कुटुंबी विगेरे आपणने अवसान वखते क्यांथी सहाय आपी आपणुं रक्षण करी शके? नज करी शके. ए उपरथी एवो निश्चय करवानो छे के आपणा आत्माथी जूदा जे कोइ देह, लक्ष्मी, स्वजन मित्रादिकनो संयोग वियोग बने ते बधा आत्माथी न्यारा होवाथी ते ते प्रसंगे ते संबंधी हर्ष खेद करवो उचित नथी. तेम छतां बनी शके तो ते ते प्रसंगमांथी कंइ पण बोधदायक गुण मेळवी, वैराग्य जगावी, आपणा आत्मानुं अधिक हित थाय तेम करी लेवुं ते उचित छे. जेवो संयोग संबंध शरीर अने वस्त्रने छे तेवोज संयोग—संबंध आत्मा अने शरीरने जाणवो. जेम वस्त्र जीर्ण थतां के फाटी जतां के तेनो नाश थतां शरीर जेवुं ने तेवुं बनी रहे छे तेम शरीर जीर्ण थतां, रोगाविष्ट थतां के नाश पामवा छतां आत्मा तो जेवो ने तेवो गमे तेवी गति—स्थितिमां कायम रहे छे. आ रीते ज्यारे देहथी आत्मा जूदोज सिद्ध थाय छे त्यारे तेनो वियोग थतां खेद के शोक करवो सुज्ञजनोने

उचित नथीज. मोह मायाथी के ममताथी तेवो खेद के शोक करनार जीव फोगट चीकणा कर्म बांधी दुःखी थाय छे. आत्मानु अधिक हित थाय तेम करवा देहादिक क्षणिक वस्तु उपरथी ममता तजी (ओछी करी) यथाशक्ति तप जप सयमनु सेवन करवुज उचित छे, एम समजी सुकोशळ मुनिए शरीरममता तजी, विकराळ वाघणीने अने जातिस्मरण पूर्वक बोध थाय तेवु हित–प्रवर्तन कर्युं.

६ छट्ठी अशुचि भावना

काया महा एह अशुचिताइ,
जिहा नव द्वार वहे सदाइ,
कस्तुरी कर्पूर सुद्रव्य सोइ,
ते कायसयोग मलीन होइ २०
अशुचि देहि नरनार केरी,
म राचजे ए मळमूत्र शेरी,
ए कारमी देह असार देखी,
चतुर्थ चक्री पण ते उवेखी २१

आ काया महा मलीन अशुचिथी भरलीज छे. तेमा पुरुषने नव द्वारे अने स्त्रीने द्वादश द्वारे सदा अशुचि वहती रहे छे. कस्तुरी, कर्पूर, चंदनादिक सुगंधी वस्तुओ पण एना सयोगे दुर्गंधी बनी जाय छे. गमे तेवुं स्वादिष्ट सुन्दर भोजन कर्युं होय पण ते व

थानुं परिणमन विष्टादिकमां थाय छे. गमे तेवां सुंदर किंमती वस्त्र पहेर्यां ओढयां होय ते वधां कायाना संगथी मलीन अने नमूला-नमालां थइ जाय छे. मळ मूत्रादिक अशुचिथीज भरेली आ स्त्री पुरुषोनी काया अशुचिथी ज पेदा थयेली छे. तेने जळादिक शौचथी शुद्ध करवानो प्रयास केवळ भ्रमरुप छे. आ अशुचिमय कायानी असारता यथार्थ समजी जे समताना कुंडमां यथेच्छ स्नान करी पापमेलने बराबर पखाळी साफ करी नांखी फरी मलीनताने पामता नथी (पापाचरणमां प्रवृत्त थता नथी) ते अंतरआत्माज परम पवित्र समजवा. खरा ज्ञानी विवेकी साधु-महात्माओ तो उपरोक्त भावस्नान करीने ज सदाय पोताना आत्माने पवित्र करे छे. अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य अने असंगतादिक सदाचरणवडे ज भावस्नान कर्युं लेखाय छे. ते सिवाय तो मच्छनी पेरे दिनरात जळमां निमज्जन करवा मात्रथी कशुं वळतुं नथी. शरीरममता अने हिंसादिक पापाचरणवडे तो आत्मा अधिकाधिक मलीनताज पामीने अधोगति (अवनति) ने प्राप्त थाय छे एम यथार्थ समजी सनतकुमार चक्रवर्तीए जेम कायानो माया तजी, वैराग्य पामीने आत्महित साध्युं तेम भव्यात्माओए करवुं घटे छे.

७ सातमी आश्रवभावना.

(मालिनी)

इह अविरति मिथ्या-योग पापादि साधे,
इण उणभव जीवा, आश्रवे कर्म बांधे;

करमजनक जे ते, आश्रवा जे न रुधे,
समर समय आत्मा, सवरी सो प्रवुद्धे २२

(इन्द्रवज्रा.)

जे कुंडरीके व्रत छाडी दीधु,
भाइतणुं ते वळी राज्य लीधु
ते दुःख पामे नरके घणेरा,
ते हेतु ए आश्रव दोष केरा २३

अविरति (स्वच्छंदाचरण), मिथ्यात्व (विपरीत श्रद्धा), मन वचन कायानी मोकळी वृत्ति अने क्रोधादिक कषाय के जेनावडे जीवमा वारवार कर्म आवता रहे छे ते आश्रव कहेवाय छे. आ रीते थता कर्मसचयथी जीवने भवभ्रमण थया करे छे. सम्यग् दर्शन ज्ञान अने चारित्ररुप रत्नत्रयीनु सेवन करवाथी उपरोक्त कर्म आवता अटके छे, तेथी मुज्ञ जनोए मिथ्यात्व, अविरति प्रमुख दोषनु सत्वर निवारण करी आत्माने कर्मना भारथी हलवो करवो जोइए आत्मनिग्रह करवा रुप सयमवडे सहेजे कर्मनिरोध थइ शके छे. मन अने इन्द्रियरुप उद्धत घोडाने ज्ञानरुप लगामवडे वरावर कबजे राखवा क्षमा–समतादिकना अभ्यासवडे क्रोधादिक कषायने दूर करवा, सम्यक्त्ववडे मिथ्यात्वने वमी देवु, सम्यग् ज्ञानवडे अज्ञान तिमिरने नष्ट करवु, अने उत्तम व्रत नियमोवडे हिंसादिक आश्रवना द्वार वंध करवा. पवित्र विचार, वाणी अने आचारवडे मन वचन

अने कायानी मलीनता दूर करी देवी. जो जीवने जन्म जरा अने मरणनां अनंता दुःखथी बचवानी खरेखरी इच्छाज होय तो खरी तक पामीने पोतानीज मेळे स्वतंत्रपणे गमे तेटलां कष्ट समभावे सहन करी पवित्र रत्नत्रयीनुं आराधन करी लेवुं. पुंडरीक राजाना बंधु कुंडरीके प्रथम पोते वैराग्यथी आदरेलां व्रत नियमो सुखशीलना (शिथिलता)थी तजी दइ बंधु पासेथी राज्य लही भोगविलास करवो पसंद कर्यो, तो तेथी चीकणां कर्म बांधी थोडा दिवसमांज मरीने ते सातमी नरके गयो, ज्यारे पुंडरीक राजा दीक्षा लइ, आराधी अनुत्तर सुख पाम्या.

८ आठमी संवर भावना

(इंद्रवज्रा.)

जे सर्वथा आश्रवने निरुंधे,
ते संवरी संवर भाव साधे;
ते भाव वंदो गुरु वज्रस्वामी,
जेणे त्रिया कंचन कोडी वामी. २४

आश्रवनो निरोध करवो तेनुं नाम संवर छे. तेना ५७ भेद कह्या छे. पांच समिति अने त्रण गुप्तिरूप अष्ट प्रवचन मातानुं पालन करवुं, क्षुधा तृषादि २२ परिषहोने सम्यक् प्रकारे (दीनता रहित-अदीनताथी-समभावे) सहन करवा, क्षमा मृदुता सरलतादिक दश विध यतिधर्मनुं यथाविधि पालन करवुं, अनित्यादिक द्वादश भा-

वना (उपलक्षणथी मैत्री प्रमुख चार भावना तथा पांचे महाव्रतनी पच्चीश भावना) दिनप्रत्ये भाववी, तथा सामायिक, छेदोपस्थापनियादिक चारित्रनी यथायोग्य आराधना करवी. जे उक्त ५७ प्रकारना संवरवडे सर्वथा आश्रवनो निरोध करे छे ते महात्मा अनुक्रमे सर्वोत्कृष्ट संवरने पामी शके छे मूळ तो आत्मा स्फटिक रत्न जेवो निर्मळ निष्कपायी छे, परंतु ते विविध आश्रवोद्वारा कर्मसंचयवडे मलीन थयेलो दिसे छे संवरवडे ए मलीनता अटकावी शकाय छे, अने तीव्र तपना प्रभावे स्फटिक रत्न जेवु निर्मळ-उज्वल स्वरूप प्रगट करी शकाय छे. पछी ते सशुद्ध थयेलु आत्मस्वरूप क्यापि मलीनताने पामी शकतु नथीज. जेम सुवर्णमां रहेली मलीनता तीव्र तापना योगे दूर करी देवाथी ते संपूर्ण शुद्ध बनी जाय छे, पछी पाछु ते मेलुं थवा पामतु नथी, तेवीज रीते आत्मा उपर लागेलो कर्ममळ तथा प्रकारना तीव्र तप तेमज संयमना प्रभावे दूर थइ गया बाद फरी आत्मा कर्मथी लेपातो नथी. आवा पवित्र आशयथीज कोटिगमे सुवर्ण युक्त रुकमिणी कन्यानो जेमणे त्याग कर्यो एवा वज्रस्वामी तेमज जंबुस्वामी, स्थूलिभद्रजी प्रमुख महा मुनिओने सदाय नमस्कार हो.

९ नवमी निर्जरा भावना

(मालिनी)

होय दश तप भेदे, कर्म ए निर्जराये,
उतपति थिति नासे, लोक भावा भराये,

दुरलभ जग बोधि, दुर्लभा धर्मबुद्धि,
भवहरणी विभावो, भावना एह शुद्ध. २५

(उपजाति.)

बे निर्जरा काम सकाम तेही,
अकाम जे ते मरुदेवी जही;
ते ज्ञानथी कर्मह निर्जरीजे,
दृढप्रहारी परे तो तरीजे. २६

आत्मप्रदेश साथे क्षीर नीरनी पेरे जे कर्मदळ लाग्यां छे तेने आत्माथी जुदा पाडवा–क्षय पमाडवा तेनुं नाम निर्जरा. तेवी निर्जरा अथवा कर्मनो क्षय बाह्य अने अभ्यंतर एवा बार प्रकारना तपवडे थइ शके छे. तप संबंधी तीव्र तापवडे करी आत्मप्रदेशथी कर्मनां दळीयां जुदां पडी क्षय पामी जाय छे. एम करतां ज्यारे सर्व कर्म-दळनो क्षय थइ जाय छे त्यारे जन्म मरणनो भय सर्वथा टळी जाय छे. पछी आत्मा अजरामर थइ रहे छे. सत्य सर्वज्ञोक्त धर्मनी प्राप्ति खरेखर दुर्लभज छे. तेवो दुर्लभ धर्म प्राप्त करवानी बुद्धि पेदा थवी पण दुर्लभ छे. तेवी धर्मबुद्धि अने धर्मप्राप्ति आ नवमी निर्जरा भावनावडे सुलभ थवा पामे छे. आ भावनाना बळथी भव–संसारनो जलदी अंत आवे छे.

बे प्रकारनी निर्जरा कही छे. एक सकाम अने बीजी अकाम मरुदेवी माताए पूर्वना (केळनां) भवमां (कंथेरीना झाडथकी) जे

अज्ञान कष्ट–दुःख सहन कर्युं हतुं तेनी परे पराधीनपणे अनिच्छाए अथवा ज्ञान–विवेक वगर कष्ट–क्रिया करवाथी जे कर्म निर्जरा (कर्मनी ओछाश) थवा पामे छे तेनुं नाम अकाम निर्जरा अने समज साथे विवेक पूर्वक सत्याग्रहथी जे तप जप संयम ध्यानादिक सत्करणी करवामां आवे तेथी जे कर्म निर्जरा थाय छे ते सकाम अकाम निर्जरा अज्ञान कष्टक्रियाथी थाय छे. ज्यारे सकाम निर्जरा यथार्थ ज्ञान सहित आत्म लक्ष–उपयोग पूर्वक तप जप संयम ध्यानवडे थवा पामे छे जेवी रीते दृढप्रहारी साधुए संयम ग्रहण करीने आत्मदृढताथी तीव्र तपस्या साथे परिषहो अने उपसर्गो अदीनपणे सहन कर्यां हतां, तेवी जागृतिथी आत्म साधन करनार शिघ्र स्वहित साधी, आत्मऋद्धि प्राप्त करी अनेकने हितरूप थाय छे

१० दशमी लोकस्वरुप भावना.

(मालिनी)

जिम पुरुप विलोवे, ए अधोलोक तेवो,
तिरिय पण विराजे, थाळशो वृत्त जेवो,
उपर मुरज जेवो, लोकनाळे प्रकाशो,
तिमज भुवनभानु, केवळी ज्ञान भाषो. २७

जेमां जीवाजीवादिक पदार्थो अवलोकवाना प्राप्त थतां होय ते लोक अने जेमां तेवा पदार्थो अवलोकवाना प्राप्त थतां न होय

ते अलोक कहेवाय छे. असंख्यात योजन प्रमाण चौदराजलोक लेखाय छे, ज्यारे बाकीनो बधो (अनंतो) अलोक लेखाय छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, पुद्गल, जीव अने काळ ए छ द्रव्यो छे. तेमां वस्तुना नवा पुराणा पर्यायना हेतुरुप काळ ए एक उपचरित द्रव्य छे. बाकीना पांच द्रव्यो अस्तिकाय (प्रदेशोना समुदाय) रुप छे. जीव अने पुद्गलने चलन क्रियामां हेतुरुप धर्मास्तिकाय, अने स्थिर रहेवामां हेतुरुप अधर्मास्तिकाय, ए सर्वने अवकाश आपनार आकाशास्तिकाय, चेतना लक्षण जीव, अने शब्द, रुप, रस, गंध तथा स्पर्शादिक सर्व पुद्गल छे. आ पांचे अस्तिकायो जेमां विद्यमान छे तेनुं नाम लोक. ते उर्ध्व अधो अने तीरछो असंख्यात योजन प्रमाण मोटो छे. वलोणुं वलोववानी पेरे बंने पग पहोळा करेला अने बंने हाथ केडउपर स्थापेला पुरुषनी जेवो लोकाकार छे. सहुथी नीचे ते अत्यंत पहोळो छे. तीरछो लोक स्थान जेवा आकारे गोळ छे अने उर्ध्वलोक मुरज (वाजींत्र) जेवा आकारे छे. देरासरादिकमां कोइ कोइ स्थळे आ लोकाकार चित्रेलो होय छे ते उपरथी तेनुं कंइक विशेष भान थइ शके छे. आमां मृत्युलोक मध्यमां एटले नाभिना स्थळे जाणवो. आ वस्तुस्थिति अनादि छे ते कोइए नवी रची नथी. आ चौद राजलोकमां कर्मवश जीवमात्र परिभ्रमण कर्या करे छे. अनुक्रमे रत्नत्रयीनो दुर्लभ योग थतां तेनुं यथाविधि आराधन करी सकळ कर्मनो अंत आणी मुक्त थइ लोकांतमां स्थिति करे छे.

११ अग्यारमी बोधिदुर्लभ भावना

(स्वागता)

बोधिबीज लही जेह अराधे,
ते इलासुत परे शिव साधे,

सर्वज्ञ वीतराग परमात्माए स्वानुभवथी जगतना कल्याणार्थे कह्यो के हरकोइ भव्यात्माना उद्धार माटे जे पवित्र धर्ममार्ग बताव्यो छे ते सम्यग दर्शन (सम्यक्त्व), ज्ञान अने चारित्ररूप रत्नत्रयीनी प्राप्ति खरेखर दुर्लभ छे, केमके प्रथम तो तथाप्रकारना प्रबळ पुन्यना योग वगर मनुष्यपणु, कर्मभूमि, आर्य देश, उत्तम कुळ–जाति, निरोगता, दीर्घ आयुष्यनी प्राप्ति थवा साथे रूडी श्रद्धा, हितोपदेशक गुरु अने शास्त्र श्रवणनो लाभ मळतो नथी ते बधु सद्भाग्ये मळ्या छता यथार्थ तत्त्व श्रद्धा–प्रतीति बेसवी बहु दुर्लभ छे, सेंकडो भव भमता मळवु दुर्लभ एवु समकित रत्न पाम्या छता मोहादिकनी प्रबळताथी चारित्र रत्न पामवु दुर्लभ छे, ते पण भाग्ययोगे पाम्या छता इन्द्रिय, कषाय, गौरव अने परिषहादिक शत्रु वर्ग सन्धे दृढ वैराग्य बळ धारण करी तेनु सम्यग्पणे पालन (आराधन) करवु अत्यन्त कठण छे. एम छता कोइ धीर वीर (विरला) उत्तम प्रकारनी क्षमा–समता, मृदुता–नम्रता, ऋजुता–सरलता अने संतोषनी सहायवडे उक्त चारित्रनु यथार्थ आराधन करी शके छे, जो के आवी उची स्थितिए क्रमसर अभ्यासवडे चढी क्वचित् शकाय छे, तोपण भरत के इलाचीपुत्रनी जेम एकाएक गृह-

स्थपणामांज कैवल्य पर्यन्तनी अति उंची हद प्राप्त थइ जाय तो तेमां तेमणे पूर्व भवमां करेलो तथाप्रकारनो पुरुपार्थ भरेलो अभ्यासज कारणभूत समजवो. एवा एवा दाखला सांभळी धर्म साधनमां प्रमाद करवानो नथी. उलटो अधिक उमंग लावी सावधानपणे आत्महित साधन करवुं घटे छे, केमके जोइए एवी सघळी शुभ सामग्री तथाप्रकारना प्रबळ पुन्य वगर वारंवार मळवी मुश्केल छे, तेथी जे काले करवानुं होय ते आजेज करी लेवुं.

१५ बारमी धर्म भावना.

धर्म भावना लही भवि भावो,
रायसंप्रति परे सुख पावो. २८

उक्त रत्नत्रयीरुप धर्म अथवा क्षमादिक दशविध (यति) धर्म अथवा दान शील तप भावनारुप धर्म जेमणे राग द्वेप अने मोहादिक दोषमात्रने जीती लीधा छे एवा जिनेश्वरोए जगतना हितश्रेय अर्थेज सारी रीते स्पष्टतापूर्वक सहु पर्षदा समक्ष स्वानुभवथी कही बताव्यो छे. ते सर्वोत्कृष्ट अहिंसा, संयम अने तप लक्षण मंगळकारी धर्मसाधनमां जे भव्यात्माओ सावधानताथी लागी रहेछे ते सुखे समाधे आ भवसागरनो पार पामे छे. सर्वोत्कृष्ट अहिंसादिक महाव्रतनो पाळवा रुप साधुधर्म पामवा जेटली योग्यता अने सामर्थ्य जेनामां न होय तेवा मंद अधिकारी जीवो माटे पांच अनुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत रुप. ग्रहस्थधर्म पण बताव्यो छे. शुद्ध तत्त्वश्रद्धारुप सम्यक्त्व पूर्वकसेवन करातो साधुधर्म के ग्रहस्थधर्म

आत्मकल्याणने माटे थाय छे. मिथ्यात्वनो त्याग करवाथी अने मार्गानुसारी थवाथी प्राय: सद्‌गुरुनी कृपावडे सम्यक्त्वनो उदय थवा पामे छे. समकितसहित करवामां आवती हीत करणी यथार्थ फळदायक बनी शके छे, तेथी गमे तेटलो स्वार्थत्याग करीने पण समकित रत्न प्राप्त करी लेवा ज्ञानी पुरुषो भार दइने कहे छे ते यथार्थज छे. तत्त्व अश्रद्धा अथवा अतत्त्व श्रद्धा रुप मिथ्यात्व ज्यांसुधी कुसग न तजाय त्यांसुधी टळे नहि, तेथी प्रथम स्वहितार्थी ए कुगुरु–कुसगनो त्याग करी सद्‌गुरुनोज सग सजवो जोइए. जेनी रहेणी करणी निर्दोष–उत्तम होय एने कशी लालच वगरना सद्‌गुरुनुज शरण हितकारी छे. सर्वज्ञ वीतराग सर्वोत्कृष्ट योग्यतावाळा होवाथी ते जगद्‌गुरु छे तेमनु शरण सदा कर्तव्य छे.

मोक्ष वर्ग

६ राग–द्वेष विषे.

(इन्द्रवज्रा)

रागे न राचे भव वध जाणी,
जे जाण ते राग वशे अनाणी,
गौरी लणे राग महेश रागी,
अर्धांग देवा निज बुद्धि जागी २९
रे जीव! तु द्वेष मने म आणे,
विद्वेष ससार निदान जाणे,

सासु नणंदे मळी कूड कीधुं,
जूठुं सुभद्रा शिर आळ दीधुं, ३०

६ राग-द्वेष दूर करवा हितोपदेश.

आत्माने रंगी दे, रुपांतर करी दे, विकारी बनावी दे अने तेने विभाववाही करीने संकलेश उपजावे तेनुं नाम राग. एवा दुष्ट रागने भवभ्रमणकारी कर्मबंधननुं मुख्य कारण जाणीने अहो भव्यात्माओ! तमे तेमां राचो नहीं. तेने निवारवा बनतो प्रयत्न करो. तेनो जय करवा माटे जेमणे तेनो सर्वथा जय कर्यो छे एवा परम कृपाळु अने समर्थ श्री जिनेश्वर देवोनुं शरण ग्रहो! वीतरागना द्रढ आलंबनथी तमे पण दुष्ट रागनो जय करवा समर्थ बनी शकशो. शुद्ध देव गुरु अने धर्म प्रत्येना शुद्ध पवित्र निःस्वार्थ रागवडे अशुद्धने मलीन एवा स्वार्थी रागनो तमे पराजय करी शकशो. दुष्ट रागने जीतवानो ए सरल उपाय छे. तेम छतां जे कोइ मोहातुर बनी दुष्ट स्वार्थी रागने वश थइ रहे छे ते अज्ञानी छे अने ते हाथे करीने जन्म मरणना दुःखने वहोरी ले छे. जो महादेव गौरी-पार्वतीना रागथी रंगाया अने तेने वश थया तो तेने अर्धांगना (स्त्री) बनावी लेवानी कुबुद्धि थइ. कामवश विकळ बनी जनारने महादेवनी संज्ञा घटती नथी-तेमां ते सार्थक (चरितार्थ) थती नथी. ज्यां दुष्ट कामरागादिक केशरीसिंहनी जेम जोरथी ताडुका करता रहे छे त्यां स्वाभाविक शान्ति-समाधि टकी शकती नथी. अने

तेना कार्यमा सहज अंतराय पडना द्वेषाग्नि जागे छे अने प्रजळे-छे. ते वळी अवशेष सुखशान्तिनो लोप करी नाखे छे. एटले राग-द्वेपने वश थयेला पामर जीवोने ससार चक्रमां भमवुज पडे छे अने जन्म मरण करवाज पडे छे जो जन्म मरणना दुःखथी डरताज हो तो द्वेप इर्षा वश थइ जेम सुभद्रा उपर तेनी सासु अने नणदे कुडु आळ मूक्युं तेवा कुकृत्यो खोटा आवेशमा आवी कदापि करशो नहिं.

७ सतोप विषे

(वसंत तिलका.)

सतोप तृप्त जनने सुख होय जेवु,
ते द्रव्य लुब्ध जनने सुख नाहि तेवु,
सतोपवत जनने सहु लोक सेवे,
राजेद्र रंक सरिखा करी जेह जावे ३१

श्री सिद्धसेन गुरु राय गभीर वाणी,
सतोपता जिहतणी जगमाही जाणी,
भावे करी जिह भणी सुणी वाणी रगे,
जे साय विक्रम धरी जिन आण अगे ३२

७ सतोप गुण सेवन करवा हितोपदेश

जेना वडे सारी रीते संतोप-तृप्ति जनित सुख रनी रहे एवुं

वेक प्रगटे छे—उदय पामे छे. एनुं महात्म्य अपूर्व अने अचिंत्य छे, ते अंतरमां प्रकाश करतो बीजो (अपूर्व) सूर्य अने त्रीजुं (अपूर्व) लोचन छे. उत्तम शास्त्रकारो कहे छे के बीजी वधी धांधल करवी मूकी दइ एक विवेकनोज खरी खांतथी अभ्यास (सेवन) करो जेथी मोह अंधकार—राग—द्वेषादिक विकार नष्ट थाय. जेम जेम विवेक अने विज्ञान कळा वधती (खीलती) जशे तेम तेम स्व—पर (जीव—अजीवादि) जड—चेतन्यनुं यथार्थ स्वरुप ओळखाशे, तेमां यथार्थ प्रतीत (श्रद्धा—आस्था) बेसशे अने प्रथम जे मोहादिक योगे मुंझवण थती हशे ते विलय जशे अथवा ओछी थइ जशे. राग द्वेषादिक कर्मबंधनो तूटी जशे अथवा ढीला—पातळा पडशे अने आत्मानी उपर आवेलां कर्मना आवरणो दूर थतां—नष्ट थइ जतो आत्मा स्फाटिक रत्न जेवो उजळो (कर्म—कलंक वगरनो—निर्मळ) थयेलो के थतो साक्षात् अनुभवमां आवशे. आ कंइ जेवो तेवो लाभ नथी. अपूर्व अने अचिन्त्य महा लाभ छे. बाळपणामांज संयम योगे, वर्षाकाळ आवतां रमतमां काचली पाणी उपर तरती मूकनार बाळ अइमत्ता मुनि, इर्यावही पडिक्कमतां (पापनी आलोचना करतां) केवळज्ञान पाम्या. कर्मबंधनथी मुक्त थया ते सद्विवेकनाज प्रभावे जाणी सहुए सद्विवेक अवश्य आदरवो.

९ वैराग्य (निर्वेद) विषे.

(शार्दुलविक्रीडित.)

जे बंधुजन कर्मबंधन जिशा भोगा भुजंगा गिणे,

जाणंतो विप सारिखी विपयता ससारता ते हणे,
जे ससार असार हेतु जनने ससार भावे हुवे,
भावो तेह विरागवत जनने वैराग्यता दाखवे ३५

(वसततिलका)

निर्वेद ते प्रवळ दुर्भर चदिग्वाणो,
जे छोडवा मन धरे बुध तेह जाणो,
निर्वेदथी तजिय राज विवेक लीधो,
योगींद्र भर्तृहरी सयम योग सीधो ३६

९ वैराग्य वर्णनाधिकार

संसारमां जकडी राखनारा स्वार्थी स्वजन कुटुंबीओने जे कर्म-बंधनना हेतुरुप समजे छे, विषयभोगोने जे भुजग जेवा भयंकर (रोग–विकारजनक) गणे छे, अने विषय सुखने विप जेवा दु ख-दायक लेखे छे तेवा खरा वैराग्यवत जनोज आ सासारिक दु'खनो अत करी शके छे आ समारना जे जे असार क्षणिक एवा जड पदार्थो मोहविकळ (मूढ) जनोने ससार परिभ्रमण (जन्ममरण) ना हेतुरुप थाय छे तेज असार पदार्थो वैराग्यवत जनोने वैराग्य भावनु पोपण करनारा थाय छे ते ते क्षणिक (जोत जोतामा नाश पामी जनारा), अशुचि (अनत जीवोए प्रथम भोगवी भोगवीने छंडेला होवाथी उच्छिष्ट रुप) अने जड (ज्ञान चैतन्य वगरना)

देहादिक पदार्थोनी उत्पत्ति, स्थिति अने लयना कारण कार्यनो वारीकीथी विचार करतां वैराग्यवंत जनोनो वैराग्य वन्यो वन्यो रहे छे, एटलुंज नहि पण तेमां उत्तरोत्तर पुष्टि मळवाथी ते वैराग्य परिपक्व थवा पामे छे. जेथी पछी "अनासंग मति विषयमें, राग द्वेषको छेद; सहज भावमें लीनता, उदासीनता भेद." वैराग्यना फळ रूपे औदासिन्य–उदासीनता–उन्मनी भावना प्रगट थाय छे. जेवडे मुज्ञजनो आ अति आकरा दुःखदायक संसार कारागृहमांथी छुटी जवा धारे छे तेज वैराग्य समजो. राजा भर्तृहरिए एकदा भेट दाखल आवेल एक उत्तम आम्र फळ पोतानी राणीने पोते मोह वश खावा आप्युं, ते तेणीए पोताना यार (जार) महावतने आप्युं; तेणे ते पोतानी व्हाली वेश्याने आप्युं, ते वेश्याए पाछुं तेज फळ सारा विचारथी राजाने भेट कर्युं, राजाए ते वरावर ओळखी लीधुं अने राणीने ते बाबत खरी हकीकत पूछी खात्री करी लीधी, तेमांथी वैराग्य जाग्यो अने पोते राजपाटनो विवेकथी त्याग करी संयम योग लइ योगी वन्या. आ वधो प्रभाव वैराग्यनो समजवो.

१० आत्मबोध विषे.

(वसंततिलका.)

ए मोह निंद तजी केवळ वोध हेते,
ते ध्यान शुद्ध हृदि भावन एक चित्ते;

ज्यु नि प्रपञ्च निज ज्योति स्वरुप पावे,
निर्बोध जे अक्षय मोक्ष सुखार्थ आवे ३७

(मालिनी.)

भव विषय तणा जे, चचळा सौख्य जाणी,
प्रियतम प्रिय योगा, भगुरा चित्त आणी,
करम दळ खपेइ, केवळ ज्ञान लेइ,
धन धन नर तेइ, मोक्ष साधे जिकेइ ३८

इति मोक्ष वर्ग

(इति सूक्त मुक्तावळी समाप्त)

---

१० आत्मबोध सबंधी हितोपदेश

जे महात्मा मोह निद्रा–मोह विकळता–मोहाधतानो त्याग करे छे तेज आ मनोध पामी शके छे, एटले तेनेज आत्मज्ञान प्रगट थइ शके छे. तेथी हृदयमा शुद्ध सात्विक विचारो (शुभ चिन्तवन–रुडु ध्यान)नो उदय थवा पामे छे अने हृदयनी भावना पण पवित्र बने छे. पूर्वोक्त द्वादश भावना, अथवा मैत्री, मुदिता, करुणा अने माध्यस्थ्य भावनानी प्रबळताथी आत्मानी शुद्ध निरुपाधि ज्योति जागे छे अने तेमा अन्य सर्व भाव भूलीने लीन–एक रस थइ जवाथी अते अक्षय मोक्षपदनी प्राप्ति थइ शके छे. मोहनिद्रा तज–

वाथी (मोह मदिरानो छाक उतरवाथी) अंतरमां ज्ञान प्रकाश थतां शुद्ध ध्यान अने भावनानुं बळ वधतां निर्मळ आत्मज्योति (स्वरूप स्थिरता) प्रगटे छे अने तेमां समरस थइ (निर्विकल्प थइ) समाइ जतां सकळ कर्मना क्षयरूप—परमानंद—मोक्षपद प्राप्त थाय छे. तेथी सकळ सुखना हेतुरूप आत्मबोध मेळववा जरूर प्रयत्न करवो अने ते मोहाधीनता तजवाथीज बनी शके एम होवाथी पछी अहंता, ममता तथा विषयवासना टाळवा जरूर लक्ष राखवुं. 'संसार संबंधी गमे तेवा अनुकूळ शब्द रूप रस गंध स्पर्शरूप पंच विषय सुख क्षणिक—अस्थिर छे. तेमज स्त्री पुत्र लक्ष्मी अने यौवनादिक इष्ट वस्तुओनो संयोग क्षणभंगुर छे; एम चित्तमां चोक्कस ठसावीने निर्मळ आत्मबोध आत्मश्रद्धा अने आत्म रमणता रूप पवित्र रत्नत्रयीनी यथाविधि आराधना करी जे धन्य नरो परम पुरुषार्थ वडे क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थइ सकळ कर्म खपावी केवळज्ञान पामीने परमानंद—मोक्ष पद प्राप्त करे छे तेओज खरेखर प्रशंसवा अने अनुकरण करवा योग्य छे.

इति मोक्ष वर्ग.

उपसंहार.

धर्मादिक चारे वर्गनुं संक्षिप्त स्वरुप वर्णन.

तत्र प्रथम धर्म वर्ग.

अज्ञान, मोह अने प्रमादवश (स्वच्छंद आचरणथी) दुर्गतिमां पडता प्राणीओने हस्तावलंबन आपी धारण करी राखे अने तेमने

मनुगति साथे जोडी आप ते रुडो धर्म सयमान्वित दश प्रकारनो शास्त्रकार कर्यो छे. अहो भव्य जनो ! तेनु स्वरुप सुगुरु मुखथी साभळो ! दश विध धर्म आ प्रमाणे—

१ क्षमा—समता—सहनशीलता राखवी.

२ मृदुता—कोमळता—सभ्यता—नम्रता—धारण करवी.

३ ऋजुता—सरलता—प्रमाणिकतानु सेवन करवु.

४ निर्लोभता—सतोष वृत्ति सदाय आदरवी.

५ बाह्य अने अभ्यतर बने प्रकारनो तप सेवरो. ज्ञान, ध्यान, विनय, वैयावच्चमा खलेल न आवे—तेमा वधारो थता पामे तेवो उत्तरोत्तर तप करवा लक्ष राखवु

६ पाच इन्द्रियोनो निग्रह करवो. (इन्द्रियोने वशमा राखवी) शब्दादि पाच विषयसुखमा गृद्ध—आसक्त बनवु नहि. क्रोधादिक कषायोने वश थवु नहि. हिंसादि दोषोथी दूर रहवु. सहु जीवने आत्म समान लेखवा तथा मन वचन कायाने सारी रीत वश करी करने राखवा—मोकळा मूकवा नहि. चपळता निवारी स्थिरता आदरवी. ए रीते आत्मानु सयमन करवु

७ हित मित अने प्रिय एवु तथ्य—सत्य वचन वदवु.

८ राग द्वेष—कषाय मळने टाळी आतर शुद्धि करवी. एटला माटे सावधानपणे देवगुरुनी आज्ञा मुजब चालवु अने चारे प्रकारनु अदत्त यत्नथी परिहरवु

९ परिग्रह—ममता—मूर्छा टाळी नि:स्पृह—नि सग रहवु

१० सर्व अब्रह्म—मैथुननो त्याग करी मन वचन कायाथी पवित्र शील—ब्रह्मचर्य पाळवा पूरी काळजी राखवी.

द्वितीय अर्थ वर्ग.

जो प्रथम सुकृत्य कर्यां होय, दानादिक धर्म करणी उल्लासथी करी होय, दुःखी उपर अनुकंपा आणी अर्थ—द्रव्यनो मोह तजी तेनुं दुःख निवारण कर्युं होय, अतिथि (साधु—साध्वी प्रमुख धर्मीत्माओ)नी यथोचित सेवा—भक्ति करी होय, पूर्ण प्रेमथी स्वधर्मी वात्सल्य कर्युं होय, पवित्र तीर्थोनी यात्रा पूजा करी होय, देव गुरुनां बहुमान कर्यां होय, गुणीजनोनो योग्य सत्कार कर्यो होय, शास्त्र—आगमनी सेवा करी होय, बाळ तपस्वी, वृद्धादिकनी वैयावृत्त्य (तजवीज) करी होय, टुंकाणमां बनी शके एटलो पैसानो लाहो गेसो पामीने लीधो होय तो ते रीते पैसानो सदुपयोग करनारने सहेजे (अनायासे) पार वगरना अर्थनी प्राप्ति थाय छे. वळी पुन्यानुबंधी पुन्यवडे लक्ष्मी साथे सरस्वतीनी पण कृपा थाय छे. एटले एथी ज्ञानसंपदा—सद्बुद्धि—न्यायबुद्धि—धर्मबुद्धि—आत्मकल्याणबुद्धि स्वाभाविक थाय छे अने धारेला अर्थ सिद्ध थाय छे. मनोरथ फळे छे. धर्म अने कर्म (व्यवहार)नुं पालन रुडी रीते थाय छे. परोपकारनां रुडां काम थइ शके छे. सुयश प्राप्त थइ शके छे. ए रीते न्याय—नीति अने प्रमाणिकताथी उपार्जन करेलां द्रव्यनो सदुपयोग करवाथी धर्म अर्थ अने काम (मननी अभिलाषा)नी सहेजे सिद्धि थाय छे. वळी लक्ष्मीनी अस्थिरता—चपळता समजी तेना उपरनो मोह

जंबुकुमारनी पेरे तजी उत्तम क्षेत्रमा तेनो सदुव्यय करी, संयम ग्रही सावधानपणे तेनु सेवन करे छे ते मोक्षलक्ष्मीने पण वरी शके छे. एम समजी अर्थ उपरनो मोह उतारी तेनो सदुव्यय करवो

तृतीय काम वर्ग

अत्र काम शब्दनो मनोरथ–चित्त अभिलाप जेवो पारमार्थिक अर्थ करवानो छे, तुच्छ विषय भोग एवो अर्थ करवानो नथी. एवो काम, धर्म अने अर्थथी वेगळो नथी. धर्मनी कामना–अभिलाषा करनार अथवा धर्मना काम करनार जीवो जगतमा भला (भव्य) लेखाय छे. एवी धर्म कामना अथवा धर्मना काम करवावडे जीवो सुखीया थाय छे. परमार्थ साधवामा एवी कामना खास जरूरनी छे.

चतुर्थ मोक्ष वर्ग

जो जन्म मरणना दुःखथी सर्वथा मुक्त थवा तीव्र इच्छा थइ होय तो प्रथमना त्रणे वर्ग करता चढीयातो (श्रेष्ठ) एवो मोक्षार्थ साधवा हे भव्यात्मा ! तु तत्पर था केमके तेनु सर्वोत्कृष्ट अक्षय अनंत सुखरूप छे अने पवित्र रत्न त्रयीनु यथाविधि आराधन करवाथी ते मळे छे ए रीते धर्म अर्थ काम अने मोक्ष संबंधी जे कइ लेशमात्र उपदेश अपायो ते सन्मार्गगामी जनोए लक्षपूर्वक धारी–अवगाही तेनु तत्त्वस्वरूप विचारवु अने तेमाथी यथायोग्य–आपआपणी योग्यता अनुसार आदर करता रहेवु. प्रसिद्ध धर्म अर्थ काम अने मोक्ष ए चार वर्गथी विभूषित करली आ सूक्तमाळा

साचा मोतीनी पेरे कंठे करी थकी भव्य जनो प्रत्ये अधिक शोभा-आनंद-सुखने विस्तारो. श्रीतपागच्छ नायक श्रीविजयप्रभसूरिनी पाटे श्रीविजयरत्नसूरि थया. तेमना राज्यमां श्रीशान्तिविमळ नामे पंडित थया. तेमना गुरु भाइ श्रीकनकविमळ नामना थया. तेमना बे शिष्यो थया. एक पंडित कल्याणविमळ अने बीजा केसरविमळ ते पंडित केसरविमळे विक्रम संवत १७५४ मां बाळ जीवोना मनोविनोदार्थे भाषानिबद्ध आ मनोहर सूक्तमाळानी रचना करी छे.

इति सूक्तमुक्तावळी समाप्त.

सिन्दूर प्रकर अपर नाम.

मंगळाचरणरूप पार्श्वप्रभुनी स्तुति.

सूक्तमुक्तावली सुगम भाषा अनुवाद.

१ तपरूप हस्तीना कुंभस्थळ उपर सिंदूरना समूह समान (शोभाकारी), क्रोधादीक कषायरूप अटवीने निर्दग्ध करवा दावानळ जेवा (देदीप्यमान) तत्त्वबोध रूप दिवसनो प्रारंभ करवा सूर्योदय समान (तेजस्वी), मुक्तिरूपी स्त्रीना उच्च-उन्नत स्तन उपर केशरना विलेपननी जेवां (अलंकारभूत) अने कल्याणरूप वृक्षनां कुंपळ समान (शोभारूप) श्री पार्श्वप्रभुनां चरणनी नखप्रभा तमारुं रक्षण करो.

प्रस्तुत ग्रंथनो प्रचार करवा सज्जनो प्रत्ये विज्ञप्ति.

२ वाणीनो विवेक करवामां चतुर (परिक्षावंत) सज्जनो

म्हारा उपर प्रसन्न थाव (जेथी आ ग्रथनो प्रचार विशेष प्रकारे थवा पामे), केमके जळकमळोने पेदा करे छे, परतु तेनी सुगधोने पवन विस्तारे छे. अथवा आवी दीनता करवा वडे शु? जो आ वाणीनो गुण तेमने समजाशे, तो तेओ स्वय तेनु मथन करशे अने जो वाणीमा तथा प्रकारनो गुण नहिं जणाय तो अपयशकारी एवा प्रचार वडे शु?

ग्रथकार त्रण वर्गमा धर्मनु प्रधानपणु जणावे छे.

३ " धर्म, अर्थ अने काम ए त्रण वर्गने पूर्वापर विरोध रहित साध्या वगर मनुष्यनु आयुष्य पशुनी जेवु निष्फळ समजवु ते त्रणे वर्गमा धर्मने श्रेष्ठ प्रधान कह्यो छे केमके ते धर्मने सेव्या वगर बीजा बे–अर्थ अने कामनी सिद्धि प्राप्ति थइ शकती नथी.

शास्त्रकार मनुष्य भवनी दुर्लभता बतावे छे.

४ दश दृष्टान्ते दुर्लभ मानव भव पामीने जे मुग्धजनो विवट राखीने धर्म–साधन करता नथी मद बुद्धिजनो भार कष्ट सहीने प्राप्त करेल चिन्तामणि रत्नने प्रमादथी दरियामा पाडी दे छे.

५ जे दुर्लभ मनुष्यभवने प्रमादवश थइ व्यर्थ गुमावी दे छे. ते सोनाना थाळमा धुळ भरे छे, अमृत वडे पग प्रक्षालन करे छे, श्रेष्ठ हाथी पासे इधन (लाकडा) वहवराव छे, अने कागडाने उडाडवा माटे चिन्तामणी रत्न फेंकी दे छे

६ जे पामर जनो असार भोगनी आशा वडे धर्मनो अनादर करी स्वच्छा मुजब फरे छे ने जड लोको घरना आंगणे उगेला

कल्पवृक्षने उखेडी नांखी धंतूरो वावे छे. चिन्तामणी रत्नने फेंकी दइ काचनो कडको स्विकारे छे, अने पर्वत जेवा महान् हस्तिराजने वेची दइ गर्दभने खरीदे छे.

७ आ अपार संसारमां महा मुशीवते मनुष्य जन्म पामीने जे कोइ विषयसुखनी तृष्णामां तणायो छतो धर्म साधन करतो नथी, ते मूर्खना शिरोमणी (मूर्खराज) समुद्रमां डुबतां छतां श्रेष्ठ वहाणने मुकी दइ पथ्थरने झालवाने प्रयत्न कर छे.

"प्रस्तुत ग्रंथमां कहेवा धारेलां द्वारोनां नाम."

८ हे भव्य आत्मन्! जो तुं मोक्षपद मेळववाने इच्छतोज होय तो श्री तीर्थंकर देवनी गुरुमहाराजनी, जिनप्रवचननी, अने श्री संघनी सद्भावथी सेवा-भक्ति कर. वळी हिंसा, असत्य, अदत्त, (चोरी), अब्रह्म (कुशील), अने ममता मूर्छादिकनो त्याग कर. क्रोधादिक अंतरंग शत्रुओनो जय कर, सज्जनतानो आदर कर. सद्गुणानी संगति कर. इन्द्रिओनुं दमन कर. तेमज दान, तप, भावना अने वैराग्य वृत्तिनुं सेवन कर. मोक्षपद दायक जाणी उक्त पदोनो यथाविधि आदर कर. हे भाग्यशालिन् एथी तुं मांगलिक मालाने पामीश.

'श्री तीर्थंकर महाराजनी भक्तिनो अलौकिक प्रभाव.'

अरिहंत भगवाननी यथायोग्य पूजा अर्चा करी छती पापने लोपे छे; दुर्गतिने दळी नांखे छे, आपदानो नाश करे छे, पुन्यनो जमाव करे छे, लक्ष्मीने वधारे छे, नीरोगतानी पुष्टि करे छे,

सौभाग्य (लोकप्रियता) निपजावे छे, प्रीतिने वधारे छे, यशने विस्तारे छे तेमज स्वर्ग अने मोक्ष पण मेळवी आपे छे एम समजी श्री जिनेश्वर देवनी भाव भक्ति करवी

१० जे पूर्ण श्रद्धा राखी श्री जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करे छे तेने स्वर्गनी प्राप्ति घरनां आगणा जेवी ढुकडी छे, विशाळ राज्य लक्ष्मी तेनी साथे रहेनारी छे, सौभाग्यादिक गुणो स्वत: तेनामा आवी विलास करे छे, ससारसागर तरवो तेने सुगम थाय छे अने मोक्ष जल्दी तेनी हथेळीमा आवी लुंठन करे छे. प्रभु पूजानो महिमा अगम अपार छे.

११ जिनपूजा करनारने रोग कोपीने नाशी गयो होय तेम क्दापि सामु जोतो नथी, दारिद्रभयभ्रान्त थयु होय तेम सदाय दूरने दूरज नासतु फरे छे, रीसायेली स्त्रीनी जेम दुर्गति तेनो सग तजी देय छे, अने सन्मित्रनी जेम प्रताप ऐश्वर्यादिक अभ्युदय तेनी साथेज सदा रहे छे

१२ जे उत्तम पुष्पो वडे प्रभुने पूजे छे, ते देवागनाना विकस्वर नेत्रो वडे पूजाय छे (देव पणे उत्पन्न थइ त्या देवागनाओ वडे सादर अवलोकाय छे.) जे एकवार (आगम रीते) प्रभुने वदे छे ते त्रण जगत् वडे सदाय वन्दाय छे. जे प्रभुने स्तुति स्तवनादिक वडे स्तवे छे ते परलोकमा इन्द्रोना समुदायवडे स्तवाय छे, अने जे प्रभुनु ध्यान धरे छे ते समस्त कर्मनो क्षय करीने योगीजनो वडे ध्यान करवा योग्य बने छे.

'सद्गुरुनी सेवा, भक्ति अने आज्ञानो अद्भूत महिमा.'

१३ जे दोपरहित निर्दोप मोक्ष मार्गमां पोते प्रवर्ते छे अने कशी स्पृहा वगर अन्यजनोने पण प्रवर्तावे छे तथा स्वयं भव-जे समुद्रने तरता सता अन्य भव्य जनोने तारवा समर्थ छे, तेवा सद्गुरुज स्वहित इच्छनाराओए सेववा योग्य छे.

१४ जे मिथ्यात्वने फेडी नांखे छे, आगम अर्थनो वोध करे छे, वळी सद्गति अने दुर्गतिना मार्ग रुप पुन्य अने पापनो फोड करी वनावे छे, तेमज कृत्याकृत्य संवंधी विवेक समजावे छे, तेवा सद्गुरु विना वीजा कोइ भवसमुद्रनो पार पमाडी शकता नथी.

१५ नरकना खाडामां पडता प्राणीने वचाववाने पुन्य–पापनुं स्वरुप स्पष्ट रीते समजावी वतावनारा गुरु विना वीजो कोइ–पिता, माता, वंधु, प्रिय स्त्री, पुत्र समुदाय, मित्र, स्वामी, मदोन्मत्त हाथी, घोडा, रथ अने पाळानो परिवार समर्थ थइ शकता नथी.

१६ हे भव्यात्मन्! श्री गुरु महाराजनी आज्ञा वगर ध्यान, समस्त विषयनो त्याग, तप, भावना, इन्द्रिय दमन, अने आप्त आगमोनो अभ्यास करवा वडे शुं? आज्ञा वगरनां ते वधांय नकामां समजवां; एम निर्धारी खूव प्रेम–प्रीतिथी संसारतारक गुरु महाराजनी आज्ञानुं पालन करवुं. केमके ते वगर वीजा सवळा गुणो नायक वगरना सैन्यनी जेम स्वइष्ट सिद्धि करवा समर्थ थइ शकता नथी. एम समजी विवेक आणी श्री गुरुमहाराजनी सेवा करवी.

१७ जिन वचन रुप नेत्र वगरना लोको सुदेव–कुदेवने, सुगुरु–कुगुरुने, सुधर्म–कुधर्मने, गुणवंत–गुणहीनने, सुकृत्यने तेमज

स्वहित अहितने सारी रीतें चतुराइथी जाणी जोइ शकता नथी.

'श्री प्रवचन सिद्धान्तनो अतुल प्रभाव.'

१८ वीतराग देवे भाखेलो दयामय सिद्धान्त जेमणे साभळ्यो नथी तेमनु मनुष्यपणु निष्फळ छे. हृदय शून्य छे, श्रवण (काननी) रचना नकामी छे, गुण दोष संबंधी विवेक तेमने असभवित छे. नरक रुप अध कुवामा पतन दुर्निवार छे अने भव भ्रमणथी छुटवु ते तेमने माटे दुर्घट–दुर्लभ छे. जिन वचननीज बलिहारी छे.

१९ जे मुग्ध जनो करुणानिधान श्री जैन शासनने अन्य दर्शन समान लेखे छे, तेओ अमृतने विष तुल्य, जळने अग्नि तुल्य, प्रकाशने अधकारना समूह तुल्य, मित्रने शत्रु तुल्य, पुष्पमाल्यने सर्प तुल्य, चिन्तामणि रत्नने पथ्थर तुल्य, चंद्रनो चान्दणीने उनाळाना ताप तुल्य लेखे छे. विवेकवान सुज्ञजनो तो एवी भूल करे नही.

२० पंडित पुरुषो जे जिन प्रवचनने पूजे छे, फेलावे छे, चिन्तवे छे, अने भणे छे ते धर्मने दीपावे छे, पापने दूर करे छे, उन्मार्गने निवारे छे, गुणी प्रत्येना द्वेषभावने भेदी नाखे छे, अन्यायनो उच्छेद करे छे, कुबुद्धिने टाळे छे, वैराग्यने विस्तारे छे, दयाने पोषे छे, अने लोभने निवारे छे एम समजी सुज्ञजनोए श्री वीतराग सर्वज्ञोक्त प्रवचननु सम्यग् आराधन करवु युक्त छे.

" श्री संघनी भक्ति अने तेनो प्रभाव "

२१ जेम रोहणाचळ पर्वत रत्नोनु स्थान छे, आकाश ताराओनु स्थान छे, स्वर्ग कल्पवृक्षोनुं स्थान छे, सरोवर कमळोनुं स्थान

छे, समुद्र जळनुं स्थान छे अने चंद्रमा तेजनुं स्थान छे, तेम साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघ गुणोनुं स्थान छे. एम समजी पूज्य संघनी पूजा–भक्ति करवी.

२२ जे श्री संघ भव भ्रमण निवारवानी बुद्धिथी मुक्ति मेळववा सावधान रहे छे, पवित्रपणा वडे जेने जंगम तीर्थ कहेवामां आवे छे, जेनी होड बीजो कोइ करी शकतो नथी, जेने तीर्थंकर महाराज पण प्रणाम करे छे, जेनाथी सज्जनोनुं श्रेय थाय छे, जेनो महिमा अपरंपार छे, अने जेनामां गांभीर्य, धैर्य, औदार्यादिक अनेक गुणो निवसे छे ते पूज्य संघनी हे भव्यात्माओ ! तमे भक्ति करो.

२३ जे धर्म–कल्याणनी रुचिवाळा सज्जनो अनेक गुणोना स्थानरूप श्री संघनी सद्भावथी सेवा–भक्ति करे छे तेमने लक्ष्मी शीघ्र आवी मळे छे; यशकीर्ति चोतरफ वाधे छे, प्रेम भजे छे, सुमति उत्सुकताथी आवी मळवा प्रयत्न करे छे, स्वर्गनी लक्ष्मी वारंवार भेटवा इच्छे छे अने शिवसुंदरी तेमना मुख सामुं जोयाज करे छे.

२४ जेम खेड करवानुं मुख्य फळ धान्य प्राप्ति छे, तेम जे पूज्य संघनी भक्तिनुं मुख्य फळ तीर्थंकरादिक पदवीनी प्राप्ति थवी ए छे, अने चक्रवर्तीपणुं तथा इन्द्रादिकपणुं प्राप्त थवुं तेनो घास–पलालनी पेरे साथे लागेलुं–गौणफळ कहेवाय छे. वळी जे संघनो महिमा गावा बृहस्पतिनी वचनकळा पण समर्थ नथी ते पापनाशक श्री संघ पोतानां पवित्र पगलां करवावडे सज्जनोनां घरने पवित्र करो!

' हिंसानो त्याग अने अहिंसानो आदर करो. '

२५ * भव्यात्माओ ? बीजा तप कायाने कष्ट करनारा अनुष्ठानो भले म करो पण पुन्यना क्रिडा स्थानरूप, पापरजने महरता वटोळीया समान, भवसागर तरवा नाव समान, कष्ट तापने शान्त करवा मघरदा समान, मुक्तिनी प्रिय व्हेनपणी समान अने दुर्गतिना द्वारने बंध करवा अर्गला समान एक अनुकंपा तो सर्व जीवो उपर तमे अवश्य करो. दया वगरनु बधु फोगट छे

२६ जो कदाच पथ्थर पाणीमा तरे, सूर्य पश्चिम दिशामां उगे, अग्नि शीतलपणु भजे, अने कोइ रीते पृथ्वीमंडळ आखा विश्वनी उपर थइ जाय तो पण प्राणी वधथी बयाय कदापि मुकृत न थाय

२७ जे मुग्धजन प्राणीवधथी धर्म इच्छे ते अग्नि थकी कमळनु वन, सूर्यास्त थकी दिवस, सर्पना मुख थकी अमृत कलह थकी कीर्ति, अजीर्ण थकी रोगनो नाश, अने कालकूट झेर थकी जीवितने राखनारनी जेवो देखाय छे एम चोक्कस समजवु.

२८ जेतु चित्त-आम कृपा रसवडे सारी रीते भींजेलु छे, तेने पण लांबु आयुष्य, अति प्रधान शरीर, जाति उत्तम कुळ (उच्च गोत्र) अनिवार्य धन, विशाळ बळ, सर्वोत्कृष्ट प्रभुत-ऐश्वर्य, अखंड आरोग्य, सर्वत्र घणी श्लाघा-प्रशंसा अने संसारसमुद्र तरवो सार सुलभ थइ जाय छे एम समजी दयार्द्र बनो

'असत्यने तजी प्रिय अने पथ्य तेमज तथ्य वचन वदो'

२९ भव्यो ! विश्वासनु स्थान, कष्टने कापनार, देवो वडे

सेवायेल मुक्तिनुं भातुं, जळ तथा अग्नि उपद्रवने शमावनार, सिंह अने सर्पोने थंभी देनार, कल्याणनुं (मोक्षनुं) वशीकरण, समृद्धिने उत्पन्न करनार, सुजनताने उपजावनार, कीर्तिनुं क्रीडावन अने महिमानुं घर एवुं पवित्र सत्य वचन ज तमे वदो.

३० बुद्धिशाळी पुरुषे गमे तेवा कष्ट प्रसंगे पण एवुं असत्य वचन न बोलवुं के जेथी दावानळथी वननी जेम यश—कीर्तिनो विनाश थाय, जळ जेम वृक्षोने उत्पन्न करे छे तेम जेथी अनेक दुःखो उत्पन्न थाय अने जेम तडकामां छाया होती नथी तेम जे वचनमां तप अने चारित्रनी वात पण न होय आवुं वचन त्याज्यज छे.

३१ अविश्वास करवानुं मूळ कारण, कुवासना—कहो के मलीन विचारनुं घर, लक्ष्मीविनाशक, कष्टोनुं कारण, परवंचन करवामां समर्थ अने अपराधकारी एवुं असत्य वचन पंडितोए वर्ज्युं छे.

३२ जे महाशय हित मित सत्य वचन वदे छे, तेने अग्नि जळरूप थाय छे. समुद्र स्थळरूप, शत्रु मित्ररूप, देव—दानवो किंकर—चाकररूप, अटवी—अरण्य नगररूप, पर्वत घररूप, सर्प फूलनी माळारूप, सिंह मृगरूप, पाताळ दररूप, तीक्ष्णशस्त्र कमळना पत्ररूप, मदोन्मत्त हाथी शीयाळरूप, विष अमृतरूप अने विषम—दुर्गम्य मार्ग सम—सुगम थइ रहे छे. अर्थात् सत्यवादीने संकटस्थान पण संपद्‌रूप थाय छे. वसुराजा, पर्वत अने नारदनुं तेमज दत्त अने कालिकाचार्यनुं दृष्टान्त विचारी सदाय सत्य ज वदवुं.

“ अदत्तने तजी न्याय—नीति प्रमाणिकताज आदरो.”

३३ जे भव्य आत्मा अणदीधुं कंइ पण परायुं लेतो नथी तेने

मेटवा मुक्ति वाछेछे, लक्ष्मी वरमाला नाखे छे, सद्गति तेनी चाहना करे छे, यश–कीर्ति वळगती आवे छे, समाग्नी पीडा दूर टळे छे अने दुर्गति तेना सामु पण जोती नथी–दूर जाय छे.

३४ जे पुन्याभिलाषी कइ पण पराइ चीज ग्रहण करतो नथी ते महानुभावमां कल्याण परपरा, कमलने विषे राजहंसीनी परे, निवास करे छे वळी जेम सूर्य थकी रात्रीनी पेरे तेनाथी विपदा दूर जाय छे, अने विनयवतने विद्यानी परे स्वर्ग अने अपवर्ग–मोक्ष सबधी लक्ष्मी तेने स्वाभाविक रीते भजे छे.

३५ जे अन्यद्रव्य ग्रहण करवाथी कीर्ति अने धननो नाश थाय छे, सर्व दोष–गुन्हा पेदा थाय छे, वध बंधनो प्रगटे छे, मलीन अध्यवसाय उत्पन्न थाय छे. वळी जे दारिद्रने अवश्य उपजावे छे, अने सद्गतिनी प्राप्तिने अटकावे छे. तथा मरणान्त कष्ट नीपजावे छे, तेवुं अदत्तधन बुद्धिशाळी होय ते न ज ग्रहण करे.

३६ अन्यजनोना मननी पीडाने पुष्टि आपनार, रौद्रध्याननु घर, जगतमा प्रसरी रहेली विविध आपदाओ रुपी वेलडीओने मेघमाळानी जेम वृद्धि पमाडनार, कुगति–नरग, तिर्यंचगतिमा दोरी जनार अने स्वर्ग–अपवर्ग (मोक्ष) नगर तरफ जता अटकाव करनार एवुं अन्य स्वहिताभिलाषी जनोए अवश्य तजवा योग्य छे. एम समजी सुज्ञजनोए न्याय–नीतिनोज आदर करवो.

' विषय लुब्धता तजी सुशीलता सेवो. '

३७ कामांध बनी जे स्त्रीनो अनादर करी, परस्त्रीमा लुब्ध बने छे, (अथवा जेणे त्रैलोक्य चिन्तामणि एवुं शीलरत्न समस्त-

–विचारतो नथी के समस्त द्रव्य–संपदाने अहींज अनामत मूकीने आत्मा तो (पोते करेली करणीने अनुसारे) परभवमां जाय छे तो पछी हुं फोगट शा माटे घणां पापनो संचय करुं छुं. आवो विचार कराय तो तेथी पण जीव पापथी पाछो ओसरी शके, अने कंइक संतोष वृत्तिने धारी परभव पण सुधारी शके.

"क्रोधनो त्याग करी क्षमागुणने सेवो."

४५ जे क्रोध, प्रकृति वगाडवा मदिरानो मित्र छे, भय वतावी सामाना काळजां फफडाववा–अत्यंत त्रास उपजाववा काळा नाग जेवो छे, शरीरने वाळवा अग्नि समान छे, अने ज्ञानादिक गुणनो नाश करवा अत्यंत विष वृक्ष समान छे, तेवा दुष्ट क्रोधने आत्म-कल्याणनी खरी इच्छावाळा सज्जनोए मूळमांथीज उखेडी नांखवो जोइए–तेनी उपेक्षा नज करवी.

४६ तप अने चारित्ररुप वृक्षने जो शान्त–वैराग्य–समतारुप जळ वडे सिंच्युं होय तो ते कल्याणनी परंपरारुप अनेक पुष्पोथी व्याप्त बनी मोक्ष फळ आपे छे, परंतु जो ए उत्तमवृक्षने–क्रोध–अग्निनी आंच लागे छे, तो ते फळोदय रहित बनी भस्मीभूत थइ जाय छे.

४७ जे क्रोध संतापने वधारे छे, विनयने लोपे छे, मित्रताने नष्ट करे छे, उद्वेग उपजावे छे, असत्य वचन बोलावे छे, कलेश–कलह करावे छे, यशनो उच्छेद करे छे, मति वगाडे छे, पुन्योदयनो नाश करे छे, अने नरकादि नीच गति आपे छे, ते दुष्ट रोष सज्ज-नोए तजवो योग्य छे.

४८ वळी जे अग्निनी जेम धर्म-वृक्षने बाळी नाखे छे, हाथीनी जेम नीति-लताने उखेडी नाखे छे, राहुनी जेम मनुष्योनी कीर्ति-कळाने कलंकित करे छे, वायरानी जेम स्वार्थरूपी वादळाने वेरी नाखे छे, अने ज्वरनी जेम तापरूपी आपदाने विस्तारे छे, एवो निर्दय कोप करवो योग्य होय ?

" अहंकार तजी विनय-नम्रता आदरो."

४९ विनयादि उचित आचरणना सेवन ...ड हे भव्यात्मन् ! तुं अति दुर्गम एवा मान पर्वत उपर चढवानु हवे मूकी दे केमके तेमांथी अति भार आपदारूपी नदीओनी श्रेणि नीकळे छे, वळी जेमां उत्तम जनोने मान्य एवा ज्ञान, औदार्य, मर्यादिक गुणोनु नाम पण नथी—लवलेश मात्र पण गुण नथी परन्तु हिंसा बुद्धिरूपी धुमाडाना गाढा वडे व्याप्त अने योग्य वृत्तिने अगम्य एवा क्रोध दावानळने जे धारण करे छे.

५० अहंकारथी अंध थएलो प्राणी मदोन्मत्त हाथीनी पेरे तप-नियमरूप बंधन स्तंभने भांगतो, निर्मळ बुद्धिरूप साकळने तोडतो, दुर्वचनरूप धुळना समूहने उडाडतो, आगम-वचनरूप अ-कुशने अवगणतो पृथ्वी उपर यथेच्छ फरतो, अने नम्रतावाळा न्याय मार्गने लोपतो कया कया अनर्थ नथी करतो ? अपितु अहं-कारी माणस सघळा अनर्थ पण करे छे

५१ जेम नीच माणस अन्यकृत उपगारोनी अवगणना करे छे तेम अभिमानी अहंकारी पुरुषो त्रणे वर्गनो लोप करे छे, तेम

लोभ तृष्णानो त्याग अने संतोषनो आदर करवो युक्त छे. ते संतोषनो प्रभाव शास्त्रकार पोतेज बतावे छे.

६० समस्त दोष रूप अग्निने उपशमाववा मेघवृष्टि समान संतोषने महानुभावो धारे छे, तेमनी आगळ कल्पवृक्ष ज्यों-प्रत्यक्ष थयो जाणवो. कामधेनु तेमना घरे आवी, चिन्तामणि रत्न हथेळीमां आव्युं, द्रव्य निधान नजदीक आव्यो, वळी आखुं जगत निश्चे वश थयुं अने स्वर्ग तथा मोक्षनी लक्ष्मी पण सुलभ थइ जाणवी. आवा हेतुथी संतोषज सेववो उचित छे.

" सुखदायी सज्जनता आदरो."

६१ कोपायमान थयेला काळा नागना मुखमां हाथ घालवो सारो, जाज्वल्यमान अग्नि कुंडमां झंपापात खावो सारो, अने भालानी अणी जल्दी पेटमां खोसी देवी सारी, परंतु सुज्ञ जनोए सकळ आपदाना स्थानरूप दुर्जनपणुं आदरवुं सारुं नहि.

६२. सज्जनताज जशनो जमाव करे छे, तेमज स्वश्रेय, लक्ष्मी अने मोक्ष पण मेळवी आपे छे. तेम छतां हे पामर जीव ! तुं जे दुर्जनता आदरे छे ते तो उलटुं लेवानुं देवुं करे छे. एटले जळ सिंचवा वडे मेळवी शकाय एवा धान्यना क्षेत्रमां अग्नि मूके छे. सज्जनता वडे मेळवी शकाय एवा यश लक्ष्मी अने मोक्षादिकनी प्राप्ति दुर्जनता आदरवा वडे कदापि प्राप्त थइ शकेज केम ?

६३ सज्जनतावंत जनोने कदाच निर्धनपणुं होय तो पण सारुं परंतु दुर्जनतावाळा निंद्य आचरणवडे विशाळ लक्ष्मी पेदा

करी होय ते मारी नपीज केमक परिणामे सुन्दर—मुखदायी एवुं स्वाभाविक दुर्बळपणु पण शोभे छे परतु परिणामे दु खदायी एवी सोजा प्रमुख विकारजनित शरीरनी स्थूलता शोभती नथी. सोजा प्रमुख विकारजनित स्थूलता जेवी निन्द आचरणवडे प्राप्त करेली अने स्तृल दृष्टिवडे देखवामा—मानवामा आवती विनाश लक्ष्मी परिणामे अति दुःखदायी नीवडे छे.

६४ सज्जनतानु लक्षण शुं ? एम पूछवामा आवे तेनुं समाधान क जे पारका दूपण खोले (कथे) नहि, अल्प मात्र पण अन्यना गुण उचरे—अनुमोदे, पारकी समृद्धि जोइ संतोष धरे (राजी थाय), अने परपीडाने देखी शोक करे (दीलगीर थाय), आप प्रशंसा न करे, न्याय—नीति न तजे, उचितताnु उल्लंघन न करे, वळी कटुक— कठोर वचन कोइए कथा छता तेना उपर रीस न करे—क्षमा राखे एवुं उदार चरित्र सज्जनोनु होय छे उक्त लक्षण जेमनामां लाभे तेमने सज्जन समजवा सज्जनतावडेज जीव धर्मने योग्य बने छे, ज्यासुधी सज्जनताज आवी नथी त्यासुधी धर्मरत्नी लेख लागवी मुश्केल छे एम समजी सर्व सुखना मूळरूप शुद्ध धर्मनी योग्यता प्राप्त करवा माटे पण सज्जनता प्राप्त करवी उचित छे.

' जेवा तेवानो सग तजी गुणीजनोना सग करो. '

६५ गुणीजनोनो संग तजी, जे मतिहीन कल्याणनी इच्छा करे ते दयाहीनने जेम धर्मनी इच्छा, नीति रहितने यशनी इच्छा, प्रमादीने धननी इच्छा, प्रज्ञा—बुद्धि रहितने काव्य करवानी इच्छा, स-

मता अने दया रहितने तपनो लाभ लेवानी इच्छा, बुद्धि रहितने शास्त्रपठननी इच्छा, चक्षु रहितने वस्तु देखवानी इच्छा अने अस्थिर चित्तवाळाने ध्याननी इच्छा थाय तेना जेवी (सत्संग रहितने कल्याणनी इच्छा) व्यर्थ समजवी.

६६ उत्तम गुणीजनोनो समागम मनुष्योने शुं शुं इच्छित लाभ नथी पेदा करी आपतो? सत्संग कुमतिने हरे छे, मोहने भेदे छे, विवेकने जगाडे छे, संतोष आपे छे, नीतिने पेदा करे छे, गुणोने विस्तारे छे, (विनीतता–नम्रता लावे छे), यश कीर्त्तिनो फेलावो करे छे, धर्मने धारे छे अने दुर्गतिने फेडे छे. आ बधो प्रभाव सत्संगनो जाणवो.

६७ हे शाणा चित्त! जो तुं बहु बुद्धि मेळववा, आपदाने दुर करवा, न्यायमार्गमां प्रवर्त्तवा, जश पामवा, पापफळने रोकवा अने स्वर्ग तथा मोक्षनी संपदा अनुभववा इच्छतुं होय तो गुणीजनोनो संग आदर.

६८ जे निर्गुणी–गुणहीननो संग महत्वनो लोप करे छे, उदयनो अस्त करे छे, दयारूप उद्यानने फेंदी नाखे छे, कल्याणने भेदी नाखे छे; दुर्बुद्धिने वधारे छे अने अन्यायने उत्तेजन आपे छे, तेनो आश्रय कल्याणना अर्थीजनोने करवो योग्य केम होय? नज होय. नीच–नादाननी संगतिथी अनेक प्रकारे हानिज थाय छे. एम समजी नीच संसर्ग तजी सत्संगतिज सेववा लक्ष राखवुं.

"इन्द्रियोने मोकळी नहि मूकतां काबूमां राखता रहो."

६९ जे इन्द्रियो आत्माने उन्मार्गे लइ जवा उद्धत घोडाओ

जेवी छे. कृत्याकृत्य सबन्धी विवेकरुप जीवितने हरवा काळा नाग जेवी छे, अने पुन्यरुप वृक्षने खडोखड करवा तीक्ष्ण कुहाडा जेवी छे ते व्रतनी मर्यादा तोडी नाखनारी इन्द्रियोने जीती तु कल्याणभागी था.

७० जे इन्द्रियों प्रतिष्ठानो लोप करे छे, नीतिनु धोरण नगाडी नांखे छे, अकृत्य करवा बुद्धिने मेर छे, स्वेच्छा मुजब वर्तवामा राग वधारे छे, विवेकनी उन्नतिनो विनाश करे छे, अने आपदा उपजावे छे, ए रीते अनेक दोषना स्थानरुप ते इन्द्रियोने तु वश कर.

७१ न्हाय तो मौन भजो, गृहवास तजो, सर्व आचार चातुर्य सेवो, गच्छवासमा रहो अथवा वन मध्ये वसो, सिद्धान्त पठन करो, अथवा तप तपो, परतु ज्यां सुधी कल्याणरुप वनवृक्षोने भागवा महावायु समान इन्द्रियोना समूहने जीतवा लक्ष आव्यु नथी त्यां सुधी पूर्वोक्त मौन व्रतादिक सयलु राखवा होमवा जेवु जाणवु.

७२ धर्मनो ध्वंस करवामा मुख्य, सत्य ज्ञानने आच्छादन करनार, आपदाने विस्तारवा समर्थ, दुःख उत्पन्न करवानी कळामां पारगामी, वळी निश्चे सर्व अन्नभक्षक, आत्माने अहितकारी, अन्याय मार्गे अत्यत गमन करनार, यथेच्छ वर्तनार अने अवळे मार्गे चालनार एवी इन्द्रिय समूहने जीत्या वगर जीवनु कल्याण थवानु नथी.

'लक्ष्मीनो चपळ स्वभाव समजी तेनो सद्व्यय करो.'

७३ लक्ष्मी, नदीनी परे नीची वाटे वहछे, निद्रानी पेठे ज्ञान-

चैतन्यने मूर्छित करे छे, मदिरानी पेरे मद–अहंकारने वधारे छे, धूमाडाना गोटानी पेरे अंध करी मूके छे, वीजळीनी पेरे चपळताने भजे छे, अग्नि जवाळानी पेरे तृष्णा वधारे छे, अने कुलटा नारीनी पेरे स्वेच्छा मुजब फर्या करे छे.

७४ गोत्रीया जेनी स्पृहा करे छे, चोर लोको चोरी करे छे, राजाओ छळ जोइ खुंचवी ले छे, अग्नि क्षणमात्रमां बाळी नांखे छे. पाणी डुबावी दे छे, धरतीमां दाट्युं यक्षो हठथी हरी ले छे, अने दुराचारी दीकरा वणफी नांखे छे तेवा परतंत्र धनने धिक्कार पडो.

७५ द्रव्यना अर्थी एवा पंडितजनो पण शुं शुं कष्ट सहन करता नथी ? तेओ नीचनी पण खुशामत करे छे, तथा तेमने नीचा वळीने नमन करे छे. निर्गुणी शत्रुना पण मुक्तकंठे गुण वर्णवे छे, अने कदर वगरना स्वामीनी पण सेवा करवामां खेद लावता नथी.

७६ जाणे समुद्रना जळना संसर्गथीज होय तेम लक्ष्मी नीचा प्रत्ये जाय छे, कमलिनीना संसर्गथीज पगमां कांटो वाग्यो होय तेम कोइ स्थळे पग मूकती नथी (टकती नथी), अने विष साथे वसवाथीज होय तेम मनुष्योना ज्ञान चैतन्यनो एकाएक नाश करे छे, एम समजी गुणी जनोए लक्ष्मीने धर्मस्थानमां जोडीने (पुन्य मार्गे खर्ची) तेनुं फळ लेवुं.

'पात्र–सुपात्र दाननो प्रभाव.'

७७ सुपात्रमां दीधेलुं उत्तम न्यायोपार्जित द्रव्य संयमनी वृद्धि करे छे, विनय गुणने खीलवे छे, ज्ञानने अजवाळे छे, समता रसने

पोषे छे, तपने प्रबळ करे छे, शास्त्र पठनने जोर आपे छे, पुन्यने उत्पन्न करे छे, स्वर्गना सुख आपे छे अने अनुक्रमे मोक्ष लक्ष्मी पण मेळवी आपे छे.

७८ उपद्रवने दूर करनार अने संपदाने आपनार सुपात्रदान जे महानुभाव आपे छे तेने दारिद्रय आवतुज नथी. दुर्भाग्य तेनाथी दूरज रहे छे, अपयश थवा पामतोज नथी अने पराभव करवा कोई ईच्छतु नथी व्याधिनुं जोर फावतु नथी, दीनता आवती नथी, भय पीडतो नथी अने कष्टो नडता नथी.

७९ जे पुन्यो पोतानु द्रव्य कल्याणार्थे आपे छे, तेने लक्ष्मी मळवा इच्छे छे. मति, कीर्ति अने प्रीति तेने शोधती आवे छे, सौभाग्य अने नीरोगता तेने भेटे छे, कल्याण परंपरा सन्मुख आवे छे, स्वर्गनी सुख साहेबी सहजे मळे छे अने मुक्ति तेनी राह जोया करे छे.

८० जे पुरुष पोतानु पुन्यळ धन प्रसिद्ध एवा सात क्षेत्रमा वापरे छे तेने सुखसंपत्ति मात्र सुलभ थाय छे, यश स्वाधीन थाय छे, लक्ष्मी मळवा उत्कंठित रहे छे, मति निर्मळ थाय छे, चक्रवर्ती पणानी समृद्धि निकट आवी रहे छे, स्वर्गसंपदा हस्तगत थाय छे अने मोक्षसंपदा मेळववाने ते भाग्यशाळी थाय छे.

'सुखशीलता तजी कल्याणकारी तपनु सेवन करो.'

८१ जे (तप) पूर्वकृत कर्म-पर्वतने चूरवा वज्ररूप छे, विषय अभिलाषरूप दावानळनी ज्वाळाने शमाववा जळ वर्षणरूप छे, भयंकर इन्द्रियोरूपी सर्पोने दमवा जांगुली मंत्र समान छे, विघ्नरूप

अंधकारना समूहने फेडवा सूर्योदय समान छे, तेमज अनेक प्रकारनी लब्धि—शक्तिरुप संपदाने पेदा करे छे ते बाह्य अने अभ्यंतर एम बंने प्रकारनां तप कोइ पण जातनी वांछा—आशा तृष्णा राख्या वगर शास्त्रोक्त रीते करवां जोइए.

८२ जे तपना प्रभावथी विघ्न मात्र विसराळ थइ जाय छे, देवताओ सेवा करे छे, विषय—अग्नि शान्त थाय छे, इन्द्रियो दमाय छे, कल्याण अचूक थाय छे, तीर्थंकरादिक संबंधी महा ऋद्धिओ सांपडे छे, कर्मोनो क्षय थाय छे, अने स्वर्ग अपवर्गनां सुख स्वाधीन थइ शके छे ते तप प्रशंसवा योग्य केम न होय? अपितु होय ज.

८३ जेम दावानळ वगर वनने बाळवाने कोइ समर्थ नथी. वर्षाद वगर दावानळने ठारवा कोइ समर्थ नथी अने पवन वगर वर्षादने खाळवा कोई समर्थ नथी तेम तपस्या वगर, कर्मसमूहने हणवा कोइ समर्थ नथी.

८४ संतोषरुप पुष्ट मूळवाळो, क्षमारुप परिवारवाळो, आचारांगादि श्रुतस्कंधनी रचनारुप विस्तारवाळो, पंचइन्द्रिय निग्रहरुप शाखावाळो, देदीप्यमान अभयदानरुप दळवाळो (अथवा विनयरुप प्रगट पत्रवाळो), ब्रह्म व्रतरुप नवपल्लव (कुंपळीयां) वाळो, श्रद्धा जळ समूहना सिंचनथी विशाळ कुळ, बळ, ऐश्वर्य अने सौन्दर्यरुप भोग विस्तारवाळो, तथा बार देवलोक नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमाननी प्राप्तिरुप (सुगंधि) पुष्पवाळो उक्त तपरुप कल्पवृक्ष मोक्ष सुखरुप फळने आपवावाळो थाय छे.

' शुभ भाव-रसायणनु सदा सेवन करो, '

८५ नीरोगी पुरुष उपर जेम स्त्रीना कटाक्ष बाण नकामा छे, कृपण स्वामी पासे करेलु सेवा कष्ट जेम नकामु छे, पथ्थरमा कमळ उगाडवानो श्रम जेम नकामो छे, उखरभूमिमा थयेलो वर्षाद जेम नकामो छे, तेम शुभ भावना वगर दान, प्रभु पूजा, तप, स्वाध्याय-शास्त्र पठनादिक अनुष्ठान पण सघळा नकामा अफळ छे.

८६ जो कोइ मनुष्य सर्व वस्तुने जाणवा इच्छतो होय, पुन्य प्राप्त करवा चाहतो होय, तथा दया धारण करवा, पापने मेन्वा (दुरो करवा), क्रोधने खडवा, दान, शीळ अने तपने सफळ करवा, पुन्यनी वृद्धि करवा, भवसायरनो पार पामवा, अने सिद्धि रमणीने आलिंगवा इच्छतोज होय तो तेणे शुभ भाव (शुभ वीर्योल्लास) आदरवोज जोइए.

८७ विवेकरूपी वनने विकसित करवा (अमृतनी) नीक तुल्य, उपशम मुलने माटे सजीवनी तुल्य, भवसमुद्र तरवा महा नौकातुल्य, काम अग्निने शमाववा मेघमाळा तुल्य, चपळ इन्द्रियोने रोकवा पाश बंधन तुल्य, भारे कषायरुप पर्वतने भेदवा वज्रतुल्य, अने मोक्षमार्गनो भार वहेवा खच्चरी जेवी समर्थ भावनाने तमे सेवो. बीजु बधुं करवाथी सर्युं, बीजुं बधुं करतु भावना वडेज लेखे छे भावना वगरनुं बधुंय फोगट जेवुं छे.

८८ पुष्कळ दान दीधुं होय, समस्त जिन आगमोनो अभ्यास कर्यो होय, बहु आकरी क्रिया-करणी करी होय, अनेकवार भूमि-

शयन कर्युं होय, बहु आकरां तप तप्यां होय, अने घणा लांबो वखत चारित्र पाळ्युं होय परंतु जो चित्तमां रुडो भाव (शुभ भावना) पेदा थयेल नथी तो ए सघळुं फोतरां वाववानी जेवुं फोगटज छे. शुभ भावनायुक्त पूर्वोक्त सघळुं लेखे थाय छे.

'विषय लोलुपता तजी वैराग्य वृत्ति भजो.'

८९ पापरुप रजने शमाववा जळ समान, मदोन्मत्त इन्द्रियरुप हाथीने दमवा अंकुश समान, कल्याणरुप पुष्पना बगीचा समान, छकेला मनरुप वांदराने बांधवा सांकळ समान, चारित्ररुप रमणीने रमवा क्रिडागृहसमान, कामरुप तापने टाळवा औषध समान, अने मोक्षमार्गमां रथ समान एवा वैराग्यने विचारी तेनुं सेवन करी तुं निर्भय था.

९० जेम प्रचंड पवन बांधेली मेघ घटाने वीखेरी नाखे छे, अग्नि जेम वृक्षोने बाळी नांखे छे, सूर्य जेम अंधकारना समुहने फेडी नांखे छे अने वज्र जेम पर्वतना समूहने भेदी नांखे छे तेम एकलो वैराग्यज सघळां कर्मोनो संहार करी शके छे. वैराग्यनी तीक्ष्ण धारावडे जल्दी कर्म क्षय थाय छे.

९१ कठोर पापने कापवा कुशळ एवो वैराग्य जो हृदयमां प्रगटे तो देववंदन, उत्तम गुरुनी चरण सेवा, अतिआकरी तपस्या; गुणवंतनी उपासना, जंगलमां निवास, अने इन्द्रियोने दमवानी विद्या मोक्षदायी थाय छे. उत्तम वैराग्य वगरनी ए बधी करणी लुखी (मीठाश वगरनी) लागे छे.

०२ विषय भोगने काळा नागना शरीर जेवा विषम समजी, राज्यने रज (धूळ) जेवु असार समजी, स्वजनोने कर्म बन्धना कारण रूप समजी, विविध विषयने विष मिश्रित अन्न समान समजी, ऋद्धिने राख समान समजी अने स्त्रीओने तृण समान तुच्छ समजी त चरायमा आसक्तता तजी, शुद्ध हृदयवाळो वैरागी पुरुष सिद्धि पदने पामे छे.

' अन्यात्माओने सामान्य हितोपदेश, '

०३ जिनेश्वर देवनी पूजा, गुरुमहाराजनी सेवा, सहु जीवो उपर अनुकंपा–दया शुभपात्रमा दान, गुण–गुणी उपर अनुराग (गुणग्रहण बुद्धि) अने शास्त्रश्रवण ए छ मनुष्य भवरूप वृक्षना शुभ फळ छे

०४ त्रिकाळ प्रभु पूजा–भक्ति करो, निर्मळ यश–कीर्ति वधारो, सठेकाणे धन वावो, मनने नीतिना मार्गे दोरो, काम क्रोधादिक शत्रुओने सहारो, सहु प्राणी उपर दया करो, अने जिनागमने साभळो, अने एम करी शीघ्र मोक्षलक्ष्मीने वरो !

०५ वीतराग देवनी पूजा करी, निर्ग्रंथ–मुनिजनोने नमस्कार करी, सिद्धान्त सांभळो अधर्मी जनोनी सगति तजी, पात्रमा द्रव्य आपी, उत्तम (शिष्टजनो) ना मार्गे चाली, अंतरंग शत्रुओने जीती, अने नमस्कार मत्रने संभारी (नमस्कार महामत्रनु ध्यान करी) हे भव्यो ! इच्छित सुखने स्वाधीन करो

०६ जे रीते चद्रसमान उज्वळ यश दशे दिशामा प्रसरे, उद-

कारी गुणश्रेणि विस्तार पामे, अने कुकर्मनो क्षय करवा समर्थ धर्म वृद्धि पामे ए रीते चतुर पुरुषोने सुलभ एवा न्यायमार्गमां सुज्ञ जनोए प्रवर्तन करवुं. भाग्यशाळी जनो धारे तो एवुं प्रवर्तन सुखे करी शके.

९७ हाथे प्रशंसवा योग्यदान, मस्तके गुरुचरणने प्रणाम, मुखे सत्य (प्रिय पथ्यने तथ्य) वाणी, काने शास्त्र श्रवण, हृदये स्वच्छ-निर्मळ वृत्ति, भुजामां विजयवंतु शौर्य, अहो ! आटलां वानां ऐश्वर्य वगर पण स्वभाववडे उत्तम पुरुषोने अलंकार-आभूषणरूप छे; केमके सुपात्र दानवडे हाथ जेवा शोभे छे तेवां कंकणादिक वडे शोभता नथी; मस्तक गुरुचरणे लगाडवाथी जेवुं शोभे छे तेवुं मुगटादिकथी शोभतुं नथी इत्यादिक आशय स्पष्ट छे.

९८ जो आ भव अटवी वटावी, मोक्ष नगरे जवा इच्छाज होय तो विषयरूप विष वृक्षोनो आश्रय करवो नहि, केमके एमनी छाया पण शीघ्र महा मूर्छा उपजावे एवी छे, जेथी आ जीव एक पगलुं पण आगळ चालवा समर्थ थइ शकतो नथी; तो पछी ते विषय विष वृक्षोनां पत्र, पुष्प, फळ अने रसनुं तो कहेवुं ज शुं ते यथांय महा हानिज करे छे.

' उपसंहार. '

९९ चंद्रप्रभा अने सूर्य प्रभा मनुष्योना जे अंधकाररूप कादवने दूर करी शकती नथी ते (अज्ञान-पाप) आ अल्प उपदेश सदाय श्रवण करतां सदंतर दूर करी दे छे. अत्यंत आदरपूर्वक श्र-

वण, मनन अने–निदिध्यासन करवानु बहु उत्तम परिणाम आवे छे. मूल काव्यमा ग्रथकारे 'सोम प्रभाचार्य' एवु स्वनाम पण गर्भित-पणे जणावेलु छे

ग्रंथ प्रशस्ति.

१०० अजितदेव आचार्यना पट्टरूप उदयाचळ उपर प्रगटेला सूर्य समान विजयसिंह आचार्यना चरण कमळमा भ्रमरनी पेरे रमता सोमप्रभा आचार्ये आ सूक्त मुक्तावळी रची (भव्यात्माओ तेने कंठाग्रे करी निज हृदयने शोभावो पावन करो. इतिशम.

श्रावक धर्मोचित आचारोपदेश भाषान्तर.

(प्रथमो वर्ग.)

मगलाचरण

१–२ केवळ ज्ञान अने आनंद स्वरुप, रुप रहित, जगत्त्राता, अने परम ज्योतिवंत श्री परमात्माने नमस्कार! योगी पुरुषो मननी शुद्धिने धारण करता ध्यान चक्षुवडे जेनु स्वरुप जोरे छे, ते प्रभुने हु स्तवु छु.

ग्रथ ग्रथन हेतु

३–४ सहु कोइ जीव सुखने इच्छे छे, शुद्ध–निर्दोष सुख मोक्षमा रह्यु छे. मोक्ष सुख ध्यानथी मळे छे, ध्यान मननी शुद्धिथी

थाय छे, अने मननी शुद्धि कषायने जीतवाथी थाय छे. कषायनो जय इन्द्रियोने दमवाथी थाय छे. अने इन्द्रियोनुं दमन सदाचारथी थाय छे, अने एवो गुणकारी सदाचार रुडा उपदेश थकी प्राणीयोने प्राप्त थइ शके छे.

रुडा उपदेशथी सुबुद्धि थाय छे. अने सुबुद्धिथी सद्गुणोनो उदय थाय छे. एवा शुभाशयथी आ आचारोपदेश नामना ग्रंथनो हूं प्रारंभ करुं छुं.

ग्रंथ श्रवण फळ–धर्म प्राप्ति.

६–९ सदाचार संबंधी विचारवडे मनोहर अने चतुरने उचित एवो आ देवताने पण आनंदकारी ग्रंथ शुभाशयवाळा सज्जनोए श्रवण करवो युक्त छे. अनंतकाळे पण पामवो दुर्लभ एवो आ मनुष्य जन्म पामीने विवेकवंत जनोए धर्मने विषे परम आदर करवो जोइए. धर्म श्रवण कर्यो छतो, देख्यो छतो, कराव्यो छतो अने अनुमोद्यो छतो पण प्राणीओने सातमा कुळ पर्यंत पवित्र करे छे.

धर्म, अर्थ अने कामरुप त्रण वर्गने सम्यक् प्रकारे सेव्या वगर मनुष्यनुं आयुष् पशुनी जेवुं नकामुं समजवुं. ते त्रण वर्गमां पण धर्म उत्तम छे. केमके ते धर्म सेवन कर्या वगर बीजा बे अर्थ अने काम सधातां नथी.

सत्सामग्री अने तेनी सफळता करवा शास्त्र प्रेरणा.

१०–१३ मनुष्यपणुं, आर्यदेश, उत्तम जाति–कुळ, अखंड इन्द्रिय कुशळता, शरीर आरोग्य, अने दीर्घ आयुष कथंचित् कर्मनी

ल्पुनाथी मळे छे ए सघळु पुन्य योगे प्राप्त थये छते श्रद्धा आववी दुर्लभ छे, तेथी पण दुर्लभ सद्गुरुनो सयोग म्होटा भाग्ययोगे मळे छे आ सघळी सामग्री स्वाधीन ज होय पण ते जेम न्यायवडे राजा, मुगट वडे फुल अने घी वडे भोजन शोभे छे, तेम सदाचार वडे शोभा पाम छे-सफळ थइ शके छे सदाचार सेववामा तत्पर मनुष्ये शास्त्रोक्त विधि वडे धर्म, अर्थ अने काम रूप त्रण वर्गने परस्पर विरोध रहित (अविरुद्ध पणे) सदाय साधवा जोइए

श्रावक योग्य शास्त्रोक्त अविरुद्ध आचार विचार

नमस्कार मत्रनी स्तुति

१८-२१ रात्रिना चोथा पहोरमा ब्राह्म मुहूर्त वखते वाळजी राखवी, सुज्ञ पुरुष पच परमेष्ठि मत्रनी स्तुति करतो उठी निद्रानो त्याग करे, सज्जाय शय्यामाथी उठया (जाग्या) बाद डाबी के जमणी जे नाडी वहती होय तेज डाबो के जमणो पग भूमि उपर (धीमेथी) राखवो. शयन सबधी वस्त्रो मुकी बीजा (स्वच्छ) वस्त्रो धारण करी म्हटा स्थानक रहीने बुद्धिवाने धीरजथी पचपरमेष्ठी नमस्कार मत्रनु ध्यान करवु. पवित्र थइ पूर्व दिशा के उत्तर दिशा सन्मुख पवित्र स्थाने रही स्थिर मनथी नमस्कारमंत्रनो जाप करवो स्नान कर्यु होय के न कर्यु होय, सुखी होय के दुःखी होय ते नमस्कार मंत्रनु एकाग्रमने ध्यान करतो छतो सर्व पापथी मुक्त थाय छे अर्थात् धर्मना अर्थी जनोए सर्व दश कालमा श्री पच परमेष्ठी नमस्कार मत्रनु चितवन करवु जोइए आगलीने अगे जे जाप क

राय, मेरुनुं ऊल्लंघन करीने जे जाप कराय अने उपयोग रहित संख्याहीन जे जाप कराय, ते प्रायः अल्प फळ आपनार थाय छे. उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य एम त्रण प्रकारे जाप थाय छे. तेमां जे हृदयकमळमां विधिवत् नवपदजीनो जाप कराय ते उत्कृष्ट अने जपमाळावडे कराय ते मध्यम जाप समजवो. मौन राख्या वगर, संख्यानुं लक्ष राख्या वगर अने चित्तनी एकाग्रता वगर तेमज पद्मासनादिक आसन लगाव्या वगर अने ध्येय-परमात्मादिकमां वृत्तिने जोडया वगरनो जाप जघन्य छे.

आवश्यक-करणी.

२२ त्यारपछी (प्रभात सारी रीते थये छते) उपाश्रये के पोतानी पोषधशाळामां पापनी विशुद्धि करवा माटे बुद्धिवंते आवश्यक करणी करवी.

२३ रात्री संबंधी, दिवस संबंधी, पाखी, चउमासी अने आखा वर्ष संबंधी पाप दोषने दूर करवा अने आत्माने निर्मळ करवा जिनोए पांच प्रकारनां आवश्यक कह्यां छे, ते प्रत्येकमां सामायक प्रमुख छ आवश्यकनो समावेश थाय छे. करेलां पापने फरी नहि करवानी बुद्धिथी पश्चात्ताप सहित श्री सद्गुरु समीपे आलोचाय-निंदाय ते प्रतिक्रमण आवश्यक आत्माने उपकारक थइ शके छे. जाणतां के अजाणतां लागेलां पापनी शुद्धि सरलपणे शीघ्र करवी जोइए.

२४ आवश्यक करणी करीने पूर्व कुळ मर्यादा संभारी अत्यंत

आनंदित चित्तथी मगल स्तुति करेजी (आवश्यक करणी पहला अने पछी ए रीति छे.)

मगल स्तुति अष्टक

२५ महावीर भगवान्, गौतम गणधर, स्थूलभद्रादि मुनिवरो अने जिनेश्वरोए कहेलो धर्म ए सघळा मुझने मगळरूप थाओ!

२६ ऋषभादिक जिनेश्वरो, भरतादिक चक्रवर्तीओ, बळदेवो, वासुदेवो अने प्रतिवासुदेवो ए सघळा म्हारु श्रेय-कल्याण करो!

२७ नाभि अने सिद्धार्थभूप प्रमुख सघळा जिनेश्वरोना पिताओ, जेमणे अखंड साम्राज्य भोगवेल छे, तेओ मुझने जय आपो

२८ जगत्रयने आनद करनारी मरुदेवी अने त्रिशला प्रमुख जिनेश्वरोनी प्रसिद्ध माताओ मुझने मगळ करो.

२९ श्री पुंडरीक अने इन्द्रभूति प्रमुख सघळा गणधरो अने बीजा श्रुत केवळीओ (चौद पूर्वधरो) पण मुझने मंगलमाळा आपो

३० अखड शीलनी शोभाथी भरली ब्राह्मी अने चदनबाळा प्रमुख महा सती-साध्वीओ मुझने मगळ आपो.

३१ समकितीना विघ्न हरनारी चक्रेश्वरी अने सिद्धायिका प्रमुख ऋषभादि तीर्थंकरोना शासननी अधिष्ठात्री देवीओ मुझने जयलक्ष्मी आपो.

३२ जैनोना विघ्नोने हरनारा कपर्दी अने मातग प्रमुख प्रसिद्ध पराक्रमवाळा अधिष्ठायक यक्षो मुझने सदा मंगल आपो.

३३ मुक्तनवडे भावित चित्तवृत्तिवाळो, अने सौभाग्य भाग्यवडे भरेलो एवो जे शुभ मतिवंत पुरुष आ मंगळाष्टकने प्रभात समये भणे छे, ते सर्व विघ्नोने हणीने जगतमां मनमान्या मंगळने मेळवे छे.

३४ त्यारपछी निस्सिही कहीने जिन मंदिरे जावुं अने सघळी आशातना तजीने जिनेश्वर भगवानने त्रणवार प्रदक्षिणा देवी.

३५ भोगविलास, हास्यचेष्टा, नासिकादिकनो मळ काढवो, निद्रा, कलेश अने दुष्ट एवी विकथा करवी तथा चार प्रकारनो अशनादिक आहार करवो एटलां वर्थाय त्रानां आशातनारूप समजी जिन भुवनमां अवश्य तजवां. आ उपरांत बीजी पण नानी म्होटी अनेक आशातनाओ देववंदन भाष्यादिकमां जणावेली मुजोए तजवी.

३६ हे जगन्नाथ ! आपने नमस्कार (नमो जिणाणं) इत्यादि स्तुति पढने कहेतां, फळ अक्षत, प्रमुख प्रभुनी आगळ ढोकवुं—मूकवुं.

३७ खाली हाथे राजा, देव अने गुरु तथा विशेषे निमित्तियानी पासे दर्शनार्थे जवुं नहि. कंइक पण सरस फळ प्रमुख राखीने ज जावुं केमके फळ वडे ज फळनी प्राप्ति करी शकाय.

३८ प्रभुनी जमणी अने डावी बाजुए अनुक्रमे रही पुरुष अने स्त्रीओए उत्कृष्ट ६० हाथनो अने जघन्य ९ हाथनो अवग्रह (अंतर राखवुं) शक्य होय तो राखीने श्री जिनेश्वर प्रभुने वंदन करवुं. घरदेरासरमां पण बनी शके एटलो अवग्रह जरुर साचववो. (गुरु महाराजनो पण योग्य अवग्रह साचववा खास फरमान छे.)

३९ पछी उत्तरासग करी, कडी, योगमुद्राए स्थित थइ मधुरी वाणीवडे भाविक आत्मा प्रभु समीप पोतानी दृष्टि स्थापीने चैत्यवन्दन* करे.

४० पेट उपर हाथनी बे कोणीओ राखी, कमळना कोशनी जेवी बे हाथनी आकृति करी, अन्योन्य (माहे माह) आंगळीओ आंतरवाथी योगमुद्रा थाय छे

४१ त्यार पछी स्वस्थानके जइ प्रभात सबंधी क्रियाकर, अने भोजन आच्छादन प्रमुख घरचिंता करे.

४२ स्वबंधुओने अने नोकर चाकरोने स्वस्वकार्य करवा जणावीने पछी पोते बुद्धिना आठगुणोवडे युक्त छतो श्री गुरु पासे उपाश्रये आवे

४३ शास्त्र श्रवण करवानी इच्छा २ शास्त्र श्रवण, ३ ग्रहण, ४ धारणा, ५ उह, ६ अपोह, ७ अर्थविज्ञान अने ८ तत्त्वज्ञान ए बुद्धिना आठ गुणो छे.

४४ शास्त्र श्रवण करे ते धर्मना मर्मने जाणे, दुर्मतिने तजे, ज्ञानने पामे (अज्ञानने वामे) अने विषय कषायादि प्रमाद तजीने वैराग्य पामे

४५ पचांग प्रणामवडे गुरुमहाराजने तथा बीजा साधुजनोने वांदी–प्रणमी गुरुमहाराजनी आशातनाने तजतां छतां विधि मर्यादा साचवी गुरु सन्मुख बेसतु

* विशेष [illegible] स.म्यथी जाणवा योग्य छे

४६ मस्तक, बेहाथ, अने बे ढींचणवडे भूमितळने विधि स-हित ठीक पूजी प्रमार्जीने स्पर्शवाथी पंचांग प्रणाम कर्यो कहेवाय छे.

४७ पलांठी न वाळवी, पग न प्रसारवा, पग उपर पग न चढाववो अने काख न वतावची.

४८ गुरुमहाराजनी पुंठे के तदन नजदीक के बंने पडखे बे-सवुं के उभा रहेवुं के चालवुं नहि. तेमज पोताथी पहेलां आवेलाना साथे वातचीत करवी नहि. टुंकाणमां गुरुनो अविनय थाय तेवुं कशुं करवुं नहि.

४९ उत्सर्ग, अपवाद, निश्चय व्यवहारादिक शास्त्रना भाव अने भेद (अपेक्षित वचनो)ने समजी शके एवा विचक्षण पुरुषे गुरुना मुख सामे दृष्टि एकाग्र चित्तथी धर्मशास्त्रो श्रवण करवां.

५० व्याख्यान वखत थये छते रुडी बुद्धिवाळाए स्वसंदेहो टाळवा अने देवगुरुना गुणगान करनार भोजक विगेरेने यथा-शक्ति दान देवुं.

५१ जेणे प्रतिक्रमण कर्युं न होय ते (पण) व्रत–नियम करवा रुचिवंत छतो गुरुमहाराजने वंदन करे (वांदणां आपे) अने यथा-शक्ति व्रत नियम आदरवा संबंधी गुरुमहाराज समक्ष प्रतिज्ञा करी पछी तेनुं पालन करे.

५२ उदार दीलथी दान आपनार–दाता छतां पण व्रत नि-यम वगरना मनुष्यो तिर्यंचनी योनिओमां उत्पन्न थाय छे अने

हाथी घोडादिकना भवमा बंधनादिक सहित भोग भोगवता रहे छे.

५३ दाता-दानेश्वरी नरक गतिमा जतो नथी, व्रत नियम पाळनार-विरतिवत तिर्यंचपणु पामतो नथी. दयाळु अल्प आयुषी थतो नथी अने मलसक्ता-मदाय मात्तु हितमित्र बोलनार-दुःस्वर थतो नथी, पण सुस्वर थाय छे.

तप-प्रभाव.

५४ तप, सर्व इन्द्रियोरूपी हरणयाने वश करवा मजबूत जाळ तुल्य छे. कषायरूप तापने शांत करवा द्राक्ष तुल्य छे अने कर्मरूप अजीर्णने टाळवा हरीतकी-हरडेतुल्य छे आत्मानु श्रेय करनार तप छे.

५५ जे कइ दूर अने माडी न शकाय अने देवताने पण दुर्लभ होय ते सघळु तपवडे साधी शकाय छे. तपनो प्रभाव अचिंत्य छे सख्त तापवडे जेम सुवर्णनी शुद्धि थाय छे, तेम बाह्य अभ्यंतर बने प्रकारना तीव्र तपवडे कर्ममळनो क्षय थता आत्मा शुद्ध-निर्मळ थाय छे. एम समजीने ज तीर्थंकर जेवा ज्ञानी पुरुषो पण उक्त उभय तपनु आसेवन करे छे. मोक्षार्थी मुमुक्षु जनोए तो शीघ्र मोक्षपदनी प्राप्ति माटे उक्त तपनु सेवन अवश्य करवु घटे छे एवी श्रद्धा राखी यथाशक्ति तप, जप, व्रत, नियम सदाय आदरवा.

५६ उपर मुजब धर्मविधि आदरीने पछी सद्बुद्धि पुरुष चौटामा जाय अने द्रव्य उपार्जन थाय, एवो यथोचित व्यवसाय करे. शास्त्र श्रवण करनार सुबुद्धिवंत न्यायोपार्जित द्रव्यने ज पसंद पण परिणामे दुःखदायी एवा अन्याय द्रव्यनी इच्छा न ज करे.

५७ सज्जन-मित्रोना उपकार माटे अने स्वजन बंधुओना उदय माटे उत्तम पुरुषो अर्थ उपार्जन करे छे. अन्यथा स्वउदर पोषण तो कोण करतुं नथी? जे परोपकारना मार्गे खर्चाय तेज खरुंछे.

५८ व्यापार योगे चलावातो आजीविका उत्तम, खेड करी आजीविका चलावाय ते मध्यम, पारकी सेवा चाकरीवडे आजीविका चलाववी ते जघन्य अने भिक्षा (भिख) मांगी आजीविका करवी ते अधमाधम जाणवी.

५९ आवा हेतुथी कदापि नीच व्यापार करवो नहि, तेमज कराववो नहि. केमके पुन्यथी प्राप्त थनारी लक्ष्मी पापथी कोइ दिवस वधती नथी. पण उलटुं पाप करनारने पाछळथी बहु कष्ट सहन करवुं पडे छे.

६० पापभीरु अने विचक्षण होय ते बहु आरंभ-समारंभवाळां, भारे पापवाळां, लोकोपवादवाळां अने उभय लोक विरुद्ध होय एवां काम (अंगार कर्मादिक १५) आचरे नहि.

६१ गमे तेटला पुष्कळ द्रव्यनी प्राप्ति थती होय, तोपण लोहार, चमार, मोची, कलार अने घांची तथा वाघरी विगेरे साथे व्यवसाय करवो नहि. नीच द्रव्यथी जयवारो न ज थाय.

६२ एवी रीते प्रथम पहोर संबंधी समग्र विधिने सेवतो विशुद्ध हृदयवाळो, न्याय-नीतिथी शोभतो, अने विज्ञान (Discriminative Power) मानप्रतिष्ठा (Self-respect, Prestige) तथा जनप्रियता (Popularity) मेळववा सदा सावधान एवो श्रावक पोतानां उभय जन्मने सफळ करे. ॥ इति प्रथमोवर्गः

अथ द्वितियोवर्ग श्री श्रावकधर्मोचित-
आचारोपदेश

"दिवसना बीजा पहोरे करवा योग्य श्रावकनी करणी."

१ हवे बीजे पहोरे सुबुद्धिवंत स्वस्थाने जाय अने जीवजंतु वगरनी भूमि उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसीने स्नान आचरे-शरीर शुद्धि करे

२ स्नान करवा माटे जळ नीकळवाना नाळवाळो एक मजानो बाजोट करावे के जेथी एमांथी नीकळता जळमां जीव विराधना थवा न पामे

३ रजस्वला स्त्री सरखी मलीन स्पर्श थये छते, सूतक लाग्ये छते अने स्वजननुं मृतकार्य कर्य छते सर्वांग स्नान आचरे-नाखे अंगे न्हाय

४ अन्यथा सुज्ञ जन देवपूजा निमित्ते कंइक उष्ण (न्हवाय तेवा) अने थोडा जळवडे उत्तमांग-मस्तकनो भाग वर्जीने नीचेना शरीरे स्नान करे.

५ चंद्र अने सूर्यना कीरणोना स्पर्शथी जगत् सर्व पवित्र थाय छे तो तेना आधारे रहेलुं मस्तक सदाय पवित्र छे एम योगी जनो माने छे-कहे छे.

६ धर्म निमित्ते जे सघळा सदाचार सेववाना आवे छे ते दया प्रधान होय छे माटे मस्तक धोवाथी तो तद्गत जीवोनो उपद्रव थाय छे.

७ नित्य निर्मळ ज्योतिने धारण करता एवा आत्मानी स्थिति होवाथी कायम वस्त्रवडे वेष्टित एवुं पण मस्तक पवित्र ज छे.

८ जे बाह्य दृष्टिवाळा लोको स्नान करतां अति घणा जळने ढोळवाथी जंतुओनो नाश करे छे ते शरीरने शुद्ध करता जीवने मलीन करे छे.

९ न्हातां पहेरेलुं पांनोयुं मूकी, बीजुं वस्त्र पहेरी, ज्यां सुधी पग भीना होय त्यां सुधी जिनेश्वरनुं स्मरण करता त्यांज उभा रहेवुं.

१० नहितो वळी पगने मळ संम्पर्क थवाथी मलीनता थाय अथवा तेनी साथे लागेला जीवनो घात थवावडे म्होटुं पातक लागे.

११ पछी ग्रह चैत्य (घर देरासर) पासे जइ, भूमि शुद्धि कर्या बाद पूजा सेवा करवा निमिते वस्त्रो पहेरीने मुखकोश आठवडो बांधे.

१२ देवपूजाना प्रसंगे मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि, पूजोपगरण अने विधि शुद्धता संबंधी सात प्रकारनी शुद्धि साचववी जोइए.

१३ पूजाविधि साचवतां पुरुषे कदापि पण स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नहि तेमज स्त्रीए पुरुषनुं वस्त्र पण पहेरवुं नहि. केमके ते काम रागने वधारनार छे. (एम दरेक बाबतमां पण समजी लेवुं.)

१४ विशाळ अने सुंदर चोख्खा कळसामां आणेला जळवडे जिनेश्वरना अंगने अभिषेक करो, उत्तम वस्त्रवडे तेने लुंछी पछी अष्ट प्रकारे प्रभुनी पूजा करवी.

" अष्ट प्रकारी पूजा प्रसंगे बोलवानु पूजा अष्टक. "

१५ घनसार मेळवेला अने (केशर) कस्तूरीना रसयुक्त मनोहर उंचा चंदनवडे, देवेन्द्रोए पूजाएला अने रागादि दोष रहित त्रिभुवनपति जिनेश्वर देवने हु अर्चु छु-पूजु छु-१ चंदन पूजा.

१६ जाइ, जुइ, वकुल, चंपक अने पाटलादि पुष्पो वडे तेमज कल्पवृक्ष, कुंद अने शतपत्र कमळादि अन्य अनेकपुष्पो वडे, ससार क्लेशोनो नाश करनारा अने करुणा प्रधान एवा जिनेश्वर देवने यजुं-पूजु छु. २ पुष्प पूजा.

१७ कृष्णागरु, शर्करा अने पुष्कळ कर्पूर सहित सारी रीते कान्जीथी बनावेलो धुप श्री जिनेश्वर देवनी पासे पोताना पापनो नाश करवा माटे खूब आनदथी हु भक्तिवडे उखेवु छु ३ धुप पूजा.

१८ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनु चिन्तवन करी उजवळ अने अक्षत-तदुलवडे भक्तिथी प्रभु पासे त्रण ढग करीने तेमज बीजा साधन वडे पण श्री जिनेश्वर देवने हु अर्चु-पूजु छु-४ अक्षत पूजा.

१९ उत्तम नाळीएर, पनस, दाडमना, बीजोरा, जबीर, सोपारी, अने आम्र (आंबा) दिव्य फळो वडे असाधारण शान्तिवाळा अने स्वर्गादिक भारे फळने आपनारा श्री देवाधिदेवने हु अत्यंत हर्षथी पूजु छु-५ फळ पूजा.

२० उत्तम मोदक, वडा, मांडा (मालपूडा) अने भात दाळ प्रमुख अनेक रसवाळा अन्नभोजन वडे, क्षुधा तृषानी व्यथाथी मुक्त थयेला तीर्थपतिने स्वहित करवा माटे हु सन्याय आन्तर भावथी यजुं-पूजुं छु -६ नैवेद्य पूजा.

२१ जेणे पाप पडल भेदी नांख्या छे अने आखा ब्रह्मांडने अवलोकन करवानी ज्ञानकळा (केवळ ज्ञान) युक्त, सदोदित अने समताना सागर एवा जिनेश्वर पासे म्हारा अज्ञान अंधकारने टाळवा हुं भक्ति वडे दिपक प्रगटुं छुं. ७ दीपक पूजा.

२२ गंगादिक शाश्वती नदी, नद, सरोवर अने सागरना निर्मळ तीर्थ जळ वडे, निर्मळ स्वभाववाळा अने दुर्धर काम मद अने मोहरुपी अजगरने दमवा गरुड जेवा श्री जिनेश्वर देवने संसारनो ताप समाववा माटे हुं यजुं छुं. ८ जळ पूजा.

२३ आ असाधारण पूजाष्टक स्तुतिनो पाठ भणी जे शुभाशय सज्जन आ मनोहर विधि प्रमाणे श्री जीनेश्वर देवनी पूजा करे छे ते धन्य–कृतपुन्य महाशय देव अने मनुष्य संबंधी अखंडित सुखोने अनुभवी, नजदीकना वखतमां अक्षय अने अव्याबाध एवां मोक्षनां सुख पण मेळवे छे.

'गृहचैत्य (घरदेरासर) अथवा भक्ति चैत्यनुं स्थान अने तेमां पूजा विधि.'

२४ स्वभुवन (महेल) मां जतां डावे हाथे (डावी बाजुए) पवित्र अने शल्य वगरनी दोढ हाथ उंची भूमि उपर सुज्ञ नर देवालय करे.

२५ पूर्व दिशा के उत्तर दिशा सन्मुख रही पूजा करनारे विदिशाओ साथे अग्निकोण अवश्य वर्जवी ते तरफ पूजा करनारे न उभा रहेवुं.

२६ पूर्व दिशा सन्मुख पूजा करतां लक्ष्मीनो लाभ थाय,

अग्निकोण सन्मुख रहता संताप थाय, दक्षिण दिशा सन्मुख रहता मृत्यु थाय अने नैरुत्यकोण सन्मुख पूजा करता उपद्रव थाय.

२७ पश्चिम दिशामा पुत्र दुःख वायव्यकोणमा प्रजा हानि, उत्तर दिशामा महा लाभ अने इशानकोणमा धर्मवासना थाय.

२८ विवेकी जनोए जिनेश्वर देवनी पूजा प्रथम बने चरण, जानु (ढींचण) हस्त–भुजा, खभा अने मस्तक उपर अनुक्रमे करवी.

२९ पछी ललाट, कंठ, हृदय अने जठर उपर तिलक अनुक्रमे करवा. केशर सहित उत्तम चंदन वगर प्रभु पूजा थइ न शके.

३० प्रभातमा शुद्ध सुगंधी चूर्ण (वासक्षेप) वडे, मध्यान्ह वखते पुष्पोवडे, अने संध्या वखते धूप दीपकवडे सुज्ञोए प्रभु पूजा करवी

३१ फूलना बे टुकडा न करवा तेमज काची कळी पण छेदवी–तोडवी नहि पत्रने के पुष्पने छेदवा भेदवाथी हत्या जेवु पातक लागे

३२ हाथथकी पडी गयेलु, पगे के भोंयपर लागेलु तेमज मस्तक उपर रहेलु फूल कदापि प्रभु पूजामा लेवा योग्य न गणाय.

३३ नीच जनोए नहि स्पर्शेलु, कीडाए नहि खायेलु, (करडेलु) खराब वस्त्र–पात्रवडे नहि भरेलु, सारा सुगंध वगरनु तेमज उग्र गंधवाळु जे जे पुष्प होय, ते ते प्रभु पूजामा उपयोगी न समजवु

३४ प्रभुनी डावी बाजुए धूप उखेववो अने बीजोरु के जळ कुंभ तो सन्मुख होय. नागरवेली पान अने फळ प्रभुना हाथमा राखवा

३५ (एकवीश प्रकारनी पूजा) स्नात्र–अभिषेक, चंदन, दीप, धूप, फल नैवेद्य, जळ, ध्वजा–पताका, वासक्षेप, अक्षत–

चोखा, सोपारी नागरवेली पन, रोकडनाणुं, फळ, वाजित्र, ध्वनी, गीत, नृत्य, स्तुति उत्तम छत्र, चामर अने आभूषणोवडे अरिहंत देवनी पूजा एकवीश प्रकारे थइ शके छे.

३६ सुपर्व दिवसे तथा तीर्थयोग समये भव्य जनो उपरोक्त एकवीश प्रकारनी पूजा रचे अने पूर्वोक्त रुडी रीते अष्टप्रकारी पूजा तो सदाय करे. भाव सहित जे जे रुडुं बने ते बनाववुं, स्वहित कार्यमां प्रमादवश शिथिलता करवी नहि.

३७ पछी सविशेषधर्मनो लाभ मेळववानी इच्छाए (भव्यात्मा) स्वच्छ वस्त्रवडे शोभित छतो अशुचि मार्गने तजतो गाम चैत्ये-नगर चैत्ये जाय.

३८ हुं जिन मंदिरे जइश ए रीते हृदयमां ध्यातां चतुर्थ (उपवास)नुं फळ पामे. जवा उठ्ये एटले छट्ट (बे उपवास) अने जिन मंदिरे जवा निमित्ते मार्गे चालतां अट्टम (त्रण उपवास) नुं फळ पामे.

३९ जिन मंदिर देख्ये चार उपवास अने द्वारे आवतां पांच उपवासनुं फळ पामे. मध्ये आवतां १५ उपवास अने प्रभु पूजन करतां एक मास उपवासनुं फळ पामे (दृढ निश्चयथी प्रभु सन्मुख, जइ विधि सहित प्रभु दर्शन, वंदन. पूजन अने स्तुति स्तवनादिवडे प्रभु साथे तन्मयता करनार महाशय महा म्होटो लाभ सहेजे मेळवी शके छे.

४० त्रण निस्सिही कही सुज्ञ जन चैत्यनी अंदर पेसे, अने चैत्य संबंधी संभाळ करी पछी हर्ष पूर्वक श्री जिनेश्वरनी पूजा करे.

८१ मूळनायक प्रभुनी अष्ट प्रकारी पूजा करी अंदर अने व-हार रहली वीजी वधी प्रतिमाजीओने मार्जन करी पुष्पोना समू-होवडे पूजे—पुष्पोना पगर भर.

८२ अवग्रहथी वहार जइने अरिहंत प्रभुने आदर सहित वंदन करे अने विधियुक्त प्रभु सन्मुख रहीने (उल्लसित भावथी) चैत्य-वंदन करे.

चैत्यवंदन विधि

८३ एक शक्रस्तव (नमोत्थुणं) वडे, जघन्य बे वडे मध्यम अने पांच शक्रस्तव वडे उत्कृष्ट उत्तम चैत्यवंदन जाणवुं, ए रीते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण प्रकारनुं चैत्यवंदन थाय छे. अथवा एक नमस्कार वडे जघन्य, त्र आदि वडे मध्यम अने १०८ नमस्कार वडे उत्कृष्ट चैत्यवंदन थाय छे स्तुति श्लोकादिक रूप नमस्कार समजवो

८४ शक्रस्तवादिक स्तुति करता योगमुद्रा, वंदन करतां जिनमुद्रा अने 'जय वीयराय,' 'जावंति चेइयाइं' अने 'जावंत केविसाहू' ए त्रण प्रणिधान करतां वखते मुक्ताशुक्तिमुद्रा करवी जोइए.

८५ पेट उपर हाथनी कोणीओ स्थापी, कमळना डोडानी जेम हाथ करी, अन्योन्य आगळीओ आतरवाथी ए योगमुद्रा थाय छे.

८६ चार आगळ आगळ अने केंइक न्यून पाछळ ए रीते बे पग वच्चे अंतर राखी रहवुं (उभा रहवुं) तेने जिनमुद्रा कही छे.

८७ बन्ने हस्त सरखा अने पोला राखी लगाडने कपाळा स-

थाय ते मुक्ताशुक्तिमुद्रा पूर्वोक्त त्रण प्रणिधान कहेतां करवाना छे.

भोजन विधि.

४८ पछी जिनेश्वर प्रभुने नमी, आवस्सही, कहेतो घरे जाय अने भक्ष्याभक्ष्यमां विचक्षण छतो स्वजन–बंधुओ संगाथे भोजन करे.

४९ पग धोया वगर, क्रोधांध छतो दुर्वचनो बोलतो दक्षिण दिशा सन्मुख बेशी भोजन करे तो ते **राक्षसभोजन** जाणवुं.

५० शरीर शुद्धि साचवी, शुभ स्थळे निश्चळ आसने बेसी देवगुरुनुं स्मरण करी जमे तो ते **मानवभोजन** लेखाय.

५१ स्नान करी, देव पूजा सारी रीते करी अने पूज्य गुरुजनोने हर्षयुक्त नमी–वंदन करी, सुपात्रोने दान दइ पछी जमे ते **उत्तमभोजन** कहेवाय.

५२ भोजन, विषयभोग, स्नान, वमन तथा दातण करतां, दिशा जंगल जातां (वडी नीति करतां) अने श्वासादि निरोध प्रसंगे सुज्ञजन मौन धारण करे.

५३ भोजन करतां अग्नि अने नैरुत्य कोण तथा दक्षिण दिशा वर्जवी, तेमज संध्या समय (सांज, सवार, अने मध्यान्ह) चंद्र सूर्य संबंधी ग्रहण समय अने स्वजनादिकनुं शब (मडदुं) पड्युं होय त्यांसुधी भोजन वर्जवुं.

५४ छते पैसे जे भोजनादिकमां कृपणता करे छे, तेने हुं मंदमति (मतिहीन) मानुं छुं. ते अहीं कोइ बीजाना नशीब माटे धन पेदा करे छे.

भक्ष्याभक्ष्य विचार.

५५ अजाण्या पात्रमा अने ज्ञाति भ्रष्ट होय तेने त्या भोजन करवु नहि. तेमज अजाण्या अने निषेधेला अन्य फळ खावा नहि.

५६ बाळ, स्त्री, गर्भ अने गौहत्या करनारा, आचार लोपनारा अने स्वगोत्रमा क्लेश करावनारनी पंक्तिमा जाणी जोइने सुज्ञजने बेसवु नहि.

५७–५८ मदिरा, मास माखण, मध, वड आम्लिना टेटा (फळ) अनतकाय (कदमूळ विगेरे) अजाण्या फळ तथा रात्री समय भोजन, काचा गोरस (दूध दहीं के छाश) साथे कठोळ जमवानु, वासी चोखा विगेरे धान्य, बे दिवस उपरांत राखेलु दहीं, अने जेना वर्ण गध रस स्पर्श बदलाइ गयो होय, एवा बगडेला अन्न वर्जवा.

५९ जिन धर्म पाळवामा तत्पर होय, ते श्रावक–श्राविकाओ जीवातवाळा फळ फुल पत्र के बीजु जे काइ होय ते तथा बोळ आथणु पण खाय नहि जीभना रसमा गृद्ध बनीने क्षण मात्र देखाता नजीवा सुखनी खातर आत्माने मलीन करे नहि

६० आहार अने निहार करता वखते वात उगाडवी नहि तेमज जळपान तथा स्नान बहु उतावळा करवा नहि–स्थिरतायी करवा.

६१ भोजन पहेला जळपान करवु ते विष जेवु, भोजन कर्या पछी तुरत जळपान करवु ते पथ्थर जेवु अने भोजन करता वच्चमा जळपान करवु, ते अमृत समान परिणाम आप छे

६२ अजीर्ण जणातुं होय तो भोजन न करवुं, अजीर्ण मट्या बाद प्रकृतिने माफक आवे एवुं (सादुं–हलकुं) भोजन करवुं अने भोजन करी रह्या पछी पान सोपारीवडे मुखशुद्धि करवी. तेनो (पान सोपारीनो) त्याग होय तेणे बीजी निर्दोष रीते मुख-शुद्धि करवी.

६३ विवेकवंत होय ते मार्गमां हालतां चालतां तांबूल न खाय तेमज पुन्य मार्गनो जाण होय ते सोपारी प्रमुख आखुं फळ दांतवडे दळी नांखे नहि, पण जोइ तपासीने ज खाय.

६४ भोजन कर्या बाद ग्रीष्मऋतु न होय तो विचारवान् (बुद्धिशाळी–परिणामदर्शी) दिवसे उंघे नहि केमके दिवसे उंघनारना शरीरमां व्याधि थवानो संभव रहे छे.

इति द्वितीय वर्ग.

" अथ आचारोपदेश तृतीयो वर्ग ":

१ पछी गृह शोभाने जोतो छतो, विद्वानोनी गोष्ठी करवा तत्पर रही पुत्रादिक परिवारने हित शिखामण देता सुखे बे घडी सुधी (वखत) स्थिरता करे–विश्रान्ति लेय.

२ अनेक सद्गुणो संप्राप्त थये छते अने धनादिक संपदाने स्वाधीन लेख्ये छते, समस्त तत्त्व (हिताहित)ने सारी रीते समजनार विवेकी नरो सद्गुणथी च्यवता–पडी जता नथी.

३ वंश (जाति–कुळ) हीन मनुष्य पण सद्गुणो वडे उत्तमता–श्रेष्ठता–पूज्यताने पामे छे. जुओ पंक–कादवमांथी पेदा थ-

येलुपंकज–कमळ माथा उपर चढावाय छे,अने कादव पगे कचराय छे

४ उत्तम स्त्री पुरुषोनी खाण कइ होती नथी, तेमज एनु कुळ पण जगतमा भाग्येज होय छे. स्वभाविक रीते मनुष्योज स्वगुणो वडे जगतमा सर्व ठेकाणे प्रशंसापात्र थयेला छे.

५ जेम सत्वादिक गुणो वडे संपूर्ण होय एवो मनुष्य राज्य पालन करवा योग्य कहेवाय छे, तेम आगळ कहेवाता एकवीश गुणो वडे युक्त मानव सर्वज्ञोक्त (सत्य पवित्र) धर्मने लायक गणाय छे.

" पवित्र धर्म प्राप्तिनी योग्यता माटे प्रथम आदरवा लायक २ गुणोनु वर्णन.

६–८

(१) क्षुद्रता वगरनु–अक्षुद्र–गंभीर हृदय, जेथी पराया छिद्र नहि जोता गुण ज ग्रहण करवानु बने.

(२) शीतळ प्रकृति–आचार, विचार अने वाणीनी मीठाश, जेथी सहुने शान्ति–समाधि उपजे

(३) भव्य आकृति–इन्द्रिय पटुता, शरीर आरोग्य अने सुंदर बंधारण, जेथी धर्म सवडथी थायुं काम थइ शके.

(४) लोक प्रियता–स्वार्थ तजी लोकोपकारी कार्य करवानी ऊंडी लागणीथी सहु संगाते मेळवेली मीठाश–व्हालप.

(५) मननी अकठोरता–मृदुता–कोमळता, जेथी कोइ पण पाप कार्य तीव्र परिणामे करी नशके, मन कुणु राखे.

(६) पापनो या परभवनो डर अथवा गुरुजनोनी या वडीलोनी ब्हीक, जेथी कोइ पण अकार्य करतां पाछो हठे.

(७) निष्कपट-निःखालस वृत्ति, जेथी करवुं कंइ अने कहेवुं कांइ एवी कपट क्रियाथी वेगळुं रहेवाय.

(८) सुदाक्षिण्य-पोतानी इच्छा नहि छतां, जेथी सामानुं संपादन थइ शके एवी भली निर्दोष दाक्षिण्यता.

(९) लज्जालुता-अदब अथवा मर्यादा, जेथी अकार्य तजी सत्कार्यमां सहेजे जोडाइ शके.

(१०) दयालुता-दयार्द्रता, जेथी गमे तेनुं दुःख देखी पोतानुं दील द्रवे अने तेना उपर अनुकंपा करे.

(११) मध्यस्थता-निष्पक्षपात बुद्धि, जे वडे गमे तेना गुण दोषने स्वबुद्धि तुला वडे तोळी-मापी शके.

(१२) सौम्यद्रष्टि-सहु उपर समभाव, अमी भरी नजर, जेथी सहुने प्रिय लागे, कोइने अप्रीति न उपजे, कचित् आ उपर जणावेला बे गुणने एक साथे गणी आगळ विशेषज्ञता गुण उमेरवामां आवेलां.

१३ गुणानुराग-सद्गुण के सद्गुणी उपर निःस्वार्थ प्रेम, जेथी एवा उत्तम गुण आपणामां संक्रान्त थाय.

(१४) सत्कथारुचि-विकथा या नकामी कुथली नहि करता सत्पुरुषोनां हितवचनो के चरित्रो वखाणवानी प्रीति.

(१५) सुपक्ष-धर्मिष्ठ कुटुंब ज़ाडुं वळीयुं होवाथी धर्ममार्गमां कोइ पराभव करी शके नहिं-करतां डरे.

(१६) दीर्घदृष्टि–शक्याशक्य, हिताहित अने लाभ हानिनो विचार करी शक्य कार्यनो आरभ करे, सहसा न करे.

(१७) वृद्धसेवा–आचार–विचारमा कुशळ एवा शिष्ट–पुरुषोने अनुसरी चालवानो निरभिमान वृत्ति.

(१८) विनय–गुणाधिकनु उचित गौरव–सन्मान साचववु, जेथी विद्या, विवेकादिक गुणोनी सहेजे प्राप्ति थाय.

(१९) कृतज्ञता–अन्य उपकारी जनोए आपणा उपर करेला उपकारनु विस्मरण नहि करता तेनु सदोदित स्मरण राखी तेनो बद्लो वाळवा तक मळे तो ते जवा नहिं देवानी चीवट

(२०) परोपकार शीलता–नि:स्वार्थपणे स्वकर्तव्य समजीने अन्य जीवोने उद्धारवानी उत्कट इच्छा अने तत्परता

(२१) लब्धलक्ष–कोइपण कार्यने सुखे साधी शके एवी कार्यदक्षता, चपलता अने सावधानता.

उक्त एकवीस गुणोनो द्रढ अभ्यास करवा वडे आपणी हृदयभूमि शुद्ध निर्दोष बनी सत्धर्म योग्य थवा पामे छे

९ वळी करीने राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भोजनकथा, जेथी अंशमात्र फायदो न होय अने उलटो अनर्थ थवा संभव होय ते बुद्धिशाळी तजे. नकामी कुथलीओ करी काळक्षेप कदापि न करे.

१० सुमित्र साधुओ सगाते माहोमाहे धर्मकथा करे अने शास्त्र–अर्थना जाण एवा विद्वानो सगाते शास्त्रार्थ–सबधी रहस्यो–खरी गूढीओ विचारे, एवी रीते पोतानी वखत सार्थक करे

११ जेनी सोबतथी पाप बुद्धि थाय (बुद्धि मलीन थाय) तेवानी संगति वर्जे अने तन, मन, वचनथी कोइ रीते पण न्याय-नीति प्रमाणिकतानुं धोरण कदापि न तजे.

१२ ते सज्जन कोइना पण अवर्णवाद न बोले मात, पिता, गुरु, स्वामी अने राजादिकना तो नज बोले.

१३ मूर्ख, दुष्ट—हीणाचारी, मलीन, धर्मनिंदक, दुःशील, लोभी अने चोरो साथे सोवत सर्वथा वर्जे.

१४ मूर्खना चिन्हो—अजाण्यानी प्रशंसा करवी, तेने रहेवा माटे तथा प्रकारनुं स्थान आपवुं, अजाण्या कुळनो संबंध करवो, अने अजाण्यो नोकर राखवो, म्होटा वडिल उपर कोप करवो व्हाला साथे विरोध करवो, गुणी जनो साथे विवाद करवो अने पोताथी उंचा दरज्जाना नोकर राखवा, पारकुं देवुं करीने धर्मकृत्य करवां (छतुं लेणुं न मागवुं), छते पैसे कृपणता करवी, स्वजनो साथे विरोध करवो अने परायां साथे मित्रता राखवी. मोक्ष (छुटी जवा) माटे ऊंचा चढी भेरवजप करवो, नोकरने दंडी भोग विलास करवो, दुःखी हालतमां कर्म उपर आशा राखी बेसी रहेवुं अथवा बंधुनो आश्रय मागवो, अने पोते पोताना गुणनुं वर्णन करवुं, बोलीने पोतेज हसवुं, जेनुं तेनुं जे ते खावुं, आ उपर वर्णवेलां विरुद्ध काम करवां ए सघळां मूर्खनां चिन्हो समजी सुज्ञ-जनोए अवश्य तजवां—परिहरवां.

१९ न्याय उपार्जित द्रव्यनो खप करे, देश विरुद्ध अने काळ

विरुद्ध चर्चा–गमनागमनने तजे, राजाना दुश्मनो साथे संगति न करे अने (गमे तेवा नबळा पण) घणा लोको साथे विरोध न करे.

२०–२४ सरखा कुळ अने आचारवाळा अन्यगोत्रीया साथे विवाह करे अने भला पडोशमा घर बाधी स्वजन कुटुंबी जनो साथे रहे उपद्रववाळु स्थान तजे, आवकना प्रमाणमाज खर्च करे, स्वसपत्ति अनुसार पहेरवेश राखे अने लोक विरुद्ध काम न करे. देशाचारनु सेवन करे, स्वकर्तव्य धर्मने न तजे, आश्रये आवेलानु हित करे, स्वशक्तिनो ख्याल राखी उचित कार्य करे, अने हिताहितनो विशेष ख्याल राखे, इन्द्रियोने सारी रीते नियमोमा राखे, देव गुरु प्रत्ये खूब भक्तिभाव राखे तेमज स्वजन, अनाथ अने अतिथि–साधुसतनी सेवाचाकरी करे. एवी रीते चतुर जनोनी संगाते विचारचातुर्य रचतो, शास्त्रोने साभळतो के भणतो केटलोक वखत व्यतीत करे. नकामो काळक्षेप नज करे.

२५ पछी द्रव्य उपार्जन करवा उपाय करे पण नसीब उपरज आधार राखीने वेसी न रहे, केमके रीतिसर उद्यम–व्यवसाय कर्या वगर कदापी मनुष्योनु भाग्य फळतु नथी

२६ शुद्धि व्यवहार वडे सदाय व्यवसाय करतो कूड तोल, मान के लेख दस्तावेज करवा वर्जे.

२७–२८ अगारकर्म, वनकर्म, शटक (रथ–गाडांवि.) कर्म, भाटक (भाडा) अने स्फोटक (धरती फोडवानु) कर्म वडे आजीविका तजे, तथा दात, लाख, रस, केश अने विष संबंधी कुत्रा-

णिज्यनो त्याग करे, तेमज यंत्रपीलन, निर्लांछन (खांसी करवानुं) असती पोषण (दुष्ट पालन), दवदान (बाळी मूकवुं) अने तळाव विगेरे मूकाववा ए उपर जणावेला सघळां १५ कर्मादान धर्मार्थी जनोए अवश्य वर्जवा.

२९ लोखंड, महुडानां फूल, मदिरा, अने मध तेमज कंदमूळ तथा पत्र शाखादिक वृद्धिशाळी होय ते व्यापार अर्थे आदरे नहि. उपर जणावेला सघळा पाप व्यापार सुज्ञजनो करे नहि.

३० फागुण चोमासी उपरांत तल अने अळशी राखे नहि तेमज जंतुनाशक गोळ तथा टोपरां प्रमुख चोमासुं (अषाढो) आवे छते राखे नहि. जे जे वस्तुनो संग्रह करवाथी त्रसादि जीवोनो संहार थाय ते वस्तुनो संचय सुबुद्धिवंत होय ते लोभवश वनी करे नहिं.

३१ चोमासामां गाडां अथवा बळदोने हंकावे नहिज, तेमज अनेक त्रसादिक जीवोनी हिंसाकारक कृषिकर्म (खेड) पण प्रायः करावे नहि.

"व्यापार–व्यवसाय करवानी कुनेह" अने स्वधर्म रक्षा."

३२ व्याजवी मूल्य मळतुं होय तो वस्तु वेची देवी पण अधिक अधिक मूल्य इच्छवुं नहि, केमके अति मूल्य करनार लोभी माणसनां नाणां समूळगां नाश पण पामी जाय छे.

३३ भारे म्होटो लाभ मळतो होय तो पण उद्धारे आपवुं नहि तेमज लोभवश थई सामुं घरेणुं राख्या वगर व्याजवुं धन आपवुं

नहि जेथी चिन्ता व्हारी लेवी न पडे तेम करवु

३४ धर्मनो मर्म समजनार जाणी जोइने चोरीनो माल ग्रहण करज नहि, अने विवेकवत होय ते व्यापारमा सरस नरस वस्तुनी सेळभेळ करी दगलबाजी भर्यो धयो करे नहि.

३५ चोर, चडाळ, धूर्त–ठग, मलीन अने पतित–पापीजनो साथे, आ लोक परलोक संबधी सुखनी राखनारे कशो व्यवहार (व्यापार–व्यवसाय) करवो नहि,

३६ विचक्षण होय–परभवथी या पापथी डरतो होय, ते वेचाण करतो वस्तुनु जूठु मूल्य कर नहि व्याजबी मूल्यज कर, अने अन्यनी वस्तुने वता जे करार कर्यो होय ते लोपे नहि. कोइ वस्तु देतां के लेता लोभवश नहि थता प्रमाणिकपणु बराबर साचवी राखे

३७ सुबुद्धिवत होय ते अणदीठेली वस्तुनु साटु न ज कर. अने सुवर्ण रत्नादिक किंमती चीजो प्रायः परिक्षा कर्या वगर ग्रहण न करे.

३८ राजाना प्रताप वगर अनर्थ अने आवी पडेल आपदानु निवारण थवा न पामे तेथी स्वतत्रपणु साचवी राखी राजाओने यथायोग्य अनुसरे

३९ तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मना जाण, रसोइ करनार, मत्रवादी अने पोताना पूज्य–वडिलोने कदापि कोपाववा नहि. तेमने कोपाववाथी द्रव्यभावथी आपणुं अनिष्ट थइ जवा पामे छे

४० अर्थ उपार्जन करवा तत्पर थएलाए अति क्लेश, धर्मनुं उल्लंघन, नीचजनोनी सेवा अने विश्वासघात एटला वानां करवांनहि.

४१ लेतां अने देतां पोतानुं बोल्युं लोपवुं नहि, पोतानुं वचन यथार्थ रीते पाळनार म्होटी प्रतिष्ठा पामे छे. माणसनुं मूल्य तेना पोताना वचनथीज थवा पामे छे.

४२ पोतानी वस्तुनो सर्वथा नाश थतो होय तो पण धीर पुरुषो पोतानुं बोल्युंज पाळे, परंतु जे नजीवा लाभनी खातर पोतानुं वचन लोपे ते वसुराजानी पेरे द्रव्यभावथी दुःखी थवा पामे.

४३-४४ एवी रीते व्यवसाय करतो चोथो पहोर व्यतीत करे अने वाळु करवा माटे पोताना मंदिरे जाय पण जेणे एकाशनादिक पच्चखाण कर्युं होय ते तो आवश्यक-प्रतिक्रमण करवा निमित्ते सायंकाळ थतां मुनिराज विराजता होय ते स्थळे जाय.

४५ दिवसना आठमे भागे-चार घडी दिवस रह्यो होय त्यारे बुद्धिशाळी होय ते वाळु करी लेय. विचक्षण होय ते संध्या समये तेमज रात्री समये भोजन नज करे.

४६ संध्या समये आहार, मैथुन (विषय विलास) निद्रा अने खास करीने विद्या अभ्यास ए चार वानां चीवट राखीने वर्जे. अन्यथा एथी अनर्थ थवा पामे छे.

४७ संध्या समये खानपान करवाथी व्याधि उत्पन्न थाय छे, मैथुन थकी गर्भस्थ बाळक दुष्ट थवा पामे छे, निद्रा करवाथी भूतपीडा अने विद्याभ्यासथी बुद्धिहीनता थवा पामे छे.

४८ वालु वर्या पछी दिवस चरिम दुविहार, तिविहार के चोविहारनुं पच्चखाण करी लेवुं.

४९ रात्रीभोजन संवधी दोपना जाण होइ जे कोइ दिवसनी आदिनी अने अननी वे वे घडी सुधी रात्रीभोजन तजे तेने पुन्यशाळी जाणवा

५० जे कोइ भाग्यशाळी रात्रीभोजननो सर्वथा त्याग करे छे, तेपोतानी जींदगीना अर्धा भागना उपवासनो लाभ अवश्य मेळवे छे. टेकीला व्रतधारी जनो आवो उत्तम लाभ हासल करी(शके) शके छे

५१ दिवसे अने रात्रे जे खातो पातोज रहे छे ते शींगडा अने पुछडा वगरनो पशु ज छे, एम स्पष्ट रीते ते पोतानी मोकळी वृत्तिथी गूरवार करी आपे छे.

५२ रात्री भोजनना दोप पातिकथी प्राणीयो घूड, काग, मार्जार, गीध, शावर, सूअर (भूंड), साप, वींछु, अने गीगोली जेवा नीच अवतार प्राप्त करे छे, (अने धर्मभ्रष्ट थाय छे.)

रात्री समये होम—आहूति, स्नान, देवपूजा, दान अने खास करीने भोजन करवानु वर्जेलु छे आटला वाना रात्रे करवानी शास्त्रकारनी मना छे

५४ एवी रीते न्याय—नीतिवडे शोभतो जे पुरुप दिवसना चारे पहोरने निर्गमे छे. ते न्याय युक्त अने विनय विचक्षण होइ अंते अक्षय सुखनो भागी थाय छे. इति त्रितीयो वर्ग

श्रावकधर्म–आचारोपदेश अथ चतुर्थो वर्गः

१ थोडा पाणी वडे पोताना पग, हाथ अने मुखनुं प्रक्षालन करी, पोताना आत्माने धन्य कृत्य पुन्य मानतो छतो श्रावक सांज समये वळी हर्षथी श्री जिनेश्वर देवनी पूजा करे (धुप दीपादिक वडे द्रव्यपूजा अने चैत्यवंदन वडे प्रभुनी भावपूजा समयोचित्त करे.)

२ सम्यक् क्रिया सहित ज्ञान वडे मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे एम जाणतो श्रावक सांजरे षड् आवश्यक करणी (प्रभातनी पेरे) पुनः करे.

३ लोकमां क्रियाज फळदायक मनाय छे, पण ज्ञान फळदायी मनातुं नथी. केमके स्त्री अने भक्ष्य–भोजन संबंधी भेदनो जाण छतां तेवा ज्ञान मात्रथी सुखी थतो नथी. ज्यारे तेनो भोगवटो करे छे त्यारेज तेनुं अनुभवात्मक सुख मळी शके छे.

४ गुरुना विरहे स्थापनाचार्य के नवकारवाळीनी स्थापना करी बुद्धिशाळी पोताना घरमां (अनुकुळ स्थान होय तो) आवश्यक करणी–प्रतिक्रमणादि क्रिया करे.

५ धर्मना प्रभावथी सर्व कार्य सिद्ध थाय छे एम हृदयमां जाणतो सदा सर्वदा धर्ममांज चित्त राखनार पुरुष धर्म साधन करवानो समय व्यर्थ वितावी दे नहि, मतलब के अवसर उचित धर्मकरणी अवसरेज करवा बराबर लक्ष राखे–भूले नहि.

६ वखत वित्या पछी के समय थयां पहेलां जे जप प्रमुख धर्मकरणी करवामां आवे छे, ते उखर क्षेत्रमां वावेलां धान्यनी पेरे

निष्फळ थवा पामे. अवसरनी करणी अवसरेज करवी शोभे अने फळदायक थाय एम समजी धर्म समयनु उल्लंघन करवु नहि.

७ धर्मक्रिया करता बुद्धिशाळीए विधि बराबर साचववो. तेमां हिनाधिकता करता मत्र साधनारनी पर दूषित थाय छे. (आ सबधी अन्यत्र खुलासो कराएलो छे)

८ जेम औषध प्रयोग करवामा दुरुपयोग थयो होय तो तेथी भयंकर चादा प्रमुख पेदा थाय छे, तेम धर्मक्रियामा आहु अवळु विपरीत सेवनथी उलटो अनर्थ थवा पामे छे. एम समजी सुज्ञजनो सावधानपणे विधिवत् धर्मकरणी करवा लक्ष राखे छे. शरूआतमा करणी संपूर्ण शुद्ध न होइ शके पण शुद्धिनो खप तो जरूर राखवोज.

९ वैयावच योगे पोतानु अक्षयश्रेय समजीने विचक्षण श्रावक आवश्यक करणी करी रह्या बाद श्रीगुरु महाराजनी सेवा-भक्ति करे.

१० मुखकोश बाधी (मुखे वस्त्र ढाकी राखी) मौन धारी, पोताना पगनो स्पर्श गुरुश्रीने तेमज तेमना वस्त्रादिकने न थाय तेम तेमनो सघळो शरीर संबंधी श्रम दूर करता श्रावक गुरुमहाराजनी विश्रामणा करे.

११ त्याथी गाम-नगरमा आवेला चैत्यमा जिनेश्वरने नमी-स्तवी पछी निजघर भणी जाय अने त्यां पग पखाळीने पचपरमेष्ठी मत्रनु स्मरण करे (अने चिंतवे के)

१२ मुजने सदाय अरिहंतोनु शरण होजो, सिद्ध-परमात्माओनु शरण होजो. जिन धर्मनु शरण होजो अने आत्मसाधन करवा शूरा साधुजनोनु शरण होजो.

१३ मंगळकारी, दुःखदारक (सुखदायक) अने शीलसन्नाह (वखतर)ने धारनारा श्री स्थूलभद्र मुनिवरने म्हारो नमस्कार हो!

१४ गृहस्थ छतां जेनी शीललीला बहु भारे हती अने जेना दर्शन समकितवडे शोभा वाधेली छे एवा श्री सुदर्शन श्रेष्ठीने नमस्कार हो !

१५ जेमणे कामदेवने जीती लीधो छे अने जीवितपर्यंत जेओ निर्दोष ब्रह्मचर्यने पाळे छे, एवा मुनिजनो खरेखर धन्यकृत पुन्य छे (तेवा शम दमवंत संत साधुजनोने पुनः पुनः नमस्कार हो !)

१६ सत्वहीन, भारेकर्मी, अने इन्द्रियोने मोकळी मूकी सदा चालनारो होय ते एक दिवस पण उत्तम शीलव्रतने धारवा समर्थ थतो नथी.

१७ रे संसार सागर ! जो वचमां स्त्रीओरुपी खरावा न होत त्हारो पार पामवो दुर्लभ न थात पण सुलभ थवा पामत.

१८ असत्य बोलवुं, साहस करवुं, माया केळववी, मुग्धता, अति लोभ–असंतोष, अपवित्रता अने निर्दयता ए दोषो स्त्रीओमां स्वाभाविक होय छे, स्त्री जातिमां उक्त दोष वगरनी कोइ विरला स्त्री होय छे.

१९ जे रागी उपर विरक्त रहे छे ते स्त्रीओनी कामना–इच्छा कोण करे ? सुज्ञ होय ते तो मुक्ति कन्याने ज इच्छे के जे विरक्त उपर राग धरे छे.

२० ए रीते चित्तमां चिन्तवतो सुज्ञ पुरुष आनंदमां झुलतो

थोडो वखत निद्रा भजे (लहे) पण धर्म पर्वमा कदापि मैथुन सेवे नहि

२१ सुज्ञ होय ते घणो वखत निद्रा सेववामा कदापि काढे नहि. केमके अति घणी निद्रा धर्म, अर्थ अने सुखनो नाश करनारी थाय छे.

२२ अल्पआहार, अल्पनिद्रा, अल्पआरंभ, अल्पपरिग्रह अने अल्पकषायवंत होय तेने अल्पभव भ्रमण अवशेष जाणवु.

२३ निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, क्लेश, अने क्रोध एमने जेटला वधारीए तेटला वधे छे अने घटाडीए तेटला घटे छे.

२४ शयन करती वखते विघ्न मात्रने चूरवा समर्थ श्री नेमीश्वर प्रभुनु स्मरण करनारने खोटां स्वप्नो आववा पामता नथी

२५ अश्वसेन राजाना अने वामाराणीना पुत्र श्री पार्श्वप्रभुनु सदाय स्मरण करनारने खोटा स्वप्ना आवतांज नथी

२६ श्री लक्ष्मणा माताना अने महसेनराजाना पुत्र श्री चंद्रप्रभ स्वामीनु स्मरण चित्तमा कर्या करे छे तेने सुखे निद्रा आवी जाय छे.

२७ सर्व विघ्नने चूरनार अने सर्व सिद्धिने आपनार श्री शांतिनाथप्रभुनु ध्यान करनारने चोर, रोग अने अग्नि प्रमुखथी भय थतो नथी.

२८ श्रावक समुदायने सुख संतोषकारी एवी सघळी दिनकृत्य करणी सारी रीते समजी आ लोक अने परलोकमा सचरतो. पुरुष दोषरहित बनी निर्मळ यश पामे छे. इति चतुर्थो वर्ग.

श्रावक धर्मोचित आचारोपदेश अथ पंचमो वर्ग.

१ सकळ जन्मोमां सारभूत एवो मानव भव पामीने सदाय सुकृत्य करणी वडे सुज्ञ जनोए तेने संपूर्ण रीते सफळ करी लेवो जोइए.

२ निरंतर धर्मकरणी कर्याथी सदाय आत्मसंतोष थाय छे, एम समजी सुज्ञ जनोए दान, ध्यान, तप अने शास्त्र अभ्यासवडे सफळ दिवस करवो.

३ पोताना आयुष्यनो त्रीजो भाग बाकी रहे छते अथवा छेवटे छेल्ले समये जीव परजन्म संबंधी शुभाशुभ आयुष्य प्राये करीने बांधे छे.

४ आवखानो त्रीजो भाग बाकी रहेतां पांच पर्व श्रेणी प्रसंगे शुभ करणी करतो छतो जीव पोतानुं परभव संबंधी आवखुं नक्की बांधे छे.

५ बीज तिथिनुं आराधन करतां बे प्रकारनो (साधु अने गृहस्थ संबंधी) धर्म आराधी शकाय छे, तेमज सुकृत्यो करतां राग अने द्वेषने जीती शकाय छे.

६ पंचमीनुं पालन करतां पांच ज्ञान, पांच चारित्र अने पांच व्रतनी प्राप्ति थाय छे अने पांच प्रमादनो पराभव निश्चे थाय छे.

७ अष्टमीनुं आराधन कर्याथी आठ कर्मनो क्षय थाय छे; आठ प्रवचन माता (समिति, गुप्ति) नी शुद्धि थाय छे अने आठ मदनो पराजय थाय छे.

८ एकादशीनु सेवन कर्याथी अगीयार अंगोनु निश्चे आराधन थाय छे तेमज श्रावकनी अगीयार पडिमानुं पण आराधन कराय छे.

९ अहो ? चतुर्दशीनुं आराधन करनार चौद राजलोकनी उपर मोक्षमा जइ वसे छे, वळी ते चौद पूर्वोनु पण आराधन करी शके छे.

१० आ उपर जणावेला पाच पर्वो अधिकाधिक फळदायक छे. तेथी एमा करेली सुकृत करणी अधिक फळदायक बने छे.

११ एम समजी सुज्ञ जनो पर्व दिवसे विशेषे करी धर्मकरणी करे अने पोषध प्रतिक्रमणादिकने आराधतां स्नान मैथुनने परिहरे.

१२ मुक्तिने वश करवाने परम औषध समान पोषधव्रत पर्व दिवसे सुज्ञजन आदरे, तेम करी न शकाय तो सामायक व्रत विशेष आदरे.

१३ वळी च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवळज्ञान अने निर्वाण ए पाचे अरिहंत देवोनां कल्याणको छे, तेनु आराधन सुज्ञजनोए करवुं

१४ १० एक कल्याणक होय त्यारे एकाशन, बे होय त्यारेनीवी, त्रण होय त्यारे पुरिमड्ढ सहित आयंबिल अने चार कल्याणको होय त्यारे उपवास करे पाच कल्याणको होय त्यारे पूर्वार्ध (पुरिमड्ढ) सहीत उपवास करे आ कल्याणकतप पाच वर्ष सुज्ञजनो पूर्ण करे. (उपर जणावेला पुर्वार्धनी अर्थ अन्यत्र एकासणरूप करेलो देखाय छे.)

१६ वळी अरिहंतादिक विशस्थानक पदोने भव्यात्माओ आराधे अने एकाशनादिक तपवडे भाग्यवंत जनो तेनो विधि साचवे.

१७ विधि अने ध्यानयुक्त जे उक्त वीशस्थानकोनुं आराधन करे, ते महानुभाव आत्मा दुःख विदारक एवुं श्रेष्ठ तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जे छे.

१८ साडा पांच वर्षपर्यंत जे उजवळ पंचमीनुं आराधन करे छे, ते पांचमीगति जे मोक्ष तेने प्राप्त करे छे.

१९ व्रत पूर्ण थये छते उजमणुं करे, तेवी शक्ति न होय तो बमणुं तेवडुं व्रत करे अने तपना दिवस जेटलां माणस जमाडे.

२० पंचमीना उजमणामां पांच पांच उत्तम ज्ञाननां उपकरणो ते-मज चैत्यनां पण पांच पांच सुंदर उपकरणो करावे.

२१ वळी पाक्षिक (पाखी) प्रतिक्रमण अने चतुर्दशीनो उपवास करे छे ते श्रावक पोतानां उभय पक्ष (पिताना तथा माताना) विशुद्ध करे छे.

२२ बुद्धिशाळी श्रावक त्रणे चोमासीमां छट्ठतप करे अने सर्वोप-री संवत्सरी पर्व दिवसे अट्ठमतप करे साथे प्रतिक्रमणादिक आवश्यक पण साचवे.

२३ सघळी (छए) अट्ठाइओमां अने विशेषे पर्व दिवसे पोताना घरे खांडवानुं दळवानुं विगेरे आरंभनुं काम करवानुं परिहरे.

२४ पर्युषण पर्वमां स्वच्छ मनथी कल्पसूत्र सांभळे अने शासननी उन्नति करतो पोताना शहेरमां अमारी (जीव दया) पळावे.

२५ श्रावक रुडा धर्मना काम करतो सतोष न पामे, तेनो प्रति-दिन अधिकाअधिक प्रीति-भक्तिथी धर्मकार्यो करतोज रहे.

२६ पर्युषणपर्वमा सावधानपणे जे कल्पसूत्र श्रवण करे ते आठभव-नी अदर महा मगळकारी मोक्षपदने पामे.

२७ सदाय सम्यक्त्वरत्ननु सेवन करवाथी अने ब्रह्मव्रत (शीलव्रत) ने पाळवाथी लोकमा जे पुन्य प्राप्त थाय छे, ते श्री कल्पसूत्र साभळवाथी प्राप्त थाय छे

२८ विविध दान देवा वडे अने तप तपवा वडे तथा सारा तीर्थोनी सेवना करवा वडे जे पापक्षय थाय, ते कल्पसूत्र साभळवा वडे जीवना पापनो क्षय थाय.

२९ मुक्ति एटले मोक्ष उपरात कोइ उंचु पद-स्थान नथी श्री शत्रुजय तीर्थ उपरात कोइ उंचु तीर्थ-स्थान नथी अने सम्यग दर्शन-सम्यक्त्व उपरात उंचु तत्त्व नथी तेम श्री कल्पसूत्र उ-परात कोइ अधिक सूत्र नथी

३० दीवाळीनी अमावास्यामा श्री वीर प्रभुनु निर्वाण थयेल छे अने दीवाळीना पडवाने दिवसे श्री गौतम गणधरने केवळ-ज्ञान उपन्यु छे तेमनु तेज वखते अवश्य स्मरण करवु.

३१ दीवाळीना दीवसे बे उपवास करीने जे गौतमस्वामीनु स्मरण ध्यान करे छे, ते निश्चे आ लोकमा तेमज परलोकमां भारे सुखसंपदा (महोदय) ने पामे छे.

३२ घरदेरासरमा अने गामना देरासरमा विधि सहित श्री जिने-

अरे प्रभुनी पूजा भक्ति करीने पछी मंगळदीवो उतारीने सुज्ञ श्रावक पोताना भाइ भांडुओनी संगाते भोजन करे.

३३ जिनेश्वरोना पांच कल्याणक दिवसोने मोटकां लेखीने तेवे प्रसंगे सारा अर्थी जनोने स्वशक्ति अनुसारे यथोचित दान आपे.

३४ आ रीते रुडा पर्व दिवसे करेलां उत्तम कृत्य अने रुडा आचारना प्रचार वडे कर्मनां द्वार जेणे बंध कर्यां छे, एवा श्रावक उत्तम विधि वडे शुद्ध बुद्धिने पुष्ट करी स्वर्ग संबंधी सुखने भोगवी मुक्तिना सुखने पामे छे.

श्रावक धर्मोचित आचारोपदेश अथ षष्ठो वर्गः

१ श्रावक रुडां धर्मनां काम करीने संतोष मानी लेतो नथी. ते तो प्रतिदिन अधिकाधिक रुचि सहित धर्मनां कामो कर्या करेछे.

२ धर्मना प्रभावथीज ऐश्वर्य-सुख संपदाने पामी जे धर्मनोज लोप करे छे ते स्वस्वामी द्रोही पातकीनुं भविष्य केमज सुधरे ?

३ दान, शील, तप अने भाव भेदे करीने धर्म चार प्रकारनो छे सदाय भुक्ति (स्वर्गादिक भोग-सुख) अने मुक्ति सुखदायक एवा उक्त धर्मनुं सेवन सुबुद्धिजनोए आदरथी करवुं.

४ थोडामांथी पण थोडुं देवुं (दान) म्होटा उदयनी अपेक्षा न राखवी. (घणी संपदा थाशे त्यारे वहोळुं दान आपीश एम समजी राखी, थोडामांथी थोडुं आपवानो प्रसंग जतो न करवो.) मनमानती लक्ष्मी-संपदा कोने क्यारे थवा पामे छे ?

"दान फळ"

५ ज्ञाननु दान देवा वडे ज्ञानी थवाय छे, अभयदान वडे निर्भय-भय रहित थवाय छे, अन्नदान वडे सुखी थवाय छे अने औषध भेषज आपवा वडे सदाय व्याधि रहित थवाय छे.

६ कीर्ति पुन्य थकी थवा पामे छे, पण दान थकी नहि एम छता जे कोइ कीर्तिने माटेज दान आपे छे, तेने सुज्ञजनोए व्यसन समजवु

७ व्याजे देता (बहुतो) द्रव्य बमणु थाय, व्यवसाय (व्यापार) करता चोगणु थाय, क्षेत्रमा वावता सोगणु थाय, परतु सारा पात्र (सुपात्र) मां आपवाथी तो अनतगणु थवा पामे छे.

८ (जीर्ण) देरासर, प्रतिमा (पूजा-भक्ति,) पुस्तक प्रकाशनादि, अने साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रुप चतुर्विध श्री सघनी यथायोग्य सेवा भक्ति (सभाळ) ए सात क्षेत्रोमां अमाप फळनी प्राप्ति माटे यथाशक्ति द्रव्य व्यय करवो घटे छे.

९ जिनेश्वर प्रभुनी भक्तिथी भावित जे भाग्यशाली श्रावक खास जरुरी स्थळे चैत्य करावे छे ते ए चैत्यना परमाणु जेटला कल्पोसुधी देवलोकना सुख पामे छे (जीर्णोद्धार करवामा आठगणो फायदो शास्त्रमा कह्यो छे.)

१० करावेल देरासर जेटला दिवस टके तेना जेटला समयो थाय, तेटला वर्षोपर्यत ते देवगतिना सुख भोगवे छे.

११ सोनानी, रुपानी, रत्ननी, पाषाणनी के माटीनी जिनपडिमा जे विधिवत् करावे छे, ते तीर्थंकर पद पामे छे

(आ बाबतमां आजकाल घणोज अविधि दोष चालतो देखाय छे अने वगर समजे आशातनामां वधारो थाय छे, ते वात खास लक्षमां राखी ज्यां देशकाळमां आ कार्य करावबुं वधारे लाभदायक होय त्यांने माटे उक्त उपदेशनी सार्थकता समजवी.)

१२ एक अंगुठा जेवडी पण प्रभुनी प्रतिमा जे महानुभाव विवेकथी करावे छे, ते इंद्रनी पदवी पामीने अंते परमपद मोक्षने पामे छे.

१३ धर्मरुपी वृक्षनां मूळरुप उत्तम शास्त्र मोक्षफळने आपनार छे एम समजी सुज्ञजनो भावशुद्धिने करनारां शास्त्र पोते लखे, लखावे, वांचे–वंचावे अने सांभळे–संभळावे.

१४ जे श्रावको धर्मशास्त्रो लखी–लखावी सद्गुणी (पात्रजनो) ने आपे छे ते शास्त्रना अक्षर जेटलां वर्षो सुधी स्वर्गनां सुखने पामे छे.

१५ ज्ञान–विज्ञानवडे शोभित जे सुज्ञजनो ज्ञानभक्ति करे छे ते अंते जेनो कदापि क्षय न थाय, एवुं सर्वज्ञपद पामे छे.

१६ सर्व सुखनुं कारण अन्नदान छे, एम जाणतो श्रावक साधर्मीवात्सल्य शक्ति अनुसारे प्रतिवर्ष करे.

१७ पोताना भाइभांडु वीगेरे कुटुंबीओने घणा हेतथी (स्वार्थबुद्धिवडे) जमाडवा ए संसार वृद्धिनुं कारण छे त्यारे (निःस्वार्थपणे) साधर्मी बंधुओने प्रेमपूर्वक जमाडवा ते संसारसमुद्र तरवाने साधनरुप छे. (वस्तु एकज छतां आशयभेदथी फळमां म्होटो तफावत प्रगट समजाय एवो छे.

१८ एम समजी सुज्ञ श्रावको प्रतिवर्ष शक्ति अनुसारे श्री संघने पोताना घरे पधरावी तेनी यथोचित्त सेवाभक्ति करे अने श्री गुरु महाराज प्रत्ये शुद्ध–निर्दोष वस्त्रो भक्तिपूर्वक आपे.

१९ वसती (रहेवानु स्थान) आहार, पाणी, पात्र, वस्त्र, ओषध भैषज प्रमुख साधु जनोने खप तेवी निर्दोष वस्तुओ पोते संपूर्ण सुखी न होय तोपण ते यथाशक्ति आपे.

२० सुपात्रमा जे निर्दोष दान अपाय छे, तेथी कशी हानि थती नथी पण कुवा, आराम (बगीचा) अने गाय प्रमुखनी पेरे संपदानी वृद्धि थवा पामे छे.

(कुवो पाणी आपे छे, बगीचो फळ आपे छे, अने गाय वीगेरे दूध प्रमुख आपे छे, तेने कशी हानी थती देखाती नथी, पण तेथी घणानो उपगार सधाय छे ए लाभ मळे छे अने खरी शोभा पण जमाय छे.)

२१ दान अने भोगमा मोटु अंतर छे. खाधेली वस्तु विष्टारूप (मळरूप) थइ जाय छे पण दीधेली (सत्पात्रमा अपायेली) वस्तु अक्षय थवा पामे छे.

२२ हजारो परिश्रम वठीने मेळवेल अने प्राण करता पण अधिक व्हाला द्रव्यनु खरु फळ दानज छे.

२३ पूर्वोक्त सात क्षेत्रोमा पोतानु न्याय द्रव्य जे विवेकथी वावे छे ते श्रावक पोताना धन अने जन्म बन्नेनी सफळता करे छे.

इति षष्ठो वर्गः

अथ श्रीमान चारित्र सुंदरगणिविरचित आचारोपदेश ग्रन्थनु भाषान्तर समाप्त

अथ

॥ श्रीसिंदूरप्रकरः प्रारभ्यते ॥

प्रथम ग्रंथना प्रारंभमां ग्रंथकर्त्ता पोताना जे इष्टदेव तेना चरणस्मरणरूप मंगलाचरण पूर्वक आ ग्रंथ सांभळनाराओने आशीर्वाद कहे छे.

सिंदूरप्रकरस्तपःकरिशिरःक्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिर्निचयःप्रबोधदिवसप्रारंभसूर्योदयः ॥
मुक्तिस्त्रीकुचकुंभ (वदनैक) कुंकुमरसः श्रेयस्तरोः पल्लव,-
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातु वः ॥ १ ॥

हवे कवि सज्जन पुरुष प्रत्ये पोतानी विज्ञप्ति करे छे.

संतः संतु मम प्रसन्नमनसो वाचां विचारोद्यता ।
सूतेऽम्भः कमलानि तत्परिमलं वाता वितन्वंति यत् ॥
किं वाऽभ्यर्थनयाऽनया यदि गुणो ऽस्त्यासां ततस्ते स्वयं ।
कर्त्तारः प्रथनं न चेदथ यशः प्रत्यर्थिना तेन किम ॥ २ ॥

हवे करी छे सकल सुरासुरे सेवा जेमनी एवा जे श्रीवीतराग तेमना आगमना अनुसारे भव्य जनना हितने माटे धर्मोपदेश कहे छे.

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

त्रिवर्गसंसाधनमंतरेण, पशोरिवायुर्विफलं नरस्य ॥
तत्रापि धर्म्मं प्रवरं वदंति, न तं विना यद्भवतोऽर्थकामौ ॥ ३ ॥

हवे आ नरभवनुं दुर्लभपणु छे, ते कहे छे.

॥ इंद्रवज्रावृत्तम ॥

यः प्राप्य दुःप्राप्यमिदं नरत्वं, धर्मं न यत्नेन करोति मूढः ॥
क्लेशप्रबंधेन सलब्धमब्धौ, चिंतामणिं पातयति प्रमादात् ॥४॥

हवे मनुष्यभवनो सर्वोत्कृष्ट जय कहे छे

॥ मंदाक्रांतावृत्तम ॥

स्वर्णस्थाले क्षिपति सरजः पादशौच विधत्ते ।
पीयूषेण प्रवरकरिणं वाहयत्यैधभारम् ॥
चिंतारत्नं विकिरति कराद्वायसोड्डायनार्थं ।
यो दुःप्राप गमयति मुधा मर्त्यजन्म प्रमत्तः ॥ ५ ॥

हवे जे संसारना विषय माटे धर्मनो त्याग करे छे, ते मूढ पुरुष जाणवा ते कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम ॥

ते धत्तूरतरुं वपंति भवने प्रोन्मूल्य कल्पद्रुमम् ।
चिंतारत्नमपास्य काचशकलं स्वीकुर्वते ते जडाः ॥
विक्रीय द्विरदं गिरींद्रसदृशं क्रीणंति ते रासभं ।
ये लब्धं परिहृत्य धर्ममधमा धावंति भोगाशया ॥ ६ ॥

हवे मनुष्यजन्मनु तथा धर्मसामग्रीनु दुर्लभपणु कहे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम ॥

अपारे संसारे कथमपि समासाद्य नृभवम् ।
न धर्मं यः कुर्याद्विषयसुखतृष्णातरलित ॥

त्रुडन पारावारे प्रवरमपहाय प्रवहणम ।
स मुख्यो मूर्खाणामुपलमुपलब्धुं प्रयतते ॥ ७ ॥

हवे आ ग्रंथमां जेटलां उपदेशनां द्वारो कहेवानां छे ते उपदेश-
द्वारे करी सर्व द्वारो कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तत्रयम् ॥

भक्तिं तीर्थकरे गुरौ जिनमते संघे च हिंसानृतं ।
स्तेया ब्रह्मपरिग्रहाद्युपरमं क्रोधाद्यरीणां जयम ॥
सौजन्यं गुणिसंगमिंद्रियदमं दानं तपोभावनां ।
वैराग्यं च कुरुष्व निर्वृतिपदे यद्यस्ति गंतुं मनः ॥ ८ ॥

हवे जेवो उद्देश तेवो निर्देश एवुं वचन छे माटे प्रथमना श्लोकमां
कहेलां जे द्वारो तेने यथाक्रमे विवरे छे, तेमां प्रथम चार
श्लोके करी श्रीतीर्थंकरनी भक्तिनुं द्वार कहे छे.

पापं लुंपति दुर्गतिं दलयति व्यापादयत्यापदम ।
पुण्यं संचिनुते श्रियं वितनुते पुष्णाति नीरोगताम ॥
सौभाग्यं विदधाति पल्लवयति प्रीतिं प्रसूते यशः,
स्वर्गं यच्छति निर्वृतिं च रचयत्यर्चाऽर्हतां निर्मिता ॥ ९ ॥

वळी पण श्रीजिनवरनी भावपूजाना फळने कहे छे.

स्वर्गस्तस्य गृहांगणं सहचरी साम्राज्यलक्ष्मीः शुभा ।
सौभाग्यादिगुणावलिर्विलसति स्वैरं वपुर्वेश्मनि ॥
संसारः सुतरः शिवं करतलक्रोडे लुठत्यंजसा ।
यः श्रद्धाभरभाजनं जिनपतेः पूजां विधत्ते जनः ॥ १० ॥

वली पण भावपूजानु फल कहे छे

॥ शिखरिणी वृत्तम ॥

कदाचिन्नातंकः कुपित इव पश्यत्यभिमुखम ।
विदूरे दारिद्र्यं चकितमिव नश्यत्यनुदिनम ॥
विरक्ता कांतेव त्यजति कुगतिः सगमुख्यो, ।
न मुंचत्यभ्यर्णं सुहृदिव जिनार्चां रचयत ॥ ११ ॥

वली पण श्रीजिनपरमेश्वरनी भावपूजानु महात्म्य कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम ॥

यः पुष्पैर्जिनमर्चति स्मितसुरस्त्रीलोचनैः सोऽर्च्यते, ।
यस्तं वन्दत एकशस्त्रिजगता सोऽहर्निशं वन्द्यते ॥
यस्तं स्तौति परत्र वृत्रदमनस्तोमेन स स्तूयते ।
यस्तं ध्यायति क्लृप्तकर्मनिधनः स ध्यायते योगिभिः ॥ १२ ॥

हव चार श्लोके करी गुरुभक्तिनु द्वार कहे छे

गुरु सेवा-भक्ति —॥ वंशस्थवृत्तम ॥

अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्तते प्रवर्तयत्यन्यजनं च निःस्पृहः ॥
स एव सेव्य (सेवितव्य) स्वहितैषिणा गुरुः,
स्वयं तरंस्तारयितुं क्षमः परम ॥ १३ ॥

वली फरीने पण गुरुसेवानु फल कहे छे

॥ मालिनीवृत्तम ॥

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थम ।

सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ॥
अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
भवजलनिधिपोतस्तं विना नास्ति कश्चित् ॥ १४ ॥

वली पण गुरुसेवानुं फल कहे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

पिता माता भ्राता प्रियसहचरी सूनुनिवहः ।
सुहृत्स्वामी माद्यत्करिभटरथाश्वः परिकरः ॥
निमज्जंतं जंतुं नरककुहरे रक्षितुमलम् ।
गुरोर्धर्माऽधर्म्मप्रकटनपरात्कोऽपि न परः ॥ १५ ॥

हवे गुरुनी आज्ञानुं महात्म्य कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

किं ध्यानेन भवत्वशेषविषयत्यागैस्तपोभिः कृतम् ।
पूर्णं भावनयाऽलमिंद्रियदमैः पर्याप्तमाप्तागमैः ॥
किं त्वेकं भवनाशनं कुरु गुरुप्रीत्या गुरोः शासनम् ।
सर्वे येनविना विनाथवलवत् स्वार्थाय नाऽलं गुणाः ॥ १६ ॥

इति द्वितीयगुरुसेवनप्रक्रमः ॥ २ ॥

हवे चार श्लोकोयें करीने जिनमत जे जिनोक्त सिद्धांत
तेनुं माहात्म्य कहे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

न देवं नादेवं न शुभगुरुमेव न कुगुरुम् ।

न धर्मं नाधर्मं न गुणपरिणद्ध न विगुणम् ॥
न कृत्य नाऽकृत्य न हितमहित नाऽपि निपुणम् ।
विलोकन्ते लोका जिनवचनचक्षुर्विरहिता ॥ १७ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्ताष्टकम् ॥

मानुष्य विफल वदंति हृदय व्यर्थं वृथा श्रोत्रयो-
र्निर्माण गुणदोषभेदकलना तेषामसभाविनीम् ॥
दुर्वार नरकांधकूपपतनं मुक्तिं बुधा दुर्लभाम् ।
सार्वज्ञ' समयोदयारसमयो येषा न कर्णातिथि ॥ १८ ॥
पीयूष विषवज्जल ज्वलनवत्तेजस्तम स्तोमव-
न्मित्र शात्रववत् स्रज भुजगवत् चिंतामणिं लोष्ठवत् ॥
ज्योत्स्ना ग्रीष्मजघर्मवत् स मनुते कारुण्यपण्यापणम् ।
जैनेंद्र मतमन्यदर्शनसम यो दुर्मतिर्मन्यते ॥ १० ॥
धर्मं जागरयत्यघ विघटयत्युत्थापयत्युत्पथम् ।
भिन्ते मत्सरमुच्छिनत्ति कुनय मथ्नाति मिथ्यामतिम् ॥
वैराग्य वितनोति पुष्यति कृपा मुष्णाति तृष्णा च य-
त्तज्जैन मतमर्चति प्रथयति ध्यायत्यधीते कृती ॥ २० ॥

हवे चार श्लोकेर्ये करीने सघना महिमाने कहे छे

रत्नानामिव रोहणक्षितिधर, ख तारकाणामिव ।
स्वर्ग कल्पमहीरुहामिव सर पके रुहाणामिव ॥
पाथोधि पयसामिवेंदुमहसा (शशीवमहसा) स्थान गुणानामसा-
वित्यालोच्य विरच्यता भगवत' सघस्य पूजाविधि ॥ २१ ॥

यः संसारनिरासलालसमतिर्मुक्त्यर्थमुत्तिष्ठते ।
यं तीर्थं कथयंति पावनतया येनाऽस्ति नाऽन्यःसमः ॥
यस्मै तीर्थपतिर्नमस्यति सतां यस्माच्छुभं जायते, ।
स्फूर्त्तिर्यस्य परावसंति च गुणा यस्मिन्स संघोऽर्च्यतां ॥२२॥
लक्ष्मीस्तं स्वयमभ्युपैति रभसा कीर्त्तिस्तमालिंगति ।
प्रीतिस्तंभजते मतिः प्रयतते तं लब्धुमुत्कंठया ॥
स्वश्रीस्तं परिरब्धुमिच्छति मुहुर्मुक्तिस्तमालोकते ।
यः संघं गुणराशिकेलिसदनं श्रेयोरुचिः सेवते ॥ २३ ॥
यद्भक्तेः फलमर्हदादिपदवीमुख्यं कृषेः शस्यवत् ।
चक्रित्वं त्रिदशेंद्रतादि तृणवत् प्रासंगिकं गीयते ॥
शक्तिं यन्महिमस्तुतौ न दधते वाचोऽपि वाचस्पतेः ।
संघः सोऽघहरः पुनातु चरणन्यासैः सतां मंदिरम् ॥ २४ ॥

इति संघप्रक्रमः ॥ ४ ॥

हवे हिंसाना निषेधं करीने सर्व प्राणियोने विषे
स्वसमानतानुं ध्यान करो, ते कहे छे.

क्रीडाभूः सुकृतस्य दुःकृतरजःसंहारवात्या भवो-
दन्वन्नौर्व्यसनाग्निमेघपटली संकेतदूती श्रियाम् ॥
निःश्रेणिस्त्रिवौकसः प्रियसखी मुक्तेः कुगत्यर्गला ।
सत्त्वेषु क्रियतां कृपैव भवतु क्लेशैरशेषैः परैः ॥ २५ ॥

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

यदि ग्रावा तोये तरति तरणिर्यद्युदयति ।
प्रतीच्यां सप्तार्चिर्यदि भजति शैत्यं कथमपि ॥

यदि क्ष्मापीठं स्यादुपरि सकलस्याऽपि जगतः ।
प्रसूते सत्त्वानां तदपि न वधःक्वाऽपि सुकृतम् ॥ २६ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

स कमलवनमग्नेर्वासरं भास्वदस्ता-
दमृतमुरगवक्त्रात्साधुवादं विवादात् ॥
रुगपगममजीर्णाज्जीवितं कालकूटा- ।
दभिलषति वधात्यः प्राणिनां धर्ममिच्छेत् ॥ २७ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम् ॥

आयुर्दीर्घतरं वपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरम् ।
वित्तं भूरितरं बलं बहुतरं स्वामित्वमुच्चैस्तरम् ॥
आरोग्यं विगतान्तरं त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतरम् ।
संसाराम्बुनिधिं करोति सुतरं चेतः कृपार्द्रान्तरम् ॥ २८ ॥

इत्यहिंसाप्रक्रमः ॥ ५ ॥

हवे चार श्लोके करीने सत्यवचनना प्रभावने कहे छे.

विश्वासायतनं विपत्तिदलनं देवैः कृताराधनम् ।
मुक्तेः पथ्यदनं जलाग्निशमनं व्याघ्रोरगस्तम्भनम् ॥
श्रेयः संवननं समृद्धिजननं सौजन्यसंजीवनम् ।
कीर्त्तेः केलिवनं प्रभावभवनं सत्यं वचः पावनम् ॥ २० ॥

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

यशो यस्माद्भस्मीभवति वनवह्नेरिव वनम् ।

निदानं दुःखानां यदवनिरुहाणां जलमिव ॥
न यत्र स्याच्छायातप इव तपःसंयमकथा ।
कथंचित्तन्मिथ्यावचनमभिधत्ते न मतिमान् ॥ ३० ॥

वंशस्थवृत्तम् ॥

असत्यमप्रत्ययमूलकारणम्, कुवासनासद्मसमृद्धिवारणम् ॥
विपन्निदानं परवंचनोर्जितम्, कृतापराधं कृतिभिर्विवर्जितम् ॥३१॥

वली पण सत्यवचननो प्रभाव कहे छे.

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

तस्याऽग्निर्जलमर्णवः स्थलमरिर्मित्रं सुराः किंकराः ।
कांतारं नगरं गिरिर्गृहमहिर्माल्यं मृगारिर्मृगः ॥
पातालं बिलमस्त्रमुत्पलदलं व्यालः शृगालो विषम् ।
पीयूषं विषमं समं च वचनं सत्यांचितं वक्ति यः ॥ ३२ ॥

इति अनृतप्रक्रमः ॥ ६ ॥

हवे अदत्तादान व्रत कहे छे.

मालिनीवृत्तम् ॥

तमभिलषति सिद्धिस्तं वृणीते समृद्धि-
स्तमभिसरति कीर्तिर्मुच्यते तं भवार्तिः ॥
स्पृहयति सुगतिस्तं नेक्षते दुर्गतिस्तम् ।
परिहरति विपत्तं योनगृह्णात्यदत्तम् ॥ ३३ ॥

वली पण अदत्तादानना परम गुणो कहे छे.

शिखरिणीवृत्तम् ॥

अदत्तं नादत्ते कृतसुकृतकामः किमपि यः ।
शुभश्रेणिस्तस्मिन् वसति कलहंसीव कमले ॥
विपत्तस्माद्दूरं व्रजति रजनीवाम्बरमणे-
र्विनीतं विद्येव त्रिदिवशिवलक्ष्मीर्भजति तम् ॥ ३४ ॥

हवे जे बुद्धिमान पुरुष अदत्तनो त्याग करे छे, तेपण कहे छे.

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

यन्निर्वर्त्तितकीर्तिधर्मनिधनं सर्वागसां साधनम् ।
प्रोन्मीलद्वधबंधनं विरचितक्लिष्टाशयोद्बोधनम् ॥
दौर्गत्यैकनिबंधनं कृतसुगत्याश्लेषसंरोधनम् ।
प्रोत्सर्पत्प्रधनं जिघृक्षति न तद्धीमानदत्तं धनम् ॥ ३५ ॥

वली पण अदत्तना दोषो कहे छे

॥ हरिणीवृत्तम् ॥

परजनमनः पीडाक्रीडावनं वधभावना ।
भवनमवनिव्यापिव्यापल्लतावनमंडलम् ॥
कुगतिगमने मार्गः स्वर्गापवर्गपुरार्गलम् ।
नियतमनुपादेयं स्तेयं नृणां हितकांक्षिणाम् ॥ ३६ ॥

॥ इतिस्तेयप्रक्रमः ॥ ७ ॥

हवे मैथुनव्रत आश्रय करीने उपदेश कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम् ॥

कामार्त्तास्त्यजन्ति प्रबोधयति वा स्वस्त्रीं परस्त्रीं न यो ।
दत्तस्तेन जगत्यकीर्त्तिपटहो गोत्रे मषीकूर्च्चकः ॥
चारित्रस्य जलांजलिर्गुणगणारामस्य दावानलः ।
संकेतः सकलापदां शिवपुरद्वारे कपाटो दृढः ॥
पाठांतरं ॥ शीलं येन निजं विलुप्तमखिलं त्रैलोक्यचिंतामणिः ॥ ३७ ॥

वली पण शीलना गुणो कहे छे.

व्याघ्रव्यालजलानलादिविपदस्तेषां व्रजंति क्षयम् ।
कल्याणानि समुल्लसंति विबुधाः सान्निध्यमध्यासते ॥
कीर्त्तिः स्फूर्त्तिमियर्त्ति यात्युपचयं धर्मः प्रणश्यत्यघम् ।
स्वर्निर्वाणसुखानि संनिदधते ये शीलमाबिभ्रते ॥ ३८ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

हरति कुलकलंकं लुंपते पापपंकम ।
सुकृतमुपचिनोति श्लाघ्यतामातनोति ॥
नमयति सुरवर्गं हंति दुर्गोपसर्गम ।
रचयति शुचिशीलं स्वर्गमोक्षौ सलीलम् ॥ ३९ ॥

॥ शार्दूलविक्रीतवृत्तद्वयम ॥

तोयत्यग्निरपि स्रजत्यहिरपि व्याघ्रोऽपि सारंगति ।
व्यालोऽप्यश्वति पर्वतोप्युपलति क्ष्वेडोऽपि पीयूपति ॥
विघ्नोऽप्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रीडातडागत्यपां ।
नाथोऽपि स्वगृहत्यटव्यपि नृणां शीलप्रभावाद्ध्रुवम ॥ ४० ॥

हवे परिग्रहना दोषो कहे छे.

कालुष्यं जनयन् जडस्य रचयन् धर्मद्रुमोन्मूलनम् ।
क्लिश्यन्नीतिकृपाक्षमाकमलिनीर्लोभाम्बुधिं वर्द्धयन् ॥
मर्यादातटमुद्रुजन् शुभमनोहंसप्रवासं दिशन् ।
किं न क्लेशकरः परिग्रहनदीपूरः प्रवृद्धिं गतः ॥ ४१ ॥

वळी पण परिग्रहना दोषो कहे छे

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

कलहकलभविन्ध्यः कोपगृध्रश्मशानम् ।
व्यसनभुजगरन्ध्रं द्वेषदस्युप्रदोषः ॥
सुकृतवनदवाग्निर्मार्द्दवांभोदवायु-
र्नयनलिनतुषारोऽत्यर्थमर्थानुरागः ॥ ४२ ॥

वळी पण परिग्रहना दोषो कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

प्रत्यर्थी प्रशमस्य मित्रमधृतेर्मोहस्य विश्रामभूः ।
पापानां खनिरापदां पदमसद्ध्यानस्य लीलावनम् ॥
व्याक्षेपस्य निधिर्मदस्य सचिवः शोकस्य हेतुः कलेः ।
केलीवेश्म परिग्रहः परिहृतेर्योग्यो विविक्तात्मनाम् ॥ ४३ ॥

वळी पण परिग्रहना त्यागने कहे छे.

वह्निस्तृप्यति नेन्धनैरिह यथा नाम्भोभिरम्भोनिधि-
स्तद्वन्मोहघनो धनैरपि धनैर्जन्तुर्न सन्तुष्यति ॥

न त्वेवं मनुते विमुच्य विभवं निःशेषमन्यं भवम् ।
यात्यात्मा तदहं मुधैव विदधाम्येनांसि भूयांसि किम् ॥ ४४ ॥

हवे क्रोधजयने माटे उपदेश कहे छे.

यो मित्रं मधुनो विकारकरणे संत्राससंपादने,
सर्प्पस्य प्रतिविंबमंगदहने सप्तार्चिषः सोदरः ॥
चैतन्यस्य निपूदने विपतरोः सब्रह्मचारी चिरं,
सक्रोधः कुशलाभिलाषकुशलैः प्रोन्मूलमुन्मूल्यताम् ॥ ४५ ॥

वली पण क्रोधजयने माटे कहे छे.

॥ हरिणीवृत्तम् ॥

फलति कलितश्रेयः श्रेणिप्रसूनपरंपरः ।
प्रशमपयसा सिक्तो मुक्तिं तपश्चरणद्रुमः ॥
यदि पुनरसौ प्रत्यासत्तिं प्रकोपहविर्भुजो ।
भजति लभते भस्मीभावं तदा विफलोदयः ॥ ४६ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम् ॥

संतापं तनुते भिनत्ति विनयं सौहार्दमुत्सादय-
त्युद्वेगं जनयत्यवद्यवचनं सूते विधत्ते कलिम् ॥
कीर्तिं कृंतति दुर्मतिं वितरति व्याहंति पुण्योदयम् ।
दत्ते यः कुगतिं स हातुमुचितो रोषः सदोषः सताम् ॥४७॥

वली पण क्रोधना दोषो कहे छे.

यो धर्म्मं दहति द्रुमं दवइ वोन्मथ्नाति नीतिं लताम् ।
दंतीवेंदुकलां विधुंतुद इव क्लिश्नाति कीर्तिं नृणाम् ॥

स्वार्थं वायुरिवाबुदं विघटयत्युल्लासयत्यापदम् ।
तृष्णां घर्म इवोचितः कृतकृपालोपः स कोपः कथम् ॥ ४८ ॥

हवे अहंकारना दोषो कहे छे.

॥ मंदाक्रांतावृत्तम् ॥

यस्मादाविर्भवति विततिर्दुस्तरापन्नदीनाम् ।
यस्मिन् शिष्टाभिरुचितगुणग्रामनामापि नास्ति ॥
यश्च व्याप्तं वहति वधधीधूम्यया क्रोधदावम् ।
तं मानाद्रिं परिहर दुरारोहमौचित्यवृत्ते ॥ ४९

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

शमालानं भंजन् विमलमतिनाडीं विघटयन् ।
किरन् दुर्वाक्पांशूत्करमगणयन्नागमसृणिम् ॥
भ्रमन्नुर्व्यां स्वैरं विनयनयवीथीं विदलयन् ।
जनः कं नानर्थं जनयति मदांधो द्विप इव ॥ ५० ॥

वली पण मानना दोषो कहे छे

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

औचित्याचरणं विलुंपति पयोवाहं नभस्वानिव ।
प्रध्वंसं विनयं नयत्यहिरिव प्राणस्पृशां जीवितम् ॥
कीर्तिं कैरविणीं मतंगज इव प्रोन्मूलयत्यंजसा ।
मानो नीच इवोपकारनिकरं हंति त्रिवर्गं नृणाम् ॥ ५१ ॥

वली पण मानना दोषो कहे छे.

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

मुष्णाति यः कृतसमस्तसमीहितार्थं ।
संजीवनं विनयजीवितमंगभाजाम् ॥
जात्यादिमानविषजं विषमं विकारम् ।
तं मार्दवामृतरसेन नयस्व शांतिम् ॥ ५२ ॥

इति मानप्रक्रमः ॥ ११ ॥

हवे मायात्यागनो प्रकम कहे छे.

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

कुशलजननवंध्यां सत्यसूर्यास्तसंध्याम् ।
कुगतियुवतिमालां, मोहमातंगशालाम् ॥
शमकमलहिमानीं दुर्यशोराजधानीम् ।
व्यसनशतसहायां, दूरतो मुंच मायाम् ॥ ५३ ॥

वली पण मायाना दोषो कहे छे.

॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

विधाय मायां विविधैरुपायैः, परस्य ये वंचनमाचरंति ॥
ते वंचयंति त्रिदिवापवर्ग–सुखान्महामोहसखाः स्वमेव ॥५४॥

वली पण मायाना दोषो कहे छे.

॥ इंद्रवंशावृत्तम् ॥

मायामविश्वासविलासमंदिरं दुराशयो यः कुरुते धनाशया ॥
सोऽनर्थसार्थं न पतंतमीक्षते, यथा विडालो लगुडं पयः पिबन् ॥५५॥

वली मायाना दोषो कहे छे

॥ वसततिलकावृत्तम् ॥

मुग्धप्रतारणपरायणमुज्जीहीते, यत्पाटव कपटलंपटचित्तवृत्तेः ॥
जीर्यत्युपप्लवमवश्यमिहाप्यकृत्वा ।
नापथ्यभोजनमिवामयमायतौ तत् ॥५६॥

इति मायाप्रक्रम ॥ १२ ॥

हवे लोभत्यागनो उपदेश करे छे

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम ॥

यदुर्गामटवीमटति विकट क्रामति देशांतरम्
गाहते गहन समुद्रमतनुक्लेशा कृषिं कुर्वते ॥
सेवते कृपण पतिं गजघटासघट्टदु सचरम् ।
सर्पंति प्र धन धनाधितधियस्तल्लोभविस्फूर्जितम ॥ ५७ ॥

वली पण लोभना दोषो कहे छे

मूल मोहविषद्रुमस्य सुकृताभोराशिकुभोद्भव ।
क्रोधाग्नेररणि प्रतापतरणिप्रच्छादने तोयद ॥
क्रीडासद्म कलेर्विवेकशशिन स्वर्भानुरापन्नदी ।
सिंधु कीर्त्तिलताकलापकलभो लोभ पराभूयताम् ॥ ५८ ॥

फरीने पण लोभना दोषो कहे छे

॥ वसततिलकावृत्तम् ॥

नि शेष धर्मवनदाहविजृम्भमाणे ।
दु खौघभस्मनि विसर्पदकीर्त्तिधूमे॥

बाढं धनेंधनसमागमदीप्यमाने ।
लोभानले शलभतां लभते गुणौघः ॥ ५९ ॥

संतोष करी लोभ निवारण करवा योग्य छे.
माटे संतोषना गुणो कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

जातःकल्पतरुःपुरः सुरगवी तेषां प्रविष्टा गृहम् ।
चिंतारत्नमुपस्थितं करतले प्राप्तो निधिः संनिधिम् ॥
विश्वं वश्यमवश्यमेव सुलभाः स्वर्गापवर्गश्रियो ।
ये संतोषमशेषदोषदहनध्वंसांबुदं बिभ्रते ॥ ६० ॥

इति लोभप्रक्रमः ॥ १६ ॥

हवे सौजन्यता राखवा विषे उपदेश करे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

वरं क्षिप्तः पाणिः कुपितफणिनो वक्रकुहरे ।
वरं झंपापातोज्वलदनलकुंडे विरचितः ॥
वरं प्रासप्रांतः सपदि जठरांतर्विनिहितो ।
न जन्यं दौर्जन्यं तदपि विपदां सद्म विदुषा ॥ ६१ ॥

वळी पण सौजन्यने माटे उपदेश करे छे.

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

सौजन्यमेव विदधाति यशश्चयं च ।
स्वश्रेयसं च विभवं च भवक्षयं च ॥

दौर्जन्यमावहसि यत् कुमते तदर्थम् ।
धान्येऽनल्प दिशसि तज्जलसेकमा ये ॥ ६२ ॥

दारिद्र्यपण सुजनताज श्रेष्ठ छे, ते कहे छे.

॥ पृथ्वीवृत्तम ॥

वर विभववर्यता सुजन (स्वजन) भावभाजा नृणा-
ममाधुचरितार्जिता न पुनरूर्जिता' सपद ॥ ।
कृशत्वमपि शोभते सहजमायता सुन्दरम् ।
विपाकविरसा न तु श्वयथुसभवा स्थूलता ॥ ६३ ॥

हवे सुजनता युक्तजनोना गुणो कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम ॥

न ब्रूते परदूषण परगुण वक्त्यल्पमप्यन्वहम ।
सतोष वहते परर्द्धिषु पराबाधासु धत्ते शुचम ॥
स्वश्लाघा न करोति नोज्झति नय नाचित्यमुल्लघय-
त्युक्तोऽप्यप्रियमक्षमा न रचयत्येतच्चरित्र सताम् ॥ ६४ ॥

इति सुजनप्रक्रम ॥ १४ ॥

हवे गुणिजनना सगनु वर्णन करे छे

धर्म ध्वस्तदयो यशश्च्युतनयो वित्त प्रमत्त पुमान ।
काव्य निष्प्रतिभस्तप शमदयाशून्योऽल्पमेधा श्रुतम ॥
वस्त्वालोकमलोचनश्चलमना ध्यान च वाञ्छत्यसौ ।
य सग गुणिना विमुच्य विमति कल्याणमाकाक्षति ॥६५॥

वळी पण गुणीना संगनुं वर्णन करे छे.

॥ हरिणीवृत्तम् ॥

हरति कुमतिं भिन्ते मोहं करोति विवेकिताम् ।
वितरति रतिं मृते नीतिं तनोति गुणावलिम् (विनीनतां) ॥
प्रथयति यशो धत्ते धर्मं व्यपोहति दुर्गतिम् ।
जनयति नृणां किं नाभीष्टं गुणोत्तमसंगमः ॥६६॥

वळी पण गुणीना संगनो उद्देश कहे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

लब्धुं बुद्धिकलापमापदमपाकर्तुं विहर्तुं पथि ।
प्राप्तुं कीर्त्तिमसाधुतां विधुवितुं धर्मं समासेवितुम् ॥
रोद्धुं पापविपाकमाकलयितुं स्वर्गापवर्गश्रियम् ।
चेत्त्वं चित्तसमीहसे गुणवतां संगं तदंगीकुरु ॥ ६७ ॥

हवे निर्गुणना संगना दोषो कहे छे.

॥ हरिणीवृत्तम् ॥

हिमति महिमांभोजे चंडानिलत्युदयांबुदे ।
द्विरदति दयारामे (दमारामे) क्षेमक्षमाभृति वज्रति ॥
समिधति कुमत्यग्नौ कंदत्यनीतिलतासु यः ।
किमभिलषता श्रेयः श्रेयः स निर्गुणसंगमः ॥ ६८ ॥

॥ इति गुणिसंगप्रक्रमः ॥ १९ ॥

हवे इंद्रियजय करवा आश्रयी उपदेश कहे छे

॥ शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम् ॥

आत्मानं कुपथेन निर्गमयितुं यः शूकलाश्वायते।
कृत्याकृत्यविवेकजीवितहृतौ यः कृष्णसर्पायते॥
यः पुण्यद्रुमखंडखंडनविधौ स्फूर्जत्कुठारायते।
तं लुप्तव्रतमुद्रमिंद्रियगणं जित्वा शुभंयुर्भव॥ ६९॥

वली पण इंद्रियजयनो उपदेश करे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

प्रतिष्ठां यन्निष्ठां नयति नयनिष्ठां विघटयन्।
त्यकृत्येष्वाधत्ते मतिमतपसि प्रेम तनुते॥
विवेकस्योत्सेकं विदलयति दत्ते च विपदम्।
पदं तद्दोषाणां करणनिकुरंबं कुरु वशे॥ ७०॥

वली पण इंद्रियसमूहना जयनो उपदेश करे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तत्रयम् ॥

रत्ता मौनमगारमुज्झतु विधिप्रागल्भ्यमभ्यस्यता-
मस्त्वंतर्गण (स्त्वंतर्वण) मागमश्रममुपादत्तां तपस्तप्यताम्॥
श्रेयःपुंजनिकुंजभंजनमहावातं न चेदिंद्रिय-
व्रातं जेतुमवैति भस्मनि हुतं जानीत सर्व्वं ततः॥ ७१॥

वली वाइ विशेष कहे छे

धर्मं ध्वस्तधुरीणमभ्रमरसावारीणमापत्प्रथा-

त्कर्मीणयशर्मनिर्मितिकलापारीणमेकाननः ॥
सर्वान्नीनमनात्मनीनमनयात्यंतीनमिष्टं यथा ।
कामीनं कुमताध्वनीनमज यन्नसौवमसेमभाक् ॥ ७२ ॥
इतींद्रियदमप्रक्रमः ॥ १६ ॥

हवे लक्ष्मीनो स्वभाव कहे छे.

निम्नं गच्छति निम्नगेव नितरां निद्रेव विष्कंभते ।
चैतन्यं मदिरेव पुष्यति मदं धूम्येव दत्तेऽन्धताम् ॥
चापल्यं चपलेव चुंबति दवज्वालेव तृष्णां नय-
त्युल्लासं कुलटांगनेव कमला स्वैरं परिभ्राम्यति ॥ ७३ ॥

वळी धनना दोषो कहे छे.

दायादाः स्पृहयंति तस्करगणा मुष्णंति भूमीभुजो ।
गृह्णंति छलमाकलय्य हुतभुग्भस्मीकरोति क्षणात् ॥
अंभःप्लावयति क्षितौ विनिहितं यक्षा हरंते हठात् ।
दुर्वृत्तास्तनया नयंति निधनं धिग्बह्वधीनं धनम् ॥ ७४ ॥

जे धन छे तेज मोहनुं उत्पादक छे, ते कहे छे.

नीचस्याऽपि चिरं चटूनि रचयंत्यायांति नीचैर्नतिम् ।
शत्रोरप्यगुणात्मनोऽपि विदधत्युच्चैर्गुणोत्कीर्तनम् ॥
निर्वेदं न विदंति किंचिदकृतज्ञस्यापि सेवाक्रमे ।
कष्टं किं न मनस्विनोऽपि मनुजाः कुर्वंति वित्तार्थिनः ॥ ७५ ॥
लक्ष्मीः सर्पति नीचमर्णवपयः संगादिवांभोजिनी ।
संसर्गादिव कंटकाकुलपदा न क्वापि धत्ते पदम् ॥

चैतन्य विपसनिरेरिव नृणामुज्ञासयत्यजसा ।
धर्मस्थाननियोजनेन गुणिभिर्ग्राह्य तल्स्या फलम् ॥ ७६ ॥

॥ इति लक्ष्मीस्वभावप्रक्रम ॥ १७ ॥

हवे दानना उपदेश कहे छे.

चारित्र चिनुते मिनोति विनय ज्ञान नय युन्नतिम् ।
पुष्णाति प्रशम तप प्रबलयत्युल्लासयत्यागमम् ॥
पुण्य कदलयत्यघ दलयति स्वर्ग ददाति क्रमात् ।
निर्वाणश्रियमातनोति निहित पात्रे पवित्र धनम ॥ ७७ ॥

दारिद्र्य न तमीक्षते न भजते दौर्भाग्यमालम्बते ।
नाऽकीर्तिर्न पराभवोऽभिलषते न व्याधिरास्कन्दति ॥
दैन्य नाद्रियते दुनोति न दर क्लिश्नति नैवापद ।
पात्रे यो वितरत्यनर्थदलन दान निदान श्रियाम ॥ ७८ ॥

वली पण दानना गुणो कहे छे.

लक्ष्मी. कामयते मतिर्मृगयते कीर्तिस्तमालोकते ।
प्रीतिश्चुम्बति सेवते शुभगता नीरोगताऽऽलिंगति ॥
श्रेय संहतिरभ्युपैति वृणुते स्वर्गोपभोगस्थिति-
र्मुक्तिर्वाञ्छति य प्रयच्छति पुमान् पुण्यार्थमर्थ निजम् ॥७९॥

वली पण दाननाज गुण कहे छे

॥ मन्दाक्रान्तावृत्तम् ॥

तस्यासन्ना रतिरनुचरी कीर्तिरुत्कण्ठिता श्री ।
स्निग्धा बुद्धि परिचयपरा चक्रवर्तित्वऋद्धि ॥

पाणौ प्राप्ता त्रिदिवकमला कामुकी मुक्तिसंपत् ।
सप्तक्षेत्र्यां वपति विपुलं वित्तवीजं निजं यः ॥ ८० ॥

॥ इति दानप्रक्रमः ॥ १८ ॥

हवे तपनो उपदेश करे छे.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तत्रयम् ॥

यत्पूर्वार्जितकर्मशैलकुलिशं यत्कामदावानल-
ज्वालाजालजलं यदुग्रकरणग्रामाहिमंत्राक्षरम् ॥
यत्प्रत्यूहतमः समूहदिवसं यल्लब्धिलक्ष्मीलता ।
मूलं तद्विविधं यथाविधि तपः कुर्वीत वीतस्पृहः ॥ ८१ ॥

वली पण तपनो महिमा कहे छे.

यस्माद्विघ्नपरंपरा विघटते दास्यं सुराः कुर्वते ।
कामः शाम्यति दाम्यतींद्रियगणः कल्याणमुत्सर्पति ॥
उन्मीलंति महर्द्धयः कलयति ध्वंसं च यः कर्मणाम् ।
स्वाधीनं त्रिदिवं शिवं च भजति श्लाघ्यं तपस्तन्न किम् ॥८२॥

कांतारं न यथेतरो ज्वलयितुं दक्षो दवाग्निं विना ।
दावाग्निं न यथेतरः शमयितुं शक्तो विनांभोधरम् ॥
निष्णातः पवनं विना निरसितुं नान्यो यथांभोधरम् ।
कर्मौघं तपसा विना किमपरं हर्तुं समर्थस्तथा ॥ ८३ ॥

वली पण तपनो महिमा कहे छे.

॥ स्रग्धरावृत्तम् ॥

संतोषस्थूलमूलः प्रशमपरिकरः स्कंधबंध प्रपंचः ।

विमुक्तिपथवेसरीं भजत भावनां किं परैः ॥ ८७ ॥

वली पण कहे छे.

॥ शिखरिणीवृत्तम ॥

धनं दत्तं वित्तं जिनवचनमभ्यस्तमखिलम ।
क्रियाकांडं चंडं रचितमवनौ सुप्तमसकृत् ॥
तपस्तीव्रं तप्तं चरणमपि चीर्णं चिरतरम ।
नचेच्चित्ते भावस्तुपवपनवत्सर्वमफलम ॥ ८८ ॥

॥ इति भावनाप्रक्रमः ॥ २० ॥

हवे वैराग्यने कहे छे.

॥ हरिणीवृत्तम ॥

यदशुभरजःपाथो दृप्तेंद्रियद्विरदांकुशम ।
कुशलकुसुमोद्यानं माद्यन्मनः कपिश्रृंखला ॥
विरतिरमणीलीलावेश्म स्मरज्वरभेषजम ।
शिवपथरथस्तद्वैराग्यं विमृश्य भवाऽभयः (भवाऽभवः) ॥८९॥

वली पण वैराग्यज कहे छे.

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

चंडानिलस्फुरितमब्दचयं दवार्चि-
र्वृक्षव्रजं तिमिरमंडलमर्कबिंबम ॥
वज्रं महीध्रनिवहं नयते यथांतम ।
वैराग्यमेकमपि कर्म तथा समग्रम ॥ ९० ॥

जिनोक्तं सिद्धांतं श्रृणु वृणु जवान्मुक्तिकमलाम ॥ ९४ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम ॥

कृत्वाऽर्हत्पदपूजनं यतिजनं नत्वा विदित्वाऽऽगमं ।
हित्वा संगमधर्मकर्मठधियां पात्रेषु दत्वा धनम ॥
गत्वा पद्धतिमुत्तमक्रमजुषां जित्वांऽतरारिव्रजम् ।
स्मृत्वा पंचनमस्क्रियां कुरु करक्रोडस्थमिष्टं सुखम ॥ ९५ ॥

॥ हरिणीवृत्तम् ॥

प्रसरति यथा किर्त्तिर्दिक्षु क्षपाकरसोदरा ।
ऽभ्युदयजननी याति स्फार्तिं यथा गुणसंततिः ॥
कलयति यथा वृद्धिं धर्मः कुकर्महतिक्षमः
कुशलमुलभे न्याय्ये कार्यं तथा पथि वर्त्तनम ॥ ९६ ॥

॥ शिखरिणीवृत्तद्वयम ॥

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसिगुरुपादप्रणमनम ।
मुखे सत्या वाणी श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः ॥
हृदि स्वच्छा वृत्तिर्विजयि भुजयोः पौरुषमहो ।
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मंडनमिदम् ॥ ९७ ॥
भवारण्यं मुक्त्वा यदि जिगमिषुर्मुक्तिनगरीम ।
तदानीं मा कार्षीर्विषयविषवृक्षेषु वसतिम् ॥
यतश्छायाप्येषां प्रथयति महामोहमचिरा–
दयं जंतुर्यस्मात्पदमपि न गंतुं प्रभवति ॥ ९८ ॥

॥ इति सामान्योपदेशप्रक्रमः ॥ २२ ॥

श्री चिदानंदजी कृत.

प्रश्नोत्तरमाळा*

(मंगळाचरण–दोहा.)

परम ज्योति परमात्मा, परमनंद अनूप;
नमो सिद्ध सुखकर सदा, कलातीत चिद्–रूप. १

पंच महाव्रत आचरत, पाळत पंचाचार;
समतारस सायर सदा, सत्ताविश गुणधार. २

पंच समिति गुपति धरा, चरण करण गुणधार;
चिदानंद जिनके हिये, करुणा भाव अपार. ३

सुरगिरि[१] हरि[२] सायर जीसे, धीर वीर गंभीर;
अपमत्त विहारथी, मानुं अपर समीर.[३] ४

इत्यादिक गुणयुक्त जे, जंगम तीरथ जाण;
ते मुनिवर प्रणमुं सदा, अधिक प्रेम मन आण. ५

लाख वातकी एक वात, प्रश्न प्रश्नमे जाण;
एकशत चौद प्रश्नको, उत्तर कहुं वखाण. ६

प्रश्नमाळ ए कंठमें, जे धारत नर नार;
तास हिये अति उपजे, सार विवेक विचार. ७

---

*अति सार गंभीर अर्थवाळा १०४ प्रश्नोनो उत्तर बहु सरल अने सचोट भाषामां अत्रे अपायेलो होइ, सहु कोइ तत्त्वजिज्ञासु भाइ बहेनोए स्वहृदय–बोर्ड उपर अवश्य कोतरी राखवा योग्य छे.

१ मेरु पर्वत. २ सिंह. ३ पवन.

११४ प्रश्नोनो संग्रह

देव धरम अरु कहा, सुख दुःख ज्ञान अज्ञान,
ध्यान ध्येय ध्याता कहा, कहा मान अपमान. १
जीव अजीव कहो कहा, पुण्य पाप कहा होय,
आश्रव संवर निर्जरा, बंध मोक्ष कहो सोय. २
हेय ज्ञेय फुनि है कहा, उपादेय कहा होय,
बोध अबोध विवेक कहा, फुनि अविवेक समोय ३
कौन चतुर मूरख कवण, राव रंक गुणवंत,
जोगी जति कहो कौन, को जग संत महंत ४
शूरवीर कायर कवण, को पशु मानव देव,
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश को, कहो शुद्र कहा भेव ५
कहा अथिर थिर है कहा, छिल्लर कहा अगाध,
तप जप संजम ? कहा, कवण चोर को साध ६
अति दुर्जय जगमें कहा, अधिक कपट कहा होय,
नीच उंच उत्तम कहा, कहो कृपा कर सोय ७
अति प्रचंड अग्नि कहा, को दुरदम मातंग,
विषवेली जगमें कहा, सायर प्रबळ तुरंग. ८
किणथी डरीए सर्वदा, किणथी मळीए धाय,
किणकी संगत गुण वधे, किण संगत पत जाय. ९
चपळा तिम चंचळ कहा, कहा अचळ कहा सार,
फुनि असार वस्तु कहा, को जग नरक दुवार १०

अंध बधिर जग मूक को, मात पिता रिपु मित;
पंडित मूढ सुखी दुःखी, को जगमांहे अभीत. ११
म्होटा भय जगमें कहा, कहा जरा अति घोर;
प्रबळ वेदना हे कहा, कहा वक्र किशोर. १२
कल्पवृक्ष चिंतामणि, कामगवी शुं थाय;
चित्रावेली हे कहा, शुं साध्यां दुःख जाय. १३
श्रवण नयन मुख कर भुजा, हृदय कंठ अरु भाळ;
इनका मंडन हे कहा, कहा जग म्होटा जाळ. १४
पाप रोग अरु दुःखना, कहा कारण शुं होय;
अशुचि वस्तु जगमें कहा, कहा शुचि कहा जोय. १५
कहा सुधा अरु विष कहा, कहा संग कुसंग;
कहा हे रंग पतंगका, कहा मजीठी रंग. १६
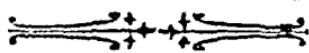
उक्त ११४ प्रश्नोनो उत्तर नीचे प्रमाणे—

देव श्री अरिहंत निरागी, दया मूल शुचि धर्म सोभागी;
हित उपदेश गुरु सुसाथ, जे धारत गुण अगम अगाध. १
उदासीनता सुख जगमांही, जन्म मरण सम दुःख कोइ नांही;
आत्मबोध ज्ञान हितकार, प्रबल अज्ञान भ्रमण संसार. २
चित्तनिरोध ते उत्तम ध्यान, ध्येय वीतरागी भागवान;
ध्याता तास मुमुक्षु बखान, जे जिनमत तत्वारथ जान. ३
लही भव्यता म्होटो मान, कवण अभव्य त्रिभुवन अपमान;

चेतन लक्षण कहीए जीव, रहित चेतन जान अजीव. ४
परउपगार पुण्य करी जाण, परपीडा ते पाप वखाण,
आश्रव कर्म आगमन धारे, सवर तास विरोध विचारे ५
निर्मळ हंस अश जिहा होय, निर्जरा द्वादशविध तप जोय,
वेद भेद बधन दु खरुप, बध अभाव ते मोक्ष अनुप ६
पर परिणति ममतादिक हेय, स्व स्वभाव ज्ञान कर ज्ञेय,
उपादेय आतम गुणवृद, जाणो भविक महा सुखकद. ७
परमबोध मिथ्यादृक् रोध, मिथ्यादृग् दु ख हेत अबोध,
आतम हित चिंता सुविवेक, तास विमुख जडता अविवेक. ८
परभव साधक चतुर कहावे, मूरख जे ते बध वधावे,
त्यागी अचळ राज पद पावे, जे लोभी ते रक कहावे ९.
उत्तम गुणरागी गुणवत, जे नर लहत भवोदधि अत,
जोगी जस ममता नहि रति, मन इद्रि जीते ते जति. १०.
समता रस सायर सो सत, तजत मान ते पुरुष महत,
सुरवीर ते जे कदप वारे, कायर कामआणा शिर धारे. ११.
अविवेकी नर पशु समान, मानव जस घट आतम ज्ञान,
दिव्य दृष्टि धारी जिनदेव, करता तास इद्रादिक सेव. १२.
ब्राह्मण ते जे ब्रह्म पिछाणे, क्षत्री कर्मरिपु वश आणे,
वैश्य हाणि वृद्धि जे लखे, शुद्र भक्ष अभक्ष जे भखे. १३.
अथिर रुप जाणो ससार, थिर एक जिन धर्म हितकार,
इद्रिसुख छिल्लर जल जाणो, श्रमण अतिंद्रि अगाध वखाणो १४.
इच्छा रोधन तप मनोहार, जप उत्तम जगमें नवकार,

संजम आतम थिरता भाव, भवसायर तरवाको नाव. १५.
छती शक्ति गोपवे ते चोर, शिवसाधक ते साध किशोर;
अति दुर्जय मनकी गति जोय, अधिक कपट नारीमें होय. १६.
नीच सोइ परद्रोह विचारे, उंच पुरुष परविकथा निवारे;
उत्तम कनक कीच सम जाणे, हरख शोक हृदये नवि आणे. १७
अति प्रचंड अग्नि हे क्रोध, दुर्दम मान मतंगज जोध;
विषवल्ली माया जगमांही, लोभ समो सायर कोइ नांहि. १८
नीच संगथी डरीए भाइ, मळिए सदा संतकुं धाइ;
साधु संग गुण वृद्धि थाय, नारीकी संगते पत जाय. १९.
चपळा जेम चंचल नर आय, खिरत पान जब लागे वाय;
छिल्लर अंजलि जळ जेम छीजे, इणविध जाणी ममतकहा कीजे. २०
चपळा तिम चंचळ धनधाम, अचळ एक जगमें प्रभुनाम;
धर्म एक त्रिभुवनमें सार, तन धन योवन सकळ असार. २१
नरकद्वार नारी नित जाणो, तेथी राग हिये नवि आणो;
अंतर लक्ष रहित ते अंध, जानत नहि मोक्ष अरु बंध. २२
जे नवि सुणत सिद्धांत वखाण, बधिर पुरुष जगमें ते जाण;
अवसर उचित बोली नवि जाणे, ताकुं ज्ञानी मूक वखाणे. २३
सकळ जगत जननी हे दया, करत सहु प्राणीकी मया रहेम;
पाळन करत पिता ते कहीए, तेतो धर्म चित्त सद्दहिये. २४
मोह समान रिपु नहीं कोइ, देखो सहु अंतरगत जोइ;
सुखमें मित्त सकळ संसार, दुःखमें मित्त नाम आधार. २५
डरत पापथी पंडित सोइ, हिंसा करत मूढ सो होइ;

सुखिया संतोषी जगमाही, जाकु त्रिविध कामना नाही. २६
जाकु तृष्णा अगम अपार, ते म्होटा दु:खिया ननुधार,
यथा पुरुष जे विषयातीत, ते जगमाह परम अभीत. २७
मरण समान भय नहीं कोइ, पथ समान जरा नवि होइ
प्रबळ वेदना क्षुधा वखाणो, वक्र तुरग इंद्रि मन जाणो २८
कल्पवृक्ष संजम सुखकार, अनुभव चिंतामणि विचार
कामगवी वर विद्या जाण, चित्रावेलि भक्ति चित्त आण. २०
संजम साध्या सवि दु:ख जावे, दुःख सहु गया मोक्षपद पावे,
श्रवण शोभा सुणीए जिणवाणी, निर्मळ जिम गंगाजळ पाणी.३०
नयनशोभा जिनबिंब निहारो, जिनपडिमा जिनसम करी धारो,
सत्य वचन मुख शोभा सारी, तज तंबोळ सत ते वारी ३१
करकी शोभा दान वखाणो, उत्तम भेद पच तस जाणो,
भुजाबळे तरीए ससार, इणविध भुज शोभा चित्त धार ३२
निर्मळ नवपद ध्यान धरीजे, हृदय शोभा इणविध जिन कीजे,
प्रभुगुण मुक्तमाळ सुखकारी, करो कंठ शोभा ते भारी ३३
सतगुरु चरण रेणु शिर धरीए, भाल शोभा इणविध भवि करीए,
मोहजाळ म्होटो अति कहीए, ताकु तोड अक्षयपद लहीए. ३४
पापका मूळ लोभ जगमाहो, रोग मूळ रस दुजा नाही
दु:खका मुळ सनेह पियारे, धन्य पुरुष तेनाथी न्यारे ३५
अशुचि वस्तु जाणो निज काया, शुचि पुरुष जे वरजित माया,
सुधा समान अध्यातम वाणी, विष सम कुकथा पाप कहाणी.३६

जिहां बेठा परमारथ लहीए, ताकुं सदाय सुसंगति कहीए;
जिहां गया अपलक्षण आवे, ते तो सदाय कुसंग कहावे. ३७

रंग पतंग दुरजनका नेहा, मध्य धार जे आपत छेहा;
सज्जन स्नेह मजीठी रंग, सर्व काळ जे रहत अभंग. ३८

प्रश्नोत्तर इम कही विचारी, अति संक्षेप बुद्धि अनुसारी;
अति विस्तार अरथ इण केरा, सुणत मिटे मिथ्यात अंधेरा. ३९

कळश.

रस पूर्णनंद सुचंद संवत (१९०६), मास कार्तिक जाणीए,
पक्ष उज्वळ तिथि त्रयोदशी, वार अचळ वखाणीए;
आदीश पास पसाय पामी, भावनगर रही करी,
चिदानंद जिणंद वाणी, कही भवसायर तरी. ४०

इति प्रश्नोत्तर रत्नमाळा समाप्ता.

श्री आत्मावबोध कुलक-व्याख्या

(आत्मार्थी जनोए खास मनन करी निर्धारी राखवा योग्य सुवर्ण वाक्यो.)

१ उत्कृष्ट पुन्य प्रभा वडे अथवा स्वाभाविक आत्मज्योति वडे आनन्दकारी अने महेन्द्रोए (पण) नमन करवा योग्य श्री जिनेश्वर देवने (त्रिविधे) प्रणाम करी, भवदुःखनो अंत करवा समर्थ एवुं आत्मावबोध कुलक हुं (जयशेखर) वखाणीश.

२ जेम प्रभा वडेज सूर्योदय थयानी खात्री थइ शके छे पण ते वगर गमे तेना शपथ (सोगन) मात्रथी खात्री थती नथी तेम तथा प्रकारना गुण-लक्षणवडे ज आत्मावबोध थयानी स्वयमेव खात्री थवा पामे छे. पण तेवा गुण वगर वधारे बोलवाथी कशुं वळतुं नथी-खात्री थइ शकती नथी प्रकरणकार ते गुणोने वखाणे छे.

३ इन्द्रियोनुं दमन, मनोविकारनुं शमन, तत्त्वार्थश्रद्धान, स्वपरहित चिन्तवन, मोक्ष सुखनी ज वाञ्छना, गुणदोषनी चोकखी समज, अने प्रबळ-वैराग्य-विषयसुखथी विमुखता ए यथार्थ अंतरमां रहेला आत्मावबोधरूपी बीजना स्पष्ट अंकुर उगेला-फणगा फूटेला जाणवा.

४ जे आत्मस्वरूपने-तेना स्वाभाविक सुखने जाणे छे ते तुच्छ

विषयसुखनी कामना-वांछना करतो नथी. जेने कल्पवृक्ष फळ्यो होय ते शुं बीजा तुच्छअसार वृक्षनी वांछना करे खरो के ? नहि ज.

५ आत्मज्ञान (अध्यात्म) मां मग्न बनेलाने नरकादिनां दुःख कदापि वेठवां पडतां नथी. केमके जे (समजपूर्वक) सन्मार्गे ज चाले छे ते शुं कूवामां पडे खरो के ? नहि ज.

६ जेणे आत्माने ओळख्यो नथी-आतमस्वरुप पिछाण्युं नथी तेमने मोक्ष तो दूर ज छे अने द्रव्य संपदा पण उपाधि-क्लेशना कारणरुप थाय छे अने तेनी आशा-इच्छा-अभिलाषा-मनोरथ-माळा अधूरी ज रहे छे.

७ ज्यांसुधी आत्मबोध थयो नथी त्यांसुधी आ भवसागर तरवो दुर्लभ छे. महासमर्थ मोहने जीतवो दुर्लभ छे अने तृष्णाने तजवी पण बहु आकरी छे. परंतु स्वात्मबोध या स्वस्वरुप प्रकाश थतां ज ए बधां गमे तेवां दुस्तर छतां पण सुलभ थइ शके छे.

८ जेणे सुर अने असुरना इन्द्रोने (पण) अनाथनी जेवी दशाने पमाडया छे-खुब सताव्या छे-दीन रांक भीखारी जेवा निर्माल्य बनावी दीधा छे ते सबळ काम पण अध्यात्म ध्यानरुप अग्निमां भस्मसात् थइ जाय छे ए कंइ थोडा आश्चर्यनी वात छे शुं ?

९. जेने बांध्युं-सांकळ्युं छतुं छटकी जाय छे-स्थिर थइ शकतुं नथी अने वार्युं--दम्युं-अटकाव्युं छतां निरंकुशपणे चोतरफ फरतुं

भटकतु रहे छे तेवु चचल चित्त पण यानवळे पोतानी मेळे--अनायास ठरी जाय छे.

१० ज्ञानी गुरुना वचन--गोथी जेणे शुभ- सुखकारी ध्यान रसायण प्राप्त कर्यु--पीधु तेने तात्र त्रिदोषादिक बाह्य व्याधिओ तेमज राग द्वेष अने मोहादिक अतरग व्याधिओ दु'ख देता नथी. विविध व्याधिओ तेनामा प्रगटवा के फावता नथी अने प्रथमना होय ते पण शमी जाय छे

११ स्वस्वरूपनु ज चिन्तवन करवामा तत्पर रहेता महाशयने कोइ पीडा करतु नथी अने कदाच कोइ कर्मयोगे पीडा करे तो तेना ऋणमाथी पोताने मुक्त थइ जता मानता एवा ते आत्मज्ञानीने दु ख समजातु नथी.

१२ दु खनो खाण जेवा (भयकर) राग द्वेषो चळाचळ चित्तमा होय छे. जेम आलान स्थभे बाधेलो हाथी स्थिर थाय छे तेम अध्यात्म योगवडे चित्त पण पोतानी स्वाभाविक चपळता तजी स्थिर थइ जाय छे.

१३ प्रसन्न के अप्रसन्न आत्मा (चित्त) ज मित्र के अमित्र (दुश्मन) छे. स्वर्ग के नरक तेमज राजा के रक पण एज छे

१४ आ जीवे (अनेक वार) देवतानी अने मनुष्योनी ऋद्धिओ प्राप्त करी अने विषय रस पण वारवार भोगव्या, परतु तेथी सतोष पाम्यो नहि अने सतोष वगर क्याय पण शान्ति वळी? नहि ज

१५. जेम वादळां वडे तेजस्वी सूर्य पण पण ढंकाइ जाय छे तेम हे जीव! त्हारी मेळे उत्पन्न करेला शरीर, धन, स्त्री अने कुटुंबस्नेह वडे, तुं पण सत्ताए (शक्तिरूपे) लोकालोक प्रकाशक ज्योतिरूप छतां ढंकाइ जाय छे. एटले स्नेहजाळ वडे तारी शक्ति (प्रभाव) लुप्तप्राय थइ जाय छे ते तुं जो!

१६ हे जीव! आ त्हारो देह, विविध व्याधिरूप सर्प अने अग्निरूप वैरीओने वश छतां तुं तेना उपर ममत्व करतो शुं खाटवानो छे ?

१७ उत्तम जातिना भोजन, पान, स्नान, शृंगार अने विलेपनवडे पोषण मळ्या छतां आ शरीर पोताना पोषक-स्वामीने छेह दे छे, तेथी कूतरा जेटली पण कृतज्ञता तेनामां जणाती नथी. तो पछी क्या वाने तेना उपर मोह-ममत्व करवो ?

१८ हे जीव! अनेक प्रकारनां कष्टो सहन करीने त्हें जे धन उपार्ज्युं ते तो त्हने कष्ट मात्र आपी अंते अन्यनाज भोगमां आवे छे. धननी ममताथी ते माटे तुं महेनत करी मरे छे अने कशुं खर्ची शकतो नथी, जेथी त्हारा मृत्यु पछी के पहेलां ते बीजाना हाथमां जाय छे. आ त्हारी केवी मूर्खाइ ? तेनो कंइ विचार करी, उचित होय तेम कर.

१९ जेम जेम मोह-अज्ञानवश तुं धन धान्यादिक परिग्रह (ममत्व) घणो करतो जाय छे तेम तेम अधिक भारथी भरेली नावनी जेम आ भवसागरमां तुं जोत जोतामां डूबी जाय छे. तेथी

त्हारे भवभयमां घणुज सकट वेठवु पडशे, तेनो कट विचार कर.

२० शरीर अने मननी निर्बळताने लीधे जेने स्वप्नमा पण देखी छती मनुष्यनु वीर्य हरी ले छे ते स्त्रीने मारी, (जीवलेण व्याधि) जेवी समजीने तु तेने तजी दे–मोहवश थतो तेनो सग तज.

२१ हे मुग्ध जीव ! तु चित्तनी शुद्धि करवा अभिलाषा राखे छे, अने तेम छतां स्त्रीना हाव भावादिक विषयरसमा तु रक्त बनी जाय छे आते त्हारी केवी मूढता ? अरे ! गळीथी मिश्रित करेला वस्त्रमा श्वेतता टकी शके खरी ? कदापि नहि ज.

२२ हे जीव ! मोहराजाए त्हने स्नेहरुपी बेडीओ वडे झकडी बाधीने, ससाररुपी कारागृहमा नाख्यो छे अने तेमाथी तु नाशी न छूटे एटला माटे त्हारी उपर पूरती देखरेख राखवा कुटुब कबीलादिक स्नेही बधुओना व्हाने पहरगीरो मूक्या छे, तेमना उपर तु आटलो बधो मोह–राग केम राखे छे ?

२३ अहो आत्मा ! तु आवु अतरग कुटुब कर के धर्म एज पिता, करणा–दया एज माता, विवेक एज भ्राता (भाइ), क्षमा –समता एज प्रिया–स्त्री, अने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक गुण एज सुपुत्र.

२४ अति लालन पालन करायेली (चिर परिचयवाळी) कर्म प्रकृतिरुपी स्त्रीए हे जीव ! त्हारामा पुरुषार्थ छतां त्हने बधनोथी बाधीने चार गतिमा भमाडयो छे तेथी तने कशी लज्जा–शरम आवती नथी शु ?

२५ रे जीव ! तुं जातेज कर्म करे छे अने ते वडे तुं चार गतिमां रडवडे छे. तेम छतां अरे ! आत्मवैरी ! तुं अन्यने शा माटे दोष आपे छे ?

२६ हे आत्मन् ! तुं एवुं काम करे छे, एवां बोल बोले छे, अने एवा विचार करे छे के जेथी तुं अनेक कष्टमां आवी पडे छे. आवी आपणा घरनी गुप्त वात अन्यनी आगळ कही शकाय नहि (एथी पोतानीज जांघ उघाडी थाय अने लोकोमां हांसी थाय. ए रीते अंतरात्मा, बहिरात्माने अथवा सुमति, कुमतिने वश पडेला पोताना स्वामी-चेतनने कहे छे).

२७ हे चेतन ! पांचे इन्द्रियोरूपी प्रबळ चोरो दुष्ट मनरूपी युवराजने मळी जइ, पोतपोताना विषयरसमां आसक्त बनी त्हारी मूळगी मूडी-ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यादिक स्वाभाविक स्थिति-मर्यादाने लोपे छे.

२८ एमणे विवेकरूपी हितस्वी मंत्रीने हणी नांख्यो; दान, शील, तप अने भावरूप चार प्रकारनुं धर्मचक्र भेदी-भांगी नांख्युं; ज्ञान अने क्रियारूपी धन लूंटी लीधुं अने त्हने पण कुगतिरूप कूवामां नांखी दीधो.

२९ आटलो बधो वखत तुं मोहरूप निद्राने वश, मडदाल जेवो पुरुषार्थहीन बनी गयो हतो ते वात जो हवे तुं गुरुमहाराजनां हितवचनथी जाग्योज हो तो शुं नथी जाणतो ? जाणे छेज.

३० हे चेतनराय ! तुं लोकप्रमाण असंख्य प्रदेशनो स्वामी

छे, तेमज अनंतज्ञान अने वीर्य-शक्तिवाळो छे, तो तु धर्मध्यानरूप सिंहासन उपर बेसीने स्वराज्य स्थितिनी चिन्ता कर एटले के तु त्हारी मूळ शक्तिने संभारी, कायरता तजी, राज्यमर्यादा साचव, सावचेत था.

३१ हवे जो तु जाग्यो छे-स्वस्वरूप समज्यो छे तो हे महाराज ! तु त्हारु चैतन्य-वीर्य फोरव, प्रमाद रहित अप्रमत्त था. पछी जो के दुष्ट मनरूपी युवराज के मोहराजादिक कोण त्हने राज्यभ्रष्ट करी शके छे पोतानु राज्य संभाळवा सावध थयेला एवा त्हने राज्यभ्रष्ट करवा, पछी कोनामा ताकात छे ? कोइनामा नथी.

३२ हे चेतन ! पुरुषार्थसाध्य शिवनगर स्वाधीन छते आ संसाररूप-कारागृहमा केम वसे छे ? जेमा तु ज्ञानमय छता जड जेवो अने स्वामीनायक-राजा-महाराजा छता चोर जेवो थइ रह्यो छे

३३ वळी जे (संसार) मा कषायरूपी चोरटा, महा आपदाओ रूपी दुष्ट हिंसाकी जानवरो अने विविध व्याधिओ रूपी भयंकर सर्पो तथा अनेक आशाओ रूपी मोटी नदीओ सदा विद्यमान छे, वळी जेमा

३४ चिन्तारूपी काष्ठवाळी अटवीओ, मुग्ध स्त्रीओ रूपी अति अंधकारमय गुफाओ, चार गति रूप अनेक खाणो, अने आठ मदरूपी उंचा पर्वतना शिखरो (जेमा स्पष्ट जणाय छे) वळी जेमा.

३५ मिथ्यात्वरूपी राक्षस अने मनना दुष्ट परिणाम थकी पेदा

यनी ममता रुपी मोटी शिलाओ छे एवा संसाररुपी पर्वतने हे चेतन ! हवे तु ध्यानरुपी वज्र वडे भेदी नांख–संसारनो अंत कर.

३६ जे महानुभावने आत्मज्ञान जाग्युं छे ते मोक्ष सुखने आपनारुं निश्चय ज्ञान जाणवुं अने बाकीनुं ज्ञान गमे तेटलुं अधिक प्रमाणमां मेळवेलुं होय तो पण ते आजीविका मात्र फळ आपनारुं जाणवुं.

३७ जेम यथार्थ बोधरहितपणे प्रयोजायेला हितकारी औषध थकी व्याधि ऊलटो वधे छे अथवा नवो पेदा थाय छे तेम एकान्त हितकारी आत्मबोध रहित मूढ जनो जेम जेम घणुं घणुं भणे छे तेम तेम तेमनुं चित्त गर्व–अभिमानवडे उभराय छे. मतलब के मूढ मोहातुर जीवोने श्रुत ज्ञान पण अज्ञानपणे परिणमे छे अने तेथी तेमने लाभ–हित थवाने बदले नुकशान–अणहितज थाय छे.

३८ पोताना आत्माने बोध कर्या वगर एटले आत्मबोध मेळव्या वगर जे कोइ अन्य जनोने बोध आपवा मंडे छे. ते पण जड–मूर्खज जाणवा. कहो के स्वजन वर्ग भूख्यो मरतो होय त्यारे दानशाळा (सदाव्रत) मांडवानुं शुं प्रयोजन होय ? कशुंज नहि.

३९ केटलाएक लोको अन्यजनोंने बोध आपे छे अथवा स्वरोदय, हठयोग के ज्योतिष शास्त्रना अभ्यासथी काळज्ञान जाणे छे. अथवा सूत्र भणे छे अने सदाय स्वस्थान (घार बार विगेरे)

मूकीने (तजीने) वहार फरताज रहे छे परतु आत्मबोध—स्वस्व-रुपनी ओळखाण थया वगर तेमने मोक्ष सुखनी प्राप्ति तो थतीज नथी.

४० कदापि कोइने पण निन्दवो नहि—निंदा करवीज नहि, तेमज पोताना वखाण करवा नहि एटले आत्मश्लाघा (स्वप्रशसा) पण करवीज नहि परतु समभाव राखवो एटले गमे ते कार्य प्रसगे कतत्व अभिमान नहि करता साक्षीभावे वर्तवु—वर्तता रहेवु एज आत्मबोध अथवा अध्यात्मज्ञाननु ऊडु रहस्य रहेलु छे.

४१ हे चेतनराय ! जो तु आत्मविज्ञान (आत्मानुभव) इ-च्छतो ज हो तो तु पारकी भाजगड (पचात) तजी दे, आत्मगु-णना अभ्यासवडे पोताना आत्मानेज राजी कर (सतोष आप) अने नकामी वातो—विकथा करवानु पण तजी दे. गमे तेम करीने स्वात्महित सभाळ.

४२ हे विचक्षण ! (चकोर चेतन !) तु एवु भण, एवु गण, एवु वाच, एवु ध्यान कर, एवो उपदेश आप अने एवु आचरण कर के जेथी थोडो वखत पण तु आत्मारामना (सहज समाधिरुप नदनवनमा) आनद—अनुभव करी शके. एज त्हारो परमधर्म—पर-मकर्तव्य समज.

४३ आ प्रमाणे गुरुश्रीए उपदेशेलु श्रेष्ट तत्त्व—स्वरुप समजीने हे महाशय ! तेमा तु प्रवळ प्रयत्न कर जेथी केवळ लक्ष्मी (सर्वज्ञता)

मेळवीने तुं जयशेखर–आठे कर्म शत्रुओनो संपूर्ण जय करनारो थइ शके. (छेवटे प्रकरणकारे स्वनाम निर्देश करेलो छे.)

सारबोध—आपण सहुए आत्मज्ञान संपादन करवा पूरतुं लक्ष राखवुंज जोइए. जेनावडे आपणा अनादि राग द्वेषादिक दोषो दूर थवा पामे अने समतादिक उत्तम सद्गुणोनी प्राप्तिथी आत्मारुपी सुवर्ण शुद्ध थवा पामे एवा एक पण सार वचननुं वारंवार स्मरण–रटन करवाथी आत्म साक्षात्कार थइ शके छे पण परमार्थ शून्य घणुं भणवाथी कशुं वळतुं नथी.

इतिशम.

समाप्त.